

यिन्त्रालय के जोकाव्यकी पुस्तकें छपी हैं उनमें से कुछ
नीचे लिखी हैं

नानार्थसंग्रहावली ॥

पारिडैत मातादीन शुक्ल रचित सातपोथी का संग्रह है
(१) संग्रहावली (२) रामायणमाला (३) रामायणगीताष्टक
(४) ज्ञानदाहवली (५) रससारिणी (६) तिथिवोध (७) मातृ
कृतपिंगल अक्षर बहुतपुष्ट है कि वृद्ध और बालकभी पढ़
ते हैं ॥

कृष्णप्रिया ॥

मंगलीसाद विरचित ब्रजविलास की तरहपर अकृष्ण
जीका जनसे बैकुण्ठ गमन पर्यन्त चरित्र है यहकाव्यालं-
कारयुक्त हुतही सुन्दर पुस्तक है ॥

छन्दोर्णव पिंगल ॥

जिसमें मात्रावृत्त, वर्णवृत्त, मेरु, मर्कटी, पताका, लघुगुरुस्थ
पनरीति और सब छन्दोंके दृष्टांत साहित रूप हैं ॥

रसराज ॥

सतेरामजी कविरचित जिसमें अतिमनोहरतासेकाव्या
लंकार संयुक्तनायकाभेदका वर्णन है ॥

कविकुलकल्पतरु ॥

भूषणचिन्तामणिजी रचित जिसमें अतिरुचिर छन्दों में
नायकाभेदकी पूरीवातें लिखी हैं ॥

शतसयीसटीकविहारीलालजी रचित ॥

श्रीकृष्ण राधाजीके विषयमें सम्पूर्ण नायकाभेदका वर्णन
सातसौ दोहोंमें है और दोहोंके भावार्थ के सबैये और कवित्व
भी हैं ॥

सभाविलास ॥

जिसमें मभाकी चतुरताकेलिये चुनी हुई बातें जैसेनीति



काविप्रिया सटीक ॥

अथ मंगलाचरण ॥

दो० श्रीराधा चाई तरफ तुलसि कंज पद माहँ ।

कूलकलिंदी के लसत कहूँ कदम की छाहँ ?

कवित्त । आवति रमन साथ कुंजते भवन प्रात सुखपैम
यूषे फैली कंचन किनारी की । अरसाने गात रससानी कहै
बात चाहि चाहभरी आखँ लखिजाति नगवारीकी ॥ शोभा
ते सुधारी किधौ चंदते निकारी विधि जाके न समान छवि
कामहूँ की प्यारीकी । राजैरूप भारी नैन नौदकी खुमारी
तूल शची न उमारी वृषभान की कुमारीकी २ ॥ सवैया ॥
राधाके पांवन के नखकी सुखमा लखि होतहै चंद मलीनो ।
रूपअतोल अमोलककी उपमा लहि कंज महामद भीनो ॥
सोनहि नेकसह्यो करतार विचारसों जानतहै परवीनो । देखौ
वराटकके छलसों विधि मोलकै ताहि वराटक दीनो ३ लोक
चतुर्दशकी जननी हरि पांवपयोजशिरी निरंधारी । आठ सु-
सिद्धिनवो निधि औ विधिकी बनिता तुव सेवनिहारी ॥ तूक-
रुणामय की दयिता तुलसी करुणामय देहतिहारी । भीरपरे
इमि आवति आगे करै करज्यों धरकी रखवारी ४ पांवन में
बिलासै तुलसी हरिकाज सबै उनहींसों सरैगो । लायसों ज्यों
तृणतूल बिलापति तैं सुमिरे सबविघ्नजरैगो ॥ साजिहै काज

सबे निजदासके जानतहों न कवै विसरैगो । श्याम शरीर हरे परपीर अहीरको नंदन भीरकरैगो ५ ॥ कवित्त ॥ परमउदार दशरथकोकुमार सबअंगसुकुमार कामरूपमदकोहरैं । करुणानिकेतकरै दीननसोहेत मुंहमांग्यो सुखदेत जाको सेवन रमा करें ॥ उदधिबिंधाय लरिलंकहि छिनायलीनी दीनीहै विभीषण को अवरज को धरैं । विधि पूजैपाय ऐसो चाहैं रघुराय केती लंकनवनाय रोज रंकनको वितरैं ६ (हमारो कियो श्रीमोहन लीला को कवित्त वृंदावन वर्णन) सबैया ॥ कूजत कोकिलके गन कुंजमें मत्त मधुव्रत गुंजसुहायो । चारुलता लपटीतरुसों सुकिधौ तरुणी पियकंठ लगायो ॥ धारलखे यमुना जलकी चहुंओर विचार यहैचितआयो । नीलमकोर विहार मनो करतारलै श्रीवनको पहिरायो ७ ॥ दोहा ॥ सुगमछाँड़िके कठिन को अर्थकरो विस्तार । सबको अर्थकरे इहां वाढ़ैग्रंथ अपार ८ (अन्वय सों ग्रंथ लागैगो याते अन्वयको लक्षण) अन्वय पद संबंधपद निकटरहैकै दूरि । अर्थकरत मिलिजातहै यहजानौ सबसूरि ९ पदजाहि पदसों अन्वितहोय ताके निकटरहै किंवा दूररहै अलंकार ग्रंथ जानि अलंकार और नहीं निकारे अलंकार और भी हैं ॥

इति मंगलाचरण ॥

दो० ॥ गजमुखसनमुखहोतही विघनविमुखहै जात ॥
ज्यों पगपरत प्रयागमग पापपहारविलात १ ॥

गजमुख गणेश ताके सन्मुख सामनेहोतकै सानुकूल होत कै किंवा गजमुखसों संमुखहोतकै गजमुख के सामने देखत ताही समय विघनजाहै सो विमुख है जातहै विमुखको अर्थ विनष्टभयोहै मुखजाको यहअर्थ विनामांथाको हैजातहै ऐसो अर्थ कियेविना आगे दृष्टान्तसों नहीं मिलैगो १ ॥

दो ० ॥ बाणीजूकेवरणयुग सुवरणकणपरमान ॥

सुकविसुमुखकुरुखेतपरिहोतसुमेरुसमान २ ॥

बाणी सरस्वती तिनके द्वैवरण अक्षर गुरु औ लघु सो वै कैसेहैं सुवरणकी कणिका परमाणहैं सुकविजेहैं सुमुख गणेश जी सोहैं कुरुखेत याको रूपक कियो तामें परिकै प्राप्तद्वैकै सुमेरु समान होत हैं मेरु मर्कटी प्रताका सुन्दर जो मेरु तामें समता पावैहैं सुमुख एकदंत कपिल इत्यादि गणेशके बारह नाम हैं श्लेष में सुवरण की कणिका कुरुक्षेत्र में गाड़िकै गुप्त दानदेय तो सुवरण बहुतवृद्धि को प्राप्तहोय पीछे आगे गणेश कीस्तुति बीचमें सरस्वती की स्तुति कैसेहोय औ सरस्वती की स्तुति नहीं निकरै कवि की स्तुति निकरै है २ ॥

(गणपतिदन्तवर्णन) कवित्त ॥ सत्वसत्वगुणकोकि सत्यहीकीसत्ताशुभसिद्धिकी प्रसिद्धकीसुबुद्धिवृद्धिमानि ये । ज्ञानहीकीगरिमाकिमहिमाविवेकहीकीदरशनहीको दरशनउरआनिये ॥ पुण्यकोप्रकासवेदविद्याकोविलास किधौंयशकोनिवासकेशौदासजगजानिये । मदनकदनसु तबदनरदनकिधौंविधनबिनाशनकीविधिपहिंचानिये ३

गणेश को दांत वर्णित हैं सत्व गुणको सत्व कहिये प्राप्त है किंवा सत्व गुण देखिवेमें नहीं आवै है ताको सत्व कहिये विद्यमानता है मूर्तिमान सत्वगुण है यहअर्थ हेमी नानार्थमें सत्त्वंनाम सत्ताको औ प्राणीको औ प्राणको किंवा सत्य जो पदार्थहै ताकी सत्ता विद्यमानताहै किंवा सत्यकोसारहै सत्ता सारको भी भाषा में कहत हैं ज्ञानकी गुरुता है विवेक बड़ाई विचार ताकी बड़ाई है हेमीनानार्थ में दरशन नाम शास्त्रको औ नेत्रको भी है दरशन शास्त्र ताको नेत्र है किंवा दरशन शास्त्र ताको शास्त्रहै किंवा षट्दरशन योगी संन्यासी आदि ताको दरशन दरशनीय जानिये मदन काम ताको जिन क-

दन कहते नाश कियो है को शिव तिनको सुत गणेश ताको
दांत है किधौं विघ्न विनाशिवे की विधि क्रिया मूर्तिमान है
यह जानिये सबपदकी जो धुनिनिकारिये तौ ग्रंथबहुतबढ़ै ३ ॥

दो० ॥ प्रकटपंचमीकोभयो कविप्रियाअवतार ॥

सोरहसैंअट्ठारवनी फागुनसुदिवंधवार ४ ॥

कविप्रियारूप जो अवतारकवि ताको प्राप्तहोनेकी सीढ़ी ४ ॥

दो० ॥ नृपकुलवरणीं प्रथमही अरुकविकेशववंश ॥

प्रकटकरीजिनकविप्रिया कविताकोअवतंश ५ (नृपवंश
वर्णनं) ॥ ब्रह्मादिककीविनयते हरणसकलभुविभार ॥

सूरजवंशकरयो प्रकटरामचन्द्रअवतार ६ ॥

सूर्यवंशमें श्रीरामचन्द्रजी अपनोअवतार प्रकटकरयोहै ६ ॥

दो० ॥ तिनकेकुलकलिकालरिपुकहिकेशवरणधीर ॥

गहरवारविख्यातजग प्रकटभयेनृपवीर ७ करणनृपति
तिनकेभये धरणीधर्मप्रकास ॥ जीतिसवैजगतीकरयो
वाराणसीनिवास ८ प्रकटकरणतीरथभये जगमेंतिनके
नाम ॥ तिनकेअर्जुनपालनृप भयेमहोनीग्राम ९ ॥

करण तीर्थनाम है ६ ॥

दो० ॥ गढ़कुठारतिनकेभये राजाशाहनृपाल ॥ सह
जकरणतिनकेभये कहिकेशवरिपुकाल १० राजानौनि
कदेभये तिनकेपूरणसाज ॥ नौनिकदेकेसुतभये पृथुज्यो
पृथ्वीराज ११ ॥

नौनिक कहूं नौगढ़ भी पाठ है ११ ॥

दो० ॥ रामसिंहराजाभये तिनकेशूरसमान ॥ राज
चन्द्रतिनकेभये राजाचन्द्रप्रमान १२ राजमेदनीमल

भये तिनकेकेशवदास ॥ अरिमदमरदनमेदिनी कीन्हयो
धर्मप्रकास १३ राजाअर्जुनदेभये तिनकेअर्जुनरूप ॥
श्रीनारायणकोसखा कहैसकलभवभूप १४ महादानषो
डशदये जीतीजगदिशिचारि ॥ चारौवेदअठारहौ सुने
पुराणविचारि १५ रिपुखण्डनतिनकेभये राजाश्रीमल
खान ॥ युद्धजुरेनमुरेकहूँ जानतसकलजहान १६ नृपप्र
तापरुद्रसुभये तिनकेजनुरणरुद्र ॥ दयादानकोकल्पतरु
गुणनिधिशीलसमुद्र १७ ॥

जनको अर्थ मानो रणविषे रुद्र शिव है १७ ॥

दो० ॥ नगरओरछौजिनरच्यो जगमेंजागतकृत्ति ॥
कृष्णदत्तमिश्रहिदई जिनपुराणकीवृत्ति १८ भरतखण्ड
मंडनभये तिनकेभारतचन्द ॥ देशरसातलजातजिहिं
फेर्यो ज्योहरिचन्द १९ शेरशाहिअसलेमके उरशा
लीशमशेर ॥ एकचतुर्भुजहूनयो ताकोशिरतेहिवेर २० ॥

उरमें शालै है ऐसी जाकी तरवारि है २० ॥

दो० ॥ उपजिनपायोपुत्रतिहिं गयोसुप्रभुसुरलोक ॥
सोदरमधुकरशाहतब भूपभयेभुवलोक २१ जिनके
राजरसावसे केशवकुशलकिशान ॥ सिन्धुदिशानहिवा
रहूं पारबजाइनिशान २२ ॥

जिनके राज्य की रसाभूमि तामें बसेहैं किसानभी प्रवीण
भी सिंधुनदी लहाउर की तरफ है सिंधु जो नदी ताकी जो
तरफ दिशा सिंधु की तरफ सिंधुके बारहीनहीं निशानबजाये
पार भी निशान नगरा बजाये सिंधु के पार भी जीते हैं जो
सिंधु समुद्र लीजिये तो वाके पार मनुष्यकी गतिनहीं २२ ॥

दो० ॥ तिनपरचढिआयेजुरिपु केशवगयेतेहारि ॥
 जिनापरचढिआपुनगये आयेतिन्हैसंहारि २३ सबल
 शाहअकवरअवनि जीतिलईदिशिचारि ॥ मधुकरशा
 हनरेशगढ़ तिनकेलीन्हेमारि २४ खानगनैसुलतान
 को राजारावतवादि ॥ हारेमधुकरशाहसों आपुनशा
 हमुरादि २५ ॥

सुलतानवादशाह तिनके गने गणना लायक उमराववादि
 को अर्थ फेरि २५ ॥

दो० ॥ साध्योंस्वारथसार्थही परमारथसोंनेह ॥ गयो
 सोप्रभुवैकुंठमग ब्रह्मरन्धूतजिदेह २६ तिनकेदूलह
 रामसुत लहुरेहोरिलराव ॥ रिपुखण्डनकुलमण्डनो
 पूरणपुहुमिश्रभाव २७ रणरुरोरणसिन्धुपुनि रत्नसेनिपु
 निर्देश ॥ बांध्योआपजलालदी वानेजाकेशीश २८ ॥

रणमें रुरो आद्यो २८ ॥

दो० ॥ इंद्रजीतरणजीतपुनि शत्रुजीतबलबीर ॥ विर
 सिंहदेवप्रसिद्धपुनि हरसिंहभोरणधीर २९ मधुकरशाहन
 रेशके इतनेभयेकुमार ॥ रामशाहराजाभये तिनमेंबुद्धिउ
 दार ३० घरवाहरजहँईतहीं केशवदेशविदेश ॥ सबको
 ऊयहईकहै जीत्योरामनरेश ३१ रामशाहसोंशूरता धर्म
 नपूजैआन। जाहिसराहतसर्वदा अकवरसोसुलतान ३२
 करजोरैठाढ़ेजहां आठौदिशिकेईश ॥ ताहितहांबैठकंदई
 अकवरसेअवनीश ३३ ॥

इतने मधुकरशाह के पुत्रभये २६।३०।३१।३२।३३ ॥

दो० ॥ जाकेदरशनकोगये उघरेदेवकिवार ॥

उपजीदीपतिदीपकी देखत एकहिबार ३४ ॥

बद्रीनाथजी के दर्शनको गये तहां मंदिर के किवार खुले
दीप बरिउक्यो ३४ ॥

दो० ॥ ताराजाक्रोराजअबराजतजगतीमाहैं ॥ राजारा
नारावसबसीवतजाकीछाहैं ३५ तिनकेसुतग्यारहभयेजे
ठेशाहसंग्राम ॥ दक्षिणदक्षिणराजसो तिनजीत्योसंग्राम
३६ भरतखण्डभूषणभयेतिनकेभारतशाहि ॥ भरतभगी
रथपारथहि उनमानतसबताहि ३७ सुतसोदरनृपरामके
यद्यपिबहुपरिवार ॥ तदपिसबैइंद्रजीतशिर राजल्लाजको
भार ३८ कल्पवृक्षसौदानदिन सागरसोगभीर ॥ केशव
शूरोशूरसो अर्जुनसोरणधीर ३९ ताहिकछोवाकमलसो
गढ़दन्होनृपराम ॥ बिधिज्योसाधतबैठितहैं केशववाम
अवाम ४० ॥

कछोवा कमल नाम है वाम अवाम भला बुरा ४० ॥

दो० ॥ कह्योअखारोराजको शासनसबसंगीत ॥ ताको
देखतइंद्रज्यो इंद्रजीतरणजीत ४१ बालवयक्रमबालस
ब रूपशीलगुणबृद्ध ॥ यदपिभरयोअवरोधषट पातुरपर
मप्रसिद्ध ४२ ॥

नववय बालास्त्री सब हैं अवरोध अंतःपुरनाम (प्रवीणराय
१ नवरंगराय / विचित्रनयन ३ तानतरंग ४ रंगराय ५ रंग
मूर्ति ६ षटपातुरनाम) ४२ ॥

दो० ॥ रायप्रवीणप्रवीणअति नवरंगरायसुत्रेष ॥ अति
विचित्रनयनानिपुनि लोचनललितसुदेष ४३ सोहतसा
गररागकी तानतरंगतरंग ॥ रंगरायरंगबलितगातिरंगमृ
रतिअंगअंग ४४ ॥

रागके सागर की तरंगसी तान, तरंग सोहतिहै ४४ ॥

दो० ॥ तंत्रीतुंबरुसारिका शुद्धसुरनसौलीन ॥

देवसभासीदेखिये रायप्रवीनप्रवीन ४५ ॥

राय प्रवीणकी प्रकृष्ट अच्छी जो बीणाहै सो देवसभा सी सोहति है देवसभा कैसी है हेममें तंत्रनाम सिद्धांतकोहै तंत्र को जाननवाला तंत्री वृहस्पति है जहां तुंबरु गंधर्व है जहां सारिका अप्सरा सो शुद्ध अच्छे जे सुर देवता तासों लीनहै मिलीहै बीणा कैसी है तंत्री तार तुंबर तोंवा औ सारिका वा में घोड़ीलागतिहै औ सुर जे स्वर निषाद ऋषभ गांधार खरज मध्यम धैवत पंचम यासों युक्त है ४५ ॥

दो० ॥ सत्यारायप्रवीणयुत सुरतरुसुरतरुगेह ॥

इंद्रजीततासोंबंधे केशवदासहिदेह ४६ ॥

रायप्रवीणकैसीहै सत्याहै सांचीवात बोलतिहै जो ऐसो अर्थ करै सत्यासत्यभामा सरीखीराय प्रवीणहै तौ अधिक उपमा दोषहै हमारे किये कवि बल्लभमें स्पष्टहै फेरि कैसी है सुरत युक्त है सुन्दर जो रत रमनकाम क्रीड़ा तासों युक्त है वाको सुरतक्रीड़ा अच्छी आवैहै सुरतरुगेहको अर्थ तरको अर्थ श्रेष्ठ अच्छो जो स्वरानिषादआदि ताको गेहहै अच्छास्वर गावैहै ताहि प्रवीणराय सो इंद्रजीत बंध्यो है आसक्त है तहां सन्देह करैहै महाविषयी है परमारथको नहीं पिछानैहै ताको उत्तर देतहै केशवदासहि देह वाकोअर्थ जाकोहि कहिये हृदयमन औ देह सबसों केशव जाहै भगवान् तिनको दासहै मनसों देहसों भगवान्की सेवाकरैहै यह अर्थ सत्यासत्यभामा कैसी है रायकहिये सरदार तिनमें प्रवीण जो श्रीकृष्ण तिनको जो सुरतप्रीति किंवा रमण कांतकरि युक्तहै किंवा सत्याकैसीहै प्रवीण विपेराय सरदारहै औ सुरतरमन तासों युक्तहै सत्याराय प्रवीणयुत सुरत इतनेको अर्थ कियो रूओके

अर्थमें सुरतरु कल्पवृक्ष सो जाके गेहमेंहै फेरि सत्या कैसेहै
केशवभगवान् इन्द्रको जीतिकै तासों बँधे हैं आसक्तभये हैं
तहाँ सन्देह भक्तनपास भगवान् कोईनहीं एक सत्याही पास
है तहाँ कहत हैं कि उनकी अचिंत्य शक्ति है दासके हियमें
जाको गेहहै भक्तके हृदयमें सदा विराजतहै ४६ ॥

दो० ॥ नरीकिन्नरीआसुरी सुरीरहतशिरनाय ॥

नवरसनवधाभक्तिसौ राजतनवरंगराय ४७ ॥

ये सब जाको रूपदेखिकै शिरनाय रहतीहैं अर्थात् माथा
नीचा करतीहैं नवरस नवीन जो रसनायक विषे रागभगवान्
विषे नवप्रकारकी भक्ति श्रवण १ कीर्तन २ स्मरण ३ चरणसे-
वन ४ अर्चन ५ वन्दन ६ दास्य ७ संख्य ८ आत्मानिवेदन ९
यह नवधा भक्ति ४७ ॥

दो० ॥ हावभावसंभावना दोलासमसुखदाय ॥

पियमनदेतिभुलायगति नवरंगनवरंगराय ४८ ॥

हाव जो स्त्रीको बिलास बिबोक् आदि भाव जोहै क्रिया
तासों जोहै संभावना आपनी शक्ति अर्थात् उत्कर्षको प्रकाश
करनो मैं नायकके मनको हावही सों खँचिलेउँगी कोई ऐसी
क्रिया विशेषकरौंगी जासों पियके मनको खँचिलेउँगी तासों
दोला झूलासमान सुखदानि है पियके मनको झुलायदेति है
चंचल करति है कवहूँ हावमें आवै है कवहूँ भावमें कटाक्ष
आदिमें आवतहै नवरंगराय नाचमें नवीनगति लेतिहै तासों
किंवा नवगति नवीन है गति दशा तरह जाकी ऐसी तरह
और में नहीं ४८ ॥

दो० ॥ भैरवयुतगौरीसँयुत सुरतरंगिनीलेखि ॥

चंद्रकलासीसोहिये नयनविचित्रादेखि ४९ ॥

कोई कहत है चन्द्रमाकी कलासी नयनविचित्रा सोहतिहै

सो तू देखि चन्द्रकला भैरव शिव तासों युक्तहै औ गौरीसों संयुक्तहै चन्द्ररेखाविभूषणा । दुर्गामें है पार्वतीके भी चन्द्रमा माथेमें है सुरतरंगिनी श्रीगंगाजी तासों भी युक्तजानो नयन विचित्रा कैसीहै भैरवराग औ गौरीराग सों युक्तहै किंवा भैरवआदि जे दिनकेराग गौरीआदि जे रातिकेराग तासों युक्त है सुरतरंगिनी जानों सुरत जो रमन ताकी रंगिनी है सुरत में रंगकरे है किंवा सुर जो निपादआदि ताकी तरंगिनी नदी है ४६ ॥

दो० ॥ नयनवयनरतिसयनसम नयनविचित्रानाम ॥

जयनशीलपतिमैनमन सदाकरतिबिश्राम ५० ॥

नयनविचित्रानाम जो पातुरिहै ताके नयन औ वचन सों रतिकेलिये जो सयनहै ताके समानहै वाके नेत्र देखत औ वचन सुनत रतिमें जो सुखहोतहै तैसो सुखहोतहै पतिरूप जो मदन ताको मन जीतिवेको आपने अंधीन करिबेको शीलस्वभाव है जाको औ सदा पतिके मनमें वसैहै ५० ॥

दो० ॥ नागरिनागररागकी सागरतानतरंग ॥

पतिपूरणशशिदरशदिन वाढ़तितानतरंग ५१ ॥

नागरिप्रवीण जो नायका है ता विषे नागर अच्छेराग की सागरता है या विषे समुद्रपनो है किंवा तानागरि वै जो नागरि पिछले दोहा में कहीहैं नयन विचित्रा सुंदरराग की सागर है नत रंग नतकहिये नम्रतामें रंगकहिये राग यहचाह है जाको ऐसो गुण है तौभी नम्र है आपनी बड़ाई नहीं करति आपनी गति जो प्रतिष्ठा सोई पूरण शशि है ताको देखिकै जातिकै ताकी तान सोई तरंगहै सो वाढ़तिहै सूधो अर्थकिये पुनरुक्ति आवे रसाभासहोय नैयार्थदोष तौ कोईनहींछूटै ५१ ॥

दो० ॥ तानेंतानतरंगकी तनुतनुवेधतिप्रान ॥

कलाकुसुमशरशरनकी अतिअयानतनत्रान ५२ ॥

तानंतरंग पातुरिकी जे तानै हैं तनतन विषे सब के देह
विषे प्राणको बेधति है किंवा तनुसूक्ष्म है तनुसूक्ष्म जो प्राण
ताको तनुविषे बेधति है किंवा तनुसूक्ष्म जो प्राण ताको बेधत
है कामके बाणकीकला चातुरी है किधौं अति अज्ञान जे राग
में कछु नहीं समुझै ताके मनमें त्रान है बचाव है किंवा अति
अयानता है सोई तनत्रान है जिरह है ५२ ॥

दो० ॥ रंगरायकरआंगुरीसकलगुणनिकीमूरि ॥

लागतमूढमृदंगमुख शब्दरहतभरिपूरि ५३ ॥

मूढ जड़ ५३ ॥

दो० ॥ रंगरायकरमुरजमुख रंगमूरतिपदचारु ॥

मनोपढ्योहैसाथही सबसंगीतविचारु ५४ ॥

मुरजमृदंग बजायवे की नाचिवेकी बड़ाई ५४ ॥

दो० ॥ अंगजितेसंगीतके गावतगुणीअनंत ॥ रंग
मूरतिअंगअंगप्रति राजतमूरतिवंत ५५ नाचतिगाव-
तिपढ़तिसब सबैबजावतबीन ॥ तिनमेंकरतिकवित्तइक
रायप्रवीनप्रवीन ५६ ॥

अंगजिते स्पष्ट ५५ । ५६ ॥

दो० ॥ रायप्रवीनप्रवीनसों परवीननकोसुःख ॥

अपरवीनकेशौकहा परवीननिमनदुःख ५७ ॥

प्रवीणराय जो प्रवीण निपुण है तासों प्रवीणनको सुख है
अप्रवीण जे अज्ञानहै राग में नहीं समुझै तिनको कहा कछु
नहीं किंवा अप्रवीणके आगे ऐसी सौ को अर्थ सैकराहोहि तो
कहा कछुनहीं औ पर जो शत्रु पातुरिको नहीं चाहतहे औ
बीनकहिये बीनाहै समुझवारहै तिनके मनमेंदुःखहै ॥ दो० ॥
लघुगुरुगुरुलघुहोतहै निजइच्छाअनुसार ५७ ॥

दो० ॥ रतनाकरलालितसदा परमानन्दहिलीन ॥

अमलकमलकमनीयकररमाकिरायप्रवीण ५८ ॥

रमा लक्ष्मी है किंवा रायप्रवीण है लक्ष्मी कैसी है रत्नाकर समुद्र तासों लालित समुद्रने जाको दुलारकियो है सदा अखण्डित परमानन्द है जिनको ऐसे भगवान् तिनविषे लीन है मिली है वक्षस्थलमें रहति है अमल निर्मल कमल है जाको कमलानाम है याते फेरि कमनीय चागै जो मनोरथ ताकी करनवाली है किंवा सुन्दर है करजाको प्रवीणराय कैसी है रतनके आकर समूह ताको जिनने लाड़कियो है सदा रतननि को आदरकियो है किंवा राजाने बहुत रत्नदेके लड़ाई है परम आनन्द सों मिली है अमल जो कमल सो है कमनीय सुन्दर करविषे जाके ५८ ॥

दो० ॥ रायप्रवीणकिशारदा शुचिरुचिरंजितअंग ॥

वीणापुस्तकधारिणी राजहंससुतसंग ५९ ॥

रायप्रवीण है किंवा शारदा सरस्वती है रायप्रवीण कैसी है शुचिपवित्रता किंवा शिंगार तासों भई है जो रुचि कांति तासों रंजित शोभायुक्त अंग है वीणाके भेद जामें लिख्यो है ऐसी जो पुस्तक संगीत शास्त्र ताको लिये है फेरि राजनि विषे जो हंस सूर्यसरीखो प्रताप करिकै है ताको सुत इन्द्रजित तिनके संगमें है शारदा कैसी है शुचि नाम सूर्यको है शुचि सप्ताश्ववाहनः नामस्तवराजमें है शुचिकीसी रुचि कांति तासों भूषित अंग है औ वीणा औ पुस्तक को लिये है राजहंस जो वाहन है ताको सुत संगमें है जो सफेद होय चंचु औ पाँव लाल होय सो राजहंस ५९ ॥

दो० ॥ वृषभवाहिनीअंगउरवासुकित्सतप्रवीण ॥

शिवसँगसो है सर्वदा शिवाकिरायप्रवीण ६० ॥

शिवा भवानी है किंवा प्रवीण राय है शिवा कैसी है शिव के आधे अंगमें रहति है याते वृषभ बैल सोहै वाहन जाको काहूको संबोधन देके कवि कहत है हे अंग हे मित्र उरविषे वासुकि नाग लसतुहै औ प्रवीणहै शिवके अंगमें सर्वदा शोभति है राय प्रवीण कैसीहै वृषभ जो धर्म ताको लियेहै अंग विषे उर कहिये बहुत जाके वासुकि फूलकी माला है फेरिप्रवीण है उत्तम वीणा है जाके ६० ॥

दो० ॥ सविताजूकवितादई ताकहँ परमप्रकास ॥

ताकेकाजकविप्रिया कीन्ही केशवदास ६१ ॥

इति श्रीमद्विभूषणविभूषितायांकविप्रियायां राजवंश
वर्णनं नाम प्रथमप्रभावः १ ॥

सविता सूर्य नाम औ सहस्रनाम में भगवान्को नाम है मंगलाचरण में विष्णुको नाम गणेश अवतार तकी स्तुति करी है ६१ ॥

इति श्रीहरिचरणकृतायांकविप्रियाभरणाख्यायांकवि
प्रियाटीकायांप्रथमप्रभावव्याख्या १ ॥

दो० ॥ ब्रह्माजूकेचित्तते प्रगटभयेसनकादि ॥

उपजेतिनकेचित्तते सबसनौडियाआदि १ ॥

नामके आगे टेढ़ी लकीर यह दूसरे प्रभावकी टीका ॥

दो० ॥ परशुरामभृगुनन्दतव तिनकेपायँपरवारि ॥
दयेबहत्तरिश्रामतव उत्तमविप्रविचारि २ जगपावन
बैकुण्ठपति रामचन्द्रयहनाम ॥ मथुरामण्डलमेंदये
तिन्हैंसातसैग्राम ३ सोमवंशयदुकुलसकल त्रिभुवन

पालनरेश ॥ फेरिदियेकलिकालरिपु तेईतिन्हेंसुदेश ४
 कुम्भवारउद्देशकुल प्रकटेतिनकेवंश ॥ तिनकेदेवानन्द
 सुत उपजेकुलअवतंश ५ तिनकेसुतजयदेवजग थापे
 पृथ्वीराज॥तिनकेदिनकरसुकुलसुतप्रकटेपण्डितराज६
 दिल्लीपतिअल्लावदी कीन्हींकृपाअपार ॥ तीरथगया
 समेतजिन अकरकरेबहुवार ७ गयागदाधरसुतभये
 तिनकेआनंदकन्द ॥ जयानंदतिनकेभये विद्यायुतजग
 वन्द ८ भयेत्रिविक्रममिश्रतव तिनकेपण्डितराय ॥
 गोपाचलगढ़दुर्गपति तिनकेपूजेपाय ९ भावशर्मतिन-
 केभये तिनकेबुद्धिअपार ॥ भयैशिरोमणिमिश्रसुत षट्
 दरशनअवतार १० मानसिंहसोंरोषकरि जिनजीती
 दिशिचारि ॥ ग्रामवीसतिनकोदये रानापावँपखारि११
 तिनकेपुत्रप्रसिद्धजग कीन्हेंहरिहरनाथ ॥ सोपुरपति
 तजिऔरसों भूलिनबोड्यउहाथ १२ पुत्रभयेहरिनाथ
 केकृष्णदत्तशुभवेष ॥ सभाशाहसंग्रामकी जीतीगढ़ी
 अशेष १३ ॥

संग्राम शाहिके पण्डित तिनकी सभा गढ़गावँमें १३ ॥

दो० ॥ तिनकोवृत्तिपुराणकी दीन्हींराजारुद्र ॥ ति-
 नकेकाशीनाथसुत सोभेबुद्धिसमुद्र १४ जिनकोमधुकर
 शाहनृप बहुतकरचोसनमान ॥ तिनकेसुतबलभद्रशुभ
 प्रकटेबुद्धिनिधान १५ बालहितेमधुशाहनृप जिनपै
 सुनैपुरान ॥ तिनकेसोदरद्वैभये केशवदासकल्याण १६
 भाषात्रोलिनजानई जिनकेकुलकेदास ॥ भाषाकविभो
 मन्दमति तिहिकुलकेशवदास १७ इन्द्रजीततासोंक-

ह्यो मांगनमध्यप्रयाग ॥ मांग्योसवादिनएकरस कीजै
कृपासभाग १८ योहींकह्योजुबीरवर मांगिजुमनमेंहोया॥
मांग्योतवदरबारमें मोहिंनरोकैकोय १९ गुरुकरिमान्यो
इन्द्रजित तनमनकृपाबिचारि ॥ ग्रामदयेइकबीसतव
ताकेपायँपखारि २० इन्द्रजीतकेहेतपुनि राजारामसु-
जान॥ मान्योमन्त्रीमित्रके केशवदासप्रमान २१ ॥

इतिश्रीमद्विविधभूषणभषितायांकविप्रियायांकवि
वंशवर्णनंनामद्वितियप्रभावः २ ॥

अथ कवित्त दोष ॥

दो० ॥ समुभैवालाबालकन बरणनपन्थअगाध ॥

कविप्रियाकेशवकरी क्षमिहौकविअपराध १॥

बाला स्त्री औ बालक नहीं समुभै वाला बालको यह भी
पाठ है अगाध पंथको अज्ञानको समुभायो जो कविन को
जानिबे कीं बात सो सबको समुभाई है यह अपराध किंवा
लोग सब कविन की कवितामें दोष देहिंगे यह अपराध १ ॥

दो० ॥ अलंकारकवितानके सुनिसुनिविविधविचार ॥

कविप्रियाकेशवकरी कविताकोशृंगार २ सगुणपदारथ
अर्थयुत सुवरणमयशुभसाज ॥ कंठमालज्यौकविप्रिया
कंठकरौकविराज ३ ॥

हे कविराज कंठमाला की तरह कविप्रियाको कंठकरो
यामें भी श्लेष कंठमाला कैसी है सगुण पदार्थ है सगुणव-
स्तु है गुण डोरा जामें लाग्यो है दुर्लभ वस्तुको भाषामें पदा-
र्थ कहत हैं सुवरणमय याको अर्थ बहुत सुवर्णमय अर्थ रत्न
लीजिये बहुत सुवर्ण युत रत्नहै जामें अर्थ नाम अर्थको धन

को औ वस्तुको औ प्रयोजनको फेरि शुभसाज, सुंदर साजी बनाई है किंवा सुंदर जो भा कहिये नक्षत्र ताको सो साज है लक्षणा सो तरह लीजिये कविप्रिया कैसीहै गुण जो ओज प्रसाद माधुर्य ताहि सहित पद है अर्थ है जामें औ अर्थ युत है औ सुंदरवर्ण अक्षरमयहै औ फेरि शुभकल्याणको साजैहै सिद्धकरैहै पुराण वचन है । धर्मार्थकाममोक्षाणां प्राप्तिर्भवति काव्यतः । काव्यते धर्म अर्थ मोक्षकी प्राप्ति होतीहै औ राजा जैसे कंठमालको कंठमें करैहै ऐसे कविप्रियाको कंठकरो यह भी अर्थ इहां कंठमाला रोगकी प्रतीति नहीं करावै है याते दोष नहीं ३ ॥

दो० ॥ चरणधरतचिंताकरत नींदनभावतशोर ॥

सुवरणकोशोधतफिरत कविव्यभिचारीचोर ४ ॥

कवि औ व्यभिचारी औ चोरकी समता करतहैं कविकवित्वके चरण व्यभिचारी स्त्रीके चरण औ चोर अपने चरण धरतके चिंताको करतुहै नींद शोर नहीं भावै सुंदरवर्ण अक्षर औ सुंदरहै वर्ण रंग जाको औ सुवरण सोना ताको खोजत फिरत हैं यह दोहा केतनिउँ पुस्तकनमें नहीं है अरु केतनि-उँमें है ४ ॥

दो० ॥ राजतरंचनदोषयुत कवितावनितामित्र ॥

बुन्दकहालापरतज्यौं गंगाघटअपवित्र ५ ॥

एक बुंद हाला मदिरा परै ५ ॥

दो० ॥ विप्रननेगीकीजिये मूढ़नकरियेमित्र ॥

प्रभुनकृतघ्नीचाहिये दोषनिसहितकवित्तद्व ॥

ब्राह्मणको नेगी नहीं करिये नेगी कोई मामिलाको हवा-लदार नहीं करिये जो चोरिस्वाय तौ लेतके पेट चीरै ६ ॥

(अथ दोषनाम औ दोषलक्षण) दो० ॥ अंधव-
धिरऔपंगुतजि नग्नमृतकमतिशुद्ध ॥ अंधविरोधीपंथ
को बधिरसुशब्दविरुद्ध ७ छंदविरोधीपंगुगति नग्नजुभू
षणहीन ॥ मृतककहावैअर्थबिनु केशवसुनहुप्रवीन ८ ॥

अथ पंथ विरोधी कविन के बांधे पंथपर नहीं चलै ८ ॥

(अथपंथविरोधीअंध) सवैया ॥ कोमलकंजसेफूलिर
हेकुचदेखतहीपतिचंदबिमोहै । बानरसेचलचारुविलो
चनकोथेरचेरुचिरोचनकोहै ॥ माखनसोमधुरोअधरामृ
तकेशवकोउपमाकहुंटेहै । ठाढ़ीहैकामिनिदामिनिसीमृ
गभामिनिसीगजगामिनिसोहै ९ ॥

कोमल कमलकी उपमा कबिने नहींकही है कुच कंठोर
घरणातहैं औ कमलसों चन्द्रमाको मोहकोआ नेत्र गोलकको
कहत हैं औ रोचन गोरोचन ताकी रुचिकांति तासों रचे हैं
हे सखि सो कोहै कौनहै ९ ॥

(अथबधिरशब्दविरोधी) सवैया ॥ सिद्धशिरोमणिशं
करसृष्टिसंधारतसाधुसमूहभरीहै । सुंदरमूरतिआतमभू
तकीजारिधरीकमेंद्वारकरीहै ॥ शुभ्रविरूपविलोचनसोंम
तिकेशवदासकेध्यानअरीहै । बंदतदेवअदेवसवैमुनिगो
त्रसुताअरधंगधरीहै १० ॥

बन्दत देव अदेव याके अनुकूल शब्दनहीं है सिद्धि शि-
रोमणि कहिकै साधुसमूह इत्यादि नहीं कह्यो चाहिये
आतमभूत पुत्रकोनामहै काम कह्योचाहिये विरूप यह विशे-
ष नहींचाहिये औ गोत्रपर्वतको नाम ताकी सुता पार्वती गो-
त्रकी सुताकहे विरुद्धमति होतिहै ऐसे जानिये १० ॥

(अथ छंदविरोधीपंगु) दो० ॥ तोलततूलरहैनज्यों
कनकतुलातिलआधु ॥ त्योंहीछंदोभंगको सुनिनसकैअ
तिसाधु ११ ॥

ज्यों कनककीतुला आधतिल अधिकहोय तौ तूल बरोवरि
नहींरहै ११ ॥

(यथा) सवैया ॥ धीरजमोचनलोचनलोलविलोकि
कैलोककीलीकातिछूटी । फूटिगयेश्रुतिज्ञानकेकेशवआ
खिअनेकविवेककीफूटी ॥ छोड़िदईसरितासबकाममनो
रथकेरथकीगतिखूटी । त्योंनकरैकरतारउबारकज्योंचि
तवैवहवारवधूटी १२ ॥

लोकलीकति लोककी मर्यादा छोड़िदई सरिता सबकाम
याकोअर्थ कामने सरिता तीरंदाजी छोड़िदीनी शरवानराखै
सोशरी सखीसों सखी वचन है और पासजाने को मनोरथ
इन्हें नहीं रहयो त्योंन करै करतार उबारक ज्यों चितवै वह
वारवधूटी वह वारवधूटी वेस्थाने ज्यों जाहितरह चितयो है
तातरह करतार फेरि एकवारभी न करै वानेदेख्यो तासों इन-
की यह दशाभईहै सात भगन सवैयामें चाहिये ताको निर्वाह
नहीं है औ चौथीतुक नीकैनहीं १२ ॥

(अथ अलंकारहीननग्नवर्णनं) सवैया ॥ तोरितनी
टकटोरिकपोलनिजोरिरहेकरत्योंनरहौगी । पानखवाय
सुधाधरपानकै पायगहेतसहानगहौंगी ॥ केशवचूकसवै
सहिहौंमुखचूमिचलेयहपैनसहौंगी । कैमुखचूमनदैफि
रिमोहिंकिआपनीधायसोंजायकहौंगी १३ ॥

इहां वचनरचना नहीं सूधी बोलतिहै चमत्काररूपभूषण

नहीं तनी तोरिबो कर्पोलटकटोरिबो हेतु याते करजोरिबो है
सो हेतु मान हेतु अलंकारनिकरै है १३ ॥

(अथ अर्थहीनमृतक) सबैया ॥ कालकमालकरील
चुरीलतिशालविशालतिचालचलीहै । हालविहालति
तालतमालप्रवालकमालकबालललीहै ॥ लोलविलो
लकपोलअमोलकचोलकमोलकलोलकलीहै । बोलनि
बोलकपोलनिटोलतिगोलनिगोलकलोलगलीहै १४ ॥

अथ मृतक जामें अर्थनहीं निकरै काल इत्यादि अनर्थक-
तों पदको दोष है इन वाक्य समूहमें कह्यो १४ ॥

दो० ॥ अगननकीजैहीनरस अरुकेशवजतिभंग ॥

व्यर्थअपारथहीनक्रमकविकुलतजौप्रसंग १५ ॥

पांच दोष पीछे कहे अंध १ बधिर २ पंगु ३ नग्न ४ मृ-
तक ५ षटदोष फेरि कहत हैं अगन १ हीनरस २ जतिभंग ३
व्यर्थ ४ अपार्थ ५ हीनक्रम ६ ये ग्यारहदोष १५ ॥

दो० ॥ वर्णप्रयोगनकर्णकटु सुनहुसकलकविराज ॥

सबैअर्थपुनरुक्तिके छाड़हुसिगरेसाज १६ ॥

फेरि सात दोष कहत हैं कर्णकटु १ पुनरुक्ति २ देशवि-
रोध ३ कालविरोध ४ लोकविरोध ५ न्यायविरोध ६ आगम
विरोध ७ ये ग्यारह पीछे सात ये अठारह दोष जानिये कर्ण
कटु जो कानको उत्कटलागै ताको प्रयोग जोहै सो न वर्ण
मतिवर्णनकरै औशब्द पुनरुक्ति औ अर्थ पुनरुक्ति १६ ॥

दो० ॥ देशविरोधनवर्णिये कालविरोधनिहारि ॥

लोकन्यायआगमनके तजौविरोधविचारि १७ ॥

न्यायनीति आगमशास्त्र १७ ॥

(अथगनअगनवर्णन) दो० ॥ केशवगनशुभसर्वदा

अगनअशुभउरआनि ॥ चारिचारिविधिचारुमति गन
अरुअगनवखानि १८ ॥

शुभगन सगन आदि चारिविधिके सर्वदा अच्छेहैं अगन जो अनिष्टगन जगनआदि चारिविधिके ताको उर हृदय में अशुभ आनों हे चारुमति सुबुद्धि गनको अर्थ अच्छा औअ-शुभगन वखानों जहां चारि अक्षर पंचअक्षर के छंद हैं तहां सगनआदि शुभगनधरिये औ रगन सगन शत्रुहैं ताके आगे मित्रगनआवै ताको फलाफल नहीं कह्योहैं तहां बड़े छंद में भी रगनसगन आदिमें नहीं धरिये सगनआगे सगन नगन आगे नगन भगन आगे भगन यगन आगे यगन छः अक्षर में विचारिके धरिये छः अक्षरसों आगे विचार नहीं औ देव-तावाचक कल्याणवाचक शब्दमें तौ गनकोविचार औ शुभ अशुभ अक्षरको विचार नहीं इनते और ठौर मानुषी कवि-त्तमें द्विगुन विचारिये १८ ॥

दो० ॥ मगननगनभनिभगणअरुयगनसदाशुभजानि ॥
जगनरगनअरुसगनसुनितगनहिअशुभवखानि १९ ॥

चारि शुभ चारिअशुभ १६ ॥

दो० ॥ मगनत्रिगुरुयुतत्रिलघुमय केशवनगनप्रमान ॥
भगनआदिगुरुआदिलघुयगनवखानिसुजान २० ॥

तीनि जामें गुरुहोयैं सो मगन और स्पष्टहै २० ॥

दो० ॥ जगनमध्यगुरुजानिये रगनमध्यलघुहोय ॥
सगनअंतगुरुअंतलघुतगनकहैसबकोय २१ ॥

ऐसैं जानिये २१ ॥

दो० ॥ आठोगनकेदेवता अरुगुणदोषविचार ॥
छंदोग्रंथनिमेंकह्यो तिनकोबहुविस्तार २२ ॥

मही आदि २२ ॥

(अथगनदेवता) दो० ॥ महीदेवतामगनकी नाक
नगनकोदेखि ॥ जलजियजानहुयगनको चंदभगनको
लेखि २३ ॥

मही पृथ्वी २३ ॥

दो० ॥ सूरजजानहुजगनको रगनशिखीमयमान ॥

वायुसमुभियेसगनको तगनअकाशबखान २४ ॥

सगनको वायुदेवता कहूं कालदेवता कहतहैं २४ ॥

(अथगनमित्रामित्र) दो० ॥ मगननगनकोमित्रग
नियगनभगनकोदास ॥ उदासीनजतजानिये रसरिपु
केशवदास २५ ॥

रसको अर्थ रगन सगन २५ ॥

(अथगनागनफलाफल) छप्पै ॥ भूमिभूरिसुखदेयनी
रनितआनंदकारी । आगिअंगदिनदहैसूरसुखसोखैभा
री ॥ केशवअफलअकाशवायुकिलदेशउदासै । मंगलचं
दअनेकनाकबहुबुद्धिप्रकासै ॥ यहिविधिकवित्तसवजा
नियहुकर्त्ताअरुजाकेकरै । तजिप्रबंधसबदोषगनसदा
शुभाशुभफलधरै २६ ॥

भूमि बहुत किल निश्चय जैसे गनको नाम कह्योहै ताही
क्रमसों फलकह्यो चाहिये सो इहां नहींहै प्रबंध में दोषनहीं
है देवता वर्णनमें दोष नहीं २६ ॥

(अथद्विगन) दो० ॥ जोकहुंआदिकवित्तकेअ-
गनहोयबड़भाग ॥ तातेद्विगनविचारचित्तकीन्होवासु-
किनाग २७ ॥

अथ द्विगन विचार चाहिये तौ मगन इत्यादि के आगे मगन इत्यादि धरै जो आदि में अगन आवै तौ वाके आगे दूसरोगन अच्छो धरै मित्र आगे मित्र धरै किंवा दास आगे मित्र धरै जगन तगन अशुभ गनहैं औ उदास हैं कहूं कवित्त के आदि में आवै तौ ताके आगे यगन भगन दास है ताको धरै तौ जगन तगनको दोष मिटिजाय प्रभुता होय औ द्विगन जे शुभ कहै हैं ते शुभ ही हैं ऐसे और भी विचारि लीजिये २७॥

दो० ॥ मगननगनकोमित्रगन यगनभगननितदास ॥

उदासीनजतजानिये रसरिपुकेशवदास २८ ॥

कवित्त ॥ मित्रतेजुहोयमित्रवाढ़ैबहुबुद्धिरिद्धिमित्रतेजु दासत्रासयुद्धतेनजानिये । मित्रतेउदासगनहोतंगोतदुःखदौमित्रतेजुशत्रुहोयमित्रबंधुहानिये ॥ दासतेजोमित्र गनकाजसिद्धिकेशवदासदासतेजो दासवशजीवसनमा निये । दासतेउदासहोतधननासआसपासदासतेजो शत्रुमित्रशत्रुसोवखानिये २९ ॥

कवित्त ॥ जानियेउदासतैजोमित्रगनतुच्छफलप्रकट उदासतैजोदासप्रभुताइये । होइजोउदासतैउदासतौन फलाफलजोउदासहीतेशत्रुतो नसुखपाइये ॥ शत्रुतेजो मित्रगनताहिसोअफलगनशत्रुतेजो दासआशुबनिता नशाइये । शत्रुतेउदासकुलनाशहोयकेशवदासशत्रुतेजो शत्रुनाशनायककोगाइये ३० ॥

इहां गन कथन अप्रस्तुतईहै पिंगल में चाहिये ३० ॥

(गनागनकोउदाहरण) दो० ॥ राधाराधारमनकेमनपठ योहैसाथ ॥ उद्धवह्यांतुमकोनसोंकहोयोगकीगाथ ३१ ॥

राधाइति राधाने राधारमण श्रीकृष्ण तिनके साथ मनको पठायो है ३१ ॥

दो० ॥ कहौ कहांतुमंपाहुने प्राणनाथकेमिस्त ॥

फिरिपीछेपछिताहुगेउद्धवसमुभौचित्त ३२ ॥

कहाकहौ कहिवे मुआफिक नहीं कंसकी दासी कुवरी तासों आसक्तभये हैं ऐसी बात अपने मित्रकी सुनिकै पछिताहुगे मैं क्यों उपदेश करि निंदाकराई मित्रकी दोऊ दोहामें आठौगनआये कहूं एकगन दोयवारंभी आयोहै ३२ ॥

दो० ॥ दोहाहुहुंउदाहरण आठौंआठौंपाय ॥

केशवगनअरुअगनके समुभौबुद्धिसुभाय ३३ ॥

आठौ चरण में ३३ ॥

(अथगुरुलघुभेद) दो० ॥ संयोगीकेआदियुत बिंदुजुदीरघहोय ॥ सोईगुरुलघुऔरसबकहैसुकविसुनि लोय ३४ ॥

संयोगीके आदि गुरु जानिये बिंदुः अनुस्वार विसर्ग तासोंयुत गुरु जानिये ३४ ॥

दो० ॥ दीरघहूलघुकरिपढ़ै सुखहीमुखजिहिठौर ॥

सोईगुरुलघुऔरसबकहैसुकविशिरमौर ३५ ॥

दीरघभी लघुकरि पढ़े लघु होतहै सोवाही तरहसों लघुभी चरणके अंतमें गुरु होतहै औरसब जे कविशिरोमणि हैं ते कहतहैं ३५ ॥

(यथा)सवैया ॥ पहिलेसुखहैसबहीकोसखीहरिहीहि तकैजुहरीमतिमीठी । दूजेलैजीवनमूरअक्रूरगयोअंग अंगलगायअंगीठी ॥ अवधौंक्यहिकारणयेउठिधायेहैं

उद्धवलेकर भूँठिबसीठी । माथुरलोगनकेसंगकीयहवैठ-
कतोहिंअजौनउबीठी ३६ ॥

पहिले सुखदे हे साखि हरिने हमारी मीठी अर्थात् आछी
मतिको हरी अंगीठीसी गड़ी पूरव में वोरसी कहत हैं वसी-
ठीहू तपना पहिलीतुक तीसरीतुक पचीस पचीस आखरकी हैं
आठ सगन दायगुरुहोय सोसुखदा सवैयाको सखी इहांरगन
आयो दूसरी चौथी तुक तेईसतेईस आखरकी हैं तहां सात
भगन दाय गुरु अंतमें चाहिये दूजेले इहां सगण आयो औ
सुखदा इहांको शंकर करयो नहीं है अक्रूर इहां अकार उद्धव
इहां उकार संयोगीकी आदिहै गुरु जानिये एक अंगको लघु
पढ़योदूसरोअंगअनुस्वार सहितहैगुरुपढ़योऐसे विचारिये ३६ ॥

दो० ॥ संयोगीकीआदियुत कवहुंकवर्णविचारि ॥

केशवदासप्रकाशवशलघुकरिताहिनिहारि ३७ ॥

संयोगीकी आदिसोंकहूं लघुवर्ण युक्तहोय ताको छंदके
लिये लघु पढ़िलीजिये ३७ ॥

दो० ॥ अमलजुन्हार्चंद्रमुखि ठाढ़ीभईअन्हाय ॥

सौतनकेमुखकमलज्यों देखिगयेमुरभाय ३८ ॥

जुन्हार्च इहां नकार हकारको संयोगहै जुको लघु पढ़यो
ऐसे अन्हाय कमल ज्यों जानिये चंद्रमुख है याते सौतनके
मुख कमल कुम्हिलाने ३८ ॥

(अथहीनरसवर्णनं)दो०॥वर्णतकेशवदासरसजहांवि
रसहैजाय॥ताकवित्तसोंहीनरसकहतसवैकविराय ३९ ॥

जहां कोईकी उक्तिकरिविरस होय ३९ ॥

(रसिकप्रिया) सवैया॥ दैदधिदीन्होउधारहोकेशवदा
नकहाअरुमोललैखैंहैं । दीन्हैविनातौगईजुगईनगईनग

ई घर ही फिरि जै हैं । गोहित बैर कियो हित हो कव बैर कियो वर
नी के कैरै हैं । बैर कै गोर सबें चहुगी अहो वेंच्यो न वेंच्यो तो ढा
र न दै हैं ४० ॥

यह कवित्त रसिक प्रियामें दुःसन्धान को उदाहरण है एक
अनुकूल बोलै एक प्रतिकूल बोलै सो दुःसन्धान जहां दोऊ प्र-
तिकूल बोलै सो हीन रस नायक बोल्यो है दे दधि नायका वचन
कहा हमें उधार दीन्हो है तब नायक बोल्यो दान जगाति ना-
यका वचन तुम दही छीनिकै खाहुगे और कहा मोल लै खाहुगे
अवताई दीन्हे बिना तुम गई सो तो गई किंवा मैं गई करी
अर्थात् क्षमा करी अवतौ लै कर जान देहिं गे यह फलितार्थ नाय-
क वचन गोहित बैर कियो नायका वचन हित हो कव बैर कि-
यो वरनी के हैरै हैरै हैंगी तब नायक रोष करि प्रतिकूल बोल्यो
हमसों बैर करि अहो अहीरी गोर सबें चहुगी तब नायका प्र-
तिकूल बोली जो न वेंच्यो तों ढारि भी तौ न देहिंगी ऐसे लगाये
चौथी तुकमें बिरस भयो ४० ॥

(अथंजति भंग) दो० ॥ और चरण के वरण जहं
और चरण सों लीन ॥ सो जति भंग कवित्त कहि केशवदा
स प्रवीन ४१ ॥

और चरण के वरण और मात्रा और घरण सों मिली होय
सो जानिये ४१ ॥

दो० ॥ हर हरि केशव मदन मोहन घन श्याम सुजान ॥

ज्यों ब्रज बासी द्वारिका नाथ रटत दिन मान ४२ ॥

पाहिले छः मात्रा फेरि चारि मात्रा फेरि तीन मात्रा चाहि-
ये आधे दोहामें चौबीस मात्रा हैं मदन मोहन इहां चौथी मा-
त्रा पांचई मात्रा सों मिली है आगे तीन मात्रा की ठौर दोय

मात्राहें ज्यों जैसे ब्रजवासी रटतहैं तैसे द्वारकामें नाथ यहि नामको लोग रटतहैं यह मानों ४२ ॥

अथव्यर्थ दो० ॥ एककवित्तप्रबंधमें अर्थविरोधजुहो य ॥ पूर्वपरअनमिलसदा व्यर्थकहैसबकोय ४३ ॥

एक कवित्तमें और एक प्रबन्धमें पहिले ग्रन्थमें कछु और कह्यो वासों विरोधपरै ऐसीवात फेरिकही औ पूर्वपरको अर्थ नहींमिले ४३ ॥

अथछंदमरहटा ॥ सबशत्रुसंहारहुजीवनमारहुसजि योधाउमराव । बहुवसुमतिजीमोमतिकीजैदीजैआप नदाव । कोउनरिपुतेरोसबजनहेरोतुमकहियतुअतिसा धु। कछुदेहुमँगावहुभूखभगावहुहोपुनिधनीअगाधु४४॥

सब शत्रु संहारहु याको विरोधी जीव न मारहु जीवमारे बिना संहार नहींहोय अनमिलसजि योधा उमराव योधा उमरावको साजो फौज तय्यारकरौ तव शत्रुको मारौ ऐसेहोय तव अर्थको मेल सो नहीं है याते अनमिल पहिले चाहिये हमारो मतकरौ शत्रुनको आपने करिकै दावँ दगादेहु तव उनकी बहुत वसुमती पृथ्वीलेउ तुम्हें अतिसाधु कहियेहै जगत में देखो कोई तुम्हारो रिपुनहीं ऐसे चाहिये तुम अगाधधनी हो कछु मँगावो हमेंदेहु हमारी भूख भगावो ४४ ॥

(अपार्थलक्षण) दो० ॥ अर्थनजाकोसमुझिये ता हिअपार्थजानि ॥ मतवारोउनमत्तशिशु केसेवचनब खानि ४५ ॥

अर्थइति अपार्थ गयो अर्थजाको सो अपार्थ मतवारा मदिरादिकसों उन्मत्त वायु भूतसों शिशुबालकेसे वचन जहां घखानिये कहिये सो अपार्थ ४५ ॥

दो० ॥ पियेलेतनरसिंधुकहैं है अतिसज्वरदेह ॥
ऐरावतहरिभावतो देख्योगर्जतमेह ४६ ॥

हे नर तू सिंधुको पियेलेत है तेरी देह अतिसज्वर सहित
है हरि इंद्र ताको भावतो प्रिय ऐरावत हाथी तापर मेहको
गर्जत देख्यो इहां उन्मत्त केसे वचन हैं ४६ ॥

(अथक्रमहीन) दो० ॥ क्रमहींगुणनिबखानिकै गु
णीगनैक्रमहीन ॥ सोकहियेक्रमहीनजग केशवदासप्र
वीन ४७ ॥

क्रमसों गुननिको कहै तिन गुणीनकी वह क्रियाहोय ताकी
गणनामें क्रम नहीं रहै ४७ ॥

तोटकछं० ॥ जगकीरचनाकहिकौनकरी । किहिराख
नकीजियपैजधरी ॥ अतिकोपिकैकौनसँहारकरै । हरिजू
हरजूविधिबुद्धिरै ४८ ॥

कौनने राखिवेकी पैज प्रतिज्ञाकरी विधि हरिहर ऐसे चा-
हिये गुणीविषे क्रम नहीं है ४८ ॥

(अथकटुकर्णप्रयोग) दो० ॥ कहतननीकोलागाई
सोंकहियेकटुकर्ण ॥ केशवदासकवित्तमें भूलिनताको
वर्ण ४९ ॥

कहतकै अर्थ औ सुनतकै जो अक्षर नीको नें लागै शृंगार
में टवर्ग आदि सो कटुकहावै ताको वर्णन मतिकरौ अर्थ को
उदाहरण दियोहै अक्षर को नहीं ४९ ॥

दो० ॥ बारनवन्योवनावतन सुवरणवलीविशाल ॥
चढ़ियेराजमँगायकै मानौंराजतकाल ५० ॥

वारन हाथी तन शरीरके वनावसों वन्योहै शरीर बहुत
सुंदर लागैहै वारनविषे कालकी संभावना नीकी नहीं ला-

मे इहां अर्थ दोषहै जो बाकी पर्याय और शब्द कहिये दोष नहीं मिटै सो अर्थ दोष शब्द के फेरे दोष मिटै सो शब्द दोष ५० ॥

(अधपनरुक्ति) दो० ॥ एकवार कहिये कछू बहुरि जु कहिये सांय ॥ अर्थ होय कै शब्द अव सुनि पुनरुक्ति सु होय ५१

एकवार इति अर्थ किंवा शब्द ५१ ॥

सो० ॥ मघवा घन आरूढ़ इंद्र आजु अतिसोहिये ॥ ब्रजपरकोप्यो मूढ़ मेघदशौ दिशि देखिये ५२ ॥

मघवा घन इंद्र सो घन मेघपर आरूढ़ चढ़यो है तासों इंद्र शोभै है मघवा घन आरूढ़ सुतौ आजु अति सोहिये ऐसो चाहिये मघवा इंद्र घन मेघ इहां अर्थ पुनरुक्ति है शब्द पुनरुक्ति जानि लीजिये जल में मेघको प्रतिविंब परयो तासों दशौ दिशा कही है ५२ ॥

दो० ॥ दोष नहीं पुनरुक्तिको एक कहत कविराज ॥ छाँड़ि अर्थ पुनरुक्तिको शब्द कहौ इति साज ५३ ॥

एकहा अर्थ के शब्दसों जहां कहै अर्थ की पुनरुक्ति को छाँड़ै या साज ऐसी तरह शब्दको कहौ ५३ ॥

दो० ॥ लोचन पै नेशरन ते है कछु तो कहँ सुद्धि ॥ तन वेध्यो वेध्यो सुमन वेधी मन की बुद्धि ५४ ॥

सखी वचन नायकासों तनको मनको वेध्यो शब्दसों कस्यो दोष नहीं ५४ ॥

(अर्थ देश विरोध) दो० ॥ मलयानिल मनहर तह ठि सुखद नर्मदा कूल ॥ सुवन सघन घन सारमय तरवर तर लसु फूल ५५ ॥

नर्मदाके तटमें जो मलयको पर्वत ताको जो अनिलपवन
सो मनको जोरावरीसों हरै है पवनसों तरल चंचल जे तर-
वर वृक्ष ते घनसार कपूरमय हैं नर्मदाके तीरमें मलय चंदन
पवन नहीं है औ जहां चंदन है तहां कपूर नहीं कपूर तौ
कदली बनमें बरणातहैं याते देश विरोध ५५ ॥

दो० ॥ मरुसुदेशमोहनमहा देखहुसकलसभाग ॥
अमलकमलकुलकलितजहैं पूरणसलिलंतड़ाग ५६ ॥

मारवाड़में सलिल जलसों पूरण तलाव भरेहैं अमलकम-
लकुल सों युक्त हैं मरुको अर्थ जहां जल विन मरै सो मरु
कहावै तहां तड़ाग कमल कुल बरगैं याते देश विरोध ५६ ॥

(अथकालविरोध) दो० ॥ प्रफुलितनवनीरजरजनि
बासरकुमुदविशाल ॥ कोकिलशरदमयूरमधु वरषामु
दितमराल ५७ ॥

रजनी रातिमें कमल फूलै यह कालविरोध और स्पष्ट ५७ ॥

(अथकालविरोध लोकविरोध) दो० ॥ स्थाईवीर
शिंंगारके करुणाघृणाप्रमान ॥ ताराअरुमंदोदरी कह
तसतीसममान ५८ ॥

जाहि बारमें बीररस उपजैहै ताहि कालमें करुणा स्थाई
बरगैं तौ उत्साह स्थाई जातोरहै वीर रस नहीं होय जैसे
अर्जुनको भारतके समय आरंभमें औ शृंगारमें घृणा ग्लानि
बरगैं तौ वा कालमें शृंगार जातोरहै यह प्रमाण है तारा सु-
ग्रीवकी स्त्री बालिने लीन्हैं औ कितने रावणभयेहैं मंदोदरी
एकहीहै ताको सती पतिव्रतासमान कहनो लोकविरुद्धहै ५८ ॥

(अथन्यायआगमविरोध) दो० ॥ पूजैतीनोंवर्णज
ग करिविप्रनसोंभेद ॥ पुनिलीबोउपवीतहम पढ़िलीजै
सबबेद ५९ ॥

विप्रनिको भिन्नकरिकै तीनि वर्णको पूजै विप्रको कहा पूजै तीनि वर्णको पूजै जगतमें यह नीति विरोध किंवा नीतिवर्ण विप्रनिको भेदकरिकै पूजै फलाने कुल के ब्राह्मणको मति पूजा फलाने कुल के ब्राह्मणको पूजा ब्राह्मण सब पूज्य हैं यह नीति विरोध पहिले वेद पढ़े पीछे जनेऊ लेय यह शास्त्र विरोध दोऊमें भेद थोरोई है शत्रुको विश्वास करौ ऐसे नीति विरोध चाहिये शास्त्रसों बहुत विरोध न होय व्यवहारसों मुख्य विरोध होय सो नीति विरोध ५६ ॥

दो० ॥ इहिविधिऔरौ जानियहु कविकुलसकलविरोध ॥ केशवकहेकठूकअव मूढ़निकैअनुरोध ६० ॥

इतिश्रीमद्विविधभूषणभूषितायांकविप्रियायांकवित्त
दूषणवर्णननामतृतीयप्रभावः ३ ॥

विरोध तो कवि कुल जानहिंगे प्रसिद्ध है इहां मैं मूढ़निके अनुरोध चाहसों कछु कह्योहै कहूं पाठ अवरोध है मूढ़की मति याते नहीं पैठिसकै ६० ॥

इतिहरिचरणदासकृतायांकविप्रियाभरणाख्यायांकवि
प्रियाटीकायांतृतीयप्रभावव्याख्या ३ ॥

(अथकविभेदवर्णन) दो० ॥ केशवतीनिहुँलोकमें
त्रिविधकविनकेराय ॥ मतिपुनितीनिप्रकारकी वरणत
सबसुखपाय १ ॥

कविन के राय सरदार हैं ते कवि तीनप्रकार के औ मति
तीन प्रकार की १ ॥

दो० ॥ उत्तममध्यमअधमकवि उत्तमहरिरसलीन ॥
मध्यममानतमानुषनि दोषनिअधमप्रवीन २ ॥

मानस मानत याको अर्थ जो मनहीं को मानै जैसो मन में आवै तैसो बरणें सो मध्यम किंवा मनुष्यको मानै मनुष्य को बरणें जो दोष बरणें सो अधम २ ॥

(यथा) सवैया ॥ जोअतिउत्तमतेपुरुषारथजेपरमारथकेपथसोहैं । केशवदासअनुत्तमतेनरसंततस्वारथसंयुतजोहैं ॥ स्वारथहूपरमारथभोगनमध्यमलोगनिके मनमोहैं । भारथपारथमित्रकरयोपरमारथस्वारथहीन तेकोहैं ३ ॥

कोऊ भगवान्को भजन करैहै औ संसारको भी कारज करैहै सो औरन सों उत्तमहैं जे भगवान्के रसहीमें लीन हैं तिनहैं फेरि अतिउत्तम करि कहतहैं जो स्वारथ सों मिल्यो सो पुरुष जो भगवान् तिनके अर्थ तिनके लिये परमारथ परम श्रेष्ठ ऐसी जो मुक्ति ताके पंथमें शोभतहैं जो स्वारथ सों मिल्यो सो अनुत्तम कहिये मध्यम जैसो आपने मनमें आवै तैसोई बरणत हैं स्वारथ भी नहीं परमारथ भी नहीं मध्यम लोग नीचलोग मध्यम भाषामें नीचको भी कहत हैं ताको काहूकी निन्दाकरि राजी करंतहैं सो अधम कहिवेकोहैं ताको लक्षण कहत हैं भारथमें पारथ अर्जुन तिनको मित्र श्रीकृष्ण ने करयो है स्वारथभी नहींसार्धे परायेकी निन्दाहीकरें वे पुरुष कौनहैं नहींजानिपरै अधमाधम हैं ३ ॥

(अथकविरीतिवर्णन) दो० ॥ सांचीवातनवरणहीं भूठीवरणैंवानि ॥ एकनिवरणैँनियमकै कविमतित्रिविधबखानि ४ ॥

सांची वातानिको वरणत हैं औ झूठीवात वरणिवे की
वानिहै औ एकको नियमकरि वरणतहैं जहां जौनको वरएँ
तहां त्रिविध वरणतहैं ४ ॥

(सत्यवर्णन) दो० ॥ केशवदासप्रकाशवश चन्दन
केफलफूल ॥ कृष्णपक्षकीजोद्वज्योंशुक्लपक्षतमतूल ५ ॥

चन्दनके फूल फल सांचहैं औ प्रकाश केवशकरि प्रकाश
की अपेक्षाकरिके जितनी कृष्णपक्षमें चांदनी है ताहीकी व-
रोवरि शुक्लपक्ष में अन्धकार है यह सत्यहै किंवा प्रकाशवश
जो चन्दनके फूल फल न होयें तौ चन्दनको प्रकाश उत्पत्ति
कहांसों होय ५ ॥

(भूठवर्णन) दो० ॥ जहँजहँवरणतसिंधुसब तहँतहँ
रत्ननिलैषि ॥ सूक्ष्मसरवरहूकहैं केशवहंसविशेषि ६ ॥

जहँ जहँ इति स्पष्ट ६ ॥

दो० ॥ लेनकहैभरिमूठितमसूजनिसियनिवनाय ॥
अंजुलिभरिपीवनकहै चन्द्रचन्द्रिकापाय ७ ॥

तम अन्धकार सुईसोंवनाय अच्छीतरह सियोंजाय औ
कवि जो नेम यमसों वरणत हैं सो आगे कहेंगे ७ ॥

दो० ॥ सबकेकहतउदाहरण वादैग्रंथअपार ॥ कहूँ
कहूँतातेकह्यो कविकुलचतुरविचार ८ ॥

(तमकोउदाहरण) कवित्त ॥ कंटकनअटकैनफाटत
चरणचापिवाततेनजातउड़िअंगनउधारिये । नेकहूँन
भीजतमुशलधारवरषत कीचनरचतरंचचित्तमेंविचा-
रिये ॥ केशोदाससावकासपरमप्रकासनउसारियेपसारि-
येनपियपैविसारिये । चालियेजूओड़िपटतमहींकोगाढ़ो
तनपातरोपिझौराश्वेतपाटकोउतारिये ९ ॥

सावकास याको अर्थ या पटको कोई रोकनवाला नहीं जहाँ जाइ तहाँहीं श्वेत पिछौराहै काहूकी नजरमें आवैगो याते सखा उतरावै है और पोशाक श्यामहै जानिपरैहै बड़ो जाको प्रकाश पसरिबोहै याते तमकोपट ओढ़िचलिये ६ ॥

(चन्द्रिकाकोउदाहरण) कवित्त ॥ भूषणसकलघनसारहीकेघनश्यामकुसुमकलितकेशरहीछाबिछाईसी । मोतिनकीलरीशिरकंठकंठमालहार औररूपज्योतिजातहेरतहिराईसी ॥ चन्दनचढ़ायेचारुसुन्दरशरीरसवराखी शुभशोभासबबसनवसाईसी । शारदासीदेखियतदेखौ जायकेशौरायठाढीवहकुवैरिजुझाईमेंअझाईसी १० ॥

भूषण इति मिथ्या वर्णनकेलिये घनसारहीके भूषण घनसारहीके बनाये फूल तासों कलित युक्तकेश औ मोतिनकी लरी शिरपै मोतिनकी लरी आदि और भी जे भूषण हैं ते सब अंगके रूपकी ज्योतिमें हेरतके निहारतके हिराई सो होतिहै भूषणकी ज्योति नजरि नहींआवै चन्दनको वस्त्र वतायो सो झूठ औ चांदनीमें स्नान १० ॥

(अथकविनियम) दो० ॥ वरणतचन्दनमलयहीहि मगिरिहीभुजंपात ॥ वरणतदेवनचरणते शिरतेमानुष गात ११ ॥

काश्मीर देशमें भोजपत्र सों घरढावतेहैं तौभी हिमालय हीमें वरणतहैं ऐसे नियम जानिये ११ ॥

दो० ॥ अतिलज्जायुतकुलवधू गणिकागतिनिर्लज्ज ॥ कुलटनिसोंकोबिदकहत अंगअलज्जसलज्ज १२

अति इति स्पष्ट १२ ॥

दो० ॥ वरणतनारीनरनते लाजचौगुनीचित्त ॥ भैं

खट्विगुणसाहसङ्गुण कामआठगुणमित्त १३ कोकि
लकोकलबोलिवो वरणतहंसधुमास ॥ वरषाहीहरपित
कहे केकीकेशवदास १४ दनुजनिर्दितिसुतनिसों
अमुरेकहतवखानि ॥ ईशशीशशशिवृद्धिकी वर्णतवाल
कवानि १५ ॥

वरणन वकोकिल इति स्पष्ट १३ । १४ ॥

दनुज कश्यपकी स्त्री तासों उपजे सो दानव औ दितिसों
उपजे सो दैत्य वृद्धिहूकी तिथिमें महादेवके माथेमें चंद्रमाहै
ताको बाल कहत हैं कहूं वृद्ध ऐसो पाठ है तहां वृद्ध बहुत
काल के शशिको बालक कहतहैं १५ ॥

दो० ॥ सहजशृंगारतसुंदरी यदपिशृंगारअपार ॥
तदपिवखानतसकलकवि सोरहईशृंगार १६ ॥

सहज इति स्पष्ट १६ ॥

(सोरहशृंगार)क० ॥ प्रथमसकलशुचि १ मज्जन २
अमलवास ३ जावक ४ सुदेशकेश पासनिसुधारिवो ५
अंगराग ६ भूपण ७ विविधमुखवास ८ राग ९ क-
ज्जल १० कलितलोललोचननिहारिवो ११ बोलनि १२
हंसनि १३ चितचानुरी १४ चलनिचारु १५ पलपल
प्रतिपतिव्रतप्रतिपारिवो १६ केशोदाससविलासकरहु
कुवैरिराधे इहिविधिसोरहशृंगारनिशृंगारिवो १७ ॥

सकल शुचिस्नान आदि १ मज्जन उवटना २ अमल
वस्त्र ३ जावक ४ केशकी रचना ५ अंगराग केशरि आदि ६
औ भूपण अनेक तरह के ७ मुखवास पानलवंग आदि ८
राग मेंहदी औ दाँत आँठको रंगिवो ९ औ कज्जल १०
औ चंचल नेत्रनिसों देखिवो ११ बोलनि रसीली १२ औ

हँसनि १३ औ चित्तकी चतुराई १४ औ चारु चलनि १५
औ पतिव्रता के धर्म को पालन करनी १६ परकीया के प्रेम
को प्रतिपालन करनी परकीया को लक्षण बहुत ग्रंथन में है
आपने पतिसों रति नहीं परपतिहीसों रति सा परकीया औ
जो पतिसों औ उपपतिसों समान प्रेम होय सोतौ सामान्या १७

दो० ॥ कुलटाको पति प्रेमवश बारवधुन को दान ॥
जाहि दर्इ पितु मातु सो कुलजा को पति मान १८ ॥

... कुलटाको और बारवधूको पतिको नियम नहीं कोई ना-
यक जो प्रेमसों वश होय तो वाको लोग कुलटाके पति और
बारवधूके पति कहत हैं किंवा कुलटाको कौन ऐसा पति है
जो प्रेमसों वश होय वो तो अनेक घरफिरै और बारवधूके
ऐसे जानों यह दोहा बहुत पुस्तकनमें नहीं है १८ ॥

दो० ॥ महापुरुषको प्रगट ही वरणतटुषभ समान ॥
दीपथम्भगिरिगजकलश सागरसिंह प्रमान १९ ॥

बड़े आदमीको वृषभ आदि कहत हैं १९ ॥

(यथा) कवित्त ॥ गुणिलिणैवैरागरधीरजको सागर
उजागरधवलधरिधर्मधुरधायेजू । खलतरु तोरिवेकोरा
जैगजराजसम अरिगजराजनिको सिंहसम गायेजू ॥ वा
मिनको वासदेव कामिनको कामदेव रणजयधम्भरामदेव
मनभायेजू । काशीकुलकलशवृद्धजम्बूदीपदीपकेशों
दासको कलपतरु इन्द्रजीत आयेजू २० ॥

गुणरूप जो मणि ताको वैरागर कहिये खानि है औ धीमज
को समुद्र है औ उजागर सब देशमें प्रसिद्ध है औ धवलवृ-
षभ है धर्म को धुर भारधरिकै स्वर्गत धाये हैं धवल वृषभ को
कहत हैं प्रमाण सोतिन सरिततीर गाराके गसाई टेटे धारा

अहिचक्षुषो जहां पावं थिरना रहै किंवा धवल उज्ज्वल निर्मल
जो धर्म ताको धर भारधर्गिके ध्वनिमें नृपम वामजवक्र आप
नेधर्ममें नहीं चले ताके मारिवेको वामदेव शिख हैं २० ॥

दो० ॥ नृपमकंधस्वरमेघसम भुजधुजअहिपरमा
न ॥ उरसमशिलाकपाटअंग औरत्रियानिसमान २१ ॥

पुरुषको मेघ सां स्वर वरणिये भुजाको ध्वजसम सर्पसम
कहिय उर द्वार्ता कपाटसम शिलासम कहिये और अंग नेत्र
आदि स्त्रीकं पुरुष के सम वरणिये २१ ॥

कवित्त ॥ मेघज्योंगंभीरवाणीसुनतसखाशिखीनसु
खअरिउरनिजवासेज्योंजरतहैं । जाकेभुजदण्डभुवलो
ककेअभयध्वजदेखिदेखिदुर्जनभुजंगज्योंडरतहैं ॥ तो
रिवेकोगढ़तरुहोतहैं शिलास्वरूपराखिवेकोद्वारनिकियाँ
रज्योंअरतहैं । भूतलकोइन्द्रइन्द्रजीतराजैयुगयुगकेशौ
दासजाकेराजराजसोकरतहैं २२ ॥

इतिश्रीमद्विविधभूषणभूषितायांकविप्रियायांकवि
व्यवस्थालंकारवर्णननामचतुर्थप्रभावः ४ ॥

मेघ सरीपी जो गंभीर वाणीहै ताको सुनिकै सखा जे हैं
शिखी मोर सां सुखपावतहैं अरिके उरनिका जवासनिका
तरह जारतहैं यह अर्थ भुजको सर्प समान देखिकै दुर्जनडर-
तहैं जाको वक्षस्थल गढ़तरुवटोंगढ़ तोरिवेको शिला स्वरूप
होतहैं तोरिवेको गढ़ उरहोतहै शिलास्वरूप ऐसो भी पाठहै
आपन गढ़का दरवाजा राखिवेको कपाटसों अढ़है भूतलको
इंद्र इंद्रजीत युग युगराजे २२ ॥

इतिश्रीहरिचरणदासरुतायांकविप्रियाभरणाख्यायां
चतुर्थप्रभावव्याख्या ४ ॥

(अथकवितालंकारवर्णन) दो० ॥ यदपिसुजानिसु
लक्षणी सुवरणसरससुवृत्त ॥ भूषणविनुनविराजई कवि
तावनितामिच्छ १ ॥

कवीश्वरन जो बात ठहरायराखीहै सोभी कविताकोभूषणहै सो दिखावैहैं हे मित्र भूषण विना कविता औ वनिता न सोहाति है कविता कैसी है सुजाति है सुंदर जामें जाति तरहहैं जो अनुप्रास लैचलै ताको कहूं भंग न होव औ सुलक्षणी सुंदर जामें लक्षणा है लक्षणासों अर्थ चमत्कारहोतहैं खैचिकै जामें लक्षणा न करनी परै किंवा सुंदरीतगह जामें रस अलंकार के लक्षण लागतहैं फेरि सुवरण सुंदरजामें रस के अनुकूल वरणअक्षर हैं फेरि सरस शृंगारवीर आदि जामें रसहैं सुवृत्त सुंदर जामें रसके अनुकूल वृत्तछंदहैं यथा शृंगार रसमें सवैया मनहरणआदि और वीरमें उद्यत भुजंगी छप्पय मोतीदामआदि भूषण उपमाआदि वनितास्त्री कैसीहै सुजाति उत्तम कुलकीहै औ सुलक्षणी अर्थात् सासुद्रिकानुसार सुन्दर जाके लक्षणहैं औ सुवरण सुन्दर जाको वरणरंगहैं औ सुवृत्त सुन्दर जाकी वृत्तबात है कोई जाकी निंदानहींकरत सब तारीफ़ करतहैं १ ॥

दो० ॥ कबिनकहेकवितानिके अलंकारद्वैरूप ॥ एक कहैंसाधारणैं एकविशिष्टस्वरूप २ ॥

कबिन इतिस्पष्ट २ ॥

(अथसामान्यालंकारवर्णन) दो० ॥ सामान्यालंकारको चारिप्रकारप्रकास ॥ वर्णवर्ण्यभूराजश्री भूषणके शवदास ३ ॥

एकवर्णराग सो आगे कहेंगे औ दूसरो वर्ण्य जाको वर्णन

करिये नीलगे भू चौथो राजश्रीभूषण बहुत ठौर रहै सो सामान्य सामानको अर्थ जाति उपमादि विशेषः ३ ॥

(अथवर्णात्मकार) दो० ॥ श्वेतपीतकरेअरुण धूम रनीलवर्ण ॥ मिश्रितकेशवदासकहि सातभांतिशुभ कार्य ४ ॥

मिश्रितचित्ररंग शुभके करनवाले श्वेतरंग अनेक विषे हैं याते सामान्य ४ ॥

(अथश्वेतवर्णन) दो० ॥ कीरतिहरिहयशरदघन जोहजरासंदार ॥ हरिहरहरगिरिसूरशशि सुधासौध घनसार ५ ॥

हरिहयनाम इन्द्रको जरा बुढ़ाई हरिचिष्णु किंवा कपिल-देव किंवा श्वेतवाराह कोई २ पुराण में हरिको भी श्वेतकह्यो है (यथा) नंदजीसां गर्गसुनिकेवचन ॥ शुक्लोरक्तस्तथापीतइ दानीकृष्णतांगतः याकोअर्थ शुक्लरूपभीहैं लालरूपभीहैं पीत रूप भीहैं अब कृष्णभये हैं श्रीभागवत है हरमहादेव हरगिरि कैलाश सौधचूनालगायोघर घनसारकपूर ५ ॥

दो० ॥ बलवकहीराकेवरोकौड़ीकरकाकांस ॥ ऊंट कांचलीकमलहिससिकताभस्मकपास ६ ॥

बलदेवजी करकामेघसां जो पत्थरपरें जिन्हें ओलाकहत हैं ओ कांसपूरवमें कसौजा कहतहैं कांचलीसर्पकी कमलपुंडरीक किंवा कुमुद सिकतारेत ६ ॥

दो० ॥ खांडहाड़निर्भरचवैरचन्दनहंसमुरार ॥ छत्र सत्ययुगदूधदधिशंखसिंहउड़मार ७ ॥

निर्भरभरना मुरारकमल की जर गौसिंह श्वेतहै उड़मार

क्षीरसमुद्र उड़मालाको किंवा उर्मिमाली को अपभ्रंश शब्द उड़मार कहत हैं उड़पतारा की माला समूह है जामें ऐसे जानिये ७ ॥

दो० ॥ शेषसुकृतिशुचिसत्वगुणसन्तनकेमनहास ॥
सीपचूनभोंडरफटिकाखाटिकाफेनप्रकास ॥

शुचिपवित्रवस्तु किंवा शुचिनाम श्वेतको है शेषको शुचि श्वेतवर्णिये सुकृति पुण्य श्वेतवर्णिये खटिकाखरी किंवा खाट भी श्वेत वर्णिये है खट्टिका को खटिकाअपभ्रंश ८ ॥

दो० ॥ शुक्रसुदर्शनसुरसरितवारणवाजिसनेत ॥
नारदपारदअमलजलशारदादिसवश्वेत ९ ॥

शुक्रग्रह औ श्री सुदर्शनचक्र और सुरसरित श्रीगंगाजी औ सुरको वारणहोती ऐरावत औ सुरकोवाजी उच्चैश्रवाइति सहित श्वेत वर्णिये औ अमलजल निर्मलजल औ शारदा सरस्वती औ शरदश्चतु ऐसे जानिये ९ ॥

कवित्त ॥ कीन्हेछत्रक्षितिपतिकेशवदासगणपतिद
सनवसनवसुमतिकह्योचारुहै । विधिकीन्होंआसनशरा
सनअसमसरआसनकोकीन्होंपाकशासनतुपारुहै ॥ ह
रिकरीसेजहरिप्रियाकरोनाकलोती हरकरथोतिलकह
राहूकरथोहारुहै ॥ राजादशरथसुतसुनोराजारामचन्द्र
रावरोसुयंशसवजगकोशृंगारुहै १० ॥

हे श्रीरामचन्द्र तुम्हारे सुयंश सन्पूरण जगत को शिगार भूषण है क्षितिपति राजाओंने छत्रधियो जो सत्रके ऊपर राजत है छत्र श्वेत जानिये वसुमती पृथ्वीने वसनवन्त्र कीन्हों अर्थात् समुद्ररूप सागरावरी भूमिको नाम है अत्समसरकाम ताको धनुष श्वेतहै पाकशासन इंद्र आपने आसनको चटिये

को नुपार घोडा कियो है उज्जेश्रवा हरिकी सेजनागद्वेत है हरि प्रिया लक्ष्मीजा तिनने नाकमें पहिरिवेको मोतीकरयो है भस्म अंन है नाको हर ने तिलक कियो है हरापार्वती तिनने हार कियो है सब जग को शिंगार है तीनहुं लोकको भूषित करत है जो कोई यश कहन है सो आओ लागत है १० ॥

(पुनः) देह द्युति हलधर कीन्हों निशिकर कर जग करवा पाविस विमल विहार है । मुनिगण मनमानि द्विजन जनेऊ जानि शंख शंख पानि पानि सुखद अपार है ॥ केशवदास जे विलास विलसै विलासिनी न सुख मुख मृदु हास उदय उदार है । राजादशरथ सुत सुनौ राजाराम चन्द्ररावरो सुयश सब जग को शंगार है ११ ॥

हलधर श्रीवलदेवजी तिनने आपनी देहकी द्युति करी है निशिकर चंद्रमान कर किरण किये हैं जग कर ब्रह्मा तिनने विमल निर्मल चारु सुंदर बाणी सरस्वती को करी है मुनिगण के मन उज्ज्वल जानो औ जनेऊ भी उज्ज्वल जानो शंख पाणि नारायण तिनके पाणि हाथ ता में शंख विलास सहित जे विलासिनी न्या जा समय में नाचकसों विलास करै हैं तास समय में विशेष करिके लसै हैं सो है है सुखसों सुखमें मृदु हासको उदय विलासिनी केसी है उदार है निपुण है विलास में प्रवीण है तेममें उदार नाम प्रवीणको औ दाताको औ बड़े को ११ ॥

कवित्त ॥ नारायण कीन्ही मनि उर अवदात गानिक म लार्क वीणी भनि शोभा शुभसार है । केशव सुरभि केशशा रदा मुदेश वेश नारद के उपदेश विशद विचार है ॥ शौनक ऋषा विशेखि सार पशिखानि लेखि गंगा की तरंग देखि विमल विहार है । राजादशरथ सुत सुनौ राजाराम चन्द्ररावरो सब जग को शंगार है १२ ॥

श्रीरामचंद्रजी के सुयशको श्रीनारायण मणि कीन्हीं हे
उर छाती ताको अवदात गौरवर्ण जानिये मणिको छातीको
एक रंग मिलैहै याते इनके मतमें नारायण श्वेत जानिये
कौस्तुभ पीत है कोई और मणि लीजिये कमलाकी वीणा
प्रसिद्ध नहीं इनके मतमें उज्ज्वल मणिकहौ किंवा कमलाकी
जो वीणा सो वीणाके मधुर स्वरसी जो भनि कहिये ध्वनि
शब्द वाणी सो उज्ज्वल है कहूं कमलाकी वाणी भनि ऐसो
पाठहै शारदादिहै आदि पदसों वचन भी लीजिये शौनक
आदि जे वृद्ध वृद्ध विशेष श्रुतिहैं तिनके शिरविषे शिखा है
सोभी उज्ज्वल तुम्हारो यश है १२ ॥

(अथजरावर्णन)सवैया ॥ विलोकिशिरोरुहश्वेतसमे
ततनूरुहकेशवयोगुणगायो । उठेकिधौं आयुकिधौं
केअंकुरशूलकिसुखसमूलनशायो ॥ लिख्योकिधौंरूप
केपाणिपराजयरूपकोभूपकुरूपलिखायो । जरासरपंज
रजीवजरयोकिजराजरकंवरसोंपहिरायो १३ ॥

शिरोरुह माथेके केश समेत तनूरुह शरीरके रोम तिनको
श्वेत विलोकिकै केशव कविने यातरह वाको गुण कह्योहै केश
की उत्प्रेक्षा करत है केशव कवि किधौं शूलहै जानों मूलस-
हित सुख नष्टभयोहै शूल यौवनके सुखको वेधिकरि निकरेहै
किधौं रूपको जो भूपहै यौवन समय में श्रेष्ठरूपहै ताने कुरूप
जो कोई भूपहै तासों रूपके पाणिसों पराजय लिखाईहै रूप
को भूप हारयो यह अर्थ किधौं विधाताने जरानुड़ाई रूप जो
है सरपंजरको पीजरा तामें जीवको जरयोहै रोक्काहै किधौं
जरारूप जो जरकंवररूपा को वस्त्र जरनाम रूपाचौ सोनाको
सो पहिरायोहै किंवा जरानेज्वररूप जो कंबलहै तो पहिरायो
है वृद्धतामें ज्वरहोतहै जाको बहुत दिन ज्वररहै है तो दवंत
होय जात है १३ ॥

सर्वेया ॥ अभिरामसचिक्रण्डयामसुगन्धकेधाम
हुनेजेसुभायकके । प्रतिकूलभयेदुखशूलसर्वैकिधौंशाल
शृंगारकेधायकके ॥ निजदतअभूतजराकेकिधौंअफता
नीजणजनुत्तायकके । सितकेशहियेग्रहिवेशलसेजनु
रायकअंतकनायकके १४ ॥

जे अनुकूलयं केश ते प्रतिकूलभये विरुद्धभये जे नेत्रनिको
आच्छेदागंध ते नेत्रनिको शूलभये किधौं शृंगारको जो कोई
घातक मारणहारहे ताके शाल शस्त्र विशेष हैं शाल मत्स्य
मारिवेकां शस्त्र हेमनानार्थमेंहैं पूरवमें सरहथ कहतहैं जराके
लायक योग्य अफतालीहैं केकां अन्वय जरासों किंवा के पाद
पूरणार्थ जो आमिलके आगेजाय पहिले अमलकरै सो अफ-
ताली कहावे १४ ॥

सर्वेया ॥ लसैशितलोमशरीरसर्वैकिजरायशरूपके
पानीतिखायो।त्यरूपकोदेशउदासकीकीलनिकीलितकै
किंकुरूपनशायो ॥ जरैकिधौंकेशवव्याधिनिकीकिधौंओ
पिकेअंकुरअन्तनपायो।जरासरपंजरजीवजरचोकिजरा
जरकंदरसोंपहिरायो १५ ॥

सुंदररूपको देश ठिकाना जो था ताको उदास उद्वेगरूप
जो कीलमेख तासों कीलिके बांधिके जैसे गांवकीलहै मंत्रसों
मेखगाइहै नाहर उहां नहीं आवै रूपको नशायो नष्ट कियो
कुरूप बजायो एता भी पाठहै तहां जराने कुरूपको बसायोहै
आर अर्थ वेमेही व्याधिनिकी जरमूलहै किधौं आधि मनको
दुःख ताको अंकुरहै सो कैसेहै जाको अंतनाम स्वरूप कोहै
सो नहीं पायो नहीं जान्योहै किंवा अंत नाशकोहै सो जाको
नहीं पायोहै दिनदिनमेंवढेहै किंवाजाको अंतनहींपायोहै १५॥

(अथर्षानवर्णन) दोहा ॥ हरिवाहनविधिहरजटाह

राहरदहरताल ॥ चंपकदीपकवीररससुरगुरुमधुसुरपा
ल १६ ॥

हरि बाहनं गरुडं हरो महादेवकीखी पार्वती कहूं हरि भी
पाठहै तहां भी पार्वती मधुमहुवा जानिये मधुकपांडुर रघुवंश
में है याको अर्थ महुवा सो पीतकुच सुरपाल इंद्र याको अर्थ
ऐसे भी केतन्योलोग वरणतहैं सुरदेवता औ पाल जो वस्तु-
पालमें डारिये आंच पान इत्यादि सो पीतहैं याते भूमिकी
तरह पालको रंग पीत है १६ ॥

दो० ॥ सुरगिरिभूगोरोचना गंधकगोधनभृत ॥ चक्र
वाकमनाशिलसदा द्वापरवानरपूत १७ ॥

सुरगिरि सुमेरु भूकहिये भूमि अंकुर पीत निकरे है याते
औ गोमूत्र मनशिल हरताल की तरह होत है औ वानरको
बच्चा १७ ॥

दो० ॥ कमलकोशकेशववसन केशरिकनकसभाग ॥
सारोमुखचपलादिवस पीतरपीतपराग १८ ॥

श्रीकृष्णकेवल्य हे सभागकवि सारोभैनाको मुख १८ ॥

सवैया ॥ मंगलहीजुकरीरजनीविधियाहीतेमंगली
नामधरयोहै । दूसरेदामिनिदेहसवाँरिउड़ाचढ़ईधनजा
यवरयोहै ॥ रोचनकोरचिकेतकीचंपकफूलमेंअंगसुदास
भरयोहै । गौरीगुराईकोमैलमिलैकरहाटकके करहाटक
रयोहै १९ ॥

मंगल शुभ ताहीकेलिये विधाताने रजनी हृदको बनाई
है गौरीकी गुराई को मैलमिलाय कै विवाहादि में चढ़ायनहैं
मंगली नाम धरयोहै फेरि गौरीकी गुराईके मैलसों दामिनी
की देहरचीहै निकम्मी जानि उड़ायढ़ई फेरि मैलसों रोचन

को रचे औ केतकी चंपक फूलनमें अंगको सुवास भी धरयो
हे गोरीकी गोरार्डके मेलको निलायकरि हाटकसों ताको औ
करहाटक के बीचमें होतहै जामें बीजरहतहै हाटकसे ले कर
हाटक ऐसो भी पाठहै हाटकसों लैंकै करहाटकताई और भी
जे पानवस्तु के समूहहैं ताहि कह्योहैं लै यह शब्द आरम्भ
वाचकहै जैसे ब्राह्मणसों ले जितने वर्ण आये तिन्हैंहि दिये
ऐसे जानिये १६ ॥

(अथकृष्णवर्ण) दो० ॥ विंध्यवृक्षआकाशअसिअ
जुनखंजनसाँप ॥ नीलकंठकेकंठशनि व्यासविसासी
पाप २० ॥

विंध्यपर्वत वृक्षतमालआदि असितरवारि औ साँप नील
कंठ मोर किंवा महादेव तिनकोकंठ शनि शनैश्चर श्रीव्यास
देव जी विमासी विश्वास देकरि दगाकरै सो जानिये औ
पातक २० ॥

दो० ॥ राकसअंगलँगूरमुख राहुछांहमदरोर ॥ र
मचन्द्रबलद्रोपदी सिंधुअसुरतमचोर २१ ॥

राहुग्रह औ छांह छाया मद मदिरा रोरदरिद्रता सूरदास
जीको पद लुदामाको वर्णन । रोरके जोरते शोरधरणी कियो
गयो द्विज द्वारिका पठायो इहां रोर दरिद्रकोलियो औ घन
मेघ विंधुनमुद्र की मूर्तिजोहै सो श्याम है ऐसे कहत हैं जल
तप देन कितन्यों कहतहैं उरमार समुद्र कह्योहैं तहां क्षीर
समुद्र नेदकियोहै राकसअसुर अंधकार औ चोर ये सब कृ-
ष्णवर्ण हैं २१ ॥

दो० ॥ जम्बूयमुनातैलतिल खलमनसरसिजचीर ॥
भीलकरीवननरकमासि मृगमदकज्जलनीर २२ ॥

जम्बू जामुनि खलदुष्टको मन सरसिज नीलोत्पल औ चीर

चीड़ कहावतु हैं पैगूकी जाति लुगाई पहिरति है कज्जल नीर
कांजलोंको जल मसि पाछे कहीहै फेरि कज्जलनीरकह्यो के-
जलनीर ऐसो कोईपढ़तहै ऐसोअर्थकरिये र ल एकहै जलनील
सैवाल जानिये २२ ॥

दो० ॥ मधुपनिशाशृंगाररस कालीकन्याकोल ॥
अर्पयशःक्षकलंककलि लोचनतारेलोल २३ ॥

मंत्रादिक सों मारणकेलिये करै सो कृत्या कोलसुवर औ
लोचन के तारे औ लोल जो बहुततृष्णाकरै लोभी लोल च-
चलको नाम औ तृष्णाकरै ताको नाम २३ ॥

दो० ॥ मारगअगिनिकिसालनर लोभद्योभदुखमो
ह ॥ बिरहयशोदागोपिका कोकिलमहिपीलोह २४ ॥

आगिकोपथ जहांआगिलगिजाय तहां कालोपरिजात है
श्रीयशोदाजी को श्यामरंग है २४ ॥

दो० ॥ काँचकीचकचकाममल केकीकाककुरूप ॥
कलहक्षुद्रलआदिदै कारेकृष्णस्वरूप २५ ॥

केकीमयूर और कुरूपजाको बुरोरूपहोय सोजानिये २५ ॥

कवित्त ॥ वैरिनकेबहुभांतिदेखतिहीलागिजातका
लिमांकमलमुखसवजगजानीहै । यत्नअनेककरियद
पिजनमभरिधोवतहूछूटतिनकेशवंधखानीहै ॥ निजदल
जागैज्योतिपरदलदूनीहोति अचलाचलतियहअकहक
हानीहै । पूरणप्रतापदीपअंजनकीराजैरेखराजतश्रीरा
मचन्द्रपानिनिरूपानीहै २६ ॥

राजत श्रीरामचन्द्र पानिनिरूपानीहै पानिनिकोअर्थ पानि
जामें रहै सो पानेन ऐसी रूपानी तरवारि श्रीरामचन्द्र
की राजतिहै कहूं पानिमें रूपानी ऐसो भी पाट है कैसीतर-

वारिहें जाहि तरवारिके देखनेहीं करि वारिनके जे कमलसमान
 मुग्वहें तामें बहुततरहसों कालिमा स्याही लागिजातिहै औ
 रगसों जीतिके कमलसों प्रफुल्लित मुखहोयरह्योहैं सबपदनि
 की जो ध्वनिकादिये तो ग्रंथ बहुतवाढ़े तरवारि जब काढ़तहैं
 तब निजदलमें ज्योति जागतिहै परदलमें शत्रु भूपतिकीरत
 नयेचपेपरें हैं तब प्रतिविम्बसों दूनी होति हैं अचला भूमि
 लक्षणाकरि अचलावासी शत्रु सो चलायमानहोत हैं भाजत
 हैं अचलाचले यह विरोधाभासहै कहानी कथा सो अकह है
 कहा नहींजात फेरि कैसीहै पूरण जो प्रताप सोईहै दीप ताके
 अंजन की रेखा राजतिहै तरवार अंजन श्यामकहे २६ ॥

कवित्त ॥ हंसनिकेअवतंसरचेरंचकीचकरिसुधासों
 सुधारेमठकाँचकेकलससों । गंगाजूकेअंगसंगयमुनात
 रंगवलदेवकोवदनरस्योवारुणीकेरससों ॥ केशवकपा
 लीकंठकालकूटकट्टजैसे अमलकमलअलिसोहैंशशिस
 ससों । राजारामचन्द्रजूकेत्रासवशभारेभूपभूमिछोंडिभा
 गेफिरेंऐसेअपयससों २७ ॥

राजा रामचन्द्रजी के त्रास के वशसों भारे बड़ेरूप भूमि
 छाँड़े भागे फिरतहैं ऐसेको अर्थ विनाकारण लराई नहींभई
 अयश के डरसों जो रणसों भाजेंगे तो बड़ो अपयश होयगो
 तासों पहिले भाजेफिरतहैं ऐसे हमें अयशलागे जैसे हंसनिके
 अवतंस माथेपर मोरकीसी शिखा उज्ज्वलहोति हैं सो जैसे
 किंवा हंसनिकेअवतंस सरदार राजहंस सो जैसे थारेकीचसों
 राचिजाय अर्थ रंगिजाय हंसश्वेत कीचश्याम मठ देवमंदिर
 आदि सो जैसे सुधा चूना सों सुधारे औ काँचके कलश सो
 ऊपर धरे ऐसे सुधारे सुधाश्वेत काँच श्याम श्रीगंगाजीके अंग
 श्वेत श्रीयमुनाजीकी तरंग श्याम बलदेवजूको मुख गौर वा-
 रुणी श्याम कपाली शिव तिनके कंठविषे कूटजाको स्वादु है

ऐसो कालकूट विष जैसे केशव कपाली कंठकूल कालकूट जैसे यह भी पाठ है तहाँ कूलको अर्थनिकट कंठश्वेत विषयाम कमल पुण्डरीक तामें अलि इहां भी श्वेत श्याम है शशिजैसे शश सों सोहत है मृगसों सोहत है इहां लक्षणाकरि सोहे को अर्थकुरूप लागै है ऐसे अपयश सों हम भी कुरूप लागेंगे २७॥

(अथरक्तवर्णन) दो० ॥ इन्द्रगोपखद्योतकुज केसरिकुसुमविशेषि ॥ मदिरागजमुखविंदुरवि ताँवोतक्षक लेषि २८ ॥

इन्द्रगोप वीरबधूटी खद्योतको नाम अगिया पटव्यजना जुगून जीगन पूरुवमें भंगयोगना भी कहते हैं कुजमंगल केसरि जेहें कुसुम विशेष बारुणी श्याम कही है मदिरा तासों कछु भिन्न कही है किंवा हाथीके मुखपर सों जो विन्दु चुवै है सो जो मदिरा गजमंद यह अर्थ कहूं केशव गजमुख विन्दु यह भी पाठ है उदय समय रवि औ ताँवो औ तक्षक नाग २८ ॥

दो० ॥ रसनाअधरदृगंतपल कुकुटशिखासमान ॥ माणिकसारससीयशुक वानरवदनप्रमान २९ ॥

पलमांस कुकुट मुरगा ताकी शिखा समान ये सब वरो बरि २९ ॥

दो० ॥ कोकिलचारुचकोरपिक पारावतनखनैन । चुंचचरणकलहंसके पकीकूंदुरूपेन ३० ॥

पिक पर्पिहा पारावत कबूतर इन सबके नख औ नैनलाल कुंदुरू फल होत है ताकी तरह जो होय सो लाल ऐनतरहका भी कहत हैं विम्बफल आदि जानिये ३० ॥

दो० ॥ जपाकुसुमदाडिमकुसुम किंशुककंजअशोक ॥ पावकपल्लववीटिका रंगरुचिरसबलोक ३१ ॥

जया कुसुमको गुड़हर ओओंग नामहे किंशुक पलाशको
फूल ओ अशोकको फूल बीटिका पानकी बीरी लोकलोग ३१ ॥

दो० ॥ रातोचन्दनरौद्ररस क्षत्रियधर्ममजीठ ॥ अ
रुणमहावररुधिरनख गेरुसंध्या ईठ ३२ ॥

रक्त चन्दन ओ रुधिर ओ नख लालहैं ईठ मित्र ३२ ॥

सवैया ॥ फुले पलासविलास थलीबहुकेशवदासहुला
मनथोरे । शेषअशेषमुखानलकीजनुज्वालविशालच
लीदिवओरे ॥ किंशुकश्रीशुकतुंडनकीरुचिराचेरसात
तलमेंचितचोरे । चंचुनिचापिचहूँदिशिडोलतचारुचकोर
अंगारनिभोरे ३३ ॥

उद्दीपन विभावहै सो सुनावैहैं नायकविना नहीं रहिसकै-
गी रुचि उपजायवेके लिये सखीवचन नायकासों हे बहु हे
बहु थोरे हुलास तों नहीं बहुत हुलासतों फूल हैं छोटे बड़े
वृक्ष ओ छोटी बड़ी डार सब फूलीहैं किंवा बहुतजे तेरी वि-
लास करिवेकी थली टिकाना हैं तहां किंवा विलास थलीमें
बहुतजे पलाशके वृक्ष ते फूलेहैं ताकी उत्प्रेक्षा करतहैं शेषके
अशेष मुख सब सुखते अनलकी ज्वाला दिव आकाशकी
ओर चली मानों किंशुक जेहैं ते रसातलमें पृथ्वी तलमें चि-
तको चोरतहैं देखते उनमें मन लगिजातहै कैसेहैं श्रीशोभा
युक्त जे शुक तुण्ड शुकचंचु ताकी जो रुचि क्रांति तैसें राचेहैं
विधानाने रंगहैं किंवा किंशुककी जो शोभा सो शुक तुण्डनि
की क्रांतिभीहै ताहि किंशुकका चंचुसों चापिके अंगारके भो-
रे चकोर डोलत हैं किंशुक आदि लाल जानिये ३३ ॥

(अथधूमधूपान) दो० ॥ काककंठखरभूषिका अहगो
धानीबभूरि ॥ करभकपोतनिआदिहैं धूमधूमरीधूरि ३४

मूषिका मूसा ग्रहगोधा छपकली पुरुषमें विश्रुवतिया कहत
हैं बहुतकहे करभऊंट औ धूरि धूमरीहै धूम्रहै ३४ ॥

सवैया ॥ राघवकीचतुरंगचमूवशधूरिउठीजलहृथ
लछाई । मानोंप्रतापहुताशनधूमसुकेशवदासअकामन
माई ॥ भेटिकैपंचप्रभूतकिंधौंविधिरेणुमयीनवरीतिच
लाई । दुःखनिवेदनकोभवभारकोभूमिकिंधौंसुरलोकसि
धाई ३५ ॥

श्रीरामचन्द्रजूकी चमू सेना कैसीहै चतुरंगहै जासैं चारि
अंगहैं हाथी रथ घोड़ा प्यादा सो चतुरंगकी उत्प्रेक्षा प्रताप
सो हुताशन आगि ताकोधूमहै मानों नझाई नहीं अमात हे
किंधौं विधाताने पांच जे प्रभूत हैं पृथ्वी जल तेज वायु आ-
काश ताको भेटिकै रेणु भूरिमयी रचनाकरी यह नई तरह
चलाई फेरि उत्प्रेक्षा करतहैं कवि तर्ककरत हैं भव संसार के
भारको दुखकहिबेको भूमि सुरलोक गईहै किंवा भव महादेव
सों भारके दुखकहिबेको धूरि धूम धूम्र जानिये ३५ ॥

(अथनीलवर्णन) दो० ॥ दूववंशकुवलयनलिन अ
निलव्योमतृणबाल ॥ मरकतमणिहयसूरके नीलवर्णसे
बाल ३६ ॥

कुवलय नीलकमल नलिन कुमुदको भेदहै मरकत मणि
नीलम औ सूर्यके घोड़ाभी नील जानिये ३६ ॥

(यथा) सवैया ॥ कंठदुकूलसुओरदुहूंउरयोंउरमेंव
लकैबलदाई । केशवसूरजअंशनिमंडिमनोंयमुनाजल
धारधँसाई ॥ शंकरशैलशिलातलमध्यकिंधौंशुककीअ
वलीफिरिआई । नारदबुद्धिविशारदहीयकिंधौंतुलसी
दलमालसुहाई ३७ ॥

और लये कहे बलदाई को अर्थ वरदाई वरकेदेनवारे जो बलदेवजी हैं तिनके कंठमें दुकूल नील जो वस्त्र सो और दुहुं वासभागमें दक्षिण भागमें उर छातीविषे यों यातरह उर में लटकैहैं बलदेवजी के अंगकी कांति वस्त्र में परीहै ताकी उत्प्रेक्षा श्रीचमुनाजीने सूर्य की किरणनसों भूषितकरिकै मानों अपने जलकी धारा धँसाई है शंकर शैल कैलास तैसे श्री बलदेवजी ताकी शिलासमान वक्षस्थल तापै शुककी अवलीकहे पंक्तिहै श्रीनारदजी जे बुद्धि विशारद प्रवीण किंवा काहूँसों बुद्धि विशारद संबोधन तिनके हृदयमें मानों श्रीतुलसीजीके दलनकी मालाहै ३७ ॥

(अथमिश्रितश्वेतकृष्णशब्दकथन) दो० ॥ सिंहकृष्णहरिशब्दगानि चन्द्रविष्णुविधुदेख ॥ अभ्रकधातुअकाशपुनि कृष्णश्यामसितलेख ३८ ॥

हरि शब्द करि सिंह श्वेत है ताको जानिये श्रीकृष्णचंद्र श्यामहैं तिनहैं जानिये विधु शब्दसों चंद्रमा श्वेत औ विष्णु श्याम जानिये अभ्रक शब्द करि धातु जोहै अभ्रक सो श्वेत जानिये अकाश श्याम कृष्ण शब्द को योग आकाशसों कीजिये ऐंम श्याम औ श्वेत जानों किंवा कृष्ण शब्द करिकै श्याम श्वेत जोहै वस्तु ताको जानों जैसे कृष्णपक्ष दोयघरी चारिघरी राति श्याम होय तौभी कृष्णपक्षकहावै जैसे नीला बांझा धोड़ा भी नीलहोय और श्वेतहोय तौभीनीलाकहावै ३८

दो० ॥ घनकपूरघनमेघअरु नागराजगजशेष ॥ पयोराशिकहिसिंधुसो अरुक्षितिक्षीरहिलेष ३९ ॥

कपूरको नाम घनसारहै घन नहीं घनसों कपूरलियो जैसे सत्याकह सत्यभामाको बोधहोत है घन कपूर श्वेत घनमेघ श्याम नागराज हार्था श्याम शेषनाग श्वेतहै इहां क्रमते श्वेत श्याम को भग्नभया पयोराशि नाम समुद्रको मूर्ति समुद्र

की श्याम है जल उज्ज्वल है कोई कहत है कि जब समुद्रपे दूरिते दृष्टिजातिहै तब समुद्र श्याम दृष्टि आवत है आकाश की तरह जल तौ उज्ज्वल है औ पृथ्वी विषे बहुत क्षीर दूध वाची किंवा क्षीर समुद्र वाची सो श्वेत है ३९ ॥

दो० ॥ राहुसिंहसिंहीजभनि हरिवलभद्रअनंत ॥
अर्जुनकहियेश्वेतसो अरुपारथवलवंत ४० ॥

सिंही नाम राहुको सो श्याम औ सिंहको रंग सो श्वेत अनंत नाम हरिको सो श्याम बलभद्रजी गौर किंवा हरि नाम बलभद्रको औ अनंत भगवान् पारथ श्याम हैं ४० ॥

दो० ॥ हरिगजसुरगजसमुभिये हरिहरिगजगज जानि ॥ कोकिलसों कलकंठ कहि अरु कलहंस वखानि ४१

हरि गज शब्द करि हरि इंद्र तिनको गज ऐरावत जानिये सो श्वेत है फेरि हरि गज शब्द को विभाग करि कहत हैं हरि शब्द सों हरि इंद्र लियो श्वेत गज शब्द सों गज हाथी जानौ सो श्याम है कलकंठ नाम कोकिल को औ हंस को ४१ ॥

दो० ॥ कृष्णनदीवरशब्दसों गंगासिंधुवखानि ॥
नीरदनिकसेदांतसों अरुजुनीरकोदानि ४२ ॥

कृष्णनदिवर शब्दसों श्रीगंगाजी नाम जानिये अर्थ श्रीकृष्णजी नदीहै सो कैसीहै वर श्रेष्ठहै विष्णुपदी नामहै औ कृष्णनदि वर समुद्रको भी नामहै कृष्णनारायण तिनकी नदी गंगा तिनके वरपति सरित्पति समुद्रको नाम निकसे दांत होतहै ताको नाम नीरद नीको अर्थ निकसे रदको अर्थ दांत औ नीर जल ताको जोदेइ सो नीरद मेघ जानिये दांत श्वेत मेघ श्याम ४२ ॥

(अथ श्वेतपीतशब्दकथन) दो० ॥ शिखरिचिखी

शम्भुमनि रजतरजतअरुहेम ॥ स्वर्णशरभसोंकहतहैं
अष्टापदकरिनेम ४३ ॥

शंभु नाम शिवको कहत हैं सो श्वेत शंभु ब्रह्मा सो पीत
रजतनाम रूपाको सो श्वेत हेममें सोनाको भी नाम रजत
सो पीत अष्टापदनाम सोनाकोहै सो पीत शरभ कोई जना-
वर सो श्वेतहै शरभ स्वर्ण सो ऐसो भी पाठहै वादिये नदि
तौ श्वेत पीतको क्रम भंग होत है ४३ ॥

दो० ॥ सोमस्वर्णकहिचन्द्रकल धौतरजतअरुहेम ॥
तारकूटरूपोरुचिर पीतरकहिकरिप्रेम ४४ ॥

चंद्र नाम चंद्रमाको औ सोनाको कलधौत नाम रूपाको
हेम सोनाको तारकूट नाम रूपाको रुचिर सुंदर पीतरको
प्रेमकरिके तू कहि ४४ ॥

(अथश्वेतरक्तशब्दकथन) दो० ॥ श्वेतवस्तुशुचि
अग्निशुचि सूरसोमहरिहोय ॥ पुष्करतीरथसोंकहैं पंक
जसोंसबलोय ४५ ॥

शुचि नाम श्वेत वस्तुको औ अग्नि अरुण सो हरि नाम
सूर्यको अरुण सोम चंद्र सो श्वेत पुष्कर नाम तीर्थ को सो
श्वेत पंकज लाल ४५ ॥

दो० ॥ हंसहंसरविवर्णिये अर्कफटिकरविमान ॥ अ
ब्जशंखसरसिजदुवो कमलकमलजलजान ४६ ॥

इतिश्रीकविप्रियायां वर्णालंकारवर्णनोनाम
पंचमप्रभावः ५ ॥

हंस पक्षी सो श्वेत औ हंस सूर्य सो अरुण अर्क नाम
फटिकको सो श्वेत औ रवि सो अरुण अब्ज नाम शंखको

सो श्वेत औ सरसिज सो अरुण कमल नाम पंकजको औ
जलको ४६ ॥

इति श्रीहरिचरणदासकृतायांकविप्रियाभरणाख्यायां
कविप्रियाटीकायांपंचमप्रभावव्याख्या ५ ॥

(अथवर्ण्यवर्णन) दो० ॥ सम्पूर्ण १ आवर्त २ औ
कुटिल ३ त्रिकोन ४ सुवृत्त ५ ॥ तीक्ष्ण ६ गुरु ७ को
मल ८ कठिन ९ निश्चल १० चंचल ११ चित्त १२
सुखद १३ दुखद १४ अरुमंदगति १५ शीतल १६
तप्त १७ स्वरूप १८ क्रूरस्वर १९ सुस्वर २० मधुर २१
अवल २२ बलिष्ठ २३ कुरूप २४ सत्य २५ झूठ २६
मंडल २७ वरणि अगति २८ सदागति २९ जानि ॥
अष्टविंशविधिमेंकहे वर्ण्यअनेकवखानि ३ ॥ (अथस-
म्पूर्णवर्णन) दो० ॥ इतनेसम्पूर्णसदा वरणेकेशवदा
स ॥ अम्बुजआननआरसी सन्तनप्रेमप्रकास ४ ॥

पीछे पंचम प्रभावमें कहि आये सामान्यालंकार के चारि
प्रकार एक वर्णालंकार जामें वर्ण कहिये रंग लीजिये अथ
अवर्ण जाकी आकृतिको गृहण रंगको गृहण नहीं अट्ठाईल
कहेंगे संपूर्ण इत्यादि तीन दोहामें नाम हैं १ २ ३ इतने
इति प्रेमको प्रकाश ४ ॥

(यथा) कवित्त ॥ हरिकरमंडनसकलदुखखंडनसुपुर
महिमंडलकेकहतअखंडमति । परमसुवासचोपिचूपमनि
वासपरिपरणप्रकासकेशोदासभूअकासगति ॥ वदनम
दनकेसेश्रीजूकेसदनजहिसोदरतमोदरदिनेशजूवेमित्र
अति । सीताजूकेमुखसुखमाकीउपमाकोसखिकामलज
कमलअमलनरजनिपति ५ ॥

कमल औ चन्द्रमासों श्लेष श्रीरामचन्द्रजीको वचन सखी
 सों किंवा सखी वचन सखीसों हे सखि सीताजी के मुख की
 सुखमा जोह अनिशोभा ताकी उपमाको कोमल कमल नहीं
 औ अमल रजनिपति चन्द्रमा नहीं कमल कैसोहै हरिनारा-
 यण तिनके करको मण्डन भूषण है फेरि कैसोहै सकल दुख
 गण्डन सकल संपूर्ण लोगनि के दुखको खण्डन करनवालो
 है देखे मधे आनन्द होत है मुकुर कलीजाकी फूले कमलकी
 तो कहानाई बड़ाईकरें सोभी उपमा लायक नहीं हेम अने-
 कार्थ में कोरकादर्शयोरपि याको अर्थ मुकुरनाम कोरककली
 को औ आदर्श दर्पण को यावातको अखण्ड मति संपूर्ण
 जाकी बुद्धिहै अर्थात् बड़ीबुद्धि है जाकी यह अर्थ सो कहतहै
 फेरि कमल कैसोहै परम उत्कृष्ट सुवास गन्धहै जाको हेम में
 पीयूषनाम जलको भी पीयूष जलमें निवास है जाको परि-
 पूर्ण जाको प्रकाश है संपूर्ण फूलि रह्यो है तौभी मुखके स-
 मान नहीं फेरि कैसोहै भू आकाश में गति है जाकी सवठौर
 रहै सध आदर करै आकाश गंगाके कमलसुरवधू राखती
 हैं औ भगवान्के हाथमेंहै मदन कामके वदन समान है श्री
 लक्ष्मीजाको घर यदि जोभीहै यामें कछु न्यूनता मति जानौं
 लक्ष्मीजीको सोदर भाईहै जलसों उपज्योहै याते औ शुभो-
 दर है आद्यो जाको उदर कहिये मध्य है औ दिनेश सूर्य
 ताको अति मित्र है अथ रजनीपति पक्ष रजनीपति चन्द्रमा
 कैसोहै हरिकर मण्डन हरि सूर्य तिनके किरण सोईहैं मण्डन
 भूषण जाको चन्द्रमामें सूर्यके किरणको प्रकाशहै यह पुराण
 मेंहै किंवा हरि सूर्यके करको मण्डन भूषण करत है शोभित
 करत है चन्द्रमा में सूर्यकी किरणें आयते शोभा पावती हैं
 कवि सबवर्णन हैं फेरि चन्द्रमा कैसोहै सकलहै कला सोरहों
 अंश ताहि सहितहैं लोगनिको सूर्यके तापसों भयोहै जो दुख
 नातो खण्डनहै दूरकरनवालो है किंवा सकल महादेव जिन

में चन्द्रमाकी कला रहति है तिनको जोहै दुख अर्थात् विष की अग्निसों गरभी ताको दूरिकरत है औ महिमण्डल को सुकुर दर्पण है संपूर्ण पृथ्वीकी छाया चन्द्रमा में परनिहे यह पुराण प्रसिद्ध ज्योतिष में सूर्यग्रहण चन्द्रमासों होत है चन्द्र ग्रहण भूमिकी छायासों होतहै यह ग्रहलाघव बुद्धिमान कहन हैं परमनाम नानार्थमें परमेश्वरकोहै नारायणकेभी तीननेत्र हैं भुजंगेशतुल्यायचाग्न्यर्कचन्द्रात्रिनेत्रायतस्मै नतास्मो नता स्मः परम नारायण तामें सुन्दर है वास जाको पुनि प्रीयुष अमृत ताको निवास है फेरि जाको परिपूरण प्रकाशहै कैसो है प्रकाश जाकी भूमिमें आकाशमें गति है किंवा चन्द्र कैसो है भूमें जलादिकमें प्रतिबिम्ब करिगतिहै जाकी वदन मदन केसे मदन के समान जाको वदन है यदि जो लक्ष्मीजी को सोदरभाईभी है तौभी लक्ष्मीजीको सदकहिये स्वभाव चंचलता कहूंरहै कहूं नहींरहै इत्यादि यामें नहीं है जैसो याको स्वभाव है तैसोईहै बड़े छोटेके घरमें एकतरह प्रकाश करहै किंवा श्रीजीको सोदरभाई है लक्ष्मीजी जलसों उत्पन्नभई हैं औ लक्ष्मीजीको सदनघरहै यदि जो ऐसोभीहै तौभी उपमा लायकनहीं यदिको अन्वय सवठौर है यदि जो शुभोदरभी है सुन्दर भाकहिये कांति प्रकाश जाके उदर मध्यमें है तौभी उपमा लायकनहीं चन्द्रमा के मध्यमें श्यामताहै याते शुभोदर जो दिनेशजी ताको अतिमित्र है आपनो तेज सूर्य यामें राखत हैं याते अतिमित्रहै ५ ॥

(अथमण्डलवर्णन) दो० ॥ केशवमण्डलमुद्रिका व लयावलयवखानि ॥ आलवालपरिवेपरवि मण्डलमण्डलजानि ६ ॥

चहूं ओर गोलहोय सो मंडल आवर्त को भेद बलयाचूरी वलय पुरुषके हाथमें रहै है कड़ा कहिये आल वाल कियारी

परि देव परिधि सूर्य चंद्रमाको लागतहे ओ रवि मंडल रत-
नाको मंडल गोल जानों ६ ॥

कवित्त ॥ मणिमय आलवाल थल जल जलजर विमंडल
में जैसे मति सो है व वितानि की ॥ जैसे सविशेष परिवेष में अ-
शेष रेखा शोभिन सुवेष सोम सीमा सुख दानि की ॥ जैसे वंक
लोचनिकलित कर कंकननि वलित ललित द्युति प्रगट प्र-
भानि की । केशोदास ऐसे राजें रास में रासिक लाल आस पा-
स मंडली विराजें गोपिकानि की ७ ॥

आस पास गोपिन की मंडली विराजति है तहां रास में रासि-
कलाल ऐसे राजत हैं शोभत हैं कैसे शोभत हैं गोपीजन के
जो मंडल सोई मणिमय आलवाल कियारी तामें जैसे थल-
जल जल तमालको वृक्ष जानिये सोहत है तैसे शोभत हैं फेरि
रविमंडल में जैसे जलज कमल शोभत है कविता जो है ताकी
मतिको मोहति है ऐसी रूप बन्यो है कविता कविकी सर-
स्वती सो नहीं वरणित के है किंवा मणिमय आलवाल में थल
ज जो जलज तमाल कमल जैसे सोहत है रवि सूर्य जैसे अपने
मंडल में सोहत हैं तैसे सोहत है सविशेष अशेष रेखा जो परि-
वेष तामें जैसे सुवेष सोम शोभत है याको अर्थ सविशेषको
अर्थ सदाको नहीं शरदको जो अशेष रेखा परिवेष अशेष
संपूर्ण है रेखा जामें कोई थोर खंडित नहीं होय ऐसी जो परि-
वेष मंडल तामें जैसे सुवेष स्वच्छ कलाकरि पूर्ण सोमचंद्रमा
जैसे सोहत है तैसे शोभत अथ सुख दान की सीमा श्रीकृष्ण
किंवा चंद्रमाको विशेषण किंवा शरदको जो परिवेष तामें
अशेष रेखा जो सोम अशेष संपूर्ण है रेखा कला जाकी रेखा
कलाको भी कहत हैं सो जैसे शोभत हैं चंद्रमा कैसे है सुवेष
हैं सुंदर जाको वेष स्थान है क्षीर समुद्र फेरि वंक लोचनी
नायका के कर जैसे कंकणनिसों कलित वेष्टित होय तैसे वंक

लोचनि कैसी है प्रगट जो प्रभा तेज ताकी जो ललित सुंदर
द्युति शोभा तासों बलित युक्त है कलित बलित को जहा
जैसो अर्थ लागै तहां तेसो कीजिये अनेकार्थ शब्द है किंवा
जवाहिर लागे कंकणको विशेषण कीजिये आलवाल मंडल
आदि जानिये ७ ॥

(अथ आवर्तवर्णन) दो० ॥ ये आवर्तवखानिये केश
वदाससुजान ॥ चकरीचक्रअलातअरु आतपत्रखर
सान ८ ॥

लकरी बारिकै फेरत हैं सो अलात आतपत्रछत्र ८ ॥

कवित्त ॥ दुहंरुखमुखमानों पलटनजानी जात देखिकै
अलातजातजातिहोतिमन्दलाजि । केशौदासकुशलकु
लालचक्रचक्रमन चातुरीचितैकैचारुआतुरीचलतभा
जि ॥ चन्दजूकेचहुंकोदवेषपरिवेषकेसोदेखतहीरहियेन
कहियेवचनसाजि । धापछाँड़िआपनिधिजानिदिशिदि
शिरघुनाथजूकेछत्रतरभ्रमतभ्रमीनवाजि ९ ॥

रुख ओर पलट फिरिबो अलातसों जात उत्पन्न जो है
ज्योति प्रभा सो लाजिकै मंड होतिहै कुशल आछो कुलान
कुम्हार के चक्रको चक्रमन फिरिबो ताकी जो चातुरी है
चारु अश्वकी गति देखिकै आतुरी हरवरायके भाजिचलनि
है वेष परिवेषको सो मंडलकी तरह धाप दोरिवेकी टोरना-
को छाँड़िकै दिशा दिशा में आपनिधि समुद्र दोरिवेकी टोर
थोरी याते भ्रमीन भ्रमन शील अलात आदि आवर्त परि-
वेषको मंडल में कह्यो है इहां आवर्त में कह्यो ऐना अर्थ श्री
रामचंद्रजी के चहुंकोद चहुं तरफ परिवेषको सो वेष देव्यन
रहिये दर्शनीयहै पैवचनसाजि वचनवनायकै बरोबरि नहीं

कहिने परिवेष मंडलहै परिवेष मंडलकोलक्षण किधौ चाहिये
बीच नहीं प्रत्यक्ष जानिपरै ६ ॥

(अथकुटिलवर्णन) दो० ॥ अलकअलिकअंकुचि
ना किंशुकशुकमुखलेपि ॥ अहिकटाक्षधनुर्वीजुरी कंक
णभग्नविरोपि १० ॥

वाल्मिक ललाट कुंचितामोक्ष भग्न फूटयो कंकण १० ॥

दो० ॥ वाल्मचंद्रिकावालशशि हरिनखशूकरदन्त ॥
कुटिलादिकवेवर्णिये कपटीकुटिलअनन्त ११ ॥

हरिनख नाहरके नख उदारकपटी अनन्त कुटिलहै जाको
अंत नहीं पाइये किंवा कुटिल वस्तु अनन्त हैं ११ ॥

(यथा) सवेया ॥ भोरजगीटपमानसुताअलसीवि
नसीनिशिकुंजविहारी । केशवपोंछलिअंचलओरनिपी
कसुलीकगईमिटिकारी ॥ वंकलगेकुचवीचनखक्षतदेखि
भईदृगदृनीलजारी । सानोंवियोगवराहहन्योयुगशैल
कीसंधिनिइंगवैडारी १२ ॥

नायकने नेत्र चुवनकियाहैं ताके अंचलको जो ओरकिना
रा तानों पीक पोंछनिहैं कारी काजरकी रेखा मिटिगई सखी
नख जानेंगी गति नायक पास सोई है एक लाज याते भई
नखक्षत देखि दूनीलज्जितभई इंगवै शूकरको दांत नखक्षत
शूकरको दांत टड़ा १२ ॥

(अथत्रिकोणवर्णन) दो० ॥ शकटशिंंगारेवजूहल
हृकेनननिहारि ॥ केशवदासत्रिकोणसहि पावककुण्ड
विचारि १३ ॥

शकट गाड़ा मही पृथ्वी हेममें अग्निकुंड विशेष १३ ॥

(यथा) कवित्त ॥ लोचनत्रिलोचनकेकेशवविलोकि
विधिपावककेकुंडसीत्रिकोणकीनीधरणी । शोधैहैपुत्रा
रिपुथुपरमपुनीतनृप करिकरिपूरणदशहूँदिशिकरणी ॥
ज्वालासोजगंतजगमगतसुभगमेरु जाकीज्योतिहोति
लोकलोकमनहरणी । थिरचरजीवहविहोमियतयुगयुग
होताहोतकालनयुगतिजातिवरणी १४ ॥

विधिने शिवके नेत्र देखिकै नेत्रकी आकृति पावकके कुंड
सी पावकको कुंडहै मानौं ऐसी त्रिकोण धरणीकीहै सीकांअर्थ
मानौं शिवको अनादि ठहराये यज्ञवर्यत हैं जहां यज्ञकरतहैं
तहां पृथ्वीशोधतहैं पृथुराजाने शोधी है सुमेरु सो ज्वाला सो
जगतमेंजगमगतहै काबहोता शिवकेनेत्रआदित्रिकोण १४॥

(अथसुवृत्तवर्णन) दो० ॥ वृत्तदेलभनिगुच्छअरु
ककुदसाधुकेअंग ॥ कुंभिकुंभकुचअंडमनि कंदुककलश
सुरंग १५ ॥

वृत्तगोलवस्तु चौड़ीनहीं गुच्छाफूल के ककुदरूप के कांधा
पर रहंत है साधु सुन्दरताके अंग भुज औ जंघा कुंभी हाथी
ताको कुम्भस्थल अण्ड ब्रह्माण्ड किंवा अण्डा औ मणिकं-
दुक गेंद १५ ॥

(यथा) कवित्त ॥ परमप्रदीपअतिकोमलकृपालुनेरे
उरतेउदितनितचितहितकारीहै । केशौरायकीसोंअनि
सुन्दरउदारशुभसलजसुशीलविधिलूरतिसुधारीहै ॥ का
हूसोंनजानैंहैंलिवोलनिबिलोकिजानैंकंचुकीसहितसाधु
सुधोबैसवारीहै । ऐसेदूकुचनिसकुचतिनसकतिवृंभिह
रिहियहरनप्रकृतिकीनिपारीहै १६ ॥

सखीवचन नायकासों ऐसे तेरे कुचनिसों में संकोच सों

नहीं पृष्टिसकतिहों आगेस्पष्ट हे परमप्रवीण नायका हम जो कहु चक्रवचन कहतिहैं ताको तू समुझतिहैं नायक याहि देखि आसक्त भयोहैं तासों मिलायो चाहतिहैं किंवा मानको अवशेष है ताहि छुड़ायो चाहतिहैं नायक तोहींसों आसक्त है यह अर्थ कुच तरे कामल रूपालु हृदय ते उदित कंचुकी सहित कंचुकी चोली ताहि सहित सदा रहतहैं अर्थ यह मुखमूंदे रहतहैं हंस बोल देखे क्योंकरिके नायकासों कहतिहैं तू कैसी है मृधीहै बहुत तोमें कुटिलतानाहीं फेरि तू कैसीहै वैसवारी है वयसनाम हेम में यौवनकोहै वैसवारीको अर्थ युवतीवारी वैसवारी को अर्थ जो बालअवस्था कहिये तौ आगे उदार बड़ेकुच नहींवनें किंवा सब कुचही को विशेषण चित हितकारी आदिपदवारिये कुचगोलवरणै १६ ॥

(अथतीक्ष्णगुरुवर्णन) दो० ॥ नखकटाक्षशरदुर्वचन शैलादिकखरजानि ॥ कुचनितम्बगुणलाजमति रति अतिगुरुकारिमानि १७ ॥

दुर्वचन कदुवचन शैल वरछी आदि छुरी कटारी जानिये सरतीक्ष्ण आथे दोहा में गुरुबड़ेगुणको औ लाज को ऐसे मतिरतिप्रीति १७ ॥

(यथा) कवित्त ॥ संहथीहथ्यारऐनअन्यारेअनेकका मशरहूनेखरेखलवचनविशेखिये । चोटनवचतओटकियेहूकपाटकोटभौनभोहरेहूभारेभयअवरेखिये ॥ केशौदा समंत्रगदयंत्रऊनप्रतिपक्षरक्षलक्षलक्षवज्ररक्षकनलेखिये । भेदियतमर्मवर्मऊपरकसेईरहेंपीरघनीघायलनिघायपेनदेखिये १८ ॥

संहथी वरछी जो हथ्यार सो ऐनएको अर्थ एजो खल के वचन सो न कहिये नहींहैं किंवा संहथी वरछी औ और जे

हथियार कटारी आदि अन्यारे अनीवारे जाके तीक्ष्ण अग्र-
भाग हैं सो ए नहीं हैं वाको घाव तौ देखिवेमें आवतहै किंवा
काम शरहूते खरे अतिअन्यारे अति अनीवारे हैं याते खल
दुष्टके वचन विशेष करिये और सामान्यहैं भौहरा भूमिखोदि
घरवनावै सो भौनमें भौहरामें कोटिकपाटकी ओटकरै मंत्र
औ यंत्र औगदकहिये पाछनादैकै औपधि लगावै औ तंत्र
तोटका पुरुबमें टोटकरम कहतहैं एभी खलके वचनके प्रति-
पक्ष शत्रुहोयकै रक्षा नहींकरै है लाखलाख वज्र जासों रक्षा
नहींकरिसकैहै किंवा खलके वचनको जो लक्ष निशाना भयो
है जापै खल के वचन चलत हैं ताको लाखवज्र रक्षक नहीं
गनिये जो अंगपीड़ाको नहींसहिसकै सो मर्म ताको भेदे हे
वर्मवरुत्तर ऊपर कस्यो परयो रहतहै घनी बहुतपीड़ा इहांसे
खलवचन तीक्ष्ण १८ ॥

(अथगुरुलाज) सवैया ॥ पहिलेतजिआरसआर
सीदेखिघरीकघस्योघनसारहिलै । पुनिपोंछिगुलावति
लोंछिफुलेलअंगौछेमेंआछेअंगोछनिकै ॥ कहिकेशव
मेदजवादिसोंमांजिइतेपरआंजेमेंआंजनदै।बहुरयोदुरि
देखौतौदेखौंकहासखिलाजतौलोचनलागियेहै १९ ॥

घनसार कपूर घनाघसे फुलेलसों तिलोंछि थोरो लगाय
चीकनेकरै तिलोंछिकी भाषा पुरुब में तेल उसकी सुगन्ध की
दोयजाति एक मेदकस्तूरी आदि जवादि केसरि अतरआदि
तासों मांजे हेसखि पहिलेमें देख्यों आलस्यमें एक तौ प्रथम
दर्शन औ शृंगारभी अस्तव्यस्ततासों भई लाज बहुरो फेरि
दुरिकै छपिकै देख्यों पर ऐसे देखिवे सों कहादेखौं लाज तौ
लोचन में लागिये है नायक भी देखै हे याते लाज इहांलाज
को गुरुवरणी किंवा नायक नहींदेखै है तौभी मोहि देखतके
लाजलागतिहै याते लाजको गुरुकही १९ ॥

(अथकोमलवर्णन) दो० ॥ पल्लवकुसुमदयालमन
माखनमृदुलमुगर ॥ पाठ्यामरीजीभपद प्रेमसुपुण्यवि
चार २० ॥

मृदुजानिये मृणाल कमलकी जर जीभ ओ पद पावें प्रेम
ओ पुण्य २० ॥

(यथा) कविच ॥ मैनेसोमनमृदुमृदुलमृणालिका
केमूनकेसीस्वरध्वनिमननिहरतिहै । दारयोकेसीबीजदां
नपातमेअरुणआंठकेशौदासदेखिदृगआनंदभरतिहै ॥
परीमरीतेरीमोहिंभावतिभलाई तातेवूभूतिहौंतोहिंओ
रवूभनडरतिहै । माखनसीजीभमुखकंजसोंकवारितामें
काठनीकठेठीवातकैसेनिकरतिहै २१ ॥

मृदुल कोमल मृणालिका के सूत के समान स्वर कंठकी
ध्वनि शब्द पातनवल्लवसे लालआंठ माखनसीजीभ मुख
कंजसों तामें काठसी कठेठी कठोरवात कैसे निकरतिहै मैने
माखन मृणाल आदि कोमलमेन दाहा में नहींकह्योहै तौभी
जानिये इनकेसिवाय और भी कोमललीजिये २१ ॥

(अथकठोरवर्णन) दो० ॥ कुचकठोरभुजमूलमणि
वरणिवज्रकाहिमिच्छ ॥ धातुहाड़हीराहियोविरहीजनके
चित्त २२ ॥

वज्र ओ हल कहूं वज्रहू मिच्छ ऐसो भी पाठहै मणि कहें
हीराको ग्रहणहो तौभी अनिकठोरजानि जुदोकरिकह्यो हीरा
की कर्मासों और मणि छेदीजातिहै २२ ॥

दो० ॥ शूरनिकेतनसूममनकाठकमठकीपीठि ॥ के
शवमूखोचमअरुहठराठहुर्जनदीठि २३ ॥

कमठ २३ ॥

(यथा) कवित्त ॥ केशवदासदीर्घउसासनिकोसदा
गतिआपुकोअकासहैप्रकासपापभोगीको । देहजातजा
तरूपहाइनकोरूपोरूपरूपकोकुरूप विधुवासरसंयोगी
को ॥ बुद्धिनकीबीजुरीहैनैननिकोधाराधरअर्ताकोघरघा
रतनघायनिप्रयोगीको । उदरकोवाड़वाअग्निनिगेहमा
नतहौंजानतहौंहीराहियोकाहूपुत्रशोगीको २४ ॥

जानतहौं याकोअर्थ मानौं जहां जानतहौं मानतहौं ऐसे
शब्दआवैं तहां उत्प्रेक्षा है पुत्रशोगी को हृदयहीरा है वज्र है
हीराको नाम भी वज्र है औ सब जवाहिर में हीरा कठोर है
हृदय कैसोहै उसास ऊंचेवड़े चलत हैं ताको चलावे को यह
सदागति पौनहै सदागतिपौनको नामहै जब पौन को प्रकाप
होतहै तब वड़े उसास चलतहैं दीर्घउसासनि को सदागति
यह भी पाठहै दीर्घउसासनि जहां सदागति चलनोहै दीर्घ
उसास उठयो रहत है हृदय आयुर्वलको अकाश है अकाश
ज्योतिषमें शून्यको नाम है आयुर्वल शून्य है यह अर्थ किंवा
अकहिये थोरीकास कहिये दीप्तिहै प्रकाश पापभोगीको या-
कोअर्थ पापभोगी जो पापको भोगै पापिष्ट ताको जो होतहै
प्रको अर्थ वड़ोकास कहिये खांसीरोग सो है हृदयसों खांति
उठयो शरीर क्षीणभयो धाँसि उठत है किंवा पापभोगी को
प्रकास यह पापिष्टहै पापको भोगैहै रूप याको अर्थ हेमकोप
में रूपनाम सौंदर्यको औ आकृतिको औ स्वभावको देहजात
याको अर्थ देह कहिये पिंड तामें जो उपजै सो देहजात देह-
जात नाम अंगको हाथ पावैं इत्यादि सो जान रूप सोना मे
गौरथे इहां वाचक धर्म लुप्तोपमा किंवा देह औ जान कहिये
जाति भाषामें इकार को लोप भी करतहैं हेमीमें जातिनाम
अंगको भी कह्योहै देह पिंड औ जात अंगतेजातरूप सोना
सथे सो अब पुत्र शोगभये हाइनको रूपोरूप हाइहोको रूप

कहिंय आकारहे जाको ऐसो रूपभयो है ऐसीतरहको भयोहै
 भाषामें रूप नरहको भी औ सुंदरको भी कहतहैं फलानारूप
 कोहैं रूपकी लुगाई है सुंदरि है ऐसी बोलति है अंतमें कोहैं
 ताकी अन्वय विधु शब्दसों है वासर दिनसंयोगी विधुकोसों
 रूपभयो विधुनाम हेममें चंद्रमाको भी राक्षसको भी राक्षस
 का नाम रात्रिचरहैं दिनमें जैसो राक्षस बुरोदीखै तैसो बुरो
 दीखै यह अर्थ चंद्रमा तो काहेको कहिये किंवा रूपको थो
 पहिले सो अब कुरूपभयो जाके आगे वासर संयोगी दिनमें
 विधु राक्षस सो जाके आगेकोहैं कौनहैं कोहैं शब्द तिरस्कार
 विषे या कुरूपके आगे वह कहा कुरूपहै यह अर्थ फेरि लगा
 इयें हाड़नको रूपो हाड़को रूप द्वैगयो शरीरमें मांस नहीं है
 रूपरूपको कुरूप तरह तरह को कुरूपभयो देह मलिन वस्त्र
 मलिन केशवड़े वासर संयोगी विधु राक्षस जाके आगे कोहैं
 कटु नहीं बुद्धिको तो बीजुरीकीन्हीं बुद्धि जैसे बीजुरी चम-
 किजाय नैस चमकिजातिहै नैननिको धाराधर मेघकीन्हों
 भांशू आंखिसों वरसतहैं छातीको धरियार कियोहै इहां के
 शब्द की अन्वय घायसों है धरियारको तो लकरी के घनसों
 मारतहैं छातीरूप जो धरियारको सो घन कहिये बहुतबाव
 चाट ताको प्रयोगी संयोगी कीन्हें हैं धरीधरीमें छाती कूटत
 हैं उदर पेट ताको बाड़वाग्नि जो समुद्रमें है ताको धरमान
 तहैं आठपहर पेटवरैहैं इहां हृदय औ हीरा कठोर २४ ॥

(अथानिष्ठचलवर्णन) दो० ॥ सतीसमरभटसन्तम
 नधर्मअधर्मनिमित्त ॥ जहांतहांयेवरणियेकेशवनिश्चल
 चित्त २५ ॥

धर्मकरै सो नहीं जाय औ अधर्मकरै सो नहीं जाय निमि-
 त्त होनहार निश्चल चित्तको अन्वय सतीसों औ समरभटसों
 किंवा निश्चल चित्तकरि वरणिये २५ ॥

(यथा) सर्वैया ॥ कायमनोवचकामनलोभनमोहन
मोहैमहाभयजेता । केशवबालवयक्रमवृद्धविपत्तिनहंअ
तिधीरजचेता ॥ हैंकलिमेंकरुणावरुणालयकौनगनैक
तद्वापरजेता । येईहैंसूरजमंडलभेदतशूरसतीअरुऊरध
रेता २६ ॥

कहूं वृद्धपाठ है कहूं वृद्धिपाठ है विपत्तिकी वृद्धिमें जाको
काम आदि नहीं मोहै एतनेसमयमें धीरजको चेतेहैं करुणा
के बरुणालय समुद्र और पै भी कृपाकरतहैं शूर सती ऊरध-
रेता योगी निश्चल चित्तहैं २६ ॥

(अथचञ्चलवर्णन) दो० ॥ तरलतुरंगकुरंगघनवा
नरचलदलपान ॥ लोभिनकेमनस्यारजनबालककाल
विधान २७ ॥

चलदल पीपल स्यारजन कायर काल की क्रिया २७ ॥

दो० ॥ कुलटाकुटिलकटाक्षमनसपनोयौवनमीन ॥
खंजनअलिगजश्रवणश्रीदामिनिपवनप्रवीन २८ ॥

तरल अतितरल मंदतरल तीनिके ग्रहणहैं कुरंग औ मन
तरल है लोभीको मन अतितरलहै याते जुदो ग्रहण कियो
यौवन मंदतरलहै गज श्रवण हाथीके कान हे प्रवीण संवोध-
नहै काहूसों २८ ॥

(यथा) कवित्त ॥ भौरज्योंभवैतलोललललनालनानि
प्रतिखंजनसोथलमीनमानोंजहांजलहै । सपनोऊहोन
कहूंअपनोनआपनेयेभूलियेनवैनऐनआककेसोफलहै॥
गाहियेधौंकौनगुणदेखतहीरहियेरी कहियेकहूनरूपमोह
कोमहलहै । चपलासीचमकानिसोहैचारुचहूँदिशिकाहूँ
कोसनेहचलदलकोसोदलहै २९ ॥

कान्दको तनेह नो चलदल पीपलको दल पातसोंहै जैसे
 भयंर लोचचंचल लतानिप्रति भवैतहै तैसेकाहन किंवा काहन
 कोस्नेहलोचल चंचललतानिप्रति औ तृष्णासहित जो होय ऐसे
 चाहभरे लज्जना नायकानिप्रति फिरतहैं जैसे थल में खंजन
 चंचल सपनोहूं होत कहूं आपनो न आपने ये यह प्रसिद्ध है
 सपनोदेखिरहैमनगोय । अपनोदेखैअनकोहोय ॥ आपनो
 देख्यो सपनो कहूं आपको सफलहोतहै ये आपने नहीं होत
 हैं नायकको सुनाय नायका सखी सों कहति है कहूं पाठ है
 सपनेऊअपनेनहांतकहूंअपनाये जो इन्हैं अपनाय लीजिये
 आपनेकरिलीजिये तौ सपनेमें भी ये आपने नहींहोतहैं भू-
 लियेनवन याको अर्थ इनके कपटभरे वचन सोभूलिये नहीं
 किंवा ऐंगखि ये हमारेवन भूलैमति आककोफल ऊपरअच्छा
 भीतर निकम्मा देखिवेही के आछेहैं धौको अर्थवितर्क कौन
 इनमेंगुणह जासों इनको ग्रहणकीजिये पहिले सखीने कह्यो
 हैं इनसों प्रीति फेरिकरो तब यहनायकाकी उक्ति रूपइनको
 मोहको महलहै अर्थात् मोह को निवास है भौर औ लोभी
 नायकको मन औ खंजनआदि चंचल २६ ॥

(अथसुखदवर्णन) दो० ॥ पंडितपुत्रपतिव्रताविद्या
 वपुनीरोग ॥ सुखहीफलअभिलाषकेसम्पत्तिमित्रसंयो-
 ग ३० ॥

पुत्र पंडितहोय जो जाकी विद्याहेत औ सुखही सों फल
 प्राप्तिहोय जैसी चाहें तैसी सम्पत्तिहोय ३० ॥

दो० ॥ दानमानधनयोगजयरगवागगृहरूप । मु-
 क्तिमोसमरवज्ञतायेसुखदानिअनूप ३१॥

पाछे सम्पत्ति कही है धनको अन्वय मानसों मुक्तिसुखद
 है औ सोस चन्द्रमा ३१ ॥

(यथा) सर्वैया ॥ पंडितपूतसपूतसुधीपतिनीपतिप्रे-
मपरायणभारी । जानैसवैगुणमानैसवैजनदानविधानद-
याउरधारी ॥ केशवरोगनहींसोंवियोगसंयोगसुभोगानि
सोंसुखकारी । सांचकहैजगमाहिलहैयशमुक्तियहैचहुं
वेदविचारी ३२ ॥

पुत्र पंडितहोय आपनीविद्या में खवरदारहोय ओ सपूत
होय जामें चोरी जुवारीपनाको औगुणनहींहोय ओ सुधी सु-
बुद्धिहोय शरीरको रोगसों वियोगहोय रोगनहींहोय यहअर्थ
पंडित पुत्र पतिव्रताआदि सुखद ३२ ॥

(अथदुखदवर्णन) दो० ॥ पापपराजयभूठहठ शठ
तामूरखामित्त ॥ ब्राह्मणनेगीरूपविन असहनशीलच-
रित्त ३३ ॥

ब्राह्मण नेगीको अर्थ कोई कार्यमें अधिकारी खजाना ह-
वालेया जगातलेनो इत्यादि वाको नहींदीजिये बहुचोरिखाय
जबलेखामाँगै तबपेटचीरिवेलागै कोईहोय रूप विना नहीं
सोहत हैं असहनशील काहूकी बात नहींसहै ऐसो है चरित्र
जाको ३३ ॥

दो० आधिव्याधिअपमानऋणपरधरभोजनवास ॥
कन्यासन्ततिवृद्धतावरषाकालप्रवास ३४ ॥

आधिमनको दुःख ३४ ॥

दो० ॥ कुजनकुस्वामीकुगातिहयकुपुरनिवासकुना-
रि ॥ परवशदारिद्र्यादिदैअरिदुखदानिविचारि ३५ ॥

जनकहियेदास सो आछो नहींहोय ओ कुचालघोड़ा ३५ ॥

(यथा) कवित्त ॥ बाहनकुचालचोरचाकरचपलाचि-
त्तमित्तमातिहीनसूमस्वासीउरआनिये । परधरभोजन

नियानवासकुपुगनिकेशौदासवरषात्रवासदुखदानिये ॥
पापिनकेअंगसंगअंगनाअनंगवशअपयशयुतसुत चि
नहितहानिये । मूढ़ताबुढ़ाईव्याधिदारिद्र्यभुठाईआधि
यहईनरकनरलोकनिवखानिये ३६ ॥

मनुष्यलोकमें सातद्वीप के भेदक दहुवचनहैं इतनानरक
हैं कुजन औ स्वामी आदि दुखदायी कहे ३६ ॥

(मन्दगतिवर्णन) दो० ॥ कुलतियहासविलासबुध
कामक्रोधमदमानि ॥ शनिगुरुसारसहंसगजात्रियगति
मन्दवखानि ३७ ॥

कुलबधू की हैंसी मंदवरणिथे बुधज्ञानवान ताको विलास
लाना काम क्रोध औ मद तुरंत होतहै मंदमंद छूटत है कहूं
दानि भी पाठ है शनैश्चर औ गुरु बृहस्पति ३७ ॥

(यथा) कवित्त ॥ कोमलविमलमनविमलासीसखी
नाथकमलाज्यौलीन्हेंहाथकमलसनालके । नूपुरकीधु
निगुनिसौरेंकलहंसनिके चौंकिचौंकिपरेंचारुचेटवामरा
लके ॥ कचनिकेभारकुचभारनिसकुचभारलचकिलच
किजातकटिनटवालके । हरेंहरेंबोलतिविलोकतिहंसति
हरेंहरेंहैंचलतिहरतिमनलालके ३८ ॥

सर्वानांसखीवचन नायकाकैसीहै कोमल औ विमल नि-
र्मल जाके मनहै पेरि विमला सरस्वती सरीषीहै औ सखी
जाके नाथन्है कमला लक्ष्मी ज्यौ जातरहहोय औ हाथ के
बीच मनालडांडी सहित कमललानेहै मरालहंस ताके चेदवा
वालक कुलत्रिय चालआदि मंद ३८ ॥

(आथरीतलवर्णन) दो० ॥ मलयजदाखकलिनंदसु

खओरेमिश्रीमीत ॥ प्रियसंगमघनसारशशिजलजल
रुहाहिमशीत ३९ ॥

मलयजचंदन कल्लिंद तरबूज औ जो सुखद पदार्थ है तों
ओराकरकामेघसों जोपत्थरपरैं सो मीतमित्र किंवासम्बोधन
आगे प्रियसंगम पदहै याते घनसार कपूर हिम वरफ ३६ ॥

(यथा) कवित्त ॥ शीतलसमीरटारिचंद्रचन्द्रिकानि
वारिकेशौदासऐसेहीतौहरषिहिरातुहै । फूलनिफैलाय
डारिभारिडारिघनसारचन्दनकोटारिचित्तचौगुनोपिरा
तुहै ॥ नीरहीनमीनमुरभातजीवैनीरहीपैक्षीरकैन्निरकेक
हाधीरजधिरातुहै। पाईहैतैपीरकिधौयोंहींउपचारकरैआ
गिकैतौडाह्योअंगआगिहीसिरातुहै ४० ॥

प्रकाश विरह है शीतल समीरटारि चन्द्रिकानाम सखीहैं
तासों कहतिहै चन्द्रकोनिवारि चन्द्रमा मतिदेखनदेहि किंवा
बाहरजायकै चन्द्रमा को मति दिखावै घरही में बेटी दूरिते
चांदनी मतिदिखावै यह उद्दीपनहै याते विरहीको दुख बहुत
होतहै ऐसे या तरह सों चन्द्रमा चांदनी दिखावत के हरप
जो है ध्यान में नायकसों जो भयो है मिलन तासों जो सुख
सोभी हिरात है जातरहत है किंवा ऐसेही चन्द्रमा चांदनी
दिखावतकै सम्पूर्णहीय तौ आवैनहीं दुखसोंहैं एतना कहनि
है ताको तू रख याको अर्थ राखिले नहींतौ हिरातुहै यह भी
जातरहैगो तब मरी यहजानैगे चौगुणोद्वयोंकरि एक तौ वि-
रह सों पीड़ा दूसरो ध्यान में नायकसों मिलनथो तो छटयो
तीसरो दुख रोग और है इलाज औगहै चौथो सर्वाकी सु-
खता सों दुखपाईहै तैपीर तोहिं कवहीं ऐसीपीड़ा प्राप्तभईहै
किंवा यहपीड़ा तै पाईहै समझीहै यहकहादुखहै याते नखी
ऊपरीने जान्यो याते प्रकाश समीरलक्षणमें जो कह्योभीनहीं
है तौभी जानियो शशिआदि शीतलजानिये ४० ॥

(अयतनवर्णन) दो० ॥ रिपुप्रतापदुर्वचनतपतप्त
विहसन्ताप ॥ मूरजआगिदजागिदुखतृष्णापापविला
प ४१ ॥

यजागि दीजुरी की आगि तृष्णा लोभ औ पाप औ वि-
लाप ४१ ॥

(यथा) कवित्त ॥ केशौदासनींदभूखप्यासउपहासत्रा
मदुग्धकेनिग्रामविषमुखहूगह्योपरै । वायुकोवहनवनदा
वकादहनवडीवाड़वाअनलज्वालजालमेंरह्योपरै ॥ जी
रनजनमजानजोरजुरघोरपरिपूरणप्रगटपरितापक्यों क
ह्योपरै । सहिहोंतपनतापपरकोप्रतापरघुवीरकोविरह
वीरमोपैनसह्योपरै ४२ ॥

(हनुमानजीसों जानकीजीकोवचन) हे वीर रघुवीर को
विरह मोसों नहीं सह्योजाय और कठिन कर्म सब हैसकें
कठिनकर्म कहतहैं उपहास निंदासहित हासी औ त्रास ये
सब सहेजानहैं ये सबदुखके निवासहैं औ विषकोभी मुखसों
ग्रहण हैसकें वहभी स्वायोजाय यह अर्थ वायु के वहने में
चलनेमें दावकोदहन याको अर्थ दावाग्नि किंवा वायुकोआ-
वर्त जानिये सोभी वडी जो वाड़वाग्निकीज्वाला ताको समूह
सोभी सह्योजाय ससुद्रकीआगि वड़वानलजीरणजनम दृढा-
वस्था तामें उत्पन्न भयो ऐसी जो जोर सहित ज्वर सो घोर
भयानक तामों परिपूरण परिताप दुख सो रघुवीरके विरहके
समान क्यों कह्योजाय नहींकह्योजाय यह अर्थ किंवा जन्म
ने जातउपज्यो जो जीर्णज्वर तपन सूर्य ताको ताप पर शत्रु
का प्रताप दोहामें तप्त थारे कहे उदाहरणमें बहुत हैं दुखसों
नींद भूख इत्यादि जानिये औ विषआदि तप्त ४२ ॥

(स्वरूपवर्णन) दो० ॥ नलनलकुवरसुरभिपकहरि

सुतमदननिहारि । दमयन्तीसीतादित्रियसुन्दररूपवि
चारि ४३ ॥

नलकूबर कुवेरके पुत्र सुरभिषक अश्विनीकुमार हरिसुत
प्रद्युम्न किंवा जयन्त ४३ ॥

(यथा) कवित्त ॥ कोहैं दमयन्ती इंदुमती रतिरातिदिन
होहिन छबीली छिन छविज्यो शृंगारिये । केशवल जात जल
जात जात वेद ओप जात रूपवा पुरो विरूप सो निहारिये ॥
मदन निरूप बहु रूप तौ निरूप भये चन्द्र बहु रूप अनुरूप
क्यों विचारिये । सीताजू के रूप पर देवता कुरूप से हैं रूप ही
के रूप कतौ वारि वारि डारिये ४४ ॥

श्रीसीताजी कैसी हैं रूपही हैं या तरह रूपसों रूपक कर-
नो इतने नको वारि डारिये दमयन्ती आदि राति दिन छिन
छिनमें छविजो शृंगारिये तौ भी छबीली नहीं होहिं छिनको
छिन पढ़ै ॥ लघु गुरु गुरु लघु होत है निज इच्छा अनुसार ॥ जात
वेद अग्नि तासों ओप दई आगि सों तपायो जो जातरूप
सोना कछु नहिं किंवा जात वेदकी ओप सो भी लजाति है मदन
निरूप निरूप मनों निरूप भये मदन निरूप इतनेको अर्थ
निरूपको अर्थ निरूपण ठहरावनो मदन काम जब निरूप है
निरूपण करै है ठहरावै है सीताजीकी उपमा लायक कोई है
ऐसे ठहरावै तब निरूपम जे सुन्दर पदार्थ थे निरूपन जाकी
उपमा नाही मिलै है सो भी निरूप भये श्रीसीताजीके मुखकी
उपमा लायक नहीं कहूं वदन निरूप ऐसी भी पाठ है वदनको
निरूपण करत कै कै सो है वदन यह ठहरावत के तब और उप-
मानते चन्द्रमाको बहुत रूप है ताको अनुरूप सीतार्जी के
मुखके रूपको योग्य क्यों करिकै विचारिये सीताजूके तपके
आगे पर देवता श्रेष्ठ देवता ब्रह्माणी इन्द्राणी आदि सो भी

कल्प हैं अच्चारूपनहीं कहें रूपहूके रूपको ऐसोभी पाठ है
नपकहिये चित्रनाके रूपको वारिडारिये चित्रकेवल रूपहीहै
किंवा रूप जो कोई मूर्तिमान है ताके रूपको वारिये कहूँको
कविनह जाये शोभा चौरदोरै दमयन्ती आदि सुन्दरकही ४४॥

(अथ क्रूरस्वरवर्णन) दो० ॥ भींगुरसांपउलूकअज
महिपीकोलवरखानि ॥ कालकाकटुककरभखरश्वानक्रूर
स्वरजानि ४५ ॥

क्रूर कटार उत्कट यह अर्थ भिल्लीइति अज वकरा कोल
सुवर कालकाक गांवमें नहींआवै बाहर रहतहै कहूँ भेड़िका-
क यहभी पाठ हैं वृकल्यारी पुरुवमें हुण्डार कहत हैं करभ
उंट करभ हाथीके वज्राको भी नामहै हाथीभी जानिये ४५॥

(यथा) कवित्त ॥ भिल्लीतेरसीलीजीलीरांटेहूकीर
टर्लीलीस्यारितेसवाईभूतभावनीतेआगरी । केशवदास
भंसनकीभामिनीतेभासैभास खरीतेखरीसीधुनिउंटीते
उजागरी ॥ भेड़निकीमीड़ीमेंडेंडेंन्यौरानारिनकीबोकहू
नेवांकीवाणीकागनिकीकागरी । शुकरीसकुचिशंकिकूक
रीओमूकभईघूघूकीघरनिकोहैमोहैनागनागरी ४६॥

केशवदास क्रूरस्वर बनावन चाहैथा ताहि समै कोई स्त्री
केशवदास को उत्कटस्वरसों उराहनो दीनों तब यह कवित्त
बनायो कीलहै कवित्त बनायवेको प्रसंग क्रूरस्वरको बोधव्य
वह कर्कसास्त्री वक्ता केशवदाससकोप इनके प्रभावते नागरी
पद औरभी सरसजीली यह इत्यादिसों निंदाहीको पुष्टकरत
हैं हेनागरी हे कलह में प्रवीण तेरी कंठध्वनिसों नागसाँप
किंवा हाथी सोभी मोहितहोतहैं हमारे ऐसी मनोहर कंठकी
ध्वनिनहीं भिल्ली भींगुरते रसीली रसभरी है अतिचुरी है
यहजानों जीलीभीनहै रांटाटिडिभ पुरुव में टिटिही कहत हैं

ताकी जो रटशब्द ताको लीलिगई है स्यारितेसवाई अधिक
भेड़िकीरसीलीवाणीकी जो मेड़मर्यादाथी ताकांभीड़िमसलि
डारी दूरिकरी यहअर्थ नेउरकी नारिनकी ऐंडमरोर वांकवडो
वकरा वाकी वाणी ते याकी वाणी वीनहै वांकसोंभी नहींचो-
लिवे में आवै काककी कागरी खी किंवा काकनिकी काकी
ध्वनि सो गरी गलिगई ४६ ॥

(अथसुस्वरवर्णन) दो० ॥ कलरवकेकीकोकिला
शुकसारोकलहंस ॥ तंत्रीकंठनिआदिदैशुभतुरदुन्दुभि
वंस ४७ ॥

कलरव अव्यक्त सधुर ध्वनिहै केकी मयूर आदि कोई क-
हतहै इतनेही शुभ स्वरहैं इतनेनके स्वर सुन्दर शोभेहैं अच्छे
आगतहैं कलरवचा वंशत्रांतुरी ४७ ॥

(यथा) कविस्त ॥ केकनकीकेकासुनिकाकेनमथतमन
मनमथमनोरथरथपथसोहिये । कोकिलाकीकाकलीनि
कलितललितबागदेखतहीअनुरागउरअवरोहिये॥ को
कनिकीकारिकाकहतशुकसारिकानिकेशौदासनारिकाकु
मारिकाहूमोहिये । हंसमालाबोलतहीमानकीउतारिमा
लाबोलैनंदलालसोनऐसीवालाकोहिये ४८ ॥

शरद ऋतुमें मान छुड़ावतिहै सखी और ऋतुनसों शरद
ऋतुको अधिक ठहरायकै जो वरपा कालहोय तो हंसमाला
तहीं सम्भवै औ बसन्तहीमें कांकल वरणातहैं वरपामें नहीं
मोर वरषाभैं वरणात हैं वसन्तमें नहीं हंसमालाके घोलनही
मानकीमाला पहिरी है बहुत मानकियो है ताको उतारो को
हिये याको अर्थ है कोहिपढ़यो कौनहै ए सखी केकाकेसी के
मनमथको जो मनोरथ चाह सोहै रथ ताको पथ शोभत है
याहीमें कासखी अभिलाषदौरतहै कोकिकाकली अव्यक्तमेंही

धनि नासों कलिनयुक्त ललित सुन्दर है वाग अवरोहियो
उपजेहे दोयनुकमें शरदकी अधिकार्ई शुकपक्षी ताकी सारिका
परकीया संगनि औ कुमारिकामें कामकी प्रवलता ऐसे अधि-
कार्ई काटिये ४८ ॥

(अथमधुरवर्णन) दो० ॥ मधुरप्रियाघरसोमकरमा
खनदाखसमान ॥ बालकवातैं तो तरी कविकुलउक्तिप्र
मान ४९ ॥

नाम चन्द्र ताकी किरण औ कविन की वाणी नेत्र कर्ण
रमना बाल खचा इतनेनको जो सुखद सो मधुर ४९ ॥

दो० ॥ महुवामिश्रीदूधधृतअतिशृंगारसुमिष्ट ॥ ऊ
खमयूखपियूखगनिकेशवसांचेइष्ट ५० ॥

मयूखमधु अंतःकरणों प्रीतिकरै सो मित्र मनको अच्छा
जगै ५० ॥

(रसिकप्रियायां) सवेया ॥ खारिकखातनटारघोई
दाखनमाखनहंसहमेटिइठार्ई । केशवऊखमयूखहुदूखत
आईहैं तोयहछाड़िजिठार्ई ॥ तोरदनक्षदकोरसरंचकचा
खिगयेकरिकेहुडिठार्ई । तादिनतेउनराखीउठायसमेत
मुधावमुधाकीमिठार्ई ५१ ॥

खारिकछुहाग माखनसों जो इष्टतार्थी सो भेटी जेठार्ई
में बड़ाईपना आंड़िके गदनक्षद अधर सुधासमेत वसुधा में
जेनना मिठार्ई हैं दोहा में थोरा कहत हैं उदाहरण में बहुत
जानिलाजिये खारिकदादिम नहींकह्योहैं तोभीजानिये रसि-
कप्रियाकाहैं ५१ ॥

(अथअवलवर्णन) दो० ॥ पंगुगुंगरोगीवणिकभीत
भूखयुतजानि ॥ अंधअनाथअजादिशिशुअवलाअव
लवखानि ५२ ॥

भीत औं भूखयुत कहूं भीखभूखयुत ऐसोभीपाठहै भिक्षा की है भूखचाहजाको केतने शरीर के अवलहैं यह गुंगा क्यों करि अवलकह्यो यामें तौ बलहै तहां काहूसों पुकारि न सके याते जानिये बकरा हरिण इत्यादि अवला स्त्री अवल जाति जानिये ५२ ॥

(यथा) कवित्त ॥ खातनअघातसबजगतखवावतु हैद्रौपदीकेसागपातखातहीअघानेहौ । केशौदासनूपति सुताकेसतिभायभयेचोरतेचतुरभुजचहूंचकजानेहौ ॥ मांगनेऊंद्वारपालदासदूतसुतसुनोकाठसाहिंकोनपाठवे दनिबखानेहौ । औरहैंअनाथनिकेनाथकोऊयदुनाथतु मतौअनाथनिकेहाथहीविकानेहौ ५३ ॥

भारतमेंकथाहै दुर्योधनके पठाये दुर्वासा युधिष्ठिरके पास आये या कथा में भगवान् साग को लेशखाय आप तृप्तभये तासों तीनोंलोक तृप्तकिये एक राजाकी कन्याने सांचेमनसों श्रीकृष्णविना औरकोनहींवरयो एकराजा कृष्णको घेपवनाय आयो तव कन्याने कह्यो चारिभुजा दिखाओ तौ चरों भगवान् को ध्यानकियो तव चतुर्भुजभयो तौ चारकपटी कन्याने वरयो वामनरूपहोयके मंगनभयो फेरि बलिके द्वाग्पालभने सां दीपनके इहां पढ़िवेगये तहां लकरी आनिवेगये और भी सेनभक्त को रूपधरि राजाकी हजामतिकरी पांडवनिदृतकरि दुर्योधनके इहां पठाये है भारतमें है प्रह्लादकी रक्षा को काठ थम्भ तामें प्रगटभये हैं यहवान् वेद के कौनपाठ में अर्थात् कौनअध्यायमें कही है भगवान् काठमें ते प्रगटहोत हैं यह सुनी भी नहींहै द्रौपदी अवला औ दुर्वासा के शापने भीतहै भूखको अर्थ चाह भी है कन्या औ राजा चाहभरेहैं श्रीकृष्ण विना ये सबअनाथ हैं श्रीकृष्णहीं नाथहैं ५३ ॥

(अथवलिष्ठवर्णन) दो० ॥ पवनपवनकोपूनअनूप

रमेऽवगमुरपाल ॥ कामभीमवालीहलीवलिराजापृथु
काल ५४ ॥

हर्ला श्रीवलभद्रजी पृथुराजा भगवान् को अवतार भयेहैं
जिन पृथ्वीको समकरीहै लोगनिकी वृत्त वा सोहै ५४ ॥

दो० ॥ सिंहवराहगयंदगुरुशेषसतीसवनारि ॥ ग
रुडवेदमातापितावलीअदृष्टविचारि ५५ ॥

सती जो सहगमन करै अपनेपतिको नरकसों काढ़ै यम
को जोर नहींचले किंवा सतीपतिव्रता जे सवनारिहैं एकपति-
व्रताको मांडव्यमुनि शापदियो बाके कहे केतनेदिन सूर्यनहीं
उगे किंवा सवनारि पुरुषसों स्त्री विषे भोजन औ काम औ
यत्न अधिकहे या अर्थकरै अवला अवल विचारि या अर्थसों
विरोधपरै अदृष्टकर्म ५५ ॥

(यथा) कवित्त ॥ बालिवध्योवलिरावैध्योकरशूली
केशूलंकपालंथलीहै । कामजरयोजगकालपरयोवैदिशे
पधरयोविषहालहलीहै ॥ सिंधुमथ्योकिलकालीनथ्यो
वहिकेशवइंद्रकुचालचलीहै । रामहूकीहरीरावणवाम
चहंयुगएकअदृष्टवलीहै ५६ ॥

शूली महादेव तिनके हाथमें त्रिशूल जगतके संहारकरिवे
को औ कपालकी सपराई रावणकेवादिमें जगको कालपरयो
थो शेषनाग हलाहल विषधरहैं किलको अर्थ यहवात है इंद्र
की जो कुचाल गौतम के घर यहवात जगतमें पसरी है इहां
जोरावरनसों कर्म अधिक जोरावर ५६ ॥

(अथसत्यभूठवर्णन) दो० ॥ केशवचारिहुंवेदको
मनक्रमवचनाविचार ॥ साँचोएकअदृष्टहरिभूँठासवसं-
सार ५७ ॥

संसारभूठ है अदृष्टकर्म औ भगवान् साँचहैं ५७ ॥

(यथा) कवित्त ॥ हाथीनसाथीनघोरेनचेरेनगांवऔ
ठाँवकोनाँवविलैहै । तातनमातनपुत्रनमित्रनवित्तनअं
गहूसंगनरैहै ॥ केशवकामकोरामविसारतऔरनिकाम
नकामनिऐहै । चेतिरेचेतअजौचितअन्तरअन्तकलोक
अकेलोहिजैहै ५८ ॥

रे मूढ़ अजौं अब भी चित्तके अंतर बीच चेतकरि अंतक
यम ताके लोकको अकेलोही जायगो हाथी तेरे साथी नहीं
होहिंगे औ घोरे साथी नहींहोहिंगे औ चेरे साथी नहींहोहिंगे
औ गांव तेरे साथी नहींहोहिंगे औ ठाँवको तो नामविलाय
जायगो फलानी ठौर फलानेकी हवेलीथी यहनाम नहींरहेगो
उहां कोई औरही रहैगो औरनहींको नाम होयगो ये तेरे
अंग जो हैं सोभी संगमें नहींरहेंगे और निकाम निकम्मा हैं
काम नहींआवैगो श्रीरामचन्द्रजी सत्यहैं और भूठहै ५८ ॥

कवित्त ॥ अनहींठिककोठगजानैनकुठौरठौरताहीपे
ठगावैठेलिजाहीकोठगतुहै । याकेतौडरनिडरडगनडग
तुडरिडरिकैडरनिडगिडौंगीज्योडिगतुहै ॥ ऐसेवसवास
तेउदासहोयकेशौदास केशौनभजतकाहिकाहेकोखगतु
है । भूठोहैरेभूठोजगरामकीदुहाईकाहूसंचकोवनायो
तातेसाँचोसोलगतुहै ५९ ॥

गुरुशिष्यको नीचकर्म में आसक्त देखि उपदेशकरन है रे
शिष्य तू अनहीं ठीककोठगहै तोहिं ठगिवेकी ठीकनहीं थोगे
देकरि बहुतलेनो यहठग तो कहावतु है भगवान् को तुलसी
चढ़ायकै मुक्तिले तू महादेव को आक धतूरा चढ़ायकै संपति
चाहै तौ संपतिले प्राचीन । ऐसेकहैं गिरिगजसुनाजगदेखो
महाठगलोगभयोहै । भोरकै पायो है कंत हमारखतूरदिये धन

बुद्धिजियहै । ठगें तो ऐसा ठगें औ ठौर जां संसार ताको तू
 कुठार नहीं जानें या संसारसों तू आसक्त होयगो तौ नरक में
 जायगो किंवा और कुठारहै तीर्थ सब रहिवेकी ठौर हैं उहां
 विरक्त लोग जेहैं तिनकी सेवा करि जानसरी पो जो दुर्लभ पदार्थ
 ताको तू ले संसारमें ठगभी बन आदि ठगिवेको ठिकाना दे-
 निके ठगतहैं नाहिं ठिकाने को जान नहीं हमारो वचन ठेलिकै
 जाको तू ठगहै बाकी संपत्तिलतहै ताहीसों तू ठगावतुहै आ-
 गिले जन्म बाको घोड़ा बेल होयकै दना परैगो थारो लेयगो
 बहुतेदनों परैगो किंवा ठेलिकै संसारी कांधका दैकै तू मोहिं ठगो
 तू याननमें जानैहैं में ठगोंहों पे वासों चाहिकै ठगावैहै किंवा
 बाकी बुद्धिको ठेलिके धक्का दैकै याके तौ डर एतनेको अर्थ या
 ठगिवेकी क्रियासों या पापसों तौ निडर डगन डगत डरि एतने
 का अर्थ निडरहै तू डरिकै एक डग तू नहीं डिगै है नहीं चलै है
 या पाप करिवे में तू दृढ़है डरिकै डरनि डगि डौंगी ज्यों डिगतुहै
 याका अर्थ जहां डर आनि परतुहै तहां तू डरिकै डरपिकै काहू
 के डरनि सों डिगि जात है आपनी स्थितिसों चल विचल होत
 है कांपतहै तोहिं ऐसो जानभी नहीं पाप पुण्य तौ परमेश्वर
 करावै है में करनवाला कोनहों दुर्योधनको वचन पांडवगीता
 में ॥ जानामि धर्मनचमे प्रवृत्ति जानामि पापनचमे निवृत्ति या-
 को अर्थ धर्ममें जानोंहों पे करिवेकी प्रवृत्ति नहीं और पापभी
 में जानोंहों पे मोहिं वासों निवृत्ति नहीं जो भगवान् करावत
 हैं तां करतहों जाको भगवान् को जानहै सो डरैनहीं । तुलसी
 जिय जानियहै अपने सपने नहिं कालहुने डरिहै । डौंगी छोटी
 नाव जेने डिगैहै तेसे तू डिगि जानहै कांपत है ऐसो बसवास
 ते उदास ऐसो जो तेरो बसोवासहै रहनाहै ऐसी बोली है तु-
 न्हारो बसोवास कहाहै तासों तू उदास होयकै केशो दास कहत
 हैं केशव भगवान् को क्यों नहीं भजनहै कहूं तू संसारमें काहे
 को लगतुहै गड़तुहै आसक्त होतहै यह अर्थ कहूं ऐसे बसवास

ते पदभीषाण्डे ऐसे यातरह जातिके वसवास रहने उदास होयके कहूँ साँचे को वनायो कहूँ सत्य जो पदार्थ है ताका वनायोहै संसार याते साँचहै मानै ऐसे जागवहै पछा को- गार उयाँ झूठा मोती जवाहिर वनावै नौ साँचहै क संसार जायै है ५६ ॥

(अथ अगति सदागति वर्णन) टी० ॥ अगति सिध्यानि
रिवाजतकवर्णक पवखानि ॥ सदानदीनदपथभुगवम
सदागतिजानि ६० ॥

पवनको सदागति जानौ सदाचलतिहै और सदागतिवाम
भी है ६० ॥

(यथा रसिकप्रियायां) कविस ॥ पवनधक्तिपलम
नोरथरथानिकेयौदासजगमजसंगोचोतिम ॥ पव
नविचारवकवकमनचित्रचहिँ भूतलअकाशअभयाम
जलशोतिम ॥ कोलैराखिथिरवपुवर्णकपसरसमहनिवि
नकीन्हैवर्द्धवासरव्यतीतम ॥ दानानिहिकिरतीरिजावन
कजयमिलैआपहूँतिआपगाज्याआपनिविशोतिम ६१

मनोरथ चाह सोहै रथताको जो पव सो एकपलभी नदी
धाकत है सदा चलतरहवहै पथअचल चलनवालाचल कसे
जैसे जगनको मगरह तामें जैसे राहीबोग चलतरहवहै गाम
मैं जैसे गाये है जैसे लोग कहवहै पानकी तरह चक्क जो
विचार रूप वकवाक ताहिबिष वकमनकालिये फिरिबोलाये
चरिके चित्रधूम है फिरै मन ठिकान नहीरहव है दानदप
जो गिरिपहाड़ परपतिमो आसकिकरिबोदापहै ऐसी जोजान
ताकी कोरिकेऔँ बाजकपीतक जो दूधतरको तारिके म न-
यकसो जयके मिलौ आपगानदी जैसे आपनिविजउदरा

अथ कविनाम है श्रीराम गायकसौ पथसाहि अगति पवन
सदागति ऐसी जानिये ॥ १ ॥

(अथदातवधन) टी० ॥ गीतिगोदागणोद्योधि
निगद्यदितकहेय । चितमाणिसुरदशगजगमाताजा
टीका ॥ १ ॥

अहमकहेय सैय गा कामधुज जगमाता ओखदसौजी ॥ २ ॥
टी० ॥ रामचन्द्रहेरिचन्दनलपराशरामहेखदेल । के
यानदासदाशोचपुण्यालियोनिभाषमकण्ड ॥ ३ ॥
टीका ॥ कहेयक हेरनखलहे ॥ ३ ॥

टी० ॥ भोजनिकमहिच्यनपनगहेवरणवीर ॥ टी
निरहेकोदानिनिदंडदवीनखलवीर ॥ ४ ॥
अगदव डंडवीनको चंडा डंडवीनदान लकेदानकोदिन
हे चंडवगात्र हे डंडवीन के दानके आगे सब के दान खहे
जात है ॥ ४ ॥

(अथगोरिकोदतवधन) टी० ॥ पावकपाणिविषम
समर्पखदरपवर्गमवमान ॥ देतजुहेअपवर्गकोपारवती
पनिजानि ॥ ५ ॥

टी पवर्गमवर्गसा पवर्गहीकोदेतहे अपवर्गको कहे सौ
डंडक अपवर्गको अथ भूति पावक अतिन श्री कण्ठो नारा
श्री विष श्री भवभूषणकोला मरुम डंडने पवर्ग सहेत योद्ध
हे निमजो चूक दंडहे पुंस दंडको पवर्गो अपवर्ग देनिहे यहे
अतिन के नि यहे मार पतिहे डंडहे मोक्षरंगो निका पतिगति-
न नानिक अपवर्ग डंडको अपवर्ग कहेय दंडापी गतिपा है
पवर्गानिक योक्तानिगीयने विष्णुः श्रीकरमपितामहः यहे
पराण चवन है निका गतिदेनिहे गतिभ पवर्ग नहे है डंडा

गा हेमारी अधिकार जगती जैसे वाजक अथवा नष्टीन जो
 की या पुस्तकी वकसगी यह हेमारी अधिकार काहेकी रीति
 मुहयह निनके मुख सांकर की सांकरकी जेवतह द्योदियो
 समुख समन होतके काहेय राजाहोनके तव द्योदियोक न
 हे हेमारी राज कौनकरेगा किवा राजमुखक मुखकी काहेके
 मुखका देवतह किवा दियोनके मुख राजमुख मुखकी देवत
 पांच मुख दिय पु सव कुंभ हे मुख हे अष्ट हे राजमुख क
 निकी रीतिकी किवा द्योमुख एकमुख दिय सांमुख अष्टा
 व सव राजमुख गणये ताकी मुखदेख रहतह गुप्त या विप-
 शोपाल इंद अग्नि यम आदि हेमहि मुख अष्टकी कही हे
 द्योमुख नाम दियो ताके मुखकाहेय मुख सतदार द्योदि-
 एक विपनि ताके सनमुखदेन सो जव समन आवतह तव
 सांकर कहिय विपनि ताकी सांकरसम हे एक विपनि पर

की ६६ ॥

करानिसनमुखदेतहीनो द्योमुखमुखजोगजमुखमुख
 शोसमराखतहेकेशीदासदासकवपुखकी । सांकरकीसां
 पनालपनिपठवुकलखकी ॥ दुरिकेकलकरकमवयोशो
 दंदिदखकी । विपनिदेरतहीपाशुनीकेपातसमपकश्या
 मुणालनिश्यातोरुवरसवकाल कठिनकालनेअकाल
 (अथगणेशकीदानवपुनय्या) कविन ॥ बालक
 पतिकी अथ पालनकरनजाली पावतीकोदान निकस्यो ६५ ॥
 सती अपराकी पावती देतह कति पावती की पति जोगी
 कहतिनेते अथअगम पावती रहतिहै किवा हरकी पवगमप
 के पतिहै मुक्ति पावतीदेतिहै पावतीके पति न होत तो मुक्ति
 पवग है किवा हर अपराकी देतह गाम यह कारण पावती
 आपना नामकी पवग नहीं बनो नही तो पावती पतिम यो
 पवग पावक आदि जो वरु धारणकरतह ताकी पवग बनो

मृगज कमलकीनर लोको निस कोई नोरिहरे किंवा रम्याल
कलिन निनायम बाजक जैसे मृगाल लोरिहरे वो जो मण्डि
नी जो सज्जाल सजसमयम कठिन और कठिन भयानक
अकाल असमयम निगमनकाल जोई दीहै वहीदख लोको
नोरिहरे नोरिहरे कमलिनीके पजसमान निनायम जो
राजानी विपत्तिको हारतई एक जैसे हाथीके पावसो जोने
द्विजस्य जैसे कर्णपपको दवावतई दुरिकतरतई मण्डिप्रकीर्ण
यम नंदमई कर्णक कला नदी है चंद्रमाकोसो कलक दूरि
करिक मण्डिप्र राखतई और दसको रकमाव दसिदपनवरि
करिके वपपकी धनि विधाताने बाके दहस लिखीहै दसिद
नी रेवा लोको दुरिकरिके मण्डिकी रेवा वनपुके शीशोपरी-
भरतई बाकी अयु वहुत आदरसो राखतई रकमाव दुरिक-

जैम राम ३३ ॥

(अययामद्विजवर्जकोदंनवपुनयथा) कवि ॥ का
मिउयुआपनिधनपनहितापवर्षी मण्डिप्रयोरिगति
महुरनरीकी । अयहंनऊचोचाहैअनलमलिनमख
लोरिहरेलिनमनमानमनवरीकी॥अविमोक्षनील
विजयविमजमगदहैमिउदंनानिकानिहैवरीयकी ।
अयिदामनदेकालकामदहैअयोकोलसुननअवपुवक
प्रियामकद्वयकी ३७

इय मरुद्विज के एक वकयौप्रिय यह दान अत्राय सुनत कै
नरामय एकरतव जो है नदीपण्ड सो कहैको देनवाहवहै
हमनि सज्जकोय लो कोकोदहैम सो हमरिम जो रतन
हो कलिदेवगो नपन सयुन अन्त्या कि हमरिजोहै कय
हमलिनी नवनेन अर करि चांसोस म मयदरिा देनी
मयकतनी और हमनि पजउयहि कहैको राखीगे लोको
मण्डिप्रगो सो औरही मयकतनी किवा हमरिोकोयु आ-

二五

॥ २ : पञ्चमः ॥
इति श्रीमद्विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्

॥ ३० ॥
 श्रीकृष्ण जी शिव जी वरुन तगर अलख गोबर हूँ धीरे अ-
 ब्राह्मण कालक आचर गोबि हूँ राको गुप सभार पी कोवर
 उगाध हूँ गङ्गी गोवि गोव हूँ मर काइ पी विरोध करि

॥ ३ ॥ कविप्रियादिः कविप्रियादिः कविप्रियादिः
कविप्रियादिः कविप्रियादिः कविप्रियादिः

(अथ मन्त्रमण्डपः) दंडे ॥ दंडे ॥ दंडे ॥ दंडे ॥ दंडे ॥

॥ ८ ॥
मन्त्रः ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
(१) ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

पस्यन्तश्चिकित्वा विवर्तितवन्तः ॥ ११ ॥
 विरोधजहासदन्तः । वानरिभिरुत्तरेण च
 कोरुतः ॥ कणिककणितपरनचनमिन्मोक्षका
 निकोसतयेचकलभकरिनिहोतिकाभनननन
 चोर्विवाधिनचनचटनमिन्मोक्षकाभननन
 ॥ १२ ॥
 (राजचन्द्रिकायां) कविः ॥ केशिदासभनननन

अहिसा १० ॥

श्रुम कटयाण रतवै वरजावै सिद्धसा इम दधुसा मारसा
 ब्रह्म वेद ताको धोष श्रेष्ठ सिद्धाधिकको आपन वरिनसा
 नास १० ॥

धोषमिनास । सिद्धाधिकभामाभे ॥ इमश्रुमवरो
 (आश्रयवर्णन) दो० ॥ दोषवर्णनवर्णये ब्रह्म

की तरुटी शिखर शृंग प्रतिश्यानिम कदा कदा २ ॥
 संगम जैगहै कलम दधिवक वजा दधिवम है नरी पहाड
 आन अवल और पर्वत सारोआदि आपन पल नगाव

अकर्मद्वितीय १ ॥

नरीनिमोदविषयतशिखरशिवरधातिद्वन्तसिचन्दरक
 म ॥ वरेकहैद्वन्द्वरेतपरेपट्टकैद्विभुगवपट्टभवन
 पिककोकिलकपोतभग केशिदासकहैद्वयकरमकरीनि
 लयभुक्तकेसमानआनअचलधरानिम ॥ सारोयुक्तहैम
 (यथा) कविः ॥ रामचन्द्रकीहैतरेअधिकलभक

शृंग ऊचोहै वही कदा निरकरकरना २ ॥

रोधावै । सुरनयनगिरिवराण्य आपविधानकरपवै ॥
 (गिरिवर्णन) दो० ॥ शृंगकुटीरवर्णन मिहर्षव

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ८६ ॥ ॥ ११२ ॥

ब्रह्मचर्यं तपसं शान्तिं ध्यानं दानं श्रद्धां चैव ।
अभ्यासं चैव योगं तस्मै योगेन विनाशयेत् ॥

॥ ८४ ॥ शुक्र

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

विष्णुसहस्रनाम । अथर्ववेदविष्णुसहस्रनाम ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ६६ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

नरसिंहनाथी देवदेवता की कविता देवा देवता की कविता

एवमनन्तरं विनाशो भवति ।

अथ कवगाथा उक्ताव्याजानय वनव पावाअजेन अरंजोका

[illegible][illegible]

1970 1971 1972 1973 1974 1975 1976 1977 1978 1979

[illegible][illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

जीको भी पाको भी बालो भालो भालो ३ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ०१२ (सुप्रसन्न)

କିରକରବନ୍ଧୁ । ସାଧୁସାଧୁ ।

॥ ४६ ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

नमज्ज द्रुम उपलब्ध है और भी वृक्ष जानिय करम
हृष्टी के वृक्षा जहाँ कलिकरत है १३ ॥

(अथा) सर्वथा ॥ आपवरेमलश्रैतिकेयानिभल
कायकरैवर्द्धश्रै । पृथिनिकपरितोपदूरैहठितननल
ननरुहवर् ॥ दूरैहृयकर्मभाववर्द्धवर्द्धमानानको
वितथुरै । आपवतजीवनहारिनकोनिजवन्धनकैजगव

अनञ्जलि १७ ॥

काई काहुँसा कहै है चहुँआरे चारिहँवाटम पथिकके परि-
नाप पथके हलकोहरत है जोरावरीसा परितोप दीनितरहको
सुँप अगिन हल्यारिना सो अधि दैविक काहुँ के कटुवचन
अनादर हल्यारिना होय सो अधिभौतिक रोगादिकसो होय
सो आध्यात्मिक जो लोभ ननरुह हुँय रोग वरावरी किवा
तलकि पुत्र वरावरी ननरुह तलवक निकटक तलजव ताको
तेतरह लोभ तो अपकारकरत है तलाव उपकार करै है थारे
वितथ थारी संपत्तिम जलजप विन जेतनी नदी नदम है तेन-
नी नदी है जीवन नाम जीवको औ जलको जीवनहारी जो
है जो हुँनके जीवन जलको हरत है तेत है तिनको जगवत है
रुलेप म जो हुँनके पाणकोहरै है निन्दै विभावत है जो आपन
वन्धनकरिके जगत के वन्धनको छुड़वावत है जो तलाव वंधाव
ताको कर्म वन्धनछुटै मुक्तहोय यह अर्थ १७ ॥

(अथसमर्द्धवर्णन) टी० ॥ वैभवेरुमाधुरता रतेन
वलनवर्द्धनते । मंगसिगमहवनिष्य यानविमानञ्च
नते १८ ॥

यान वाहन औ विमान औ अनंत भगवान १८ ॥

टी० ॥ विरिचंदवानलद्विवर्द्धि चन्दैरयेजानि ।

समुद्र चारि भी वयुत है चारिहुं तुककरि वरु है समुद्र
 है किधुं ईशु महरादेवको शरीरहै भूति संपतिषी भूति मरम
 तासां विमुषित समुद्र भी शिवभी पूज्य अमृत समुद्र म है
 सुधांशु चंद्रमा देहम है याते विष समुद्र म भी शिव म पाप
 को दोज दुरिकर है समुद्रम देवता रहतहै अनेव देवदामर
 रहतहै ऐसे कश्यपके घरमं जानिये समुद्रम भी समुद्रदेव
 म भगवान् वसत है कोऊ नगर प्रबोधि है किधुं नगर है
 चंदनको नौराज है नरग जे मनकी ऊंस मनोरथवा नारा

रसोहै २१ ॥

सबैया ॥ भूतिविमुषितापुषट्कीविषट्कीशरीरकि
 पापाविषहै । हूँकिधुंकीयकश्यपकाधरदेवअद्वैतिक
 मनमोहै ॥ सतहियोकवसेहैरिसंततयोमअनंतकहै
 कविकोहै । चंदननौराजतारनिनगरकोऊकिसाग

वानक रोमनि म समुद्र है केतवे समुद्र है २० ॥

शेष नाम धरै राखै है धरणी पृथ्वीको औ धरणीधरप-
 षारको औ विधातने केतवे जीवरचहै ताको औ चौरहलोक
 सहित औ तिन शेषनाम सहित हरिके प्रतिरोम म एक एक
 रोममं चितमं चेतजान आगप अवल रपयहै याते श्रीमग-

सागरकेत २० ॥

(यथा) सबैया ॥ शेषधरैधरणीधरणीधरकेयवजीव
 रवेविषजने । चौरहलोकसमतानहैहरिकेप्रतिरोम
 निमंचितचेते ॥ सौवतवेजुमंडनहैमअनान्दअनंत
 आगधरैचेते । अहंतसागरकीनानहैखहुंसागरहैमहि

चंद्रादयते वलिवो सिधुको १२ ॥

पद्मादेवअद्वैतहै ऐसीसिधुवखानि १२ ॥

है मनोरथनिर्वाह युक्त है किंवा चंदन नीरनीर युक्त जो चंदन
 वस्त्रो चंदन ताकी जो तरंग लहरी ताकी आकृति खीरि-
 के चंदन लगान्य अंगुरीसों चौर है सो तरंग की आकृति हो-
 नि है चंदन नीर तरंग सो तरंगित युक्त है समुद्र पथवट में
 चंदन है किंवा हरिचंदन नाम है व्याकरण में पूर्व पद
 उत्तरपद को बाप भी होत है हरिको बाप भयो चंदनरहो
 और नीर तरंगसों तरंगित युक्त है किंवा चंदन सो उज्ज्वल
 जाको नीर है २१ ॥

(अथसुषुप्तवर्णन) दो० ॥ सुषुप्तवर्णन अकाला
 पयपावनताहोय ॥ सुषुप्तवर्णनसुनिर्वाक्यप-थलसुषुप्त

काय २२ ॥

वैद्युति सुनि करत है २२ ॥

दो० ॥ कोककोकनदसोकहेतविकवलपकीलता
 नि ॥ ताराश्रौषाविहीपशोशिविकचौरनमहेनि २३ ॥

कोक चकवा और कोकनद कमल निनकी सुषु उगे विधा
 गको जो शोकदःखजात है कवलप राशिबिकासी कमल २३ ॥

(यथा) कविन ॥ कोकनदसोकहेतविकवलपकीलता
 दंशुसुषुप्तविकवलपवृषदंड है । रोषकअसोषावनयो

धककिननगुणउदितयवोषाविकेयोदासपांड है ॥ पा
 वनकरनपयदिरिपदंपकनकी जगमगमनजगमगदरशा

इहै । तारापातितनदरतारकाकोतारकिकिपयटयभातक
 रदिकीप्रभुताइहै २४ ॥

पद मदन काम ताको वदन मुख है किथो प्रगटभये है
 जो प्रभातकर सुषु निनकी प्रभुताइ है इंदवरता है मदन को
 वदन कौसो है कोक जो काम शोख ताको जो नद शोख सो

है मीर भाँद लोको कर्ता जाहि कामको धर्म शोख बेगो
करत है कोकशोख राजी करत है किवा सूर्य की प्रभा है
सो कैसी है कोकनद कमल लोको मीर आनंदकरहि रंग-
मख राज लोको मुख है किवा सूर्य की प्रभा है राजको
मुख कैसी है कुवल्य मीमखल लोको देखदहि है किवा
कुप्यो लोको वेदितकर कुवल्य समुद्र लोको देखदहि है रंग
एक प्रसंगा सो समुद्र वृथा है ऐसे भी कहत है सूर्यकी प्रभा-
ल कैसी है कुवल्य राजी लोकोसोकमल लोको देखदहि है सो
संकीर्तित होत है उचित कहिय गान्धर्वा है जो प्रभाव गरी
समस्त जग ऐसीछिड़ि है यह क्योरासन पाई है जाहि छिड़ि
कैसी है असुख जो जन दुख जो लोग लोको रोककर री-
कनेवाली है सजनसो मिलि नईदति है किवा जाहि छिड़ि
के रोकनवाले असखजन चोर व्यभिचारीआदि निनकोरीके
हैं कोरि तम आनंदकर लोको गुण आनंदकर लोको छिड़कर
हैं दूरकर हैं दूरिकेपदकज है चरण कमल को पवज भी
हैं दूरिके पदपंकज कैसैं जाहि चरण कमल को पवज भी
गंगाजी रूप सो पवित्रकरत है सूर्यकी प्रभा कैसैं पवज
लोको पवनकरनवाली है सूर्यकेरुग जलपवित्र होत है प्रभा
बचन है जगत में सूर्य जगमा दूरयो है यकाज्य प्रभा
मय है जिनकी सनान ये सूर्य है जिनने सूर्यदेविकरी है
चारिद्वयकी धूममाँ वनयो है जगत में सूर्य है कि सूर्यकी
प्रभा है है सूर्यकैसा है जगत में जगतके पथकी गति दिख
है प्रभा कैसी है जगत में सगुण लोको दिखवत है क
जग में सगुण ऐसीभी पाठ है सो आनंद है लोकोसोख लो
को लोकोगति देनवरे श्रीरामचन्द्र है कि सूर्यकी प्रभा है
लगाएत पालोवनर लोको लोको देनवरे है सूर्यकी प्रभा है
को देनवरे सूर्यकी प्रभाकैसा है लोको देनवरे सूर्यकी प्रभा है

(अथ चन्द्रोदयवर्णन) टी० ॥ कोककोकनदविरोहि
नममानिनिकुलानिर्दुःख ॥ चन्द्रोदयनेकुलधनिजल
शिवकरनिर्गुणः ख २५ ॥

कुञ्जटाको प्रकाशे नक्षत्राव २५ ॥

(यथा) कविता ॥ केशोदासहै उदासकरकमलकरसो
शोषमाववरधन कोकनदमोदचण्डखण्डनविचरिये ॥
परमपुनर्षपरनिर्गुणपुनर्षख सनमुखसुखदविदुखउर
धारिये । हरिहरैरिहियमनहरिहरिणैनीचन्द्रमानचन्द्र
मुखानारदनिरिहिय २६ ॥

हरिहरैरिहियमनहरिणैनीचन्द्रमुखी चन्द्रमाननारदनिहा
रिये दोयनयका चन्द्रमा को देखिके हरकरती है एक दृश्यो
सो पृष्ठे चन्द्रमुखी यह चन्द्रमा है दृश्यो कहति है नको अथ
नक्षी करि कहति है हरिणैनी यहदृश्यामनदखै सो कानो
हरिय तो नक्षी दृश्यो कहति है दोसखि न हरिन हरिननक्षी
है तो कहै है दृश्य म हरिमगवान है जाके ऐसे नारदजीको
निरिहिय है मगवानकी दृश्यामन नारदजीस देखिय है नारद
जी कैसे जाको करदृशकमल वरामाना जाकेकरसो उदासहै
वरामानाको पाण्डुरह्य नक्षीकरत है मय आकरनाम समहै
को आ खानिको किवा जाको कर कमलखण्डयो जाके आकर
समहैसो उदासहै सप्तनिको दृश्यामनदखै किवा जाके कर
कमल के आकर समहै निनसो उदासहै जाको भी नक्षी छै
खण्डमीको निवास जानिके करि नारदजी कैसे दृशोषकप्रदोष
तप प्रकट जो दोषपाप अपराध तासो मय है जो तप दृष
जाको शोषक मिटवनहरहै तसोपाणनारिये तसोपाणिके कथ
कोपखान ताको नारदजीवरहै ताहै है हरकरहै किवा तसो

गुणता समीपता ताके आरिओय ये नारदजी है नारदजी
 को स्वयंसीदख तौसी समीप नहीरहै किर नारदजीकेस
 है अशेषकहिउ संपुण्य जो अश्वत गोक्षसालनपञ्चादि चारि
 प्रकारकी तिनको जो विशेष भाविका ताको वरपवहै वरहै
 जाहिकया के करे भाषहैय ताको सिखावत है जस भुवको
 सिखाया किर नारदजीकेसहै कोककामगोख ताको नरगोद
 तासी उपजै जो मोह आनन्द ताको चण्डकहिउ उग्रखण्डन
 को अथ खडनकरनवाले नाम नग्नकरनवालेहै यह विचारि
 भूहै ऊँचरे के पुत्र लुगायन सहित भवहैय विहरकरुध निहै
 शोपनिओ किर कैस है परमपुत्र जो भगवान् तिनके जे पर
 चरण तिनसां जो विमुखलोग है तिनसां परपकठोर है नौर
 जाकी कखीनजरि ताहि देखत है औ भगवानसां समुल्लस
 त्रिदश पंडितहै तिनको सुखदहै निहै उरभयारहै किवा भग-
 वान सां जो समुल्लसहै सोडविदहै और अग्रजहै वरवात
 जानिके उगविष उरकी मनकोधार है ऐसे जानिये अथगन्ध
 पक्ष चन्द्रमा कैसा है कमल के आकर समहै तिनसां जाके
 करिकरण उदासहै कमलानिकी नही प्रकाश है प्रदोष फडिप
 संख्या ताहि विष सुधकी जो है ताप ताकी शोषक रंरकरन
 वाला है किवा संख्याकी औ तापकी शोषक है किर तम जो
 अन्धकारताके जे गुण लोकानिकेनताकी अन्धकरतो ताकी
 तारियहै ताहियहै संपुण्यअश्वत ताकी विशेषभावता विशेष
 चाहेसोवरपवहै औ शोषणी औ लोक ताकी तिनकोतापनिह
 यह विशेषभाव अश्वत के याकी ठौर अश्वतकी ऐसी जानिये
 रत्नपद्म दीपनही अथवा विमालि किरीजनिहै कोकनन्द भा-
 रक कमल ताकी जो मोह ताकी खडनखंडन संभहैय ताकी न
 सहीजाय ऐसे खडनकरनवाला विचारियहै परमपुत्रपञ्चादि
 जो आपन पुत्रप पति ताकी जो यहस्यान यह किवा योत्ता
 किवा संकेत तासां जो विमुखहै मानिनही ताहिविष परपहै

कही है और है रत्नरत्न जाकी नायकसी सवेसख विह्वितकी
समुझवखुगईनिको सुखद है ताहैउरधारिय है हितजनन
है किवा नायकसी जो समुख है समुझवर है औ नायकको
उरसधार है चन्दनधूम मानवहर है गो पति चन्दमाम नरद
को आरोग्य किया २३ ॥

(वसन्तवर्णन) दो० ॥ वराणवसन्तसुपुष्पआलिखि
रहिवरदरपार ॥ कोकिलकलरवकलितवनकोमलसु
राससुमार २७ ॥

विरह के विहारिवको वीर है समर्थ है किवा विरही के
विहारिवको जाके वीर सुभट पुष्प आलि कोकिलहि कोकि-
लको कलरव अन्धक मयूर खनिषा कलित युक्त किवा को
किल औ कलरव कपोत वासी युक्त वन है २७ ॥

(यथा) कवित ॥ शीतलसमरदुःखमग्निकरुणजन
अवरविह्वितनवपुष्पासिकलसन्त है । सेवनमवृण्णजन
मुखपरिभूतवोलसुनिहोतसुखोसन्तऔअसन्त है ॥ अ
मलअलकपमनसुखदरनरानअयोकरुखदंखत
नसन्त है । जाकयानदिशोदिशोफूलहैसुमनसवाशिव
कीसममलकियाकयवसन्त है २८ ॥

विरहकी समाज है किवा वसन्त है विरहकी समाज कूसी
है विरहको माधुर्य गंगाजी है मुमकहिय आर्यो श्रीगंगाजीकी
तरंग वासी युक्त वहां शीतल समीर पवन है समाज कहे
गण सहित शिव लीजिय अजर, पख ताकति, विहीन शिव
औ वृष्टीर जाकी वासुकि नागसा सोहतहैकिवा वपुविव
वासुकि सोहत है मयु नाम हैमम शीर की औ जलकी शीर
पानकरि रहै है किवा जल पानकरि रहै है ऐसे जलपस्वा निनके
गण समूह विरहकी वसन्त है औ मयुप देवता विद्योष की श्री

कोई कहत है ताके गण सेवत है किवा मनु वसंत सो जिन
 शिव के पगन पावन को सेवत है औ गजसुख गणेश औ पर
 भूत कारिकेय जिन शिवको सेवत है जिन शिवकेवचन सुनि
 सत सुर असंत अमर राजग बाणेश्वर आदि सुख होत है
 असल निमल है करि अदल कहिये अपणी पावनीशिव के
 लिये तपस्याकरीयातव लाखवरपताई सखपात खायहीया
 पीछे पातको भी त्यागिकयो तासो अपणी नाममयो औ रूप
 मजरी कोई सखी किवा अपणी जाहै रूप मजरी ताके पद
 की रजसो रंजित रंगे अशोकवीत शोक गयो है शोकजिनकी
 ऐसे सत असंत है जाहि अपणी को देखे दूख नाश को प्राप्ति
 होत है जाहि शिवके किवा समाजके राज में दिशो दिशो में
 सुमन देवता फूल है राजा है वसंत कूसो है हेमकोपम शीतल
 नाम चंदनको भी है शीतल चंदन ताको जो पवन सो गुंम
 आछी जो शीतलहोत है औ विहीनवपु काम औ वा-
 में अंतर आकाश निमलहोत है औ विहीनवपु काम औ वा-
 मुक्त फूलको हर सो जहां शोभापावत है करि वसंत कूसो है
 हाथी बहूया वसंतम मचहोत है मधुप अमर ताके गण गज
 सुखको सेवत है गजसुख कोई शिवको भी कहत है परभूत
 कोकिल ताके बोलसुनि सत असंतकहे भजेर सजही सुखी
 होत है अमल निमल अदल अमरलता जाहि वसंतम है औ
 रूपकी मजरी सरीया जे नायका जिनके पावकी रजसो रंजित
 त जहां अशोक वृक्ष है सो जव पावसो मारे तव अशोकफूल
 है जाहि वसंतदेखि दुखनशो है भाजै करि वसंत के राज
 कहिये प्रकाश में दिशो दिशो में सुमन फूल फूलत है ॥

(श्रीमद्वर्णन) टी० ॥ तातेतरलसमरीमुखसेम
 रिताताल ॥ जीवअवलजलधलविकल्पामसफल

रसाल २६ ॥

राते गरम गरम चंचल समीर पवन लोभां मुख मुँह
 भी सरिता भी ललाच मुँहों जीव अवलहेपरहें भी थारे
 जलविषु भी पलविषु विकल होपरहें लाल आव भीम में
 फल विहितहें अथ फलनसां पुन है २६ ॥

कविता ॥ चंडकरकलितवलिपदसदगतिरिक्तम
 लकूलफलदलनिकोनासहै । कीचदीचवचमीनचाल
 बिलकिलकुलद्विददरीनादिनकलकोबलासहै ॥ थिर
 धरजीवनदेरनवनवनपानि केसीदामधुगशिरश्वननि
 वासहै । धावतवलिदधनधेननिध्याधिसरसवरसम
 हिकिवांभीषमप्रकासहै ३० ॥

सतर भीलको समह है किप्यो भीषम जठ अघाहं लोको
 प्रकाश है सतर कैसहें चंडहैं आनि कोपभरे फेर कर कलित
 याको अथ कलित अथ लिपहैं वनपुंकर जगतजान वलि
 को अथ रोकीहैं वरको अथ वलसां वनमें रोकीहैं सदागति
 जान सांभस लंग चलि नही सकतहें कोहें ऐसे भी कहतहैं
 हेममें चंडनाम घमंडतको भी है चंडहैं मागो घमंडतहें फेर
 होधम कलित गदगकिप्यहैं सदागतिवन जान फेर वलसां
 वलिन युक्तहैं फेर कंडमल दोऊ शोद को गदग है लोभां
 कंडनाम सुलदहें वरु मधु आदि जानिये इन सबके विना
 शुक है फेर कैस है काकुं दरसां सवन जानिये जासां कोच
 के वाचम भीन वाचहैं नही वाचहैं यह अथ व्याल सांपविन
 में वाचतहैं नही वाचहैं मिले ली माहिजगत है कोल सकर
 कुल कुलको अथ सब भी द्विददरीया पुं दरीकंदरीम वाचहैं
 नही वाचतहैं दानके लिये मारेजात है दिन नाम माया
 विपत्तिको भी है फलाने दिन ऐसी कहेगवति है दिनकर
 विपत्तिके करनेको जाको विनासहैं कीटहैं फेर कैस है थिर
 न खंडहैं औ पर न चलत है ऐसे न जीव निनके हरेनगले

निये कई वरषा हंस प्रदान वक ऐसी पाठ है सौदासिनी
वाञ्छी ३१ ॥

काव्य ॥ भूदिसुरवापवाकप्रमिदतप्यावरमणज
रात्रेनोतिनरात्राई ॥ दूरकसुखसुखसुखमाश्री
कीननभमलकमलदलदलितनिकाई ॥ केशीदासप
वलकर्यैकागमनदरुमकनसुदसकसवदसुखदाई ॥ अ
परवालनमनमहेनलकंजकीकालिकाकिवरषादरेष
दियेआई ३२ ॥

कालिकाकिवरषा दरेष दियेआई है हेमस कालिका या-
गिनी की भद्र है श्री मयमाला औ नयेमव औ पावतीकोभी
नाम है कालिका पावती ध्यानसमयमें देवयस मलिसाहरेष
क प्रसन्नदेवको आई है किवा वरषाआवे सो मनमें राजाहोय
क आई है कालिकाकोसाई भूई जाकी सुरलीजिय कामनाको
वापयवेष समान वाक सुन्दरि है प्रमदित अधु अर्द्धातरह
वालीसा प्रमदितकिय है सुंदर पयोधर कंचनको उलेषमें जय
ताई दुसरी अधुलगी तवताई एक अधु नहीजाइय प्रमदित
को अधु सानन्द लीजिय तो एकअधुही नोठोर लागे अधु
वरषाध्याति तदितरलाई है ऐसीपाठ वराकके न अधु निन
की जो ज्योति राकी तदित वाञ्छीकीतरह रलाई चंचलता
है किवा तदितरलाई है तदित यहचुनोतरलयहचुनो जडाई
वाचियह है तरलाई में तदितको वकार मिलयहै यह है यदि
अधु में इयह है कदत है उह है याके अधु में उहैकदत है तरल
नाम दूरकोचम मायु किवा चौकी रहित है ताकी नाम है
तुकांतकलिय तरलको तरलाकिया वराकके अधुकीज्योति
है इहै यह जो तरलहै दूर मयको मायु सो तदितवाञ्छी
साहै कई तदितरलाई है एक वकारपठयो है तदा ऐसी अधु
करिय वराकके अधु की ज्योति में तदित की ज्योतिरलाई

है निजलई ऐसीअसकहै फेरि कालिकाकसहि है सुखसो निजा
 अम सुखको योगार विना सहजहो योगसो सुखकरिके नर
 करी है शोधिको जो सुखमा योगजात फेरि नैनकरि असल
 जो कमलनाक दलकी जो निकडि सौंदर्यता ताको दलितकिय
 है कयोदास कहतहै प्रवल है जान अरुम निरुपमको मारिहै
 करुणिका जोदहिथनी ताको जोगमन ताको जानहैरुपा रहित-
 नोकी सी चाल चलति है मुकियुक्त जे हैसकविजिया हैसकः
 पादकटकः इत्यमरः पादके अणुकोनामहै ताको शब्द सुख
 दायकहै फेरिकेसहि है अवरयस तासो चलितयुक्तहै सो नील
 कठ महादेव तिनकी मतिता मोहतिहै वरपाकसहि सुरत्रप
 इन्द्रपुत्रसो चाक सुन्दर मोहै है याको अर्थ योगको रेर
 आप जग्या है फेरि प्रसुदित राजीअय है पयोधर मेघसो अ-
 षण जे वृक्ष जहो अष्टवी ताको खनिके उपजहै उदितवाम
 वृक्षकोहै अमिकोरिके निकरतहै खनिनामखड्गको जोडकर
 पहे नौ अणुकोधर नहैवने फेरि रात्रशब्दसहित सो अयोनि
 सहित जो तदित वीजरी ताकी जहो तरलाइ चंचलताहै न-
 हितरलाइ यापाठकोयहमथहै तदितरलाइ यापाठसो रलित
 निमित्त विष सो चलित विष है वरपाने तदितको रलाइ है
 शोधिके सुखकीसुखमा सुखहोसो रिकरीहै चन्द्रमाकाद्वयाया
 है नै ऐसी नाम नहैकोहै ताम न कहिये नहै है अमान नि-
 मल कमलनामजल जहो वरपाम नहोको जल नहोतरहै दल
 फौज ताकी जो निकडि योगमा ताको दलितकिया है वरपाम
 फौज खराबहोति है प्रवलकपदचरो सो रणुकागत नहैरक
 नाम जलको प्रवल जो कमल तासो रणुका पुरि ताकी जो
 गमन उदितो ताको हरे है मुकित सुहसक याको अर्थ मुकन
 कहिये शब्दयो हैसककहिये हैसकन जे निहैवरपाको फेरिजहै
 वरपाको मय दहैरअदि को शब्द सुखदाइ है निजा सुकन
 वदित जो या शब्दके हैसक ताको शब्द जहो सुखदाइ है फेरि

आगर आकाशको जाने बोटिकयोहै सेवसां धरि लिया है
नीलकंठसगर ताकी मति को मोहैहै ३२ ॥

(अथ शूरदंष्ट्रवर्णन) टी० ॥ अमल अकामयका
सयाशिभिहित कमलकुलकास । पृथुपितरपयाननपशर
रसकेशवटीस ३३ ॥

शूरकालक कमल कमल जलकोभीनमहै सो स्वच्छकुल
सब किंवा हेम सं कुलवाम दशकोभी है दशप्रसव ३३ ॥

(विज्ञानगीता) कवित ॥ शोभाकोसदनशोशिवदन
मदनकरवदनरदं वकुलवलदाहै । पावनपदउदरल
सतिहैसमालदापतिजलजहैरादिसिधाहै ॥ ति
लकाचलकचालोचन कमलकचिचरचरुमखज
नियमाहै । अमल अवरलनिनीलपुनपयाधरकयोदा
सयाशिरदाकिशरदसिदाहै ३४ ॥

कयोदास कहतहै शोरदा सरस्वती है किधौ शूरदंष्ट्र है
सरस्वती कौसी है शोभाको सदनधर है करि शोशिस जालो
वदन है हेमस सदनवाम दशकोभी है सदनको अनेकतरह के
दहनको करहै किंवा शोभाको सदन जो शोशि विला है वदन
ताकी सदनव नहैकरतिहै हेमारी पुसामिखहै करि वरमनेय
आदेवताजालो प्रणामकरतहै करि कुवलय अमिमजल ताकी
वलदाहै है वरदाहै है एक लकरपुकहै करि जाके पद पावन
पवित्रहै औ उदार सवकामके दाताहै हेसपावकौ सुपण सो
माला जालो शोभन है करि जलज भाती ताकी हार ताकी
दीपति दिशो दिशो सं फूल है करि जाके विलक सं विलक
है वाक मनाहर है लोचन कमलकी लख कानिजाकी किंवा
वाक लकलौचनहै औ उनेनकमल पुरैक ताकी जालोकिच
है चाहै किंवा कमलअमनहै याते उनेनकमलसं लखिकानि

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ३४ ॥

पतपनरतिवत ॥ दीदरजनिजयूसमूनिशीतसहित
हेमत ३५ ॥

तेज रुई तापआगि की तपनसुं इनसां सज रतिवतहोत
है शीतिकरत है ३५ ॥

(यथा) कवि ॥ अमलकमलदललोचनललितग
तिजतरसमरिशोतभूरदीहृदयकी । चंद्रकणखयाजा
चवंदनलयाजोचवंदनचिंतयाजययकीतिवपुखकी ॥
घटकीघटतिजातिघटनाघरिहृदयी छिनछिनछीनछीवर
विमुखमुखकी । सीकरवृषारत्नोदसाहेतहेमतअतुकि
बुलकश्रीदामसिचयशीतमविमुखकी ३६ ॥

यह हेमतअतु है किशोरी शीतस सी विमुख रुठितिय ना-
यका है हेमतनअतु कैसी है अमल जो कमल ताको औ दल
कहिंय वृक्षनके पात ताको शीत जो समरि सी जाई है औ
लकार रेक भाषा में एक है औ लोचनकहिंय रोचन हेम में
रोचननाम सुन्दरी लो को है ताकी जो ललितगति गमत
ताको औ दलकहिंय वृक्षनके पात तिनको शीत जो समरि
सी जाति है ईरकसति है शीतलसोम में आछीतरह पात्र
धूमो नदीजाय कमलआदि को दीहृदकहिंय चर्चोई:ख ताकी
भूरि सहस्य सहित समरि है किर उपाई शीतस चन्द्रककपूर
आदि वपुष शरीर की प्रकति स्वभाव भयो किर घटकलश
ताकी घटना रचना सी घरीघरी में घटतीजातिहै हृदयमें ठठ
लगातहै पाते शीतकल में कुरंदार घट पोरिचनगतहै छिन
छिनमें रविमुखकी जोछीव सी मुखहीसां अनयासछीनकरी
किर लीकरजल कणआस तासां विषार चरफ समान स्वदेक-
हिंय आनिहैजामें तेजहोत आगिहैजामें आनिनकोनाम स्वदे
कहिं कोपमें होवगी कै कोइदेखकी भाषा है ऐसी अथ लोम

करतहैं किवा सो शब्दकी आनय हेमन्त सो हेमन्त आन
है कौनसीकर गुणर सो, स्वर्दकी हनि नाश है नाम (अथवि
रहिनीपक्ष) असल कमलबलसो लोचन है जोक आ लोचन
है गति जाकी जाकी शीत समीर पौनवसर है जाकी दौह
वर्द्धवकी भीर सम्राहहैं विरहिनीको भी चन्द्रकआदि उदी-
पन भाव ते दुखदाहैं है विरहिनी की सखी सखीसो नवसो
विरहमयो नवसो यान वृथारिविष ऐसीप्रकृतिकरी है ऐसी
स्वभावकिचोहै यासो चन्दन नदी लपोजात है ऐस जनिव
करि घटशरीर ताकीघटना चटाकिया सो घरीघरीम घटनि
है भोजन पान शयन इत्यादि घटै है श्मश्रुशयन याकी श्मि
छीनहीतहैं रविमुख सखकी याकीअथ कीकी अथ किधा स-
खदा जोवस्वुथी आञ्जवख भयु सगन्ध सो याकी रविमुख
है इनकीआर देहयो नहीजातहैं जेसे रात्रि मुखकीआर नही
देहयो जात है आखिवरणीहैं किवा जो छवितरह याकी मुख
की थी मुखदाहैंथी सो रविमुखमई गरममई देखीनहीजात
है कवहीसो करहैं शीरकारकरिके गुणर वरक होतहैं गुणरस
ठठभगहोतहैं आ कवही स्वर्दपसोना है आबति है साहन है
ऐस है यहअथ किवा गुणर स्वर्द सो याकी हनि है मुख है
ठहीपर गरमहोय यहमुखदयोहैं ३६ ॥

(अथविशिरवणन) द्रो० ॥ शिथिरसमसमगर
प्रिय कथोवराजक ॥ नाचतगावतरीनिदिनखेलतहैंस
तानियाक ३७ ॥

शिथिरस रजा किवा रंक तिन सबके मन सरस भर्त्तराग
युक्त वरणिष सबही नाचत गावत हेसतहैं कीडा करतहैं द्रो
छाहिकै ३७ ॥

(यथा) कविन ॥ सरसअसमसरससिजनोचनिनि
लोकिनेकलोचलोचलोपेकोआगरी। ललितलनसि

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

[illegible]

॥ एतन्मन्त्रं पठित्वा पुनः पुनश्च कुर्यात् ॥

॥ हे भगवन् मया कथितं प्रपन्नं तूष्णीं प्रोक्तं प्रपन्नं ॥

11 6 25555

सुत श्रोतुमर्हन्ति ॥ मन्त्रोक्तप्रमाणेन देवदेवा

[illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

॥ २६ ॥

बल्लभ भोजिभक्तो भवकालेन वरुणो नो भवति न च विना-

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

गङ्गा नदी के तट पर बसा हुआ एक छोटा सा गाँव था।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्री भवकी सागर है कवि कविचित्त सदागति सदा गति

ग्रीष्मोत्तरं चैव शीतं चैव तत्राहं प्रकृतं विप्रसृज्यते

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

४. छातीमें जामाबिन्द उज्जमादी बाँधिये। कपि फलतः मोक्षो

आदि चतुर्णां विदुषाणां कृते कृतं पद्यम्

[illegible]

अथ द्रवकरिजानां दृग्विनाम नरकको सो कोइको नही है-
जनिषां दृग्विनामो जीति नही है ५ ॥

(राजपत्नीवर्णन) टी० ॥ सुन्दरिमुखदपानजना
विशेषशालसमान ॥ इदिविपरानावविषमलजसुष

द्विनयान ६ ॥

शुचि शृंगार नाम जाकी कविहोय किंवा मृत्ति पवित्रहै
आलोचनास कविहोय किंवा पवित्रनाम कवि चहहोय मान
कहिबे ऊचोमान ताहै सहेतहोय किंवा शीलसमा याकोअथ
जाको शीलकी समा वसोवनिनको अथ और सो नही है ॥

(यथा) कविच ॥ मानाजिमपुपतपित्वापानपा
नकरूपमृदिसिमासलकरनहेरिहोय ॥ भयाव्यमदी
यकरे दैतिहैसखामृदुमृदुमखविसखविसखविसख
विषयो ॥ दामाव्यादहलकरहैविराप्रनदहैमयाप
रलोकनागोनाहैकविप्रयो ॥ अकहैअमानमदंजित
कक्षानिकश्रुअरनिमनहैकरछाँड़ैधुनिनयनो ७ ॥

हेरि विषयो मन देकरि देखिहै हेतवोति विषयो जी-
मात्रयो हेतवोति जोरिहै उन जीवको पाप भेष उन जी-
वनकी माना पाप जैसे उनके पित्त उन जीवको पवित्र
करे जैसे उन जीवको प्रविणाल राजाकरनहै पंथ भयवदी
करिय आपन पतिकी मानाकी नरहै पृथगिहै पित्तकी नरहै
प्रविणाल करतिहै कवि दामा इत्यादि दामनक पतिवो गाह-
ये पतिकी दहल दामाकी नरहै करतिहै पतिकी मानाकी मान-
पना परलोक सुधारि है माना काह विषयो याको अथ विष-
कहिबे दूधरे सो माना सन्ध्य नहीपावे पंथ पतिवो अथ-
रक रहतिहै शिविसमि ताके सहयो हस राजाहै पतिवो माना
गाहै सो अमानसो अकहै कसहै अविहै पतिवो नरहै

॥ ७ ॥ अथ चत्वारिंशोऽध्यायः ॥

॥ ७ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ (५६)

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

अनमो भगवते वासुदेवाय । राजारामपदजसेवाजनकनमो ॥

॥ ५ ॥

[illegible][illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

कामनां प्रवृत्तिस्तु नानाविधा भवेत् । तत्रैकस्मिन्नेव काले च विचरन्त्येव ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

सामर्थ्यं नष्टं किं वा परीक्षितं शीघ्रं शीघ्रं वा

गौरी चरितकृतिका मरुत कृतम् अथ गौरी चरितम् ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथिह पत्राभ्यं वृत्तायां गी पञ्चमे पदं लिखितं

[illegible][illegible]

॥ ८ ॥

(॥ श्रीगणेशाय नमः ॥) विद्याविबुधविबुध

[illegible]

116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1041 1042 1043 1044 1045 1046 1047 1048 1049 1050 1051 1052 1053 1054 1055 1056 1057 1058 1059 1060 1061 1062 1063 1064 1065 1066 1067 1068 1069 1070 1071 1072 1073 1074 1075 1076 1077 1078 1079 1080 1081 1082 1083 1084 1085 1086 1087 1088 1089 1090 1091 1092 1093 1094 1095 1096 1097 1098 1099 1100 1101 1102 1103 1104 1105 1106 1107 1108 1109 1110

विद्यमान प्रत्यक्षीय विज्ञान

二〇三

सुखकृतिवत्तां ताको दोलस्वभावहेय विजकोमल हेतुयहेय
 वगतको वीर्या वगतक वयवसो न वय्यहेय आ कामको
 वीर्या ११ ॥

(यथा) कविता ॥ कीहेतुहेतुमतीकलोकाय

गानयवज्जमपनअरुउरुसहे । जीवेज्जवतस
 पदेरुहेयवहेयपञ्चकोनकयोदसवतकोवितासहे ॥
 तरेयहेयवज्जमपनविमल हेतुयविववकोमल
 सुखमाकोवितासहे । कौययसदामवदोवनवमयामके

वतवादिउकप्रसादकोप्रकासहे १२ ॥

उद्योयवती को एतवोवातमहे आ शीतमती एतनोकिमा
 सो कवत गद्योपवीक प्रसाद प्रसवता ताको प्रकासहे फलहे
 लज्जयासो जानिये पुकहेन उन्द न जासो भोजीकोनी अमृत
 एव पय अवतारहे काहे के अमृतही जासो अरिकेउरस जास
 रहेन हे वहुलप अनेक तरहे के आरको एसा वलजोर किमा
 सेना ताको विजसवहेहे सुखसा योमा राम परशुराम म-
 लव हेतुवक गये १२ ॥

(अपदलपतिवर्णन) वी० ॥ रवांसिभक्तप्रगति
 पुरीसुनापतिवृत्तमात ॥ अनालसोवनविपुनसुख
 सज्जमअतीत १३ ॥

अमकी सहे संजाम लयहे ताको सुखमानिजेय कहे सुख
 संजाम पदसो पाठहे संजाम म सुखयजनहेय आ कोहे सो
 वीर्या नहीजाय १३ ॥

(यथा) सज्जमा ॥ ऊँहिहिंजातिअरसपरसकेय
 वन्तापयमयमये । सहेमसिर्जयसिद्धसदाजलहेय
 लहेतविक्रमपुरी ॥ सीहिंयपकअनेकानिमहिंअनेक

नपुंस्त्वित्युक्तम् । राजतिहेतिहेतिराजकोराजसुजाकी
 चर्ममचर्मपतिशो १४ ॥

अति आलस्ययुक्तं च पुंस्यं यं ताको परमं समीपं शब्दं
 दिव्यं आलस्यबालको संगमनद्वीकरो हेमसं पर्यवृत्तासं निरुद्ध
 कोभी है आपनं स्वाराय के संगद्वी समर स्वारायको संगनद्वी
 राक्षस्यो एकस्वामिधर्मं स रतद्वी काद्वीसां कञ्जलकस्वामिधर्मं को
 काद्वी काम नद्वीविगारायो अनेकभट्ट एक सेनापतिविजय रण
 स कृत्यो आज्ञा नद्वीलगा १४ ॥

(अथद्वैतवर्णन) श्लो० ॥ तेजवर्द्धनराजको अति
 उत्तमवर्द्धन ॥ श्रुतिनराजसमयगण वपुर्द्वैतश्रुति
 स १५ ॥

अति के उत्तमं कथा वपुं पर्यवृत्ती श्रुतिव चण्डा मरुतो
 ताको जानै १५ ॥

(यथा) कवि स ॥ स्वारायराहितिवसहितवहितम
 तिकामकोपलोममोदशोममद्वैतनद्वै । मीनद्वैतमनप
 दिवातिवकोद्वैयकालवृद्धिवनजातिवकोपरममननद्वै ॥
 आपनोत्कृतिश्रुतिउत्तमवर्द्धनको रतवर्द्धनराजसमि
 लैलैवशोकाकनद्वै । कथोदासद्वैयद्वैयश्रुतिद्वैतमनद्वैय
 जानिकोद्वैयवकोद्वैतद्वैयकोनद्वै १६ ॥

विहितमनियम्य जाकीवृद्धि है किंया विनमसहित वृद्धिकोद्वै
 स्वामी के कायुसं विहित को अयुक्तो है आपनो उत्कृति उ-
 पयो कपर को वनाद्वैयान जासो पर्यवृत्ती विनद्वैय कोभी है
 आपनो उत्कृतिहेतु है वपुर्द्वै अद्वैयसं मन्दं वासति को अमन
 को दृष्टिद्वै वपुर्द्वैय वृद्धिवन को सज्जको वपुर्द्वै है किंया
 आपनो उत्कृति को अतिउत्तम राखिक को है वृद्धि रतिवपु

(पुनः) सर्वथा ॥ पूर्ववृत्तिवर्णनसकटिकोनकटिप्रम
लोकावसीत्यो । कण्टकपादिवर्जोपसर्गककालवधुपर
कीर्तयतीत्यो ॥ भूमिकद्वेषोऽप्युत्तमनिरिष्यमान
दोषलसीत्यो । कथयकवलकथयकमनभनलभारथपर
थतीत्यो ११ ॥

कीन न प्रमलकस्य वसन्तियो वसन्ती वासनपपुर्गो रुपावर्ण
कालजाले सो परजोरिवरी किये वसिष्ठकहे पदवर्णन की-
जिये काकद्वार नहोकीजिये हे पदअर्थ दोपरी के वल देरन
वलरीत्यो वलखाली देवा वलदेन देलिये स आय पदअर्थ
कथय कथि कहेतहे कथय क मतयो १२ ॥

(अथमन्त्रीमतिवर्णन) टी० ॥ पञ्चमन्त्रीमतिवर्णन
विव्यावृत्तदशवारि ॥ अनाममन्त्रीमतिवर्णनसमन्त्र
विवारि २० ॥

पञ्चमन्त्रीमतिवर्णन मध्यम ध्यान करण याको ज्ञान
हेय अर्थ पद कि उच्यतेय योखन प्रतीत्य हेय किम प्रजान
सहेय साधन उपपद्य दशकाल याको ज्ञानहेय अर्थ पदगुण
सो याको सन्तुष्टहेय पदगुणको ज्ञान यह अर्थ दोपरी टी०
काम सन्धि १ विपद २ जान ३ आसन ४ द्वेषीभाव ५ स-
मय ६ कति सौम्यपद इत्यादिभी छान्दोग्य कहेतहे सो दशवर्ण-
नरिक्तो अर्थ वीरहेवियो मुक्तहेय आत्मम योखन किम निजान
को ज्ञानहेय अर्थ सगपदिव्यद्वेष निगम वचनो ज्ञानहेय
येसी मन्त्रीको वृद्धिहेय लोको मन्त्री विचारो २० ॥

(यथा) सर्वथा ॥ कथयमन्त्रकथयविविधवर्णनजोषव
स्वारथवृत्तिवर्णनो ॥ भद्रेभ्योभद्रेभ्योभद्रेभ्योभद्रेभ्योभद्रेभ्यो
विकटोविविधवर्णनो ॥ वृत्तिनकाविविधवर्णनवर्णनवर्णन

मंजिनकमतिरेसी । राखतखाननदेवनव्यादिनद्विष्य
विचारविमाननिर्वासी २१ ॥

मन्त्रीकी श्रुतिन मादक मतिरामंग ओ कोषआदि जे

आर अनेसोधात निन्ता योग्य बातें वेसव तजी हैं काहुँसो

भद पातिरेना बाकी मन्त्री हरिकारदनी काहुँसो अभद करि

एकतकरि भयभद करना काहुँसो विग्रहयुद्ध करना काहुँको

नियदकरना अथवा एकविजेना काहुँ जोरावरसो सन्धि से-

जोकरनी और जेतनी बुद्धिकही हैं सोसव जान देवन व्या

देवन को व्या विमततह विमाननिर्वा रधाहोति है जब

अधिरसो भयहोतिहै तब जैसे विमान प चहिकै चलेजात है

वृत्तनद्विष्टाय वैसीकोअथ बाहोतरह मन्त्री की जो मतिहै सो

विश्वविचार उत्तम विचारकरिके दिनकहिसे विपति निनसो

राखति है किवा विमाननाम हैम में सातखण्ड जो परहेय

ताकी भी कहत हैं सातखण्डको पर सुखदहोतिहै औ ऊंचो

होतहै उहां बौछि सबदेवन हैं देवनाम राजा औ वृद्धकोभी

बड़ा साहुँकर ताकी जैसे सुखसो सातखण्डको परासो ऐसे

जानिय २१ ॥

(अथपयानवर्णन) टी० ॥ चवुरपनाकाछजछावुर्द
दुमिव्यनिवर्दयान । जलथलमयमकंपरजरातिनवरणि
पयान २२ ॥

यान पालकी रथआदि जल सँसि थलमयहोय २२ ॥

(यथा) सवैया ॥ राधवकीचतुरंगचमचपिकोमनके
शोवरजसमजानि । शूरतेरंगानकउर भूपानुभापनाकन
कपटसजानि ॥ दूटिपुसतिनकेभुकेतावरणीउपमवरणी
कविशजानि । निरुमनामुखेननिककिशोरजसिरीश्वरे
मंगलजजानि २३ ॥

सेनाके चारिअंगहैं गजस्थ घोड़ा प्यादा चतुरंग जो चम
 सेना ताके चप समूहसँ राजनकी समानकी कोन गतिवक
 अनेक राजा साथ हैं जुग कंधी जे पताका ताके पटसज्जो
 किधौ राजाओ राजलक्ष्मी जाहैं सो मंगलकलिय लोचनको
 अङ्गहैंहैंहैं मनेयव आँ भोलि ताको नाम लोच है पूरव सँ
 लावा कहत हैं राजा प पयान समय की सब लाजा डारे हैं
 मंगल है २३ ॥

(रामचन्द्रकायां यथा) कवित ॥ नाटपरिचरिपरि
 तरेवनचरिगिरिसोखसोखनलभैरुमरियलगायकी।
 कुशोदासआसपासठौरराखननतिनकसंपतिमय
 आपनेहोसायकी ॥ उन्नतनवाहनउन्नतवनइमपय
 र्जनकीजीविकासोमजिकहेयकी । मुदितसमुद्रमान
 मुद्रानिजमुद्रितके आईदिशिदिशिजातिसेनारघुनाथ
 की २४ ॥

दिशो दिशोको जीविक औरघुनयकीकी सेनाआई नहि
 भ्रष्ट दंडभी के और वहुतजल शोषिके वहुतठौर सँ जलकी
 ठौर थलकी गायकरी लोमकहेतहैं यहेथल है शोरुरजति की
 ठौर ठौरसँ आपने लोग राख यानराखि तिनशेजतही सँ-
 पति सतसमुद्रसो मुदित वदित जोमुनि ताको आपनोमुद्रा
 मोहर तासो मुदित चिह्नित करिके आपनो दिक्का चलाय क
 आय २४ ॥

(हेयवपुन) दो० ॥ तरलततइतेजानिभुवनमवलपु
 तिनदंखि॥दंशसुवशसुलभपुण्ड्रिचानिचिदंखि २५ ॥
 तरल बबल अक तातेहोहैं चार्कनहेसहिबकें तेजगति
 आवि औरोहालबल मंथसोसिखतहैं मुदंजोर नदोहाहैं जय
 तिन धारे तिनके होहैं दंशकाहेय अरव इराक इत्यादि ता

करिह भो भूयस्तेहि भूयस्तेभ्यो एषो भो पाठ है तहां छंदस्य

सुन्दरताका दंगे सप्तश्लो २५ ॥

(यथा) कविभ ॥ वसनादिदृष्टवृत्तव्यानमवाहिक

देनाद्यप्यन्वयिष्यतेतिहैतहैतहै । अकारिधित्वादि

विश्रुतिंवाप्यन्वयवृत्तव्यानमवाहिकेतिहैतहै ॥

मनकर्मितीवरावृत्तवृत्तव्यानमवाहिकेतिहैतहै

कनिकेतहै । गुणगणवृत्तव्यानमवाहिकेतिहैतहै

व्यानगमयन्वृत्तव्यानमवाहिकेतिहै २६ ॥

एवमगगगद के वाक्ती वाक्ती श्रीगमयन्वृत्ती देवनि को

देव है कनिके वामनहो वृत्तवृत्तव्यानम एकवो वामनहो

करि देवपदके वृत्तवृत्तहै और वासिपदकेहै देवगमयन्वृत्त

भी है वृत्तवृत्त भी है वृत्तवृत्त है सो वामनहोहै नमआकाश

को गदगद गको वृत्त वासिपद सो कहा नाथ वाहवसो भिर

होत है विनिर्मास सो तो श्रीगमिष्य अलनिष्य सो अको है

वृत्तहै वाक्ती वाक्ती वृत्तवृत्तहै वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती

देव गकोनाम वाप्यवाप्य विषय वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती

क नाथ कपुडवृत्त वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती

विषय वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती

वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती

वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती

वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती

वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती

वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती

वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती वाक्ती

नेन आलिखकोऽयं नञरि कर्तुं कहेतव्यं नेनानिषं जाको जीव-
 वसतवै सो आञ्जनदी जौनी लावण्य सुन्दरतासां देवनवलि
 के नैनिषयक नहै जाको घर है किवा देवनवलिके मन के
 आ नहैके निकत है नेनवसिजातवै आ गुणनिषां वसिजयक
 है हेमस गतिगमजानको आ याजाको आ सामदाम उपाय
 को नाम द्योकाहिउ अरण्या जाको नाम आ पय को नाम
 कलकोनाम तो प्रसिद्धहै है बलित है गतिबलजाको किवा
 बलित है अरण्या जाको तकरुहै किवा पयको चलनो आञ्जो
 नदीबागत है बलित मनहरेहोत है पयजासां ऐसे वाडापर
 चर्चा चाहिये २६ ॥

(गजवर्णन) दो० ॥ मनमहेवतदेवममन्दवजनि
 चलकण्ठ ॥ मुक्कामयइमकुम्भमृगमन्दरदरसुवर्ण २७॥
 मनहै तौमी महारत के वयस है ऐसे दूधिया धारे दैतवै
 मुकयुक्त इम दूधिया है जाके कुम्भ सुघटहै किवा मुकामय इम
 कुम्भ सोशुमहै आ आहै तोपखानाछट करि और जीवनिषां
 तरे नदी सुंदर आञ्जो यवाम वर्ण रहै २७ ॥
 (यथा) कविच ॥ जलकेपाननिनदलकुर्यांगारपर
 दलकविगारकरपरपरपरपरि । दहैगहैसुवनमद-
 निमरतरणदतदेलिआशोषागोशोषाजकेमुरि ॥ नि
 अकसेवधवकलिदतसेअमद वदनकीशोडसुरचन्द
 कीचाखोले । मुरकेउदोनतउदोगारिसोउठितआलिंस
 गजराजराजराजराजमचन्दपूरि २८ ॥

ऐसे ऊंचहै केतनो जल ऊंचाहोय गहराहोय जाको पार
 करनवालेहै नाब नहीचाहिये पवनसां उतरिजातवै पर शेष
 के पुरस तोर शोरकोमचावै तोरनाम दारिकोमी है दहै
 करै गहंको दहनहै करि कसहै पनमय जैसे दैतवै गोरी पर-

बुद्धि हो भाग्यो भाग्यो निमल किंवा आशीर्वाद देती है
 गणेशदेव के भक्तों किंवा विद्यावान् के वंश में हैं वंश
 अर्द्ध आर्द्ध उपमावाचक है विद्युत्तुल्य कलितपर्वत के पुत्रों
 हैं पर्वतप्रमाण हैं आ ऊँच हैं या तो अमन्दजल है वन्दन योगी
 लोकी रचनाओं श्रुतमरु हैं वन्दनयोगी श्रुतमरु यह भी पाठ
 सर सर लोके उद्गतप्रकाशों उदयचल से सोहत हैं किंवा
 श्रुतमरु आये चढ़ें लज्जके दोहास श्रुतकहेयों पाँदिरपर
 का घर लोके आग २८ ॥

(अथसंग्रामवर्णन) टी० ॥ सेनास्वतसदाहरजसा
 देसराजप्रदरा ॥ अंगमासपटमटअथकनयअपार२९
 रजनश्रेष्ठ सदाहकवच साहस भयङ्गीर जौरकरनी भट
 पादोंके संवदभार अन्धराजों चढ़े अन्धकार कवच सत्तक
 टीन २९ ॥

टी० ॥ केशववर्णनसंग्रामवर्णनानावर्णन ॥ स
 मिमयानकरीधुरमयसरवरसारितसमृद्ध ३० ॥
 जन आपनेदस प्रथम गणसाहेव महादेव भूमि भयकारी
 केशवर्णक ३० ॥

कविन ॥ शीलितसालिननरवमसलिनचरगिरि
 देवमन्त्रविपविभाषणवर्णन ॥ चतुर्पत्तिकावर्णन
 वाअनलसमो गिरिपुत्रमवतकेशवविचरयो है ॥ वलि
 सूर्याजिसूर्यासमनेकाज भरतसवपुंड्रअमर्त
 होला है । सहेतसहितशेपरमचन्दकेशवलवर्णनकेस
 मरसिधुसिधुसिधुवर्णन ३१ ॥

केशववर्णनके समस्तक लोको वाचसमृद्ध कियो है समृद्ध
 हो रूपक करत है निर्माणरूप चढ़े विपदरयो है विषयम

विभीषण इत्याम चतुर आ वृत्तिपतिका सो वाङ्मनस समान
है योगिनि धनवतारि सो नामकत समानहै नामकत वृत्ति है
युद्धको मिटायो चाहतहै वात धनवतारि ऐसे जो समतामिजा-
इयु तो सबकोहै साफ नहोति करै मरत सबस्य कर्तुयोग्यतम
सहित मरुहै इह सो आ योग्यतम मरुत बहोदृष्ट्याहै योग्य-
नाम को अवतार श्रीलक्ष्मणजी ताहि सहित श्रीरामचन्द्रजी
नारायण है बहो ३१ ॥

(अथ अखंडकवलीन) टी० ॥ नरवाहिराजवहचोते
इवानशोचान ॥ सहैरवहलिया भलपुननीलनिचोल
विधान ३२ ॥

राजमादी है ताको नरचुरी वहेरीको नर वहेरीवजा कहे-
वतहै शोचानसकरा सहैरा कारसी भू वनको नाम है छंद क
लिपु देहविक्रयो कोइ सहैरस्त्रिवाहगोश्रयोको कहतहै बहोलिए
करोल आ भील नीलवस्त्रको पहिरन नीलकण्ठ सो हरिय
बहुत भाजतहो ३२ ॥

टी० ॥ वानरवाचवराहसगमनिदिकवनजत ॥ य
धनधनवेधनवरणिमगप्रायेदजनत ३३ ॥
सगप्राशिकार नाम छंद यहपाठहै बहो अमजानिय छंद
अनन यहपाठ आखो ३३ ॥

कवित ॥ नीतरकपोतपिककेकीकोकपरावनकरके
लंगकलहंसगहिलायहै । केशवशरभकहिसोहोगावस
सगति करनिपासयोशोकसहायहै ॥ मकरनिकरने
विवाधुगजराजसगसिंदरीदरानिभोलमाननिभावे
है । टी० भरीभिर्मानकेहरपाहिरावेहोकासपुंससम
कर्ममरदीउआयहै ३४ ॥

三三三

वाहनवपुष ततो कोहं सार्वभौमं कर्तुं पाठ्यते इन्द्रवज्रं शक्रवक्रं
 शम्भुवक्रं सकवक्रं तद्वै देवकोवाहनं भिदं कर्णिकवक्रं वाहनं
 मयूरं सो न सार्वजिवाय याते धातुको धनुवक्रको कान कर्ह
 सक आपने वाहनं को विक्रिंर औ पावती पुत्रवपु सरस्वती
 वती कर्णिकवपु पूत्र इन्द्रवक्रं वाहनं को विक्रिंर ३५ ॥

(अथ जलकलिकालं) टी० ॥ सरस्वती जलप्रिया
 भानिप्रिया प्रियमन्युलि ॥ गहिबो जलप्रियमन्युलि ॥
 चरन्त्या जलकलि ३६ ॥

सरस्वती सरस्वती कनक होय देवय्यो मनसो प्रियकमन
 को अलहै गहिबै इतके मनसजुगल है बासो प्रियको मन
 वधवहै गनछटहै अथवा तिनको पकरिबोवै ३६ ॥

(अथा) कविन ॥ एकदंभयतीपुसिहैसिहैमजंभ
 एकदंभिनोसि विषदराहैयोहिय । अथवा निरनएकल
 तिबंदिबोचिबोचमानगतिनिनदंनउपमानटोहिय ॥ ए
 कदंभिकठलालालातिबंदिबंदिजानि जलदंभवलसिहिय
 वतानिगोहिय । कयोदासअमपमभवतभूरजलके
 निमजलजमुखजलजसोहिय ३७ ॥

जलकलिभू जलजमुखा जलजसोभोवै एक दंभयती
 पुसो सुन्दरिहै जो हंसिक अथवा कनिके इतहै एकदंभ के
 वपु वाजकान को दंभयती औ पकरिबोवती है याते दंभको
 समता किंवा हास्यतो दंभयती उज्जयन्ता गोकुलहै एक
 हंसिनोली है विपमुखको हार देवय्योहियै योभो किंवा
 दंभनम है दंभ अथवा नोली है बासो नो लहसोनी सरसी
 है अरु कमलसोभोवै याते मुखाजकोहोवैहै योभो गन
 वीचिबोवै तको वीच भू बासो वचनता के अर्थ सोनरी
 जो गतिहै जो जलजो हंसिकोवै याते सोनरी जो ३८ ॥

के गये पाँछे बाकी जो रस अर्जुनग ताहीविषे सुखकोवाँगी
याही को ध्यानकरूगी याहीको गुण कथा कहूँगी याके रसमें
सुखमनरहूँगी याते में बारवार कहे अनेकवार घरती किता
रत्नपकड़े हैवारवाल अज्ञानि बारकोअथ कोपकोरांको नही
तो बारसमें कोपलप जो रस विष तामें सुखको रोहि है मूल
मालिनहीयागो विषकोगत हैममें विषकोभी नमरसह किता
मानलप जो रस तामें जानिये में तेरो निहोरो करतिहो यद
यामें मरी ओमहैं तामें तो तू नेकु थारी भी नही निहोतिहैं
सब सखी निहोरिके हाँती तोहि कहे काहें देवता की थोरि
विशेष है सुखकी जो निहोरो सुखकलिय जो निहोरो तू नो-
थकसां विवासकरि ताकी जोन माया सो मलीकरी लक्षण
लक्षण विपरीतादि अथ में होतिहैं तामें करी ऐसा जानिये
नाथकाकी नाथकमें उलकठरोहि वकाविष कहेते उलटीरिति
सां कहतिहैं कथोरथ की तोहि सोह है अथ ते मनको मति
मारे मानहीमें मनराखी मानकरस कहे तेरो निहोरा
करतहैं किनकी अथ कथा नहीमानति है किता ताह के विष
नाथककी बुलाव आं मिलियह कथा नही मानतिहैं में तोहि
निहोरतिहो नहके निहोरे जब तोहि नाथकको नह प्रयत्नहो-
यागो निहोरोगो निहोरुवाँगी नोचोकरोगो तब तोहीको निहो-
रोगो हैमसांविज्ञातिकरूगी सोहिमनपदहें यदमानतिहैं ॥

(पुनः रासिकाप्रिया) कवित ॥ हेरितहेरितहेरि
ताहेयुहिहिरतहेरिहोहिरतनहेरितनहेरितनहेरि ॥ यनमा
लीवनपरवरसनवनमाली वनमालीहेरिहेरिखकरोयकरोम
सहो ॥ हेरयकमलननहेरिखकमलनन हेरिखकमलन
नैनअरिहोहोहोहोहो । आपवनवननयमवनहेरिसोहेन
वननयमनिकेयोसवननयमविवयुरहो ॥ ४१ ॥

कोऊ बहिरंग सखीसां किता परासिनितां नाथकाप्रयन

॥ ८४ ॥

॥ १४ ॥ २५ ॥ ३० ॥ ३५ ॥

10월 15일생

अपने श्री परम लोचनको नहीं पहिचाने पाते नञ्जुनि
 वटी पाते अगर्बति शूलभट्ट जानिये नञ्जुनी वो अगहं श्री-
 ललता नहीं जान्ता पाते भूषण पद्म परमप्रभा को योगिन
 खवाओ ऐसे कहिं ललित्यु निदाओहिं आगिन कविम मं
 किता हूँ मं सातौ सुख पाहुँ मं जानहुं इहाँ प्रवास विरह
 जानिये ४२ ॥

(पुनः) सवैया ॥ नहैकहेमखिअगोउसामनिमय
 निर्यासिबिसासिनिवर्त्त । दसगम्यउडिहंसिनियुचप
 लामनानीदोहोतिनिकाही ॥ चारुअग्योपवर्णवटचही
 तापनरोतिनिअन्यातनगाही । क्योववाकीदंशोसुनिहोअ
 वञ्जानिबिनाअगञ्जानिहोही ४३ ॥

पूवैतराम मं सखी गयका सो विरह निवेदनकरिहं हं
 क्योव वट गयका आगिनिवा अंग अंग मं वटी हं मयवट
 हं नौ मं कया नहोवरखी ऐसे मयसो हिसका अयाने मनिवा
 करिके आगोउसामनि के साथ वरुहें निश्या गनिबो वाको
 वार्ता हं वहीभट्ट हं कसोहं विववाविनि विववासयनी हं वपी
 मं जैसे हंस पक्षी उडिजात हं तेस हंसउडें गनिकहिं गनि
 लोके गपकी तरंगिणी नही ४३ ॥

(अथरसवत्प्रवणन) दो० ॥ योचोस्त्रिजगत्प्रसिद्ध
 गुणमण्डलसंचरन ॥ रूपपरमममयगुणपरविभवा
 जातव ४४ ॥

योचो रसवत्प्र की रक्षाकरनवालिहै यहैप्रमाण मं प्रसिद्ध
 है श्री वयो के गुण वलिभट्ट हं ४४ ॥

(पुनः) सवैया ॥ रूपलोलिमचनकनिपमपदलमहि
 तहोविचयप्रभासि । वंदनकैविनिहैहैकीदोपनिमपम
 चोनिमनेनअभासि ॥ हंसनकूडविअनयकैद्विज

ननकृद्भिनर्त्तयामसी । मोहतिहै अतिभीषणवयम्पर
आननचन्दप्रवशयामसी ४५ ॥

श्रीसिताजी सो स्वयम्बर में अतिमोहतिहै धनुष की श्री
रामचन्द्रजीन तरंगोहै तारो मयो जो आनन्द तारो अति
योभनिहै श्रीसिताजीको मुख सुन्दर चन्द्रमाहै और परित्रेप
उपनक जो आनन चन्द सोमाजी परित्रेप प्रमाहै चन्द्रमाही
कामंडल यथोहै श्रीरामजी धनुष तरंगो तारो कातिहै नहै
याने परित्रेप की समता एकजो चहुँओर बरहै तारो साम्य
औ परित्रेपमें जवनी कातिहै तेवनी काति रहिगई ४५ ॥

(सुरतिवर्णन) टी० ॥ सुरतिसालिकीभावमामिम
पितकलितमंजरी ॥ देवभाववहिअन्तरतिअलजसल

उजयन्तिर ४६ ॥

कामसो एक जो चित सो सावतारो उषसो जो सौ पुरुष
को भावकिया तारो नाम सुरति मणितनम रति में शोच
मंजरीचरणमंजरी सो कण्ठन है वाज है होव किल किंचि
आदि भाव स्थिर रोमांचआदि बहिरति अन्तर रति रसिक-
प्रियाम कहीहै आलिंगन सुखनआदि बहिरति सावदियति
तियुक्तआदि सात अन्तररति ४६ ॥

कवि ॥ कथौदंसप्रथमहैउपजतिमयभूरीषक
चिबेनहैकम्पनहैतहै । प्राणप्रियवाजीकितवारनप
रातकमविप्रयवद्विजदंननिनहैतहै ॥ कलितक
पाणकरसकतिसुमानवान सविमलिकरजप्रहसनसह
है । मंजरीमंदशहरदृषणसकलहैतसखिनसुनरोतिम
मरकहैतहै ४७ ॥

इतिश्रीकेशवदासविरचितप्रकाशप्रियाम
प्रमथमात्रः ८ ॥

धर्म नयक नयक है गहर सखी पूछति है सखी न
 कहति है सो रसीति है नयक नयक है नयक नयक है
 सखि समर है अकपहर्षनिसमर कसो है कयोनि कहेत है
 प्रथमही लखिही नयकीके समय मो क न कायर है निनकी
 मय उपजै है श्री श्रीनकी रोप कोयकी कोयकीन उपजति है
 श्री रवेर उपजै है श्री श्रीकीर है कपकी गहन नही दंडकी-
 पतिनही यह अथ गणपिप्रय वाजीकन प्रिय जोहै गण नकी
 नही कनकरी है वाजी जीवकी वाजीन है जो गुम जीवने
 नो हमारी जीवलेहै हमजाति नो गुहारी जीवलेहै यह
 वारन होथी श्री पदतिपदा नकी कमकहिय वाजीन है
 नही किग मुदम गण सरीप प्रियजोहै वाई नकी क्रिये
 वारनकेलिय शोचनके रोकिवकेलिय पदति कम पावकी न-
 लावनी नही शोच दु-हो श्री आदिके विविध अनकतरहेक शोच
 है हम अथ वाईउठाय कामअवगुन अपन अपण श्री पस
 जोहै दस्य सो विजनकी देत है किग विजयसी सो नही मी-
 सके दानकी पावत है और अपनी अतिरीतिरि पतिनकी देत है
 कलिन कपानकर शोकिन सुमान मानकर दस्य कपान नरग-
 रिमो युक्त है ऐसे शोचनकी और शोकिन वरदोषी कसो है
 सुंदर जो मानकर नकीजान रक्षकनयनी नकी सवि
 सवि चलायकी नयरी करकि नकी शोच दायनी न-
 पद्यो है जो प्रहरमरनी नकी नही सदन है नही वाजि प
 शोच नरवारि नहीचलायसकन है यद्विष्य भद्वेय शोच न
 अपण है न हरमय पराजय मय सवदपण होत है नय
 हैसत है कि कलानी अपरी वरिवेक लिख नयकी सो प्रीम
 करिगईथी सो मजीजान है अपण है न हरमय नो पय
 अथ किम पुनकि दोष नही कोह कहेत है अपण नय
 श्री हर जहै दपण होत है सदा नय किम अपण न
 लोमने लोच वाहिके मरत है (अथ सुनपथ) पदतिपदा

(अथ विविध विधानाः) टी० ॥ १ ॥
 मन्त्रेण विधानेन ॥ २ ॥
 मन्त्रेण विधानेन ॥ ३ ॥
 मन्त्रेण विधानेन ॥ ४ ॥
 मन्त्रेण विधानेन ॥ ५ ॥
 मन्त्रेण विधानेन ॥ ६ ॥
 मन्त्रेण विधानेन ॥ ७ ॥
 मन्त्रेण विधानेन ॥ ८ ॥
 मन्त्रेण विधानेन ॥ ९ ॥
 मन्त्रेण विधानेन ॥ १० ॥

विधानाः विधानाः विधानाः ॥ ८ ॥

इति श्री विष्णुस्मृतौ विधानाः विधानाः विधानाः ॥ ८ ॥
 मन्त्रेण विधानेन ॥ १ ॥
 मन्त्रेण विधानेन ॥ २ ॥
 मन्त्रेण विधानेन ॥ ३ ॥
 मन्त्रेण विधानेन ॥ ४ ॥
 मन्त्रेण विधानेन ॥ ५ ॥
 मन्त्रेण विधानेन ॥ ६ ॥
 मन्त्रेण विधानेन ॥ ७ ॥
 मन्त्रेण विधानेन ॥ ८ ॥
 मन्त्रेण विधानेन ॥ ९ ॥
 मन्त्रेण विधानेन ॥ १० ॥

(अथजातिस्वभावलक्षणं) टी० ॥ जातिवैविध्यं

सर्वत्र विद्यते कहे ७ ॥

उपमाके भेद औ पदके प्रमाणसे नवविध कहेतव ७ कहे
औ द्वापक समेद औ प्रहेलिका औ परिवत चौदहे प्रमाण
प्रमाणसे समहित औ सुसिद्धि औ विपरीत औ रूपक समेद
ति निन्दकारि भावितलकार औ पर्यायानि औ युक्ति नवहे
कि औ विधिकरण औ विधेयानि औ सहेति औ भाग्य
हेतुति आदि द्वादशे प्रमाणसे युक्ति औ वाक्यानि औ भाग्य
नवरसकेरि अर्थान्तरभावेसहित करि नवहेतव औ भाग्य
औ सहेतव औ लेश औ निदोषता औ ऊर्ध्व औ रत्नरत्नकरि
ना औ आशिष औ भेदसहित उल्लेख औ निगम औ विभाषा
से भेदसहित आक्षेपलकार एकादशे प्रमाणसे रूप औ भाग्य
वता औ हेतु औ विरोध औ विरोध औ उल्लेख द्वापक प्रमाण
गुण क्रिया वस्तुन कीजिय सो स्वभाव इतना भेद औ विभाषा
नवम प्रमाणसे जातअलकार रूप वस्तुन कीजिय सो जाति
लक्षण उदाहरण आगे कहेसे जातिस्वभाव इत्यादि जातिवैविध्य
अलकार सामान्यलकार ती कहे अलकार नाम इतने

एतन्मैषितकीजिय ७ ॥

उपमा १४ तमक १५ सूचि १६ ॥ आपादितमैष
भेदयुक्तिकहेलिकामात ६ अलकारपरवतकहे १३
साहित्यमैषितयुक्तमैषित ॥ रूपकद्वैपक
अमितसुपयुक्तिकुनियुक्ति १२ सुनसवसत ५ सुन
मिलाव ४ व्याजसुतितनदकहेव्याजनिदसुतितन ॥
विशेषाकतिमाप ॥ क्रिसहेलिककहेनहेकमहेमैषित
युक्तिकहेवककतिमविक ३ अन्वयकतिव्याजकनहे

गुणकद्विधेऽस्मात् ॥ तासां जातिस्वभावसवकद्विधेः
एतद्विधानम् ८ ॥

जातिं त्रयो रूपद्वय द्वयम् रूपनाम आकृति को अर्थः
स्वरजाको सो वर्तकद्वय सो जाति अलंकार औ जाको त्रयो
गुण आकृति सो वर्तकद्वय सो जाति अलंकार औ जाको त्रयो
अर्थः सवसहित रूपवर्णिय औ गुणवर्णिय कवलयानन्दसं
जाति अलंकार स्वभावोक्तिस्तो वर्तनहो द्वय भाषाभूषणको
टीकाकरीहे ताम्र रूपद्वे २ ॥

कविम् ॥ परिपूर्णपादकृतिपुञ्जकृतिरूपोदात्तभाषा
परिपूर्णपादकृतिपुञ्जकृतिपुञ्जकृतिपुञ्जकृतिपुञ्जकृति
वर्तनहिया । सव्यकृतीरतीरवर्तनहिया १ ॥

वर्तन अर्था मुकुटी यह अर्थ अञ्जनहो यावे मुकुटी
कृतिव है औ ताही ताही वर्तनहिया ऐस अन्वयकद्विय छोट
नाहरक नखहो परिपूर्ण इत्यादि सवहो वर्तवहो नन इत्यादि
आकृतिहे जातिस्वभाव एक अलंकारहो तो कवलयानन्दसो
औ मिल गुणवर्णा योच है किमवर्णा योच है इत्यवर्णा
योच है इत सवह जाति रहित है जातिस्वभाव एकहो उदा-
हरण द्वावह अव भाषावाक्ये अर्थकल अर्थ करवहो ३ ॥

(अथस्वभावोक्ति) कविम् ॥ परिपूर्णपादकृतिपुञ्ज
कृतिपुञ्जकृतिपुञ्जकृतिपुञ्जकृतिपुञ्जकृतिपुञ्जकृतिपुञ्जकृति
मार्द्विय ॥ इत्यमलकपर्यवर्तनीयार्थोदात्तहोतिवर्तनहिया

स्त्रीलागिकेयवउपमानादिभ्य । कामादीकीर्त्तनादिभाषा
 केकुलउल्लेखिउल्लेखिउल्लेखितलभाषाभाषादिभ्य०

नलोचन समानमुख लक्षणा सां वदेवेन ज्ञानिय उरविभ

उरजात कृप तकीवात वृत्तानत यह है प्रेमही उपम है अत्र

राहेहैं शोभे आठ अत्र दांतगौर ताम्र रातीलाज रत्न उपर

पानकी किवा स्वतःसिद्ध सां ननही मोहतिहैं कपर धूर मग

विशेषहैं नेत्रसं जैसे उरिहैं धारिताय ऐसे बाकीछवि जामा

जाकी उपमानादिभ्य लोचिय दृष्टमहै वदेअथ गौरगान गा-

राहैं गुणके तां जालि अलंकार है किवा स्वभाव अलंकार है

दोष अलंकार भाषावाले कहत हैं सां न समुच्चि गौर अथन

सां विरोध और उदाहरण साकनहीं १० ॥

(अथविभावना) टी० ॥ कारनकीविर्त्तकारणादिउ

दाहोतजिहिर ॥ तासोकरहेतविभावनाकीव्यक्तवादि

रमा ११ ॥

कारण प्रिय कारन गहन कारणविना नही कां उर

होय उपमै तहां जानिय ११ ॥

(यथा) कवि ॥ प्रणयकपरपानखयुकेसामुपवयव

अथरअकण्ठकीधुसुधामुसुधारहै । चितितकपानना

ललोचनमूर्त्तिरूपनअनलअलकअलकानिमोहिरहै ॥

मूर्त्तिकोटिलोचनोसामनिकयहैहै ॥ आदिमूर्त्तिजामा

कयोरायहैरहैरहै । कहेकीरागांरकानिमोहिरहै ॥

लोचिरेअंगसहअर्धांगरहैरहै १२ ॥

कपरसां पूछे ऐसे व पान निनहे लख केले मग ॥
 एगंधहैय जैसे सुखवासहै अत्युत्तम को अथहैं ॥ १३ ॥
 सां सुधारहैं कयोलनकी को अलंकारहैं ताम्र अथन ॥ १४ ॥
 वारे व पदांय है निनको मोहिकरि अथन निन ॥ १५ ॥

॥ २४ ॥

॥ ६६ ॥ अथ कुरुक्षेत्रे युद्धम्

॥ ६ ॥ ॥ ॥

॥ ४६ सुहृदप्रीतिप्रदायकः

॥ २६ ॥ शुद्धि ॥

|| ስ 6 || ብዙኑ ብዙኑ በግንባታው ይገኛል || ብዙኑ

॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥

हेय अथवा आरति के जोरते प्रबलहेय ईसरो अथाव हेय निबलहेय औ सथाव अथाव निबलहेय नीलरो नी नीलहेय अथाव असमयुद्धेय १५ ॥

(अथसमावहेय) सर्वथा ॥ हेयवचनद्वन्द्वने अरविद्वन्द्वनकमकरद्वन्द्वरो । नीलनीलनिबलहेयके तकीकतकचपककीवनपरो ॥ रंमानकपतिरेभनसंज्ञ मगधेयनीवनसाराकीनीरो । नीलनलमन्दसंगधसमीर हेयोदनसामिनिधिरजधरो १६ ॥

पुंसो जो समीर पोन सो चन्दनके न पुन्दनमहे अरुपते अरविद्वन्द्व कहे कमलन के शरीर में जो मकरद्वन्द्वन को रंग नीलो मिलिके फिर केतकी केतकआदि कितनेनसोमिलिके रंगो जो है केला लोको जो पतिरंमणु मिलाय लोको संक्षम आदर्शिकयुद्धे यूसो पवन में गर्वको मानकरियो औ धीधुकी दूरश्यापो केला के भीतर जो वनसार कपूर लोको जोरो सो उदंय ल्यावन है कोई जोरो शीतललोको कहेत है पोन ईन सबसो मिलि धुई हरिवेस समधुमयुद्धे १७ ॥

(अथअमावहेय) सर्वथा ॥ जन्मनमनद्वन्द्वनकी उतरयोक्वकामकोकामायाद्धे । अर्धवानचद्वन्द्वनोक्व लेवरजोरिकलेवरअर्धुद्धेयुद्धे ॥ आगनिजानिद्वन्द्वनि लीलातिरुपनसमवलीलिजयुद्धे । हेयवचनसमनिनरो अनासाधेहीसधनसाधुमयुद्धे १७ ॥

सूरासकी रंगी रंगी किररटी सधन अथय सनन यानन प्राणायाम इत्येवहि के अनसाधेही सधे निबलहेय सधुमयो साधुनकी विषय वाचनो अटिवातिरुद्धे लो हेय जग उदंयनीरो छोटियाद्धे है कहे साधुकी ठौर सिद्ध सो पोटहे अथवनिबलहेय प्रबल करणुद्धे उदंयवस्था असमयुद्धेहीका करणुद्धे जो न-

(यथा) कविः ॥ परमपुरुषकर्मसंगमोऽपि न जनि-

नर्तनशीलमकुर्वन् न ह्यसि रिति । परमकुलकल्यणं
कोरुते तस्यैव सव्युक्तं साधुपरद्वारप्रियमिति ॥ अथ
कदेव तदवयवपरद्वारिण्यत परमकृपालपुरुषकर्मपानि
है । विद्यमानलोचनकृहेनोन्मामलोचनतेकयोरेवमयमा

यामश्चदधुनमिति २० ॥

राजाराम अद्वैतमिति है आप परमपुरुष है अष्टपुरुषं कृ-
य कृत्स्नपुरुष को संग अविचल अतिरिक्त पुरुष
संगम है अतः पुरुषोक्ति दान वाहोसा रत है सर्वव्याप है राहुको
रुहन्मुख राहुदैत्यको हलवाहिये सो राहुकोपयको सुतरात
है चोर वटपार जहानहो सधुलोम सधुकरुते है अत परम
प्रिय है तद्वत्पर उत्कृष्टवारा श्रीजनकजा अकरको अर्थ काह
को कर दंडनहोतेत है अकरको अर्थ नाहो है दायजाको साहसि
धनुषको राखत है कृपालकर तरवार दायम है किंवा कृपा
नहोकर तबजे है परमकृपाल है औ पति है पाल है दायजेव
विद्यमान है विद्यमानकी यानि दूरसा नजद्वारेवम यानि है
वह अत सुन्दर नज है सुन्दर नज वासहेन है एकहो विन
वाहै वहुतवाम लोचन नहो है दंडा विरामयति है प विन
ते विराम नहो है २० ॥

दो० ॥ केशवदेवसिरोमयपरमपुरुषकर्मपानि ॥
तस्यैकदेवतविरोधनकालिकलसर्वविधमिति २१ ॥

वहुत विरोध २१ ॥

सर्वथा ॥ आपसि तसि तदवयवविरोधमयमिति
रुंरंगमयति । केशवकाननहोनसुखैरुंरंगमयति
नवाति ॥ नैतिकव्याख्ये अन्तर्यामिनीनामोऽपि नमः

॥ ८८ ॥

॥ २२ ॥

॥ ६८ शुद्धिपत्रिका ॥

सुन्दर है वान सुन्दर नाम ऐसे वान विष्णुनिवास सो
 मोहकायें सुखायें मानें विधान न बनाया है इहो गन्धो-
 लक्ष्मी भावें विष्णु निवास जो पदार्थ वेसो है इहो उपमा
 जो सुखायें बनायो होय सो विष्णुको निवास यह विरोध जो
 अलंकारको उदाहरण देहि सोई अलंकारनिकरु मायाभूषण

की तरह से इनके मध्यमनहीं सहेजानी शोकरसंशुद्धिदेवगी
परमहंस तपस्वी ताकी गतिविद्याहै सो परम सनकाहरे
यह त्रिषु वलवोर वलमद ताकी वीरमहि श्रीकण्ठ निनका
एकवार देखे सो वयोकरतिहै वरीविषहै वीरन पूजनी वि-
रोध श्यामरंग की श्रवसरन करहै महेयकरतहै कानवाहंमय
है श्रीकण्ठसो कण्ठसो त्रिषु जो कण्ठावसारी होय कण्ठ क
पीछे लग्या नहीकरै २३ ॥

(विशेषलक्षण) टी० ॥ साधनकारणविकलजहै
सुसंयत्कीसिद्धि ॥ कथवदसवखानमयविशेषपर

सिद्धि २४ ॥

इहां साधनकोअर्थ साधक जो कथकोसिद्धिकरे सो अ-
करणहीन सो साधनभी कहैतु औ साधकभी कहैतु साधक
जाहै सो कारणकहिउ देव ताकरिहै विकलहैय हीनहैय औ
साधकहिउ कथ ताकी जहै सिद्धहैय अने कुहैरहै ताकी
साधकनहैहै परतु घटवनाहै २४ ॥

(यथा) यथैय ॥ साधककोकण्ठमालकपलजटान
कीजटिहैजटिआत । खलपुतानीपुतानाहैअममआर
कीआरकहैविषमति ॥ पारवतपतिमपतिहैविषहैय
हैकथवसंभयगत । आपुनमंगतमोविषवाहिनहनहन
इहैमंगीकहैतै २५ ॥

भूषन के मारे आतरी जगिहै है इहां कथ क साधक
महदेव है कथहै दान ताकी सिद्धिकरिहैय देवताहै भंस
मयहैर गज अथवहैयहैकरी विषहैरहै साधककहैय
सो सुहैसमागि शोवखु ताकोदालकीसिद्धि नहीहैतै २५ ॥

कविप्र ॥ तमोपुआपुननआपुननिकपुननननक
निबिपुपककोपकगिकनहै । सुखविषवहैतै २६ ॥

०३ नानाविधमतिमयतनसमेतः ॥ एतकापुनः
 कृतनयनकीदृशकानिजक भावनाकामदृशकामिनि
 कृतनदः । यानिनिमीसिद्धमननकीसकलसिद्धिकेयी
 दामदामिनिन्यादसनकादतः २६ ॥

तमार्थ को अप चात्र्ययतासा अपित है तनजाको
 तमार्थको अपविद्या है आपनी लोहारनक होति है लोह
 की भव रूकति ७३ रूप काजत है विरूप नून नीन नून सय
 नन अपिन एहीनजहूँ औ लोकक विजाप नयकतहूँ तमा-
 गुणक कायकोपताको घर है मुख कठ तम विषको धरत है
 औ विषधर सपुकोधर है किवा जो विष विषकोराखत है ऐसी
 जो सपु लोकोधरत है सुखमात्र औ विमलसामुपत है विना
 रसा निनको मया काटया तसामया जो पाप तसा युक्त है
 गौतम औ वरुणति की लोके पासगया जो चन्द्रमा सो पा-
 तकी है सो विजयरस विजककीठर रहत है याते पातकीको
 विजक जो काहुँ काम दाह औ कामतीरति तके विजापको
 गौतमावत है तसा देवकरत है किवा कामदाहकी कथाकहत
 है श्रीकामिनी पावती सो हैत है जो काहुँ काम को वरावै सो
 फरे कामिनी सो हैतकरे तो काम होय तव कामिनी सो हैत
 समय यामिनीकी सिद्धिनीकी ऐसे दासिनीकी निजसेवकनि
 की वक्तवत है जैसे दासी वंदाकी काहुँकोदाजिये तो सिद्धि-
 दायकहोय सो सत्यगुण प्रथम चाहिये औ वकी समदृष्टि
 चाहिये औ लोकपर दयाकरि रक्षाकरे औ योगस्वभाव होय
 काहेपर काम न करे औ तकी सत्यस्वभावकी संगहोय औ कामक
 गौतमहीसुदृष्ट औ कामिनीसो गौतमहीराखतोहोय इत्यादि
 हेतु विजलाश्रय है औ सिद्धिदानकाय तकी सिद्धिभई २६ ॥
 मन्त्र ॥ यानिनिहृमननदेरथपनिनदेवलय ॥
 नहिदेता । योवदामकठोरनतीशमसिद्धिदायकहूँ

अधुसुनरोवदईकरिजननपतिराम २९ ॥

॥ वाचिजनआवालिखिउठैवतदेवनवा ॥

कारण नहीरहै इहांवाँ कारणहै पु भगहीनरहै यदुभर २८ ॥

सो करि करिक मरति है सकलनही है निमजगत में मर

सो मरो इठइव जो अकण्य वाको ऐसी कमान ऐन वायन

कटाव न बाण है एते मानकी है धार निनही है सो ईति

आनि तेरो अपकयतिहो इहांवाण लागनही सो कटिन न

इखे देवता को कोई देखेनही निनगुणकी कमान भूति नही

देवतासीहो नपकन नहीदेखी वहे देखिआहै है नही देवता

द्याहो निवाहिक पूरो पदवाति है कहेकसहि नही राजनि

नपकक पधकी सखी सखीस कहेनिहै कसहिती निम

कोऊताहि २८ ॥

मानहीठइठभरेकोअनीठमन पाठइंमरनीवैकान

कमानतानिनकीलकटाक्षवानयहैअवरनआहै । पु

दौरिआहैचोरचोरिआहै ॥ निनगुननेरोअनिभर

गोरिगोरिमोरिमोरिआरिआरिवसफिर देवतासीहो

युक्तसाहिकपदवैकककिकानि केयवमवनिआहै ।

(रसिकप्रिया) कवि ॥ वज्रकीर्णप्रकवनि

इत्याहै योगइत्याहै हेव ताकरिक हीनहै २७ ॥

एकगुण उनको विनिकव को है साध कवि गवोरि है यही

को सरदार है ताको वयकिव है गवोरि है एक विनिकानही

कहावती है कामी ती वयोहीनहो है यहकामनीहो है नकनि

पतिप्यादा भी खीन के नहीहै ओ गाववहीनहै यवना

वयकीनो २७ ॥

परवीनो । रक्षकलोकानिनुसुगवोरिनिपकविलीकानही

रनलीनो ॥ योगनजननिमनननपनननपनपनपन

गतिराम कहैं शिखरैं उतरी क्युनरास सो प्रिया लकी
 निराकर नाम गतिरुकिरा कवनो एकपाशिन स मतिराम
 के शहीअनरहैं लकी कहैं निखनहीअथि औ पानिचनही
 अथ लकी अशरखो पाननही घाम अहैं को नही देखत है
 लखणखो गरम शिरदकी नहीदेखतहैं अथुसुनारी नरिजान
 के लकीनको जसो अथ है लतरहसो मारीको नहीदेखतहैं
 एतने करिगुनिन विरक्तहैं औ बिरहको करिआगतहैं ३६ ॥

(अथ उपदेश) श्लो० ॥ क्योवअरहिपरुसअरेकी
 जतक ॥ उपदेशानामिकहिनकविप्रियापक ३० ॥

अरिवरु स अरिवरुकी आरना कोजिय लकी बुद्धिखो
 सपक योगहैं ३० ॥

कवि ॥ हरकोवपरीरखालकीनरीरवणकीबधा
 नरिखोतिरुसुखलगतहैं । शशिनि क्योबलक्योबल
 लमहैएकसुनिक्योबलक्योबलहैपाहैहरगतहैं ॥ कामधोर
 हिनरिअरतकलानिकहैकलानिलोउचदिपरतयेसोगा
 लहैं । मरेजानजानकविजानहैजानकहैदेखतहैतिरि
 ननननसुखगतहैं ३१ ॥

बाहुबोवास किना पुनानावास लकी पवननरी किना वस
 गम हैसस पीठक हाड़कोपी है सोसे बुद्धके वसको वानरोग
 नरी मरिहैं केरि उठनही शोल वरुकी शोल निशोल अरिस-
 नननी अरुकेवहैं नकणिकके ननननिलोउचदि उचदि
 परत है मरे गम पदपद उपदेशा वचनकहैं स पद सप्तश-
 वना करनही जानकीअथ निडादोना कछेजानहैंहैं देजानकी
 न नननन के देवनके मन मास वेसो कामवहैतहैं लस को-
 रग अरुकेवहैं है सोलानी को अरनन रूप करण है दोना
 की सप्तशवकहैं ३२ ॥

कीनप्रतिषेध ॥ आक्षेपकतत्तासि कहेतवर्तुविधिवरि
सुमध १ ॥

प्रतिषेध वरिजो सुमधुर्जि १ ॥

श्लो० ॥ तानर्तुकाजवखानि ये मधुर्जि मदीहोत ॥ क
विकृतकृत्तिकहेतवे यद्वेयतिरेयवउदीत २ ॥

मया सो भूतमादी जाहोयगा होत सो वर्तमान कहेतयति
कहेतके २ ॥

श्लो० ॥ वरय्योहोहरिजिपुहरेवारेककरिभूभग ॥ सु

नामदममोहनिमदमदोहोवाभूभग ३ ॥

रतिषो कोई को वचनहू मने वरजाया कि ते हर महोदेव
पास मतिजाहि विपुर्वद्वय के मारनवाले सो महोदेव ने एक
वार मूहचट्टाईकि हे मदममोहिनिरति तुम सुनो मदन काम
अनगमया अंगहीनमया महोदेवको आरुम कियो ववर्दी
विषयकियो इहां भूतवातहू ३ ॥

श्लो० ॥ तानिरीनकीनयकीनर्तुविधिवभूभग ॥ की
जानैदेवनायकदेवाणनायकेभूभग ४ ॥

सोई सखी पावती को सकोप देविऊ कहेति हे प्रणयमान
हे कौटुम्बिकदेम सो उपजे सो प्रणयमान भूभगकरना आओ
मदी प्रणयनाथ शिव तिनके भूग कदाहोयगा भूभग आरुम
करत प्रतिषेधकरतिहू कहेहोयगा यद्वेयगा ४ ॥

श्लो० ॥ कीविदकपटनकरयारलगतनतजहिउआ
दे ॥ प्रतिपलननदेकीपाहिनोहिसनहू ५ ॥

सखीनायक सो कहेतिहू नायका नहीनाही करतिहू तहां
नायकको प्रमदोखिवनी कहेतिहू हे कीविद प्रणयनकर को
कपटपर यद्वेयवान है तहां नायकवचन गाहू सो नायक हू

रसिक है सो याकेलान उछाड़को नहीं नज नहीं प्रनिपलपनक
पलकप्रति नवीन नहेको समझे वरनर निरहपरिहरे है उरह
नहीं को कहना आखिलगत है नायकासों प्रतिकरिवरणा
है तब सखी प्रतिपद्यकरे है वनमान ५ ॥

(आक्षेपनाम) टी० ॥ प्रेमअधौरजधौरजनिसंग
मरणप्रकाश ॥ आधुपधरमउपायकहिप्रिधाकेयवरा
स ६ ॥ (प्रमाक्षेपलक्षणम्) टी० ॥ प्रेमखाननहीन
हउपनतकरजवायु ॥ कहेतप्रेमअक्षेपप्रहनासोकप्र
वसायु ७ ॥

नवनाम कहैत ६ प्रेम आपना कहन के कोई कपु को
बाधहैय ७ ॥

कावत ॥ अज्ञावहवरजमगणनाथनरेगणअंग
नलगाइयुजआगेदखपाइवो । ज्ञान्याहिसहेसिअनि
धिरपरउपरकीबोकिअखिनकउपरविजइवो ॥ प
कीपलइतउतसाथनजनदंनहे लीदेहेदोअदिकहो
लीनगाइवो । प्रेमनोकहेतनिदेखिहेकचलनअन
छाड़तयुकेसुपेहैअनउठिधाइवो ॥

सोहीसो प्रेम इतनोप्यारकरतही सो मरेगण प्रेम अपन
अंगसो जगावतही यहप्यार आगे दखपाइवो काल नाहि
प्राणको प्रेमछाड़िके चलन को कहतही प्रेम वे प्राण कर्महि
तरहसो नहीछाड़तहै प्रेमसो अनउठिके इन्हें मरेवोइ इहां
या अर्थ में मरणाक्षेप क्यो न होय इहां आपन प्रेमको कहन
मरणरूप कपुकीवपमयो यातेप्रमाक्षेप मरणाक्षेपना मरण
को कहते मरनाहि रूप कपु को बाधेन है प्रेमअन्यासो
वहतवीच जो कोई बधायको अर्थ नही विचारन है सो प्रेमा

अधुकरत है कोई परदेसी नायक है तासी नायकाकी आसकि
है तुम्हें आन उठियायवा है परदेसीको चलना है तासी तुम
करत हो विमगलको झुड़िके चलनको ॥

(अथअवैश्याक्षेप) टी० ॥ प्रममगवचसुनतनवहउ

पवनसालिकभाव ॥ कहतअधिरजनकीसिकविग्रहअक्षे

पुसभाव ५ ॥

प्रम के भंग के वचन सुनत को जहाँ साविकभाव रसम
रहै रोमांचइत्यादि आठ बहउपम प्रममगमय यहभीपाठ
है प्रमके भंगके वचन सुनतके भयवा जहाँ ऐनालगइये ॥

सवेया ॥ केयवधानवहइतिवदकहैअथप्रियापहन

हनइरी । आवालिहानहैवय्याकहैहोमवालिहैवयेसव

नायकइरी ॥ कोप्रतिउचरहैइसखीसुनिलालिबलिवन

याउमइरी । साँहककहैरिहोतिरहैनिवासीकलाअथवा

नरइरी १० ॥

सखीसी सखीकहतिहै नेहसा नहेवय तब साकोपरगजाहै
गोकुलसा कहैर आन नहेवन है महावनजय आनो एक
तो यह ईसरी गोल जो हैसिके कहो बोलवाकययाउमहैआवा
सा उमहै प्रममग को वचन महावनजय के आनो आवासा-
हिक १० ॥

(अथअवैश्याक्षेप) टी० ॥ कलजकलिकहियेवचनका

जनिवारणअथ ॥ वीरजकोअक्षेपयहैवरणवहिस

मधु ११ ॥

कलिका कलिके वचनकहै वाहिकय को विचारिवा अधुम

निकरै ११ ॥

कविम् ॥ चलतचलतद्विचलतद्विचलतमयुक्ता
 तकाचलचलतचलायुक्ता । जातद्वेकद्वेकद्वेकानि
 लतआनिजानियद्वेकानिमाद्वेकानिमाद्वेकानि ॥ मरुतानि
 मदिद्वेकानिमाद्वेकानिमाद्वेकानिमाद्वेकानिमाद्वेकानि
 युक्ता । चलद्वेकानिमाद्वेकानिमाद्वेकानिमाद्वेकानि
 द्वाविजानिमाद्वेकानिमाद्वेकानिमाद्वेकानिमाद्वेकानि १२ ॥

कद्वेकानिमाद्वेकानिमाद्वेकानिमाद्वेकानिमाद्वेकानि
 मित्रत मित्रतद्वेकानिमाद्वेकानिमाद्वेकानिमाद्वेकानि
 एसा परद्वेकानिमाद्वेकानिमाद्वेकानिमाद्वेकानिमाद्वेकानि
 निषेधक्या है १२ ॥

(संशयक्षेप) टी० ॥ उपजायेतद्वेकानिमाद्वेकानि
 जतिरेय ॥ यद्वेकानिमाद्वेकानिमाद्वेकानिमाद्वेकानि
 य १३ ॥

सन्देह उपजायेत कव्य काय वाच्योवाच १३ ॥
 कविम् ॥ गुणनिवर्तितकलसुनिकलितगुणवर्ति
 तालितगुणवर्तितकलसुनिकलितगुणवर्तित
 विचलतगुणवर्तितकलसुनिकलितगुणवर्तित ॥ का
 मकलितगुणवर्तितकलसुनिकलितगुणवर्तित
 नकलितगुणवर्तितकलसुनिकलितगुणवर्तित १४ ॥
 कविमसुनिकलितगुणवर्तितकलसुनिकलितगुणवर्तित

वृत्तरेणुसा वलितयुक्त कल अयुक्त मवर्तितगुणवर्तित
 श्रीजलितगुण सया म वृत्त विचलत करुणी विचलतगुणवर्तित
 यद्वेकानिमाद्वेकानिमाद्वेकानिमाद्वेकानिमाद्वेकानि
 क कलितगुणवर्तितकलसुनिकलितगुणवर्तित
 लता वा विचलतगुणवर्तितकलसुनिकलितगुणवर्तित

द्वेष्टन यां सकृद्यो जन्मदाह गही है । यह तो पवित्र है विजयो
 को विन नमस्क के विजयो वहुत आसक है याते विजयो
 कदा सखी तो यह देसारी है वनय-वनयक वम अन्धकार
 को सपनकरणी कहे काम के विरोधी मज यहपाठ है मज
 शिवको लीजिये कहै मत पाठ है मत ज्ञानिनको लीजिये है
 शिवकलाव वाकी रसनजीम वाकोरसम यहभीपाठ है वाको
 पानरस म कोन खवावणी यह संशय उपजायो सो परदेश
 गमन रूपकायु को विरोधी है १४ ॥

(मरणार्थ) टी० ॥ मरणानिवरणकरनजहकान
 निवारणहोत ॥ जानहुमरणार्थपकविष्यानिषवहिव
 टी० १५ ॥

ऊपर सो व्यापक बात राखिये सो आक्षेप काय रोक्यो
 जय १५ ॥

कवित ॥ वाकैकिवारहैहोहारहरद्वारकयोदा
 सआसपसमरजनआवणी । क्षणमजपायनहैऊपरअ
 टानिअजिअगनपदपदहैजसमाहैभावणी ॥ यारे
 यारेनापदनमहिहोअरावजलपायहैनपुत्रेपानअव
 ननपावणी । मायवनिहरेपुजिमापाहैमरणमदआवन
 कहेतसुनोकोनपुहुआवणी १६ ॥

दरकाहेय छोटा वारदरवाजा खिरकी जानिये नापदान
 पानी जानकीराह पौन जहाँ पुर्जनपावणी पायहै न पावोपान
 आवननपावणी यहभीपाठहै जब माहि नहोपावणी पानआ-
 डेव नहोपावणी इहाँ मरण को निवारण करत गमनको नि-
 वारण भयो १६ ॥

(आदिपार्थ) टी० ॥ आदिपार्थप्रियकपयकोटीज

दुःखदुराय ॥ आश्रिपकी आश्रिपकदेनसकलकवि
राय १७ ॥

आपने दुखको क्षय कैं आश्रिप देय कहे प्रियार्थ सों
आश्रिप आश्रप १७ ॥

(कवि स० ॥ मंत्रीमित्रपुत्रजनकेश्वकलजगनमोद
सुजनजनमदसुखसाजसों । एतसुवदोतजनजपुदेक
शालगतअवदोषलकगतयकुनसमाजसों ॥ कौटो
जोपयानवाधक्षमिभुसोअपराय रहियेनपलआवाध
यनलजसों । हिनकहैंकदेननिगमयवअवतवराजन
परमहितअपनहैंकाजसों १८ ॥

मंत्री और मित्र और पुत्र और जनदास और कलज और नके
गणसमूह और सोदरमाई और सजजनलग उदमनलोग किंवा
सजजन आछुमद मोदी ये सब सुखके जो साज सरजोमदये
दोलत यहसव ताहेंसों लग है पुत्रकलज सोदर ये करि यथा
करिहोहैंगे करि यथाकरि जाहेंगे ये देहसों लगहैं सपानसों
लगानहैं नहैं ऐसलगाइये मित्र और नके पुत्र और कलजगण
के सोदर यहूत समुनिसों से पाहैं कहेया पयान प्रत्यानो
मतिकरी यह अपराधको आश्रिपदेन है आपनेकपुसों परम
हित चाहिये नहैंतो राज्यको धंदेवस्तजोतरहें यामें नजफा
को दुःख छयाहैं प्रियाके कपुसों हितनहीं परेजानिये १८ ॥

(धर्माश्रप) दो० ॥ राजनअपनेधर्मकेंनहैंकरि
हिजाय ॥ धर्माश्रपसदंडहेररायनमयसुखपाय १९ ॥

काज जातो रहै १९ ॥

कवि स० ॥ जोहैंकहैंरहियेनोपमोपमोदोनिजनन
कहैंतोहिनहननहैंसहेनो । मयमोकरहेनोदोस

भवप्राप्तनाशमाधुन्यलक्ष्मणकलानवदन्ता ॥ के
 योरप्यकस्मिन्मसुनद्वयलाल चलेदिवनजोपना
 दैराजदन्ता । तैसायामवावसाखनमहसिजनापयव
 महिचलनमादितैसाकञ्जकदन्ता २०

चित्रकोकद्वी तौ हितद्वानि को सहनोपरु करे लोकलाल
 को कसे वदन्ता निवाहनहोय इहा राजपतिनको कहतहै इहा
 आपना धर्म नायका रोखति है नायका को गमन कायु छै-
 दत है २० ॥

(उपप्राश्न) दौ० ॥ कौनहुँएकउपप्यकारिकोप्य
 ग्रथाना ॥ तासाकहतउपप्यकविग्रहअक्षपसुजान२१ ॥
 ग्रथानरोकि २१ ॥

स० ॥ माकोसववजनकीवृत्तहीदरातिरसमानसुहा
 गिनजान । ऐसाकानापागोपालनहैवनाकेलमव
 सिवाउरअन ॥ मरतिमरोअहोठकइठचलोकरहोव
 कञ्जनमन । प्रमनिअमानअहोठकयवकाऊनमाहि
 कहैपहिवान २२ ॥

इसमहादेवको बैसी गोरिसोहागिनहैइरके बामभाग सो
 लगी रहती है नायका नायकसो कहत है पुनहारे प्रभावना
 मरति मरी अहोठकइठ चली कि रहो है इठमिग रहमरी
 मरतिको अहोठक अहठ करिके कोइ और न देखे पुन चली
 किजा रहो इन दोऊ जाननसो जो एकमन माने सो करी अह-
 टता तौ बुझानसो भी होतिहै उपाय कहतिहै इमारो यो-
 रस विपयक प्रसहै ओ क्षमकल्याण है आदि पवन वैजि है
 ओ मनहै सोभी हम नहो पहिचानिके ऐसी अहठता नहो
 बलिआइ एते नायक नहो चलिषके २२ ॥

॥ ३८ ॥

बनहे कवा नदपदय लका भि वादवानी कहव ३२॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ (श्रीगणेश)

॥ ४८ ॥

॥ २४ ॥

॥ १.५ ॥

मार्ग से प्रकाश की किरणें ही सारा प्रकाश है।

नगदिहरी है सोय तो अन्वहीत फलझाड़ि गजके कपोल पू
 वरतहैं विहरी सीज नहीसुन सुन तो आपका सुभारिष को
 चरकर आपन सुखर वरजानकी उपायकर है सुखर नयक
 सुखर जो यह सोख प्रिया ताको सुनो ओ सीखो यह रतिके
 पतिकामन मन्वकी शोख तो वेदकी होति है इहा
 कोकरी गानिय किग हैपति यह रतिकामकी सी किग प्रीति
 तान सिखाइ है सुखदायक साखीस बस भबकी कछो दोहा
 आदि झरसो सखी कहावतिहै वरविहर इत्यादि साखी २५॥

(अष्टवर्णन) छन्द ॥ एकमृतमयहीतमृतमोजिपञ्च
 मृतमम । अनिलअरुआकाशअवनिरुवृजतआनि
 सम ॥ पृथक्कृतमदमृकितसुखितसुसुखरजिवत ।
 काकोटरकरकोशउदरकरकहेरिसोवत ॥ प्रियप्रलयजी
 वइहिविप्राव्यवलसकलविकलजलथलरहत । तजिके
 शवदंसउदासमानिच्युठमसम्युठकरत २६ ॥

मृतम अनिल आदिक पांच है सो एक मृतमय तेजमय
 होतहै पांचमृतहै यह मृत समसो जातहै छूटिजातहै अवनी
 प्रची पद मृकितमदं छूटत सुखसर सिधुर दया देवत है
 काकोटर सधु सो दयाकी कर शूण्ड सो भयो जो कोपकहै
 संपुट ताम सोवत है प्रवल सब जीव ओ अवल सब जीव
 जाविषु जल थलम विकलरहतहै वृष व्युधमासमं वहेलोम
 करतहै २६ ॥

(आपाठवर्णन) छन्द ॥ पवनचक्रपरचंदवलनच
 द्युआरचपलगति । मवनमासनीतजतमवनमनहति
 नकीमति ॥ सन्यासिहोमसहोतइकअमनवासी ।
 पुनपनकीकोकहैमनुपशिवानवासी ॥ इहैसमयतेजसा

वनलिप्याश्रितिसाध्यानाय ॥ कटिकेयवदंसमभ्यासं
चलमनसु-प्राश्रितियाय २७ ॥

यह पवन चक्र नहँचलवहँ श्री जो आपाहँ में पकौ श्री
भासिनी श्री को झुंझवहँ निवकीभासि मनीं अमतिहँ श्री
नाथ श्रीवामनजी श्रुतिवहँ ताको गथा से गान में किंरा
गावमें २७ ॥

(सावनवर्णन) छन्द ॥ केशवसरितोसकलजितन
सगसरमनमहँ । ललितललजपटावितननननसर
सहँ ॥ लचिचपलामिलिमवचपलचमकनचहँश्र
न । मनभावनकहँमहिममैकनतामिसिममन ॥ इह
रातिरसनरसनिसवरसनलगरभावहँ । प्रियगमनकर
नकहँकोकहँगमनसुनियनहँसवने २८ ॥

लतासाँ तरवरदृशके ननशरीर सोहत हँ चपला धीमेरी
कोचि चाहसाँ मेवजहँ पति नितसाँ मिलिके मनभावन गायक
मेव या रीति साँ रसननयक सब रसवीनको रसावन क्रीडा
करावननग आणु रसननग गमनकरनको कोन कहिसक यद
छन्दको भेदहँ २८ ॥

(भार्तृवर्णन) छन्द ॥ पौरववनचहँश्रवोपनिधा
षनिमजहँ । धाराधरधरिधराणुसुधालधरनिजलवहँ
हँ ॥ भिल्ललीगानभंकरपवनभँकिभँकभँकभँरन ।
वाधासुहृजुजवनपुंनकेनरनकरत ॥ नाराजिननिध
षनिहँशेषामटिजानसुआलआहँ । देखापुत्रपविदंश
विषभार्तुसौननञ्जोहँ २९ ॥

घोर इहँ उमडिबो झोटोझोट घोरघरि मोरतयाहँके
इहँलालिय निर्वोष मेवके शोच घरापर मेव घरघोरावो गति

करौ ३२ ॥

दयाकरै या श्रुतिको पायक भागसमं सगुण्य तामं विनयित
 अगहन किंवा कमं जोहै पूर्वजन्मका भुक्त तोक करमना
 निक रहरहै तहां कम कमसा पाहैल कुरार पीछे कानि रफा
 क्षितिके कौनियेद तामो कलितयुक्त कलहंस श्री कनहंसि-
 हंसन कलहंसिनि दीऊपाठहै कलअयुक्त मयूर जो मार प-
 कलितयुक्त कलअयुक्त मयूर राजहंसनिक रहर तहां कम
 मयूर जो कलहंस जातिविशेष तामो जो कौनियेद तामो
 परमारथ दीऊवातको देतहै गुनवतं तामं सुगुणकल अयुक्त
 गीता है तहां कह्या है महीननमं अगहन मही स्थाप्य श्री
 यह मरथमहिहै ईरावयहै श्रीमगावातको वचन है मरथमं
 महीननमं या महीनाको भवकोई हरिको अद्य कहन है

मारगसिरमारगनिचि ३२ ॥

रमकरमकरमयहपयभरु । करियाणनयपरदेयकहै
 हंसकलितकलहंसनिकेभूर ॥ दिनपरमनमयोतनाग
 केधवसतितासरनिकैलकैसुगंधार । कौनतकलकल
 सोसवकीऊ । स्वरथपरमारथनिहंतमरथमहिदीऊ ॥
 (मगसिरवण) अर्थ ॥ मामनिमहिरिअंशकहतया

विशेष साहाय्य है ३१ ॥

के रोजमं कानिक देवता नाम है श्रीवलसीजिके भवनको
 प्रसन्नहोतहै यह श्री राधिकाजीको महीना है श्री राधिकाजी
 पाहिरिके जगमगात है दिनमें दानकीजिय तो भगवान् चरुन
 है तादिन लोग उत्साह करत है आखे भूषण जरीक कपडा
 जागतहै उचिछोतिछोतिविन्द इत्यादि मजकरी लोग जगावन
 को दिन ज्योति रूप ज्योतिरूप जगदीश श्री राजनजी तहां
 को धरहै इत्यादि जगती पृथ्वी तामं देवउत्थानी एकादशो
 दीय कियोहै आंगन जहां भवकीपटा लिपिहै टाकर गवहन

(कर्मनवधूत) अथ ॥ लोकलोकनैवमकन-
 यकविद्यत । जोइभवतसोइकहेतकरतपुनइसमना
 जत ॥ परपरवृत्तवृत्तिनजराहियनिजराहिय । य
 मनइनिमृकमहिअनिजोचननिनराहिय ॥ पदयान
 सुवासअकसउडिभुवमउलसवमहिउय । कहिकेय
 दासबलसनिधकर्मनफगुनअउउय ३५ ॥

इतिश्रीकविप्रियायाविशिष्टालंकारवर्णनस
 दशमप्रभावः १० ॥

युवती युवाको जरासो पकरिके गाढिवाधिवी है यउ न-
 दारी क्षुभई तिनकहिउ तेल ताको तेरुहै इतकेतपु क
 को नजरि मलिबलिजाय पदयास सुगन्ध अघोर नाकी यास
 है बिबासनिधि किंवा बिबासनिधि फगुन फगुको बलिधा
 या प्रभावमें एक आक्षेपलंकार है ३५ ॥

इतिश्रीहरिवरमुदासकतयाकविप्रियामरगुलयावली
 प्रियाटीकायादशमप्रभावव्याख्या १० ॥

(अथकमलंकारगुणलक्षणम्) श्लो० ॥
 आदिअंतमरिचिपुसोक्कमकयवदास ॥ अन्तगणः
 साकहेतुहेतुनकीवृद्धिप्रकास १ ॥
 आदिशब्दके अन्तगतई अहां कमलंकारहेतु अहां मङ्गलना
 है सो गणना १ ॥

(अथ) धिकमंगलवर्णनार्थार्थार्थार्थार्थार्थार्थार्थार्थार्थ
 प्रिय । शोकमधिकवर्णनमार्थार्थार्थार्थार्थार्थार्थार्थार्थार्थ
 दीर्घाधिकवर्णनमार्थार्थार्थार्थार्थार्थार्थार्थार्थार्थार्थ

॥ अतिशय कष्टान्तर ॥ अतिशय कष्टान्तर ॥ अतिशय कष्टान्तर ॥

सो गुणको विकारहे जो धुनिके और दीर्घनहीं मानवक-
 सीस प्रविष्टरथाआवे मंगनको अन्य गुणसी गुणआगेदेया
 आइवेसी अनिवनभया २ ॥

॥ २ ॥

सर्वथा ॥ यो माते सो न स मा जहै वृद्ध न वृद्ध न तर्ज पङ्क
 छिनत्ति । तेन पठति न स धि न सा धि तर्हि दद्यात् न हि पृथि
 न माहि ॥ सो न दद्यात् न धर्म धर्म धर्म न सो जहै न द
 द्याहि । दान न सो जहै सा धन कथं वसा धन मा जहै सञ्ज
 ज्ञाहि ३ ॥

॥ ३ ॥

सो सभा नहीँ सिरहिलै जहँ। वृद्ध नहीँ सो वृद्ध भी नहीँ सिरहै
 जो कछु पढ़्यो न होय ते वृद्ध परहँ लीँ भी नहीँ परहँ जिनने सो-
 धनिकी उत्तम पुन्यनिकी साधन उत्तमपुन्यनि जाकी करीहै
 ऐसी जो दीहै वहाँ दयावाक देख्यसँ नहीँहै धर शरीर विष
 क्रिया प्रकृति विष सो दयाभी नहीँ जो धर्म वेदोक्त विधि को
 नहीँ धरे सो धर्म भी नहीँ जहँ दयादान वेदपुष्टिक को सो
 साधनानहीँ जासँ दुलकी अया आलकवस कहेँ वसँ अलमहीँ
 परहँ भी पाठहै इहाँ भी वृसे जानिये ३ ॥

॥ इति श्रीमद्भगवत्गीतायां अष्टाध्यायः समाप्तः ॥

ॐ ॥ तज्जिज्ञातविनमोमभवतजतिपवि
कान् । विपतर्जुनमृषदेइमृषमृषतजिपमृषदेइना ॥
सम्पातितजिपमृषदेइमृषमृषतजिपमृषदेइना ॥ विप
तज्जिज्ञातविनमृषमृषतजिपमृषदेइना ॥ तजिपमृषमृष
विनमृषमृषतजिपमृषदेइमृषमृष ॥ तजिपमृषमृष
संमृषमृषदेइमृषमृष ॥ ४ ॥

खीविना जो परिकया सोतजो विप्रकोटोविष मतिनहो
जहो राजा न होय तहो धूमनहोनिवहो दीहदुर्गवहोकोट ४ ॥
(अथगणनएकवर्णन) दो० ॥ एकआतमाचक्रविग
कथिककीटहि। एकदशानगणोद्योकोजानतिसमसि ५
आरमजस्य रात्रिके रथको चक्रभी एकहो गणोद्योको भी एक
दोत है ५ ॥

(दोषवर्णन) दो० ॥ नदीकूलहोरामसुत पक्षवर्जकी
धार । हेलोचनद्विजजन्मपद मुन्यञ्जिवनीकुमार ६ ॥
नदीकोतट रामसुत कुसुमव पक्ष कल्पपक्ष आ ७ ॥
किंवा पक्षी के पक्ष आ ८ ॥ दोषधारकी तरवार भी होतहो द्विज
के जन्म एकतो आक्षिपके परजन्मते एक संस्कारते अहिजनी
कुमार दोषहूँ ६ ॥

दो० ॥ लेखनिहंकमुजंगकी रसनाअयननिजनि ।
गजरदंमुखचक्रैडके कक्षोद्विखवखान ७ ॥

कलम की फार अयन उत्तरायन दक्षिणायनचक्रैडदंग
मुखको सप कक्ष काकाद्विखा अवक ७ ॥

(दीनवर्णन) दो० ॥ गंगामगंगोद्योदग शीवरेख
गुणलेखि। पावककालत्रिद्यौलवलिसेध्यातीनविद्योति-
श्रीगंगाजी को मगपथ स्वर्ग मलय पाताल स मदीकनी
स्वर्ग स मगिरथी भूमि स मोगवती पाताल स गंगोद्योदग
तिनकेदग शीव गदुन ताकी रेखा गुण सत रज तम पावक
अग्नितीनिहूँ दक्षिणानि गह्वरपक्षहवनिय कालभूत भविष्य
वत्समान वलितीनिहूँ वलिको काटिके आक्षिप भोजनकरतहो
किंवा उत्तरसंजिवली संध्यातीनि प्राल मध्यम सवकाजही ॥
दो० ॥ पुष्करविक्रमसामाविषि विपुलेविषयविन्द ।
दीनतापपरितापपद स्वरकेतीनिमुखे ९ ॥

(चाविष्येन) टी० ॥ वेदवदनविधिवानुतिष्ठेत् ।
वाहेनभुजचादि । सनाभ्यामउपवस्य आशमवरोपेति
चादि १० ॥

चारि १० ॥
 वेदकी चारिभी मानवहै समझको चारिभी कहत है सात
 भी कहतहै हरिके वाहन अथ सी चारिहै मय पुण्य बजाइक
 ऐसीन्य औ सुधाव औ हरिके भजनभी चार है औ भजन के
 भजन अथ रथ पदादी होथी उपपन्न चारि साम दानभद्र नि-
 ग्रह युग सत्ययुग आदि चारि आश्रम चारि यही ब्रह्मचरि
 वानप्रस्थ संन्यास यणु ब्राह्मण आदि १० ॥

॥ ६६ ॥ मृदुनायकवदनरत्नकुक्षिवादिश्रीवखानि
॥ ६७ ॥ वर्षिरेवैदेवनाचमयपदप्रयुजानि

सिन्धुनाथक इत्यं ताकी वारनहोयु ताको रदन राने चारि
 तिथ्योको चारि व आठ व दशमी गनतहै युवमं चारिचहैको
 रचना है शकटकार कोनाकार धनुषाकार चक्राकार चरण
 शकटके चारिहै पदाहु अयु धनु काम मोक्ष ॥ ११ ॥

(पञ्चवर्ण) टी० ॥ पृष्ठपतङ्गिप्रकयलङ्कृतं

तिवण ॥ लक्ष्मणपञ्चवर्णकपञ्चवर्णकपञ्चवर्ण १७ ॥

शुद्धिप्रति आदि इतिद्वय रचना शब्द विज्ञा शब्द कव-
लयास सौ पञ्चवर्णसौ भोजन समग्रम कर है द्विप्रक
सुखपञ्च गतिमांश सज्जिअ सधु सभाष्य सज्जिअ एकव
वायु कामक पञ्चवर्ण के पञ्चलक्षण सग गतिमग वसतन-
नर भूषादि संख्यात औ पञ्चम विधि शर वक्ष्य वग
करय शायपञ्च शाय भयान समान उदात्त ज्ञान १२ ॥

टी० ॥ पञ्चवर्णितपञ्चवर्णकपञ्चवर्णकपञ्चवर्ण ॥ पञ्च

संक्षिपञ्चानिभनिकपञ्चवर्णमन १३ ॥

पञ्चवर्ण कृत्तृवृत्तगः लक्ष्यं मन्तर पालिजान संज्ञा
कल्पवृक्ष इतिवर्णन पञ्चवर्ण पालिजान पालिजान संज्ञा
कहत है पञ्चवर्णक प्रमाण है सग वानिक भाल्यपञ्च मर
कविक प्रमाण जो इतसौ नही सधु औ कोपन होय औ मर
कविक प्रमाण है तो प्रमाण है सधुपञ्च है सधुपञ्च १४
सधुपञ्च विष्णुसधु रवाधिसधु औ प्रकतिभय प्रकतिभय
औ सधुपञ्च प्रकतिभय कियो नही अन्वि प्रकतिभय नही भय-
नियद्विप्र अलंकारको नहीजानि अतिन वीतिनही पञ्चवर्ण १५-
नहै भयनम वनपञ्च है नही वीधुवाको प्रमाण अष्टावक्र
सौ वन्द्यको वचन पञ्चानयःपञ्चवर्णकः गौरी टीकास
दक्षिणानिभनगहैपञ्चवर्णकपञ्चवर्ण औ लक्ष्मण औ पञ्चक-
न्या अहल्या द्यौपदी वारा कौली मन्त्रेदी १६ ॥

टी० ॥ पञ्चवर्णितकपञ्चवर्णकपञ्चवर्ण ॥ प

चान्यमातिपञ्चवर्णितवर्णन १८ ॥

पञ्चवर्ण प्रवृत्ति अप नैव शय अकार्य पञ्चवर्ण अन्वि-
राष्ट्र सुवर्ण को चौर मुक्तही संवत्तव औ इतही गौरी म-

पातकी पातक श्राद्धको मारना आदि और इनको संग भी
 पाप है और प्रचयन वंदीवचनटिका में देवयज्ञ संतयज्ञ भूत
 पित्रयज्ञ मनुष्ययज्ञ श्राद्धयज्ञ प्रचमन्य दूध दही घृत गोबर गो
 मूत्र माता पंच गुणपत्नी मित्रपत्नी शत्रुपत्नी पितापत्नी १८-
 श्रुतिपत्नी पितापुत्र जनक उपनेता विद्यादाता अश्वदाता भय
 जाता और इनकी खुा सोभी माता जानिय प्रचामृत दही दूध

घृत मिश्री मधु १४ ॥

(पटवर्णन) टी० ॥ कलिलशोकोपटवर्णनरस

अर्चनम् ॥ चक्रवर्तिशिवपुत्रमखसिनिपटरागप्रसंग १५

कलिलशो वर्ण ताके कोण तर्कशोख पटवर्दान सखिय पात-
 जलि न्याय मीमांसा वैशेषिक दर्शन नाम शोख को है इहां
 वेणुव श्राद्धाय योगी संन्यासी जंगम सेवरा यह लोकप्रसिद्ध
 है किंवा दर्शन शोख तहां पठनवाले सौ लक्षणाकारि अभेद
 विवक्षाकरी छः शोखिके पठनवाले वेदान्तीआदि जानिय रस
 पट मीठा अम्ल कटु कषाय लवण तिक अर्चपट वसन शोष
 वर्षा शोर्द हेमन्त शिशिर और अंगवेद के शिष्य कल्प व्याक-
 राण्यअद व्युत्पन्न निकटि और चक्रवर्ती राजाधुनिधिर विक्रम
 शालिवाहन विजयाभिनन्दन नामाजुन निःकलकावतरभय
 चक्रवर्ती केतन कहत है वेणु वाल ध्रुवसार अजगल प्रवर्तक
 मानधाता शिवपुत्र कालिकय तिनके मुखपट है और रागपट
 है ॥ चोपट्टि ॥ भूत कौशिक और हिंदोल । दोषक औरागहिंयुनि
 धोल ॥ भयरागपुनि अट्टयमान । इनेपुनकषर्तनिप्रचयजानि ॥ यह
 मयासंगितद्वय में है १५ ॥

टी० ॥ पटमालापटवर्णनकीपटगोपवर्णहिंसन ॥

आततानरपटगानर्धपटपटमयुपकविन १६ ॥

पटवर्णन कालिकय तिनकी माला पट कलिका मध्यव है
 तिनके छःतारा है आगुणपट है संधि १ विग्रह २ पान ३

[illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

की मई है कोई पुराण में वह भी कथाहीनगी ईति सात है
 आतिगति अनगति मयक शूलम शुक स्वयक परचक कचोर
 कर्कशातल संगति में नाचवकी ताल ली वहत है इस मोहन
 लीला मयजगती है तामें रामके प्रसंगमें वहतवाल लिखी है
 गहवकी सातवाल सुन्दर एकतली रूपकजति इत्यादि कोई
 कहत है सातकगी है प्रकति औ सख रजस्तम प्रह्ला विष्णु
 महारथ १७ ॥

श्लो० ॥ सातछंदसातपुंरीसातखसामत ॥ वि
 रंगीविमलिसातनखसामतकाल १८ ॥

भारतकी टीका में सातछन्द मुख्य लिखे हैं औ छन्द ली
 वहत है ऐसे सवठोर मुख्य गानिय गायत्री उल्लिखे अनेद्वय
 वृत्ती पंक्ति द्विद्वय जगती सातपुंरी अयाख्या मयूरा हारका
 कायो साया अवती औ कांची सातछंग में खचा है औ सुख
 सात है रसिकप्रियाम कहै है ॥ सात पाल परिवानपुंन ज्ञान
 गान द्युतिअंग । सुभग सुयोग विद्योगविद्य सातो सुख तिय
 संग ॥ चिरंजीवि सात है अखयामा गलि द्यास हवमान
 विष्णुपण्डु रूपचरु औ औपरशुराम सुनिमत है अविपचमी
 कापुंनत है करवप अति सरद्वज विरवामिज गीतमजमदंनिम
 औ वीर्य सातवालिक नरमनुप्य है आद्य श्रुती वीर्य श्रुत
 ययुं संकर अखज यवन साता सात है आर्या साहेबरी को-
 माती वीर्यवी वाराही इन्द्रायुी चासुयदा परपिता कहिआये
 लीत यह सन्नायन १८ ॥

(आठवण) श्लो० ॥ योगअंगदिकेपलवसि
 विकलपलचाहे ॥ अपकलीअहिंधाकरणीद्विजगतक
 विविचर १९ ॥

योगअंगअठहें यम निचम सासन गणायाम प्रत्याहार
 व्यानयम सभावि विमोक्षणनवाले आठ विसृष्टिअंगके

कीनायकनगरनवअष्टनायकानहिसामनलड्युहै । न
वधाडैहरिकी मननहँदनीनवकीदोअवतनहैकान

गाइयहै २३ ॥

सुदहवता सगिषा जिनकी तेज आ रूप है आ नये तेज
शिरनबूहै तेज दंरकाहिये थोरोतेन इयोमहायकी निगा तेज
की करि सुजरोबहै तेज नये थोरनबूहै तेज थोरतेन करे
है एकहुँकी आपन माधु होयनहैराखतहै किवा सुतेनतेज
शिरनबूहै ताकी अन्धानरहैदरयोतहो अतिरते मनरागत
है वृणुववाझाआदि पीछे पददरयोतकहै सारपुषी अयोध्या
आदि पीछे कटो है पारिखाना बहैतहै अनेक नायकान है
नायक है नगरकीअधु नागर गुरुकी लखपतहो आ नागर-
बोधि है आ तेज वयकम है कदाचि तेज नायकाचाहै कि इतके
मनकी वयोकरे तो नहैवयोकरिसकती है थोखकी अष्टनाय-
कानसा चितलगावतहै थोखरतहै यहअधु कमकी अष्टनायका

कहै २३ ॥

(अथआयोवातवर्णन) दो० ॥ मानपुनोर्गदवर्ण
निकहैतविकछिसखपाय ॥ ताहिसोसजकहैतहैआदिप

कविकविराय २४ ॥

आर भी वहेबोम आनि २४ ॥

कवि ॥ मलयामितिवसकंसकलितयूनजग
ककुसुमनखपुजितललितकर । जटितनरसकननहो
वीचनीलमालातिरहैलोकातिकूनमानोतनहै ॥ ७
अगपतगअक किरअसुरसुमदोकानाचहैतेअ
चरचर । देवपरगपरपलिकामपुटिपरआउरपरअ

वनीशानिकेयोहापर २५ ॥

अरिसावदनी के चरण की चरण मनव नरन नरन

(प्रमाणकार) दो० ॥ कपटनिपटमिहिनयनहूउप
 प्रमाणम ॥ तद्विषयसकटहूकयवउतमम२७ ॥

कपट निपटमिहिनयनहूउप २७ ॥
 कपट निपटमिहिनयनहूउप २७ ॥
 कपट निपटमिहिनयनहूउप २७ ॥

सर्वथा ॥ द्विपदाकाउचराचरमध्यमउतममनिश्च
 नुतमहूको । किन्नरकनरनरिविचारिकवसकयुक्त
 जलहूको ॥ अंगीअंगीकमहूअमहूउतमममिहिनयन
 मीनसहूको । सोअधवकवहूनानकयवजकउतहूउत
 दोसवहूको २७ ॥

आदिप २५ ॥
 द्विपदा का पृष्ठ सिद्धासन किंवा चौकी इनआदिपर मोहो यह
 के चरणयुग द्विपदाका आदिपअधोपमिहिनयन ॥ गय
 को चाहत है कहें दोसरी एक है ॥ चिरचिर मोहोरोमचन
 कहिय सब जो अचर स्थार और चर जगम जाहि चरणयुग
 ज इनके बीचहू सो सबसमकी अथ सब और वरावरी सम
 य सब और छोटजीव मयक और बड़जीव गयन द्विपदापयन
 है पयन मय पयन पयन अथ किन्नर असुर मूढजादआदि सुर
 मणि जटिन है ताकी उरधशा मानो लोगन के मन जानिहू
 सकिरि अक जोडा भी कहवहू जराऊकीजोहर मनोहर नील
 कस है जलित है करिककरन नाम जोहर चरण भूषण पग
 जावकद्वहू और दुसिमसी पूजावनखहू जाहि चरणविष नख
 कलितयुक्त और जावकयुक्त है किंवा वालकपनम पुकष के भी
 मिनी है वासजाकी ऐसी जो कंकुम कसरि और रोहि वासी

सूया ॥ कञ्जवानसुनसपनहृदिगुणकीदृशनचहरे
 इतकाहियो । मिलिखलिवजसहृदालकहृदिगुणसु
 वलिवगुणवतिकयो ॥ कहियेकहृदयवनेनमिसुनिन
 काजहृदयवकुजपियो । सखिवेगवनेअकलानहृदिसुसय
 काहेकोअमकानमलियो २८ ॥

पावक पुत्रदियो देखेविना वलहे त प्रमको नम काहेको
 लियो यावान काहेको जोग हंसवहे सखिसो विनकपट देव
 की धीनि कहतिहे सखी तौ मानकरायो आहतिहे २९ ॥

(अथखेपलंकार) दो० ॥ दोषतीनिअदुसोनिन
 हुआननजमअथ ॥ इलेपदामवसाकहृदोनिनकीबुद्धि
 समर्थ २९ ॥

दोषतीनि माति के अर्थ किया बहृतमाति के मर्थ २९ ॥
 कविन ॥ धरतधरणिहृदयोशियाप्रवणोदकनिगपन
 चरुसुखसवसुखदानिय ॥ कोमलअमलपदकमलक
 रकमलकलितवलितगुणयोनउरअनिन ॥ हिरण्य
 शिपुदानकरिपहलादहित विनपदउरवागिपदनिजग
 निय । केशवदासदाहिरदकविदाहिरदकाएकनरनिह
 किअमरसिंहजानिय ३० ॥

दाहिरदहिरदहृथी निनको विदाहिरको एक नीनरनिह
 है किया राना अमरसिंहजी को जनिव नरनिहजी केम
 कञ्जपकपहृयक धरणी पृथुको राजवहे आ हृदं न मज
 देव निनके शोथो पु आपने चरणको उदक जल गंगा नदी
 राखत है किया धरती को हृदो शिव सो जाहे चरणदंड
 शोथोपधरत मगजन सवको सुखकरानी राजा है वा राजा
 चरुसुख जहा यावतहे वेदने पहेअर्थो करि कहिल ३० ॥

मल निमलजाकी पदचरण सो कमल लक्ष्मीजी निनके कर
 कमल लक्ष्मीजी कलितयुक्त है लक्ष्मीजी चरण सेवकपति है
 द्रव्य में जो रहै सो गुण ऐसा लक्षण व्याकरण को लक्ष्मि
 सार्वभौम उदाहरता मनोहरत इत्यादि सो क्यो न उरविष आ-
 नित्य किंवा कामलसुख लोको ये हम में कामलनाम नरम को
 कामल तदंशमल निमलपदस्थान है जाको जलशायीमावत
 है सो स्थान कैसा है कमललक्ष्मी तक करकहिंय किरण सो
 झगकी उगाविसो आ कमलसो कलितयुक्त है जहंजल तहां
 कमलबालिय पीछे कहिआये गुण-यायको दीननिधे रूपगुण
 सुख यावो बलितयुक्तस्थान है फेरि कैसे नरसिंहजी है हिरण्य
 कल्पि अक्षर ताको दानकारी खंडकारी दानको अर्थ हम में
 खण्डनभी है आ प्रहलाद के हित है विजयमें ताके पदकहिंय
 पाय को निह ताको उरविषय है वदानमें जाको वलनिधु है
 राजाअमरसिंह के सो है धरणीके ईश राजा जाके चरणीदेक
 को शीशपर धरत है इंदवरकरि मानत है यहअर्थ किंवा धरणी
 के ईश शिव निनके चरणीदेक को शीशपर धरत है आ चतु-
 रगुणी सो मुखसो सवसुखके दानागतत है फेरि कामलअमल
 जावो पावत है कमलनाम हम में लक्ष्मीको आ पर सो को
 कमल चरंगना चलो कलित है कलित वलित अनेक अर्थको
 कहेत है सजित है जलनिधु सार्वभौम आदर्यादि गुण सो युक्त
 जो अमरसिंह ताहि क्यो न उत्तम आनिधु फेरि हिरण्य सो
 मानाकालिय सेवतकेदक है दानकारी है श्रेष्ठदानदेत है
 पदो जेआदिह आनन्दता संहित है फेरि नहीआनन सदा
 आनन्दकरत है विजयत उरवासी बाह्यके पाननको उरविष
 सननिधु पावत है किंवा हममें विजयनाम बाह्य शान्ति वृद्ध
 को है आ पदो को है विन शान्ति आ वृद्ध जाके पद वाक्य
 आवाको वचन ताको उर में द्रव्यमें चरणवाले है इतमम-
 वचनही किंवा विजयकर सो है पदवैठिको स्थानवाको पुंस

की अधिक की अर्थ नहीं है निदा जिनकी अनिष्ट है फेरि
 अनंत है आकाश रूप है अष्टमूर्ति महादेव है जिनसे एकमूर्ति
 आकाश भी है आप शिव अनंत भगवान् किंवा अनंत नाम
 नाम है लोक संगम साहज है फेरि अश्वरूपि की श्वररूपिनि
 आत्म में भाव रक्षक है औ निधान प्रवीण है अश्वरूप है
 अश्वरूप नाम रक्षाकर्ताकी जाकी और कोई रक्षक नहीं फेरि
 श्वर एक पद निरक्षक रूसरी पदक निधान तीसरी पद श्वर
 आश्रय विष अथ ज निरक्षक जाकी कोई रक्षक नहीं है
 कनाम मुखकी है लोकी मुखदेन की निधान है प्रवीण है किंवा
 श्वर विष अथ जो रक्ष रक्षक राजा आदि जिनकी कस-
 खदेनकी निधान प्रवीण है फेरि हनुमक अग्नि ताहि विष
 जिनकी मात है जाकी तीसरी नव अग्निकी है याते हेम में
 शनिम संपातकी भी है लोक पति केशर जिनके देव्य में
 वसन है केशर शिव के भक्त है पुराण प्रसिद्ध है औ जिनकी
 गंगाजल भावत है शिव पर गंगाजल चढ़त है औ जगत्की
 निदान आदि कारण है किंवा हनुमक हित अर्जुन योगी
 अग्निकी खड्ग वन जरायक पुष्ट किंवा है जिन अर्जुनविष
 मातवाह है जिनकी ऐसे जो अग्नि भगवान् जिनके देव्य
 में शिव वसन है अथवा शिवके देव्य में नारायण वसन है
 नारायण की शिव आति प्रिय है याते नारायण केसे जगत
 की निदान आदि कारण है फेरि शिवकी गंगाजल भावत है
 कश्यपायक साहेकरि कहै है याम कश्यपाय भगवान् की देखा
 याम भगवान् की भी वलन है नारायणकी अति प्रिय है औ
 नारायण जगकी निदान है वा अर्थ में साहे सावभूत कश्यो-
 राय देखादि पद प्रणीत भी जानिय समुद्रपथ परमविरोधी
 देवता आ देव सा नाम रहत नदी समुद्र वलन में कश्यो
 है है किंवा कश्यपका पद देव अर्जुनिकामना है । किंवा
 परम की अर्थ परश्वर मा लक्ष्मी है विनाम पश्यी की लोकी

रीकनवाले है अपार है पत्नी पर नहीं जाय सकत है अति
 रोधा होयक रहत है पक्षीसों वाको विरोध नहीं अविरोधा
 होयक विरोधा है भासत है विरोधाभास है सब दानिनकरानि
 वाको अथु सब परदुको देत है ऐसी को कल्पयस वाक दानी
 है हेमम दान नाम राखिवेको भी है कल्पयस राखवत है
 किवा कल्पयस देवतानिको दिया है प्रभाप वाको अथु यथायु
 दान को नाम प्रभाप वाको यथायु दान नहीं है कननोपादि
 रोहै कननो उद्यत है कनन जल जीव है दयादि करि समस्त
 सब लीधनिषो अधिक है वही है प्राण वचन है जेतन नोयु
 प्रवीम है तेनन समस्त है आ अनन आप कहिय जल है
 जाम आ अनन वाक संगम जलवर सोहत है जलपम प्रोद
 को हैसरी मय करनी याकलिय अन्वय कीजिय अनन आप
 को अथुकिवा अधिक सोहत अनन संग कको अथु जल अथि
 को अथु विष व्याकराय रीतिषो अधिकविष जलविष अनन
 बहून फारसीम संग नाम पापायको है सो सोहत है दोषो
 वा धर्म बगदिर को है रज परीक्षको ॥ रोहो ॥ मालिग
 माती नोलमणि मरकत हीरा पंच । मलय रज य जालिय
 कहै राम कवि सांच ॥ पुष्पराग गीमद पति वृत्तरजयगज ।
 य चारी उपरज है यथानि कहै रसाल ॥ जयमविद्या नाम
 ज्ञापमणि आदि चौरासो जालि है शरण किय नामो नो
 नहीचलै सो शयरण कहत नगअग अशरण पदजालिय
 अशरण जो है सौनाक वाको शरण दत्त परतानिक ॥ पञ्चम-
 टिबलन नव हिमालय को पञ्च भुनाक समस्त मालिगना
 वाके निरक्षक है निरचयकारिके अनियय करिके रक्षक है श्री
 निधान है निधिसाम रहति है जहाँ श्रीजयसी जी रहै तहाँ सब
 निधि रहति है द्रवभुज वडवानल नाम जोही निजमहि है ॥ ३० ॥
 हिपस मध्यम श्रीपतिमगवान वचन है श्रीमगानी नो नो
 बहून भावत है किवा श्रीमगानी समस्त भावत है ॥ ३१ ॥

जगत् सृष्टि ताकी निदान आदि कारणहै वरुण लोकमें सृष्टि
 माने जब रहते अथ अमरगिह पक्ष परमजिरोधी श्रेष्ठ किवा
 चार साहस्रकार टग आ वटाक इत्यादि सो अविरोधाहै को
 अधुं होयके सब रहत है दातनको दाता है चाकर सब इन
 सो पायके अरिनिहत है किवा और अधुं करिये दातनम
 रक्षनिकी दाता कहै सज्जन लोग परकी रक्षा करतहै ताकी
 दाता रक्षकहै हेमम् दातनम रक्षणको भीहै किवादातन
 दो पद है दातामि विराम सोज इत्यादि निजम् यह दोको
 आशीर्वादहै आदरके रेतहै कतिकयव कहतहै करि प्रमाण
 है वरुजिजा ताकी निवहै ऊंचाचिन्ता सो मान आ अधिक है
 सब दातनम इनकी अधिकाहै इन दादशोहकी चाकरीनहै
 करी आ दादशोह पातवैठ आ अधुं अनन्त है ताकी अन्त
 भद्र पायी जायतहै किवा सब दातनम अधिक अनन्तप्रणी
 है ताके पुनी अधुं अनन्त वरुजिजा ताके सज्जन सोहते है
 सदाचि वरुहंपायके अछिजगतहै किवा अनन्तलोकनके संग
 स सोहतेहै अमरगुहा अधुं गहैहै श्राव्य बलिवा आहिबिष
 चार आ बुटेरा आ बटपातनके इतरा एते श्राव्यिके पयानिके
 रक्षकहै पुना गलाहीहै दूगम पयस इतरहै आ निधान प्रणी
 एहै इतसुक देव गान्धिप यज्ञादि करिके हितकारिवकी सति
 इच्छाहै ताकी इच्छाकी भी नाम सति है आ श्री श्रीमापति
 प्रतिष्ठा नाम बसतिहै योगबलकी जो निदान आदि कारण
 धर्म सो ताकी भावत है आ जगकी निदान आदि कारण
 अमरगान ताकी भावत है पुराणमें कथाहै जब रावनजीकी
 पाय बलबलक गयो तब बलान धर्मकी बलकहि रावनजी
 को पाय घोषावहै जब श्रीगान्धी है ३१ ॥

कविप्रिया ॥ दातनमिहवदजनकयाननमरकरपद
 धर्मामरममहैपुहै । नरदेवधर्मकरमहैनखरद

वाम भुवको भौहै नगभुव न दृष्टवै धरती भवै धाम
 आदि ज भुवहै निरवै नगभुवै कति नगभुव विवम न नग
 सारन वावै है या वावको सुन्दरीनर दृष्टवै नगभुव
 सारनवावै है औ वावद्वय सारन वाव है नगभुव
 कतिवको है कतिविका वावै नगभुव सारन
 धरती सुववहै कति नगभुव औ नगभुव वावै नगभुव
 नगभुव औ नगभुव कतिविका वावै नगभुव
 नगभुव वावै कतिविका वावै नगभुव
 सारन आधिक आधिक नगभुव है कति नगभुव वावै
 वाविकविकि कति सारन सुवव है सारन वावै नगभुव
 पावक वाविक कतिव नगभुव नगभुव सुवव है
 वा कतिव है नगभुवको भवै नगभुव वावै नगभुव
 वाविकवा धरती नगभुव नगभुवको वावै नगभुव
 वावै वावै नगभुव सुवववाव है नगभुव वाविकवाव नगभुव
 वाविकवा कतिवै वाविक औ कतिवा वाविकै आदिवाव नगभुव
 सारन परम्युनकवा कतिवा सारन उरवाविकै नगभुव
 सारन वाविक सारन उरवाविकै । कतिवा वाविकै नगभुव
 वावै वाविकै । वाविकवा सारन उरवाविकै परम्युनकवा वाविकै
 निववाविकै वावै कतिवा सारन उरवाविकै सारन वाविकै कति
 भविकै है कतिवा परम्युनकवा है कतिवा वाविकै सारन
 कतिवा वावै सारन वाविकवाविकै है कतिवा सारन वाविकै
 सारन उरवाविकै वावै वावै निववाविकै वावै निववाविकै
 वावै सारन वाविकै परम्युनकवा वाविकै सारन वाविकै

उरवाविकै ३२ ॥

सारन वाविकवाविकै परम्युनकवा वाविकै सारन वाविकै
 सारन वाविकवाविकै परम्युनकवा वाविकै सारन वाविकै
 वाविकै परम्युनकवा वाविकै सारन वाविकै ॥ नगभुविकवाविकै

गतिविषय समस्तजीको प्रियमानवह प्रियमान ऐसीभी पाठ
 है धराविषय अगुद्वयके मनके प्रियहैं लोकमाना लक्ष्मी किंवा
 प्रियको अवतर औसीवाजी ताको सुखदाताहैं सोइर कोअर्थ
 भाहैं लोचिय एक उदरसी उपज ऐसी अर्थ नहैंलोचिय सो
 लक्ष्मणजी तिनके जब रात्रयके लक्ष्मी शोचिलगी तब सजी-
 वनि भूगण सहस्रलक्षिणी रक्षाकर्ता राजा भाइको नहों चाहत
 है यह नवीनगण किंवा निरुपजीव गीय ताको मुक्तिदीनी
 बनवर निरुप लोसी भिजता श्वरीके वरसाये इत्यादि जे
 अथमाइतरगण नवीनगण सो भक्तिको भाय है अथ अज-
 राम औवलदेवजी केसहैं दानवगिरि आठल्य तिनको सुखदहैं
 किंवा दानगाम काटिजेको है याते मारिबो लोचिय लोसी जो
 वारोंके रक्षाकरै सबल सो निवलको मारिनहैंप्राप्त इन्द्रज-
 पर वीजुटी चलहैं भगवान् वज्रबासिनकी रक्षाकर्ता दानवगिरि
 कल्य तिनको सुखदहैं जनक वसुदेवजी तिनको कंसलो भई
 यातना पीडा लोसी अवसर औरउर जातहैं जाको देवकी
 लीके गर्भसी रोहिणीजीके गर्भमें भये करपत धनुर्गण हैसमें
 धनुर्नाम प्रियको औ गोधनकीक कहिये सुखलो राखतहैं अज
 म वरावतिहैं धन गायनिकी जाकेगण सरस अर्जुनगणक जहैं
 भक्त तिनको सोइयेहैं करि नर औ देवता तिनको भयनगण
 को करहैं ऐसी जो करमपण ताक इरायवालेहैं किंवा नरजी
 कसमी ताको देवकहिये कीडास उपनयको करै ऐसी जो क-
 रम पदर ताक इराय है पड़ैबावनवालेहैं इरायनाम पड़ैजा-
 इवेकी औ वीरीकी औ विनायनकी कसमीको वीरिखिलत
 मारयो करि सरइयणके इणय लालनमम गइइको कपधरे
 अष्टर वहुनय सरइरकी गण्ये भुक्तयो खर जो इष्ट ताकेइष्ट
 है कयोइराज गायहैं वाकोअर्थ वहुनये गायहैं तिनके कयोब
 भगवान्दस स्रक्तमयहैं गायनिवराय है याते करि नरायनर
 प्रियमान औ वलदेवजीको अवतर भयनगणको है यह भक्त

लोक कहत है नागकी जो घर औरि लोकी निधमान है न-
 भास श्वस श्वनद्विन लीलाकरी है नदी सपकी कपडो
 समुद्रमें जातरहै हैसमें लोकनाम मर्त्यकी आ मानाम
 पृथ्वीकी लंगानिकी आ पृथ्वीकी छिटावा है भूमिकी भार
 उतरायाहै आ भूमिकी छिटावहै सोरं रीपपदहै सो गन-
 भद्रजी दरनाम जोसकी है जासन पर भद्रपकरहै जो कहे
 उनकी समरलकरै करि नवहै नवीन अवरया लोकी मरि है
 करि गुणकहिंय सोदयाहै मा कहिये ममा य दाय पदाय
 जिनमें है परशुरामजी कंसहै दानवगिरि छिटावहै जिनकी भक्त-
 लपकी जल शशिछिनिकी छिटावहै जनक जमदग्निजी जिनकी
 मरु यातनापीडा कामधुज जिनके सरसाजिनसो लोक मनपार
 लोकी पयकै जिनके धनुषकगुण करपनहै धनुष चंडावनहै
 लरिकेखिये रस जो रीद ताहैसहित योगिन भय है किवा
 करपनधन धन जो गाय लोकी करपनकै छेवनकै नव भद्र-
 सार्जिन लूचिकै लेखयो नव जनक जमदग्निजी जिनकी जो
 मरुहै यातनापीडा लोको होममधु या सो गाय है मरिजिय
 जानहै याते पीडा लोकी जो अर्जुनगिरि छिटा करि र गण जो
 है ह्व उतकै मरिखेकी इच्छा स सुखपर लालीछाहै है लोको
 सरस अधिक सोहायहै हैसमें धननाम गायनकीभी है गायन
 गाय जो धन वृणवजाव गायनचरनाम देवकीभी खानीछा-
 नद करै । नरीगलानिहैजनिहै नर निरकयो मनोहरनगपन
 गावन । ह्व चोवांसगुणहै अर्जुनगिरि छिटाका भी कहरहै
 सवराजिनि अर्जुनगिरि छिटाकमनकी छिटागुणपतिनाम गो-
 विरहैदीज करिनादेव राजा लोकीधनकरहै नयनहै कस
 शुभ अशुभ लोक करिनादेव राजा लोकीधनकरहै नयनहै कस
 शुभ अशुभ लोक करिनादेव राजा लोकीधनकरहै नयनहै कस
 लोक कहत है नागकी जो घर औरि लोकी निधमान है न-

काह है जोकी अथ म निचिप्रियमहिनी करीगो यह प्रविश
 करि है करि सरतद्विषु न दप गुनकेअपराधकर हैलहि निम
 क हैरु है रूकरनवाल है करि नगपय शिव निनकेप्रिय मानो
 लोक मानो पदवी निनके सुखदाता है शिवगुरु है पदवी गुन
 पदी है यति मान मानो करी है जोही माहरेवरी कीमारी
 ऊगाहि माहरेवरी पदवी लोकमानाजानिय करि सोदर माह
 जोकी सदावकता नही है जोक वल औगुण्यभय है सदा-
 निनकी राजपक्ष दानगति देवता लोकी यदादानकरि सुखद
 है करिजन जो जनलोग सो जनक कदावन है व्याकरणीनि
 सो जानकरिबसम है जनकरुलोम निनकी जानसम है लोकी
 माकरिबनही है अनेवार जनकेसंगलगावो जनकेपीछ चलानो
 उपहि राजाकी रूखेगानि के योधन के गुणमद लोकी करपन
 है खवन है धनमद नहीराखे किवा करविष खनकहिष धन
 है धन्य के गुणकी लोकी धनकी प्रत्येवाकी वामदधम दहा
 परिमान है रसनाम है म म पराक्रमकीभी है पराक्रमसहित
 सोहन है नरनिम देवता जोही निनकी कर्म वप होमादिक
 लोकी धन नालोकरि को कर्म है जो दृढलोमानकी निनकी
 हैरु है सरनवाल है करि दृष्टक हैपुन श्रीरामचन्द्रजी निम
 को कयवदस न वृण्यव सो दृष्टक के निमम वृष्टिक मायु है
 करि नगदधी लोक धनवाल परकरनवाल न लोम निनकी
 प्रियमाना है औ आपनी मान को सुखदाता है सोदर माह
 की नर देवताकी सदावकत है माह सदावकत करि नवलगुण
 नहीन न गुण ऐसे और राजनम नही नयनरुके गुणसो औ-
 मय है जोधी वृकती पाठ औरनर पालियनम है एकपाठ है म
 नरमो है कयु है अमरसिंह पू लगाइय करु ऐसेपाठ है
 पुष्पाजोराजमनराज किपगुणम किपगुणम किपगुणमविशम
 उरअपु है राजराम श्रीरामचन्द्र राजराम श्रीराम श्री पर-

को करदेवेय कंसको मारो नवरो मिटिगयो नरो २
 कर्म कियायी नके हारहार है वधोयि नरो कर्म
 नाम धरको श्री है गोपनि के धर न कंसको करदेवे ॥ १ ॥
 जे वज्रम गोप है उन सवकी न छोड़े निरहे देवताजो ॥ २ ॥
 गोप श्रीमत्पवनस कंस सो श्रीवराहो को वधन न छोड़े ॥ ३ ॥
 जहै श्रीनंदजी द्वायवसिको अवतारहै किग नरप नरो ॥ ४ ॥
 वज्रकरतहै रस श्रीगार नहिंसहित सोहोव है नहिंस ॥ ५ ॥
 द्वाहिं गुणसो करप है पुनहै पतिवो प्रसन्नो ॥ ६ ॥
 अधुमं छीको कहतहै धन वधदेवी निमवती अपन सो ॥ ७ ॥
 छीको है (प्रमाण) श्रीविको सवयो धनश्रि ॥ ८ ॥
 वनको अनुसर किया पीछे गये करप वधपुण्य धन ॥ ९ ॥
 श्रीनंदजी निनको वक्तुकें देवोय नव भयो नो ॥ १० ॥
 वाटी सो जाको सुखहै हैमम गोरिमम श्रीमको ॥ ११ ॥
 वज्रदेविनसो देवलोका करतहै देवलोका की श्री श्री ॥ १२ ॥
 वज्रदेविनसो जगतिवतहै किग वरदानपव वाटी है ॥ १३ ॥
 को दान जगति सो जाको सुखहै है धर्मनाम नव वज्रहै ॥ १४ ॥
 परम द्वायम को अधु देवलोका किग वारि धर्मनाम वडा ॥ १५ ॥
 भगवान के मारे देवनाम होतहै दानव ज श्री नको सुख ॥ १६ ॥
 देवदेविनहैतः । वाको अधु निवज्ज सुखको नामहोतहै श्री ॥ १७ ॥
 वादी जहा मुकहोतहै निवज्जो कहै निवज्जो सुखमा देव ॥ १८ ॥
 आकाश जाको परम द्वायम कहत है जाको वज्रहै करत ॥ १९ ॥
 भोजहै निनके भगवान सुखहै सुखको अधु सुन्दर जो स नाम ॥ २० ॥
 दानव ज नरकाधिर आदिं सो करि कंस है भगवान के श्री ॥ २१ ॥
 कण वरुध सो पवाधु भयो श्रीकणपक्ष देववादि सुखहै ॥ २२ ॥
 दंस एकवार आयोहै करि वरपुण्यि देव । श्रीमाम श्री ॥ २३ ॥
 रामकी परशुम कयो देवनामम उरगहै । देव ॥ २४ ॥
 श्रीकणपक्ष पक्षजगवतहै कहैपाठ है एवो राजाभोज ॥ २५ ॥
 श्रीम श्री वज्रमदजी या पाठ म अमरिहै रामनिहै नरो ॥ २६ ॥

सो करजालो सो खंडायो तालवनसं खर जो इष्ट ताके इष्ट
 है कतनेही खरनको इन भी मारयो फिर केष्टोदास गायुहैं तो
 कश्यप भगवान् तिनको जोगिन दासगायोहैं दास कष्टोहैं दास
 नाम धीवरको है श्रीयमुनाजी स नवचखायोहैं तासो किया
 संसार समुद्र के पार करत है याते पदहैं साधकति रघुनाथ
 कवच परहैंकत हरि गीताक आवि स इजो कहैं तहां कवचकः
 कश्यपः फिर नाम जो काली ताको धरनवालेहैं ओ प्रियमान
 मान जो वडाहैं सो जाको प्रियहैं भक्त रविकरतहैं सो जाको
 प्रिय लगतहैं किया नाम शेषनाग तिनको धर शरीर ताको
 प्रिय मानतहैं शेषनाग सो गायुहैं जोक माता लक्ष्मी सो जाको
 शिवदायकहैं किया ताके शिवदायकहैं किया वामनरूप करि
 लोक के माता है नापनवालेहैं ओ शिवदहैं सोदर बलभद्रजी
 तिनके सहायक है किया उदरनाम है मम रणको भी है उदर
 लराहैं ताहैं सहित वतमान अर्जुन आवि मारत स ताके
 सहायक है नवीन गुणसो गायुहैं किया सोदर साहें इनके
 कसन मारे तिनको सहाय करि लैआये देवकीजीकिरतन
 पानकराय मुक्तिकये नकार इहां का केशवसो पदिये नवल
 गुण गायुहैं याको आयु बलदेवजी के गुण प्रबल आवि को
 मारतो सो जाको गायुहैं यह आयु किया नवल नवीन सो
 ताको जाके गुण गायुहैं ३२ ॥

कवित ॥ भवतपरमहंसजातगुणसुनिमुखपावतसं
 गीतगीतविषयवर्णनये । सुखदंशकातपरममरसेही
 वहुवदनविदंतययकेष्टोदासमानये ॥ राजेहिजराज
 पदंभूपणविभवमलकमलसनयकाशपरदरिद्रयमानये ।
 पुंमूलोक्तनायकविजोक्तनायकनायक कवनायनायका
 जामामसिदेवानये ३३ ॥

यु जो विरोधु सो डेने जालिये लोकनाथ डोहैं कवि-

लोकनाथ श्रीकृष्णचंद्र हैं के श्रीवृन्दाधरी हैं क नाथ नाथ
दिशुपाबलिके नाथ महादेवजी हैं क राजारामसिंह हैं यह

जानियहैं ज्ञा कैंसहैं भावन परमहंस जान परउत्तम हैं स

पक्षी विरोधु ताकी जा जान कहिये जान सो जाकी भावनें

वाहन हैं यावेकिवा परमकी अथ पर श्रेष्ठ मा लक्ष्मी हैं जिन

विषु हरिके वक्षस्त्रयजम लक्ष्मी रहतिहैं ऐसी परम जो भग-

वान् सो हैं स होयके जिन ज्ञाकी जानकी अथ राजमय सो

जिनकी भावनहैं सोहानहैं श्रीभागवतम कथहैं सनकादि

ज्ज्ञासो पशुकिपु नव ज्ञाकी उत्तर नही आया नव हैंसक्य

धरिके भगवान् आयके उत्तर दिवा पहिले पक्षम हैं स जान

को गुण श्रोत्र ताकी सुनिके सुखपावन्हें दूसरे पक्षम भगव-

नकी गुण हैंसक्य जो भगवान् आयके उत्तर दिवा पहिलेपक्ष

म हैं स जानकीगुण श्रोत्र ताकी सुनिके सुखपावन्हें दूसरेपक्ष

म भगवान् को गुण हैंसक्य जो भगवान् आय सो कहियेनम

नव सो सुनिके सुखपावन्हें फेरि संगीत सीत सुकी अथ आ-

धीतरह गीत गावहैं आकी ऐसी जो बंद सो जाकी सीतारि

हैं विषय वखानिय आ विरोध करिके जाकी अथ कविबखान

हैं श्रीभागवतके प्रथम लोकम ज्ञाकी आदि कवि कही हैं

कवि नाम पहिलको हैं हेमम वृन्दास कविको भी हैं फेरि

सुखकी देनहारी जो शुक भासय ताकी धनवाजहैं ज्ञा

सो कहैं जो सुख वाहन हैं सोहैं वापवान हैं फेरि सन राम

कहिये एकरसनहीकी अथ पारकरनवाज हैं ज्ञाकी सना

गानि सवसा हैं कहैं सुखी कहैं दूखी सो भावन कससा हैं

फेरि वर वरहैं चारि जाके वरन मुखहैं आ विरिन गानिय

जाकी अथहैं यह कथोदोस कविन गायाहैं ज्ञा वरनवरन

विषु विरिन प्रसिद्ध अथहैं कथोव को जाकी ऐसी ज्ञा हैं स

सुखसा भगवान् को अथ करत रहत हैं यह अथ राजाराम

三三三

023

नपस्याकी किया करि परमात्मा में रहैं रस को रस पैंसो
 पढ़यो जैसे विहारी उन दोही भविष्य ककीक अजबोहीरह
 के कैंकी ठौर कैं पढ़यो तैस इहो भी जानिय करि जातक-
 हिय जानि औ गुणु सख रज तम इन करि अंगुहें अक्षय
 हैं औ जासो लोग सखको पावत हैं औ संगीत जाको हितह
 शिव आप उदयकरतहें संगीत तीउर उदय शिव गोक हैं औ
 जाको विषय विशेष लौकिक धान करि विहीन बखानिय हैं
 भोजनिय कहियेहो भोजनिकपायहें कत हमर धननिदरपन
 बँटलियहो । करि शौकियर कानिकेय लोको सजद हैं किश
 सुखद शौकि पावती लोको राम आगम धरें हैं करि सभ रस
 शीतरस लोके नेहहैं शीतरस भावहें करि बहू वदन विविन
 हैं प्रसिद्ध हैं पांच मुख हैं जाको यद्य गायहें किश बहूवदन
 कानिकेय निनने जिन महीदेव को विदित यद्य लोको गान
 करयहें करि विनराज बंदमा लोको पदस्थान हैं करि शोभ-
 तहें करि विमल विनय होतहें मल पाप जाते ऐसी जो वि-
 मल भोगीसी लो जाको भूषण हैं किश विनराज जो बंदमा
 लोको जो पद रक्षो लो जाको विमल भूषणहें आपन भाग्य
 जो बंदमाहें लोको रक्षोहैंसोकरतहें लोहें लो राजतहें करि
 कमलसन पदमासन लो जाको प्रकाशहें सज जानतहें किश
 कमलसन ज्योति निवसो प्रकाश उदयान हैं जाको करि पर
 श्रुष जो दार लो पावती लोके प्रिय मानिय हैं किश परदा
 श्रुष पद र श्रुषपद पर कहिये श्रुष जो पदश्रु श्रुष भगति
 निनके दाता हैं यह परदाको श्रुष र ऐसी नाम आनिता हैं
 लोको प्रिय मानियहें लोसरानेन आनिहें अथ राजाभासिहें
 कैंसाहें जोसबकियाकोहीरहपकरसोपरमहेंसोसाकोभाजन
 हैं किश परमहेंसभावन लो जाकोभावनहें शोभापनोभाजि
 क गुणधुनि सुखपावनहें किश जातकहिय उदयानहें गुणरिष
 जाको राजाको कोइहेंदुष्ट भयो हैं या जातको धुनिहें सु रसिष

आश्रितरहस्यं सुखपात्रं है मारिउरतहै चौबीसगुण सें देप
 श्री है किंवा परभूष जो हैस अरव सो जाको भावत है करि
 जातउपग्या है गुण या घाड़ाम या वात को साबिहोयी सो
 सुनिक सुखपात्रतहै हैसम हैसनाम अरवकोभाहै करि संगीत
 मीतसंगीत शोखसाहै हितजाको ऐसे जे विवुध पंडित किंवा
 विशेषहै ज्ञानजाको ऐसे जे नरक सो जाको वधानतहै राजा
 को संगीतको समुझवार कहत है किंवा संगीतमीत जो नि-
 रुप देवता शीतल्य किंवा महादेव निहै वधानत है निनकी
 स्तुतिकरतहै श्री गीतशोकिहै प्रभावसा उपजै श्री उरसाहसा
 उपजै श्री मंत्रसाउपजै श्री गीतशोकि सुखद ताको परनवाजा
 है किंवा प्रजाको सुखद है श्री शोकि परछी ताको परनवाजा
 है समर युद्ध ताको सनही है युद्धताको भावत है करि वहुत
 लीगानिके वदनकाहिय कहतौ ताते विदितप्रसिद्धहै यशोजाको
 वदननाम कहतको श्री है क्योदासकविने गानकियाहै करि
 विनराज शोभाश्रय ताको जो पदपालन साहै विमल मण्य
 तासां राजहै किंवा विज शत्रिय जो राजा निनकी पदस्थान
 वही राजतहै राजा सब चाकरीकारिये क लिय आहंछास पर
 वनाये है जैसे दिवली सें सबराजान की ठौरहै सो पद कैसा
 है नाम मण्यकाहिय मंसकलाना परजाको तहखाना कहत
 है सो नाम निमलहै करि कमलालक्ष्मी ताको जहाँ प्रकाशहै
 वहुत संपत्ति देनिवै स आवातहै करि परदार दारपाल ताको
 प्रियमानतहै विदवासकोजातिके कहै अमरसिंहजानिय ऐसे
 श्री पाटहै तहाँ पढ़ी अथ अमरसिंहको कौजिय ३३ ॥

(अथरंजपभट्ट) टी० ॥ निनमण्यकआमिषपद श्री
 रामपदजानि ॥ रंजपमविद्वेषक क्योवदासवरा
 नि ३४ ॥

है सुजिह दाय तरह के रंजप है ३४ ॥

(आभिनवपद) कवि ॥ सोदितमृकशोभमर्जवोपार
 तितरवशोभनराममादिवकमृगतिमृदुहृद ॥ कलस्य
 कलितमृगिभरगारुधृतवदनकमलपटपटविविधहृद ॥
 मृकटिकुटिलधनुजोत्पलकटाक्षयोरभितयननमनअनि
 सुखदाहृद ॥ अमृदितपद्मवरादभिनमनायसामयकाम
 कोमलसिनकामसुनवानअहृद ३५ ॥

जहाँ एकही शब्द अधुहोय शब्दअर्थको भेदभरण होय
 दोऊपक्षमें जहाँ अभिनवपद आनिषे नयनवचक नाक नाथसं
 कामकी सेना सारिषी कामसेना जाहें नयनकी सो वनिआहें
 हैं जैसे दानवगारिद्वयविद्रुम दानवपदार्थ अदोकिगुहें अतिपद
 जदोकिगुहें करि दानव जुदो वारि जुदोकिया ऐसे दुदोनही
 हैं कामसेना कूसहैं सिन्दर लज्जकशुहें जाक पुनी आभन ॥
 मृकशोभन सिन्दर केशोहीकोकहवहें उहाँ आभनकी निशोभन
 होतहैं दुदो नयनकाको निशोभन होतहैं त्या छन्दशोभन और
 अधु करिये तो कठोर में निशोभन होय तो निशपद में नभ
 सो दुदो नहीहैं ऐसे मज्जु सिन्दर वोपशब्दहें जाक रतिगुहिन
 यामें भी प्रीति है उरुश्री को अधु भाष में उरमें वही भोनी
 वदोभी है किवा रति प्रीतिकरि उरमेंवही है कलस्य अशोभ
 मधुर वनिभुक्त वदोभीहैं वदोभीहैं जाक वदन कमलपट पटपट
 भूषिकी छविअहृद है जाके भी मज्जु प मज्जित पद्मपद कम
 उनके भी जाके भी दुदो मधुकी अधु नहीजानी निशपद होय
 जाय दामिनी वीजरी सरीषी वदोभी वदोभी ३५ ॥

(अधुभिनवपद) दो० ॥ पददोभापदकाद्विचमद्विच
 शपदजानि ॥ भिन्नभिन्नवर्णनपदनिक्कटपदमद्विचमद्विच

नि ३६ ॥

यामें दोयलभय है हेममें पदनाम शब्ददो भी वदो ३५

एकश्रेयसं मं ईश्वरवत् काहं ताको भिन्नपदं जनिं करि एक
पदकरि पदनिमी भिन्नकरि उपमादेहं सो भिन्नपदं मं उपमा
श्रेयसं कहेत उपमा देहिनी दीपक न्यायकरि दीवार जग-
द्वय ३६ ॥

श्लो० ॥ उपमावाहिनी भगवत्पुत्रकलसतनवीन ॥
दिवसनासहिंसवदाश्रयविक्रयप्रवीन ३७ ॥

उपमा श्रेयसं शैलको कहेत है तामें ईश्वरवत् प्रभु ताको
काटयो भिन्नपदं भयो विना तोरे एकही पदं को दीप भवे
किपा ३७ ॥

(उपमाश्लेष) कविन ॥ रत्नरजकशौदासदहनभक्त
एतद्विप्रातिभटभक्तनतेभक्तपुमरवेह ॥ सुनासुन्दरीनके
विजोकिमखमपणानि किलकिजिजिजाहोताहोकोधर
तुह ॥ गहिगहंखेलहीखेलीननियुतातिरहंरजगजय
श्याचकचन्दकोअरवेह ॥ चन्द्रसेनमवपाजभानविजो
सरपतरीकरवज्रवज्रलालीसिकरवेह ३८ ॥

है चन्द्रसेन भूमिपाल विद्याल वही जोरुभूमि सोहै श्री-
गनदे तहां तैरी करवाल तरवार सो बालककी लीलासिकर
है करवाल विद्याल रणसो आंगन है अभद्रकरि एक कियो
या पदको करि भिन्नकिया करवाल विद्याल रणमें लीलासा-
रियो रूप कियोको करतिहै बालक आंगनमें विजासकर
है लीलासा विजासको श्री कियोको रत्नरज रज जो रजो-
गुण सो रजधरि है करि तरवार मं रजोगुण बालकपक्ष रज
धरि सवय एककरि भिन्नकरागो अरुण करि तरवार है तै
पर है इहां भूषन लार प्रतिभटभटप्रति भनि इहां अकनि न
भगवानक आरिभक्त भक्तमं पसरवे है जालहै पसरवे ऐसीपाठ

तो पसरि जातु है करि सेवा सोई पुनरी है नहि मयमय
 को विबोहिक सेनाके मुख देखि के पुनरी के मयपु देखि के
 तरवार किलकि के समिके बलक किलकारी करि के करि
 गार्ह जगह है न खलिबक खिलोना है तरवार न गजारे बलक
 न खिलोनातरे तरवार बयकपाव बलकयकपाव बलक
 धरि म जोड़े खिलोनातरे तो लोग गुरी नही कहें द्वापरा
 दूत है तरवार चार आड़ जे पाड़। तिनसो आरु है दूतरे बलक
 सन्दभा लेन को दूत है ३८ ॥

श्री० ॥ वहुतराएकअभिनायकअभिनायकदिकयआ
 न ॥ सुनिविरुद्धकमअवरातिनयमवरोधीमान ३९ ॥

पांचभेद उल्लेख के करि कहत है एक अभिनायक उभरो
 अविरुद्धिकय तीसरो विरुद्धकमो चौथोनिचम पंचम त्रितीयो
 अरु षष्ठो अवयव स एकिकयल्लो सो अभिनायक ३९ ॥

(अथअभिनायकप्रलेख) कवि ॥ प्रथमप्रयोगि
 यवगात्रिजिजराजप्रतिमुखप्रसहितनवविहितप्रजन है ।
 सजलसहितअगविकमप्रसंग कायेतप्रकाशमान
 धीरजनिधान है ॥ दूनकोदयालप्रतिभदनकाशानकर
 करितिकोपातिपलजननवदेन है । जानदेवोर्जनदेव
 दूनकोदूनदेखिरामचन्द्रकादान किधाकयवसेपान
 ४० ॥

रामचन्द्रजी को दान है किधा कयान वरवाति धीरान-
 वन्दजी के दानको देखि के दूनी कटिसे दनिवा नभार गत
 दान विबोहनके उपजान है दानकदा है प्रथमो पदित म-
 यानिषु है दीजियतु है दानो अरु विजयान दानाय म जो

अथ ताको पीछे आरनि को दीजिय है केरि सुगुण सहित है
 नहिहित को अधुनही किय है प्रमाण जा को दान देने को प्रमाण
 नही केरि दान सजल है संकल्प के लिये जलजीविय है सजल
 जा को अग है जल विना आछी नही है किवा हित प्रीति सी
 जाहि दान जा को अग है सहित अंगम विष्णु प्रीति दान करत
 है राजनि क विक्रम पराक्रम के प्रस्ताव म रंग प्रीति है जैसे
 पुत्र वर प्रीति तेस दान वर प्रीति है जो याचक माथो मागे
 तो माथो देई सो दान वर विक्रम विन दान नही होय केरि को अ
 भङ्ग ते प्रकाशमान है इहा दान को अधुने तो आ जोग्य दी
 लिये सो मा दान धीर जा विधान जे पुत्र है ते को अने प्रकाशमान
 करत है प्रतिभट वर वरि के दाता किवा अने ता को शालकर है
 कथान कहै है पहिले प्रयोजिय है पहिले मिलत है ते वर को
 कहै अंगमो यग करिय है मागिय है यह अधुन जा अंग विज
 शानिय विन के राजनि सी केरि ते वर सुवर है सु-वर जो
 धरु रंग सी जाग है ते वर एते अने अने सजल है यह प्रमाण
 नही किय है किवा ते वर को नाम निखिय है निखिय को
 अधुने सी आग ली सी अधिक हो अधिक केतनो यह प्रमाण
 नही किय है केरि कथा सजल है जल पानि जल म है केरि
 धन मंड ता सहित है किवा सहित या को अधुने हित को अधु
 धन मान है धरु जा को केरि विक्रम पराक्रम को जा को प्रसंग
 चरचा है पुत्र धीर नि को फलाना गइ ऐसे मागिय ता को रंग
 शोभा किवा वादत को करत है किवा रंग धरु चढ़ावत है
 रंग नाम प्रीति को भी है हरि सी रंग लप्यो प्रीति जानिय को अ
 स्थान ता सी प्रकाश मान होत है जाहि सी अने धीर जा को
 पावत है हमारे पास ते वर है श्रेष्ठ आवेगो तो मारे धीर-
 त को निधान आनि य कथारु रंग जा सी होत है किवा
 धीर नि करि कहै वर धीर जनि सी जा को रंग धरु चढ़ावत है

दीन इहो कपूर प्राति भट घोडा इहो क्रिया प्रयोगप्रवृत्त
दानसो आ जपलसो जगो फल विरुद्धा दान प्राणको प्राण
है तरवार प्राणको करघे एक क्रियासो वहुतको अन्त्यहोम
खेपहो म होय यह नियम नही निना खेप सो होय घरी
लक्षण जानिये ४० ॥

(अथविरुद्धक्रिया) सवैया ॥ कहुं कहैमनो कल
लतको किलकामकी करिनि गवतसो । गुनिवान कहै कल
भाषनि कामिनि कलकलान गढ़वतिसो ॥ सुनिवान
निबोन प्रवीन नवानसु गहिबु उपजवतिसो । कहै कयो
वदंस प्रकासबिलसवैवनयो मवदवतिसो ४१ ॥

कल अव्यक्त मयूर मयूरि भाषिनि कामिनी बात कहति
सो कहि कलानिको मानो वदवति है नवीन नयानल प्रेम
वाको मानो उपजावति है प्रकाश जो विजलस नानो मानो
वनकी योगी को वदवति है इहो क्रिया वरी है कोहि-
सको बोलवो आ कहि कलका पढ़ावो आ बोलवो प्राति
धो फल जो है वनकी योगी पढ़ावो सो एक है वरी वरी
क्रियानिको वरी वहुत करे फल एक होय ऐसो प्राको लक्षण
जानिये कहै प्राचीन ग्रंथको मत है नवीन के मतसु प्रवक्त
रूपवर्तुलक्षणा एक शब्द म अथ अनेक सो खेप प्राणो
कल अव्यक्त मयूर काकिल बोलति है वन जो पर नानादो-
भा वदवति है मानो हेमसु वन मान परहो आ नवत आ
वनको भाषा म कल चवुराई को सो कहै नहै कल भाषिनि
कल चवुराई को बोलनिवालो है प्रबोला प्रेम परावृत्त मत-
रथ सो चुरा वाको जानवहो ऐसे लखाइये ४१ ॥

(अथविरुद्धकर्म) कावित ॥ दोजनगतवतनवतन
वलवतन अतिरुद्धिनकवैदनिवखनिवापुसहि । ४२ ॥

जातपुत्रप्रापदृष्टनकभविवापदृष्टिनकी दृष्टिचतसराति
सुदंसाह ॥ सुनदिवदवलदवकामदवाप्रयकश्रीराय
कामिनिमकदोत्रसातसाह । वाक्याकारनाहोतसुखक
रतअनउदादिजनकाजितयहकसाह ॥ ४२ ॥

दोऊ सुय चन्दमा भगवान् हेमस भगवान नाम इतनी
वरनेनकी सुयु श्री. डान श्री माहोत्सव श्री ययु श्री वीराय श्री
मुक्ति श्री रूप श्री वीरु श्री प्रपय श्री इच्छा श्री श्री श्री धर्म
श्री ऐश्वर्य चन्दमाम् श्रीश्रीसाहोयाने भगवान् सुयुकी प्रता
करयपश्रुति चन्दमाका प्रता श्रीश्रुति कोडकहतह हैकाम-
दवाप्रिय हेदेवदेव है श्रीवलदेव विमसुनी विम वाक्या सादरा
को जानतहो वाक्या नाम पदिवमदश्याकी रागहतहो उप-
जतहो सुरजकी अस्तहतहो सुयुदेविजवसु महोअवतहो दसरी
अयु सादराको रागप्रम होतहो सुअस्त होतहो नायकोपान
होतहो श्री पदिवमदश्या म चन्दमाको उदयहोत है श्लेष म
दिवराज दाश्याकी राजा चन्दमा वाकी वाक्या सादरा के
रागसा कर्माकरि उदय ऐश्वर्यु की प्रातिहोय पदकहो दाश्या
की उदय न प्रकाश यह निकटकम उदयम श्लेष वचनहो वि-
मिद्विप्राविनश्याति होलाहोलहोलहोलः दीनवस्विकरि दाश्या
की नायहतहो होलासादरा श्री हल के चलायु श्री होलाहल
विष वाकी साधनकिमु ४३ ॥

(अयानियम) कवित ॥ वीरगायदाश्याकीकालिसव
कालवदकविक्लहतकोसुखरयदरकाह ॥ गुंजसुवगा
मीयकवालकविक्लोकियमनातानहोकी मतवरकासा
साह ॥ अरिनगानप्रतिकरतअगान्यगानहोनिहो
कयोटिसदुगतसाआह ॥ राजादशरथसुगतजाम
चन्दनपविचरराचकाविमोवाह ॥ ४३ ॥

सपयसवै अन्धा भवै सुभाष आरि खलप पतै नो रि
 हारसकप पतै नो रि हारसकप को हारि सारि
 लक्ष्मीको वरदानकरि सवै सुभाष किरान नो रि
 वे भगवान लक्ष्मी को धारी म सुभाष नो रि
 हौ सकल जेह कामनाकरि भवत है निरत सदापरा
 को विपक्व कामनाहोराख निरत है निरत सदापरा
 पुनरुहौ जो कामना नहीकरत है निरत नो रि निरत
 पतिको हारत है करि काम जाको जानकपत नो रि
 हारहौ याकोअध धरि धरि सपयसवै हारत नो रि

निवेदितसुवककोमतधाई ४४ ॥

वीरिपिरवतसुवककोमतधाई । यथापिकेयवतनउर
 कोहिवतककामसुवकधाई ॥ अनीमलविनयन
 निरासुविपनिहैअधिकधाई । जानककामअकामनि
 (अधविरोधाखेप) सवेया ॥ कएहैरुवहैरुव

मं खेप हेलसोनाओ ओ नरक ऐसे जागो ४५ ॥
 करतहौ धरि ठौर आगया गोनहौ यह निरम किये हेलि
 नहीजाइसकयो यावे आगयागमन लकाआइ नही सुभाष
 सो याको उदाहरण नहीजाइ येवकी नगरीयनि कहि राधा
 नही हेली अधुम सो अधुनिकरयो सुवरणोना सो अधर
 नही यहअध अधुम सो निकरयो कविहो सुवरणकोहै ह्यर
 वी सदा एककाल है आरुचल वट एकयम वी है आरुचर
 उदाहरि यातरहको राख है जाहि राख मं गय आगया को
 है श्रीरामचन्द्र गुम विरिचर वडत वडतकाल राजकरी जो
 निरम याको नही ओ हेली अधु निकर है सो उदाहरण है
 याको लक्ष्म सुवरण हेलिस गेनसो नो अधुनिकर या
 नही एकअधुम हेलिस अधु निकर सो ओ निरमहोय यह

करे सो इतरहीकरतरे परेवरीय दीयाविरुद्धधामिल है याते
 ५०५ एकपुत्र के दीपअथ सोनही लक्ष्मीको अथ रमा श्री
 संपत्ति याते इहा ५०५पनही ४४ ॥

(अथसुंदरमालाकार) टी० ॥ कौनहुंभावप्रभावनेजा
 नोजयकीवात ॥ इनितेतआकारतेकहिमुक्षमअवरा

त-४५ ॥

कोइ क्रिया के प्रभाव सामर्थ्यते जीवकी यात जानीजाय
 इंगित चयाने क्रियाते आकार स्वरूपते ऐसी संततिवनाइ जो
 मनकीवात जानीजाय अवदात शुद्धतहा सुंदरमालाकार ४५ ॥

(यथारसिकप्रियाया) सर्वथा ॥ सखिसहितनगोपसभा
 माहेगाविबद्धवृद्धितेवृत्तिकोधारिके । जनकेशवपुणचंद्र
 लसुमिचनचक्रचकारनकोदरिके ॥ तिनकोउलटोकरि
 आनिदिचोकेइंनरजनरनयोभरिके । कहिकोहेतेनके
 निहारिमनोहरकरिदिचोकरिकलिकारिके ४६ ॥

चाकला सुंदर वासी मुखकी शोभा ते चन्द्रमाला मुख है
 याते चकारनिके चितकी हरिके वृद्धिते कहै चितचाइ चको-
 रानिको वदमोपाउहै चकारनिके चितकी चाइको क्रिया चाक
 आइ ते चकोरहै तिनके चितहरिके चुरायक जो पुरायकमन
 की यात जानीजाय तकी चकोर कहतहै चकोर जहै नजरि-
 यात तिनते भी इनकी क्रियाको नहीजानयो बेभी इनकेमुख
 की शोभादेखि ओकरहै कलिकारिकरिदिचो नोचामुखकिपु है
 तायकाकी आंखते नानीअंखि आयहै जव वृद्धते संगमयी
 तव ताहीया कमल जयकलहियोगी सुंदितहैवसो ॥ विषमस
 तव मिलेग तायका ते कमल पठायो या क्रियासी तायक ते
 तिरहेवाग्या तायक ते कलिकारि पठायो तायका ते योजिबिष
 मिलनवाग्या परेक्रियाकी उदाहरण है ४६ ॥

धूमसौख्ये ॥ श्रीरघुनाथकान्तनिर्मन्दरिजनार्दनेक्य
लाननतौल्ये । शालिसवर्द्धिनापालिनकोकरयवणककर

पालदेवौल्ये ५१ ॥

याको नाम ऊर्ध्ववति है लक्ष्मणयाको अब सर्वानुग्रह म
रसको श्री भवको अंग वहरस श्री भव नरदेविय नो ऊर्ध्व-
स्वति जानिय इहां केयव को कियलक्ष्मणवर्द्धि लक्ष्मण भई-
कारको नव ज्यो कज्जलकारको वपुर्गुहर्तु रावणको यवन
मन्दोदरीसो है सुन्दरि भवता रिपु भवताई भवता नो कटा
भयो वृम भविहरी एकामती योर्द्धवभाषई नो नो कलिभ
सुकरन समझाई नरदेवार्द्ध भविहरी भवताई रावण है राव
म करवाल नरवार है इहां कुम्भकलु भवताई को गजभवा
नौमी रावण को अर्द्धकार नरदेविया ऐस लोभ करत है । ५० ॥
वीररस को अंगरौदरस भयो यह जानिय ५१ ॥

(अधुरसवतजलकर) दो० ॥ रसमयदेवजुमजानि
अरसवतकेयवरास ॥ नवरसकोसंनिपदिसवतजलकर

यकास ५२ ॥

रस श्री भव जाको अंगरसदेव नरदे रसवत रसमयदेव

नरदेवितरसभरिहोय ५२ ॥

(अधुरंगार) सवेया ॥ आनिनिदेगानआनकरदेन
नभकछिआननआनदेकिसे । केयवकार्द्धमजाननन
नजयकहोमनजानविजेयो ॥ लोचनयोभादेविजनज
नसमानसिहातअधाननवेयो । अजिनदेनविदेननवे
पालजानसुवतकदेनिकवेयो ५३ ॥

नयका नयकलो अरुणमसिह कहेन ५३ ॥ ५३ ॥
योपयहै वृमसो और देवमरिदिवनही नरदेवियनरदेव
स्वयाधी भावहै न आन अन्धया आरवहै नही इहोनिहै नोभ

देममयोरनाम जलकोशहै मधुदत्तको बाणसां नहीमारवा
 द्वांस कथा है जिन मगवान जल में मधुदत्तको मधु बाको
 मर्हिमारि यहअधु मरकोभी मारवा ककश कठोर नरकासर
 को मारवा शूलसिर को मारिके पांचजन्य शूललोना सर दे-
 वनकी कटक मून्य बाको निःकटक करवा तक्षमलजुन
 निनवालकपन में खड्किको तोरिके निनमगवान ने बाण
 सां द्योकएट रात्र के कएट खडितकिये बाणजियो जनिने

बाणबाणदंशकठकठदंशखडितकरध ५४ ॥

कुंभकरणीजिनमदंरधउपलानधानोनेतरधउ । तिहि
 धर्मवदेयो । खरदंपणीजिद्विषाकवन्धनकेखडिबिहदेयो ॥
 दंशदेनदंशखसुलोना ॥ निःकटकसुरकटककखीकटम
 रमधुमदंमर्हिमारदंशसिरमर्दनकीना । मारवाककयोनरक
 (अधुवारस रामधंदचंद्रिकासं) अण्य ॥ जिहिया

सवामिल्योरस भयो ५३ ॥

चासी एकांतस्थल उदीपन विभाव अनुभाव सात्विक संचारी
 भयो नायका नायक आलम्बन विभाव इहां लालिसाभी सं-
 नदीश्रृंगों केवन रस संचारी तुल्य शृंगारसदाकोरस यहपुष्ट
 रदाय तुन्दरीवलज्जालहो नकुंचो वचनकहो गुहहंस कवहो
 र्नाम नायकावचन जो हम विहात खंडनके नहीरहात नही
 पिया जननी बहूत पावतहूँ तेसा तेन नहीहातहूँ हूँ संचारी
 नहीरोभी मैं भूतवज्जालहूँ आं सिहातहूँ यवा हम ऐसोअप
 नायकवचन हमारे लोचन गुहरी रोमियोको पावतहूँ आं तु-
 ल्य स्वरभांग होतहूँ सात्विक आं लाज आवात है यहसंचारी
 मन जानत है तेसा कद्यो नहीजालहूँ जब कहिये लालियहूँ
 वात जानतहो यहवचन अनुभाव जैसा गुहरी स्वरूप को
 आरहोतरह को प्रकाशहूँ तेम सुजान प्रवाणहो हमारे मनकी
 कहेतहूँ गुहरी तन शरीरमें आं आननमूलमें आनहो केसा

धरतके कायरतानद्वैतप्राय उल्लाहस्थायी भगवान् आ अभूत्
 आत्मवचन पवनप्रतिज्ञा ते दद्यात् याम् नो निकरं नो निरु-
 त्तिये योतिर दीप्तसंभवा यांको कोटि रौद्रसक्तो उदाहरणकद्वै-
 त्ते सो धम सौ इदंकोप नदीभासुद्वै ५४ ॥

(अथरौद्रस) इत्यप्य ॥ कश्चातिरज्यरुद्रनय
 मकरोज्यरुद्रस्य । रुद्रनिवासेममृदकराज्यवसुपय ॥
 वलितअवरकैवरेवलितद्वैताद्वैतद्वैत ॥ निवावरेनि
 अविवकरोविनसिद्धिसिद्धसव ॥ लैकरोज्यरुद्रनिकोरा
 सिद्धितिअनिलअनलसिद्धिजालद्वैत । सुनिमृजमर
 जउगानद्वैकरोज्यसंभारसव ५५ ॥

सुभुको अवतर सिद्धवद्वै तिनसो श्रीरामचन्द्रजीक वचन
 हे सुभु सुभाय तं सुनि सुभु क उगतके संभार को वजसो नो
 रावरो सो अघुरकरो अघुरको अघु नोद्वैतै सुत देवता नो
 विष ऐसोकरो असत यदधीपाठद्वै नो नोद्वै कर्तव्य सो नो
 संभारस यमको आ आठवसु है तिनको नष्टकरो गंधर्वादि
 पशु वकराकरो मारिदे के लिये वलित अवर दक्षिण संभार
 वलित कहिये बुक संभार सुभु क यनसो यदधीय रूबर को
 आ वलिको पकरिके इन्द्रकोदेव अवर कोटि वजसो कद्वैत
 अविद्यमान करो मारो यद्वैत अघु लिखनि को निरिहिन २०
 अतिव पौन अतिव अतिव ये वल सु मिलिनारि ऐसो करो
 कोपस्थायी उग्रता संवर्तितवन यवमात्र राजविविधाय सो नो
 लोसो विद्यागम प्रजापद्वै तिरपराय देवनितद्वै मारुद्वै उग्रव
 संवारी ५५ ॥

(अथकण्ठारस) संवैया ॥ इरनेद्वैतानुद्वैतन
 गुनितवृत्तकुम्भिननाद्वै । दोरपारैरपारैरवभुवनप्र
 तमराजनावतद्वै ॥ विधनमंगलमयपद्वैतद्वैतद्वै ॥

रव्यविगच्छा । केयवतानकेनातउतारतिआरतिआ
रतिमातविगच्छा ५६ ॥

जव द्युरथजोहरेछोडा पाछे भरतजी सामाकेपरत आय
वेहि प्रसंग को कविनहै पुनसमूह गुंजयउद तोरण बाहिरको
दरवाजा नैरणकहिंय सितावी सो तैरनगारा नहोवाजहै विप्र
संगल संग नहोपठहै ओ वारवध वैराग्य भी विगनजीकठोडा
नहोरेखतहै वेद्यदरयोन पयानम पुप्रवेद्यो म संगलकारी है
पुनको भी वातकहतहै तातभरतजी के गात आरती केकयी
जो करतहै मारतिपुडांवाडां द्युरथजो देहछोडां तात किवा
सातको विप्रवादेखि भरतजीको पाडांवाडां हरेमोआदिंको
अमावदीपन डेढद्वयुरथजोको नाथ तात शोकस्थायी करण
रस ऐसे जानिये ५६ ॥

(अथमगानकरस) सबैया ॥ रामकिवामजुरयावधु
रायमलकममोवाकिलिवडुन । यगुरेणजोतहोतिन
सोनिनकीवनेखननाखीगडुन । वीसविसेवनवनहरे
जोहरीद्वेनाकेयवजुपरडुन । तोरियारसनयोकरकोपिप
सिपुस्वयनवरकगुनलडुन ५७ ॥

मदेदरीको वचन रावणसो लकामे सोच सुख की बली
जता सीतारूप बाडु है आलदमणजी धनपसो रेखाकारि श्री
सीताजीको राखिगयसो रेखा माखी दूरकरी नही गडुवाहरे
जव निकरी तव हरी कहै लीपगडु पहे भी पाठ है वीसवि
रवा गुम वलवतहै थ हरीद्वेग केयव कपरडु यको अधु अधु
श्रीसीताजी गुहारे दगम सोददयसो रडु रमायी लगीथी
सोता विभाव वचन अनेभाव मय स्थायी मदेदरीको मया
नक रस खो वालक नीच याको मयानक रस होतहै किम
वदत्य को ५७ ॥

(पुनः) बालिवर्तनव्यापराखेरिमम्यावाचिहोम
कोनिजखरहि । कयोवधोरसमृद्धमम्याकहिक्कमनवाधि
होसगरधरहि ॥ श्रुतवृत्तानामोअसमधनदंविजित
रथहोधिहोखरहि । तोरयोअरसमयोकरकाजिहोच
कदाविजलकनतेरहि ५८ ॥

मंदोदरी वचन पर जो सुश्रीव लकी खेर खोट अपराध
किया बाकी खी हरी विसकी तो निज भापनी श्रुतवृत्ताना
की खेर खोट अपराध किया है श्रुतवृत्ताना की असमर्थ
मति जान मंदोदरी को मथानक रस किया था यान छिनि
श्रोतनि को होतहै ५८ ॥

(वीरसुरस) पद्यावतीछन्द ॥ सिगरेनरनयकअ
सुरविनायकरकसपतिहियहोरिगये । कहेनउठायोअ
कनवदंयुटरयोनटरभीनमये ॥ इतराजकमानअ
तिसुक्कमारनलेआधुसवजानये । जनमंजुहोमारानया
तेन्दोरिअविनपतेजनजानियरे ५९ ॥

विशामिजसो जनकजीको वचन सब ने नरनायक राज
औ अमुरनि के विनयक राजा सरदार राजेंस गनि राजा
अपि हमारी जनमंगमयाओ वुहोरो वपस्याही तेज आगो
नही गयो युवावक वुहोरे वपस्याके तेजने गोहि तो गोहि
कोई गायोन मयसु ऐसी भी निंदारमक गोअसहं वाजकनि
देखि जनकजी को आनि ये धनुषका कहे उठबहिग ५९ ॥

(अध्याहृत) कवित ॥ आसनिपपनिपपिपपपक
सोनातोकहेतेअहंजोसोपिपनकरमयउरहि । इप
दीकाहेहमयुधोही कहेहिःसोसमनवरहोविसानाविच
मननहेतयहै ॥ पृथुपरहिनिहोतकीपठिकेअधोमिचन

महर्षिगणेशविजयविजयविजयविजय । कृतव्यास ।

[illegible][illegible]

1911 1912 1913 1914 1915 1916 1917 1918 1919 1920 1921 1922 1923 1924 1925 1926 1927 1928 1929 1930 1931 1932 1933 1934 1935 1936 1937 1938 1939 1940 1941 1942 1943 1944 1945 1946 1947 1948 1949 1950 1951 1952 1953 1954 1955 1956 1957 1958 1959 1960 1961 1962 1963 1964 1965 1966 1967 1968 1969 1970 1971 1972 1973 1974 1975 1976 1977 1978 1979 1980 1981 1982 1983 1984 1985 1986 1987 1988 1989 1990 1991 1992 1993 1994 1995 1996 1997 1998 1999 2000 2001 2002 2003 2004 2005 2006 2007 2008 2009 2010 2011 2012 2013 2014 2015 2016 2017 2018 2019 2020 2021 2022 2023 2024 2025 2026 2027 2028 2029 2030 2031 2032 2033 2034 2035 2036 2037 2038 2039 2040 2041 2042 2043 2044 2045 2046 2047 2048 2049 2050 2051 2052 2053 2054 2055 2056 2057 2058 2059 2060 2061 2062 2063 2064 2065 2066 2067 2068 2069 2070 2071 2072 2073 2074 2075 2076 2077 2078 2079 2080 2081 2082 2083 2084 2085 2086 2087 2088 2089 2090 2091 2092 2093 2094 2095 2096 2097 2098 2099 2100 2101 2102 2103 2104 2105 2106 2107 2108 2109 2110 2111 2112 2113 2114 2115 2116 2117 2118 2119 2120 2121 2122 2123 2124 2125 2126 2127 2128 2129 2130 2131 2132 2133 2134 2135 2136 2137 2138 2139 2140 2141 2142 2143 2144 2145 2146 2147 2148 2149 2150 2151 2152 2153 2154 2155 2156 2157 2158 2159 2160 2161 2162 2163 2164 2165 2166 2167 2168 2169 2170 2171 2172 2173 2174 2175 2176 2177 2178 2179 2180 2181 2182 2183 2184 2185 2186 2187 2188 2189 2190 2191 2192 2193 2194 2195 2196 2197 2198 2199 2200 2201 2202 2203 2204 2205 2206 2207 2208 2209 2210 2211 2212 2213 2214 2215 2216 2217 2218 2219 2220 2221 2222 2223 2224 2225 2226 2227 2228 2229 2230 2231 2232 2233 2234 2235 2236 2237 2238 2239 2240 2241 2242 2243 2244 2245 2246 2247 2248 2249 2250 2251 2252 2253 2254 2255 2256 2257 2258 2259 2260 2261 2262 2263 2264 2265 2266 2267 2268 2269 2270 2271 2272 2273 2274 2275 2276 2277 2278 2279 2280 2281 2282 2283 2284 2285 2286 2287 2288 2289 2290 2291 2292 2293 2294 2295 2296 2297 2298 2299 2300 2301 2302 2303 2304 2305 2306 2307 2308 2309 2310 2311 2312 2313 2314 2315 2316 2317 2318 2319 2320 2321 2322 2323 2324 2325 2326 2327 2328 2329 2330 2331 2332 2333 2334 2335 2336 2337 2338 2339 2340 2341 2342 2343 2344 2345 2346 2347 2348 2349 2350 2351 2352 2353 2354 2355 2356 2357 2358 2359 2360 2361 2362 2363 2364 2365 2366 2367 2368 2369 2370 2371 2372 2373 2374 2375 2376 2377 2378 2379 2380 2381 2382 2383 2384 2385 2386 2387 2388 2389 2390 2391 2392 2393 2394 2395 2396 2397 2398 2399 2400 2401 2402 2403 2404 2405 2406 2407 2408 2409 2410 2411 2412 2413 2414 2415 2416 2417 2418 2419 2420 2421 2422 2423 2424 2425 2426 2427 2428 2429 2430 2431 2432 2433 2434 2435 2436 2437 2438 2439 2440 2441 2442 2443 2444 2445 2446 2447 2448 2449 2450 2451 2452 2453 2454 2455 2456 2457 2458 2459 2460 2461 2462 2463 2464 2465 2466 2467 2468 2469 2470 2471 2472 2473 2474 2475 2476 2477 2478 2479 2480 2481 2482 2483 2484 2485 2486 2487 2488 2489 2490 2491 2492 2493 2494 2495 2496 2497 2498 2499 2500 2501 2502 2503 2504 2505 2506 2507 2508 2509 2510 2511 2512 2513 2514 2515 2516 2517 2518 2519 2520 2521 2522 2523 2524 2525 2526 2527 2528 2529 2530 2531 2532 2533 2534 2535 2536 2537 2538 2539 2540 2541 2542 2543 2544 2545 2546 2547 2548 2549 2550 2551 2552 2553 2554 2555 2556 2557 2558 2559 2560 2561 2562 2563 2564 2565 2566 2567 2568 2569 2570 2571 2572 2573 2574 2575 2576 2577 2578 2579 2580 2581 2582 2583 2584 2585 2586 2587 2588 2589 2590 2591 2592 2593 2594 2595 2596 2597 2598 2599 2600 2601 2602 2603 2604 2605 2606 2607 2608 2609 2610 2611 2612 2613 2614 2615 2616 2617 2618 2619 2620 2621 2622 2623 2624 2625 2626 2627 2628 2629 2630 2631 2632 2633 2634 2635 2636 2637 2638 2639 2640 2641 2642 2643 2644 2645 2646 2647 2648 2649 2650 2651 2652 2653 2654 2655 2656 2657 2658 2659 2660 2661 2662 2663 2664 2665 2666 2667 2668 2669 2670 2671 2672 2673 2674 2675 2676 2677 2678 2679 2680 2681 2682 2683 2684 2685 2686 2687 2688 2689 2690 2691 2692 2693 2694 2695 2696 2697 2698 2699 2700 2701 2702 2703 2704 2705 2706 2707 2708 2709 2710 2711 2712 2713 2714 2715 2716 2717 2718 2719 2720 2721 2722 2723 2724 2725 2726 2727 2728 2729

— 118 —

110

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमः शिवाय नमो भगवते वासुदेवाय

11 03 16661222 266612 26 1222 122

(पृष्ठ: १२) श्रीगणेशाय नमः

कर्मकाशिशिखिनासिखाङ्गः । वेदप्रसिद्धिनिवेपदेयः ।

॥ वासुदेवाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

116

— — — — —

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

三、四、五、六、七、八、九、十、十一、十二、十三、十四、十五、十六、十七、十八、十九、二十、二十一、二十二、二十三、二十四、二十五、二十六、二十七、二十八、二十九、三十、三十一、三十二、三十三、三十四、三十五、三十六、三十七、三十八、三十九、四十、四十一、四十二、四十三、四十四、四十五、四十六、四十七、四十八、四十九、五十、五十一、五十二、五十三、五十四、五十五、五十六、五十七、五十八、五十九、六十、六十一、六十二、六十三、六十四、六十五、六十六、六十七、六十八、六十九、七十、七十一、七十二、七十三、七十四、七十五、七十六、七十七、七十八、七十九、八十、八十一、八十二、八十三、八十四、八十五、八十六、八十七、八十八、八十九、九十、九十一、九十二、九十三、九十四、九十五、九十六、九十七、九十八、九十九、一百。

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ २ ॥
 (अथशान्ति) शान्ति ॥ १ ॥
 शान्तिशान्तिशान्ति ॥ २ ॥
 शान्तिशान्तिशान्ति ॥ ३ ॥
 शान्तिशान्तिशान्ति ॥ ४ ॥
 शान्तिशान्तिशान्ति ॥ ५ ॥
 शान्तिशान्तिशान्ति ॥ ६ ॥
 शान्तिशान्तिशान्ति ॥ ७ ॥
 शान्तिशान्तिशान्ति ॥ ८ ॥
 शान्तिशान्तिशान्ति ॥ ९ ॥
 शान्तिशान्तिशान्ति ॥ १० ॥

भूमवधानजगति ६२ ॥
 नमस्कृतं देवी वचनं प्रमकी गतिं निपातति प्रमकीं तां
 प्रमकीं पण्डितैः निवृत्तं भूतविदे प्रमकीं अन्तर्गतं प्रमकीं तां
 व्याहृ. प्रमकीं को अन्तर्गतं भवति उदीपनं भूतप्रमकीं न

रस. ६. ६१ ॥
(अथहेतुः) सर्वथा ॥ वृत्तिहेतिनमद्वैतान्नम
तुममगतिशेषमगतिहे । ज्ञानविहेतिनलयावद्वैतान्नम
कथारसमद्वैतगतिहे ॥ पञ्चगोप्यवैतमद्वैतान्नममगति
कथारसमगतिगतिहे । मृदकविज्ञानमद्वैतमद्वैतान्नममगति

[illegible]

[illegible]

॥ ४३ ॥

॥ ३३ ॥

[illegible]

महाराजगिरि । नकाशेकरीद्वयवर्तमान

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ अथ श्रीगणेशोत्थानम् ॥

11 אֵלֶּיךָ יְיָ אֱלֹהֵינוּ

शुभमस्तु नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः

कृष्ण कर्मकाण्ड ३०३ अथ श्रुतिप्रमाणं तदा

[illegible]

11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 846.

सर्वे भूतानि ज्ञात्वा यो ब्रह्मविद्भवेत्

॥ ५३ ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ወ. 12512 ኔ ወ. 12512 ኔ 6 ወ. 12512 ኔ 6 ወ. 12512 ኔ 6

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ਪੰਨਾ ੧੦੨ (ਮੁਕਾਬਲਾ)

॥ २७ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ १६ ॥

॥ १३ ॥

1. 日 止 止 止

मयी वो निहिता गीता प्रतिफल्य दृष्टद्वयी हे विष श्री भू-
 र्गोपमर्दन उग्रमधुदे गीत निष्पकरिजगुदे गीसां देवपु-
 र्गोप हे कश्य हे कलकयंक हे युक्तिसां रूपकसो फरि मयु के
 किलकुरि गीस गकागुदे गदेगकागुहेन १४मसु हे गदेमो रूप
 कसो मयुकी किरणु चारिके भाउहे गीत स्वभावकसो गहि
 दृव देवपुत्र हे गदगुप ऐसा अरभीकाहिंय मीलपक्ष याको
 लगावत हे मील कसु हे गकगुपक जो गीतगुआहिं गीसां
 किरा जो दोग लुटगो मारगो गीसां दूधित हे श्री कलकपण
 गहिंसां मरुदे निश्याचरी मीलगी चण्डवीज अभयहे कर मं
 उग्र लीन गगुउ गीरागर गीसां वन मं कर दण्ड लुके गीति
 मस मास २ गीतमांस ललक गीचिच के लिखे वनमं निरत हे
 मीलके रूप गील अंगुणकसो ६२ ॥

(अर्जकअलंकार) टी० ॥ जसोवदोनागीभयतेसा
 तदोत्रदेप॥कश्यवदंसअर्जककहिदेवरातहेसवकप६९
 जेनां वहां नहीचाहिंय तेसां वयुनहीपय अञ्जलि१६६ ॥
 (गया) कान्व ॥ कयोदोसहीनिमरसिरीयसुमर
 मिरीआसोलेदलिंदहेपुसायुदेरवरी । अमलवतीस
 पुंमललितकपणलेअवरतमालधरुदोनालितलचवरी ॥
 उदीउविउकिउतवनमउदोलिल लोचनगोवरुजोन
 लदेहनअवरी । वारवारवरनतिवारवारनोतिकतमूल
 वारवारिआनिवहिंनववरी ७० ॥

मरकाम गीकी श्रीगुमासो सुमर श्रीहीतिहे जो पावसा
 न वचु सो सुमर सखी गवकासां कहीत हे ऐसां वेदही
 योमा हे कामकी योमाको माहवकरुहे ऐसां जो कसो चा-
 हिंय अमारकतिगो नहीचाहिंय किय गीत की योमा सो क
 गगुमस लजिजवहीत हे चाहिंय कामकी नही चाहिंय मूल

आरमिल देखे ऐसा चाहिये कपलकी उपमा चलाना नही
 चाहिये मूलतमलपरचाहिये अथम पानकीतमगहिये नम
 म दयामला देवतल है सो तिलचतह पर सो महीचहिये
 नरे नम गजबलम ज है न झुलिनहिये चहसो नही गहिये
 म बारवार लोको घरजतिहो न बारिबारि जतिहो नरकी नरे
 घर मलिनहिन म गोनितपर ओ अमामरया पसे दिनम म
 आनिक लोप बारिहरतिहो निरा वामआननिकिया कलाम
 है मयका कचहो बारिहरतिहो नही लोको सदा अममय
 कहि रोकातिहो सलुकी अजानन नयकाक कमलामि नही
 पाते इहो अथपथ विरोधी दोष नहीमाननह जल नानम
 तिलदेखिये ऐसे इहो अलकरकी प्रतीतिहो नह पदनाम
 कोई नादितक के किये अलकार है लोको मतह अथ नमतम
 लो दोषही है ७० ॥

(अथअयकयुक्त) टी० ॥ अयामयामदेवमाननह
 कयुद्धिकयवदाम ॥ इहेअयकयुक्तकविप्रियावर्जित

लस ७१ ॥

पहिले अयक अयमय कहै पंडि युक्तह ७२ ॥

(यथा) सवेया ॥ पानकदेनिपितममगहोतिननम
 शूलनिवेहरिये । तालनिकोववववरोरकी नयकना
 धुचिनाजिये ॥ पयकदेनककककककककककककक
 ममरिये । नौकीसदलनगोसिनेनकीतिननननन
 यामरिये ७२ ॥

होत अछोनही पर पावकी होय लो अछो हानि या न
 नाही है पितक मम म होय लो अछो मयव म ममम मम
 वलहो लो अछो उत्तनही तलवकी बाधिये सोर दंडिनहो ७३
 आयुवकी कागदकाहे सो अछोनही अछकी कागद काहे

सो अर्था पाप के समयोग से तो पापकी दानि आर्थ ७२ ॥

(यथा) यथा ॥ आनेदेवनेवाइदेवनेइतथाकि

उनेउनेउनेउने ॥ मानिकेवदेइयानेउनेमानेवा

ननेमानमइहे ॥ रापकरेवदेइसकलेवकाइकोकयेवअ

इहे ७३ ॥

इहे ७३ ॥

इहे ७३ ॥

इहे ७३ ॥

इहे ७३ ॥

इहे ७३ ॥

इहे ७३ ॥

इहे ७३ ॥

इहे ७३ ॥

इहे ७३ ॥

इहे ७३ ॥

इहे ७३ ॥

इहे ७३ ॥

इहे ७३ ॥

इहे ७३ ॥

इहे ७३ ॥

जह्म, चान्दनी केले चरसी चढाई, या नव चान्दनी के चान्दनी
 विरह में फलदल्लाई इरादत है सा अनिदमय ७५ ॥

(पुनः) सवैया ॥ पापकिमिदिसदाशमद्विद्वन्मरि
 निअपनीआपकद्वीकी । दुःखकादोनर्मनकद्वीकी ।
 दासीकिमनतिसनतकी ॥ बुदाकीमपणबाननमद्व
 कोकयावणीनिसदापरकी । बुद्धमलाजदयाअरिकीम
 कथाहाथानिसानिनीनकी ७६ ॥

सिद्धिद्वय है पापकी सिद्धिद्वय तो अनिद दान आनी दु
 प दुख में गहयाति के निवे दाविष सो आका नदी में ७७-
 निव ७६ ॥

(अन्तिरेक) दो० ॥ नामअनयेदक, दिद्वज्ज
 समान ॥ सोव्यातिरेकमुआतिद्विज्जमहजपरमान ७८ ॥
 जोवत्यु समानवयविरहोय तोम भवव्याप पकयुकि ७९-
 तिरेक दुसरा सह म अन्तिरेक ७७ ॥

(युक्तिंयानिरेक) कविम ॥ मुदरसुखदअनिअमन
 सकलविब्रिसदलसफलवदुसरसमगितो ॥ विविभन
 वसमुतकेयादासआसपानयविद्वज्जमनपरपण
 तम ॥ फलद्विद्वतद्विज्जकीपानिपलनेनमनमनि
 सवसीतद्विअपानि ॥ जोवनवचनगतिविद्वज्जमद्विद्व
 इद्वतद्वतअद्विद्वद्विद्वज्जो ७८ ॥

इद्व नकसर कलपयस आ इद्वज्जो दासी इद्वज्जो मर
 कलपयस में जोवन नदी है आ वचन नदी है वानिद म
 जह्म है याते अगेत विवा है इद्वज्जो म जोवन आनि म
 है इद्वतद्व कीसी है मुदरहै विद्वत है अति अवन विद्वत है
 सनत किया करिके दल पण आ भड्डन फल है मम सनत

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

॥ ६२ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ सनकी आत ता इराइय मुहसा आर यात इति २० ॥
 कवित ॥ सुंदरलालनातिबालनसदासनात्मन
 सुर्वामतिभूमनमान्दि। अमलअनपुनरुपानि
 प्रतसुवरणहरेणमनसैरवतान्दि ॥ अजअनमंआन
 वरांभवकप्रभावजोकासिभावप्रपदिचान्दि ।
 कसुवदासदेवीकाजदेवी। पुमनादिमजप्रपदीपम

11' 0' 212

(अथ अष्टादशोऽध्यायः) श्रीं॥ मन्मथसुखप्रदायकं च
कुरुतेति श्रुत्वा कुरुतेति श्रुत्वा

॥ २८ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

इति श्रीकथवदसिचिन्ताकविप्रियाम

नादोलोलोचनवद्वपनकी ८२ ॥

वर्षभूरिनकी। वदकह्निगपकीवलकीप्यारनदोल
कथवदसकह्निगपपद्वनी वागमाहिसासनउससिसा
निश्वचलनिश्वचलसुखसुखकवनिगमहिसनिसनकी ॥
सलानिनिदिवयननकी। आह्निश्वचलचनचिन्तव
कवि ॥ कारसदकारकथोलनिकह्निगमसनेने

निगारिके पदिवानि है कविद्विहै अब ऐसी मरजाहै ८१ ॥
सुख वान्नी जात है ताको पविक् असम कर आह्निवरह
वैसी भाव उपह्नि तैसाह्नि सुख कोति होय कोय हव आदि
पविक् पदिवानी है कह भाव कोच यदसी पाठ है देवय म
रूप है जो कछे कछे देवय उपह्नि सो कहतहै या वातको
मरजाहै या वातको कहति है करि देवको भाव अभिप्राय
मनरय ताको जानिव को सुभाव है जाको इन्दजीवकी या
गुंमाण ज भाव मनकी दूति ताको जो प्रभाव उरकप प्रोह
सुखकी दाताहै अगकहिये साहिव इन्दजीव तिनको आग के
हरे साहै जास ऐस ज स्वर निषाद अपमआदि तसो करि
ज अलकार तसो मीपत है सुन्दरज वरण अक्षर ज मनकी
मज साफहै अद्विपत दोपराहिव ज सुमण उपमाकपकआदि
इन्द्रको भी नाम है आह्निवरह इन्दही म वालिय करि अ-
करि सुन्दर जो इतइन्द सो कहिये म मतिइन्द्राहै जाकीमति
सिगयआहै सुखत सो वचनम उदराया करि सरसरसोहै
म गुन है वाणी आ अतिजास सुवासि सुगन्ध है वोलि है तव
भी कहिआव है ताकी जो गतिवत की किया तसो बाजित
जो राग दातसमय को ललितहै सवरग जानिय ऐसो पीछे
पदिवानिहै दलीपरायकी वाणी कैसाहै सुन्दर है आ बाजित

(अथयुक्तिप्रकरणं) टी०॥ वृद्धिर्विवेकजनकवत्तु
 पञ्जनकप्रमाणं ॥ ताम्रकवर्णयुक्तिकद्विवर्णप्रमाणं
 प्रकरणं (युक्तिभेदकथनं) टी०॥ यत्प्रमाणं विप्रकरणं
 द्विप्रमाणं प्रमाणं ॥ महितमहोक्तिसंज्ञां उक्तिसंज्ञां
 ताम्रप्रमाणं (यत्प्रमाणं प्रमाणं) टी०॥ यत्प्रमाणं प्रमाणं
 तद्विप्रमाणं ॥ यत्प्रमाणं ताम्रप्रमाणं तद्विप्रमाणं ॥

इति श्रीवैद्यरघुनाथकविप्रियामरपादव्यासकविप्रिया

10121515

खडितकी वचन सखायां विजय विजय सपकरी मय
 नाम अनकतरह के विजय है सककयन म पाया विजय
 निवास है विग्रहभारी मन अनखराया मयिग विग ३४ म
 कथा सादिक सा डरी कोषों मानय सकन मय कयन
 शीतल है सो रात मय परसखायात चन्द्रभाषा मानयराय
 है जाकी सखायात है कलिकत यह वक्रग ४ ॥

(अप्योक्ति) दो० ॥ अरविमान जयमानय कययोर
 कीवत ॥ अयउक्ति यह कहत है वरदान कविन जयान ॥
 और यदि औरों कहिय कय औरों बात औरों ४३-

कत ५ ॥

(यथा) सवेया ॥ दलदलानदी न डव डव डव डव
 वामवत जल यो हरि है । कहिये यव यव डव डव डव
 धर धर जय यो धरि है ॥ कल डव डव डव डव डव डव
 तोप डिये वस डव डव ॥ कयु डव डव डव डव डव डव
 किरकरी कहिये ४ ॥

सपविहीन राजा को कहि सवन है गारि सवन ४ कौर
 वधु वर यो है एक लोको कहत है सखाया सखाया
 सपविहीन को नही सखे कौर को सपाम ४ कौर २ ४ ४ ४
 है रे जडमख मुक वसपात वसपात है यो यो ४ ४ ४ ४
 वरुन लोपि है वसपात क यह वन सखायात म ४ ४ ४ ४
 म जल कहत है वसक वरुन विपति है लो ४ ४ ४ ४
 वरुन यो और यो वरुन यो कहिय ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४

कलिया गारि ६ ॥

(यथा) अंग अली धरि अंगि पावत अंग अंगि न
 आवत दीने । आवत दीने अंग अंग अंग अंग अंग
 सपान दीने ॥ धरि धरि धरि धरि धरि धरि धरि धरि

द्वेननवीं । नदिकेनदेकमभिनेयपनञ्जद्विकीपरं
निनकीं ७ ॥

नयकवो द्विके प्यरकमिआई है सखी ताहि धनयके
अननयभोग दुःखिता कहतिहै है अली अनियाकपसी सखी
उननयक के लिये उननयकपास जातको तौ तहको अंगु
नदीपरिये आ निदाकप सखीको आउते भावने नदीद्विजये
आ हैमारे ब्रजसो अनिया आ नीद सखी है निनकी हैमसो
उमो गता सख्ययहै सो मं जानतिहो जाजहै सखीकोसाध
नदीजालिये योहैद्विजने तेऊ वे अनियाआदि सखी हैमारे
ब्रजसो खलनलगी है हैमारे प्राणको खिलनानिकयहै निहै
द्विज हैमजोवती है एककहतिहै मासुला व्यवहार ७ ॥

(व्याखरनोकि) दो० ॥ औरहिमेंकहीप्रगट औरहि
कौमुदीदोष ॥ उकिहैव्याखरनकीसुनतहैयसतोष ॥

और के गुण दोष और मं प्रगटकीजे ८ ॥

(यथा) कविता ॥ ननुकिटनामकैलकठपुठमुनमूलउ
रनकरनरखरखीवहैभातिहो ॥ दलितकपोलरदलितअ
धरकिचरसनारसनरसनरसमंसिभातिहै ॥ लोटलोटिजे
पुटलपुटलितवीचवीचहैद्विहै नतिनतिवपुहोतिजा
तिहै । आलिंगनअंगअंगपुडिपुडिअनिके सौतिनके
अंगअंगपुडिनिप्रसतिहै ९ ॥

आलिंगन मं अंगअंग पदिकीके पांडिपुडिहै वह जो पीडा
नयकक सभलिवसो है सो सौतिनके अंगम प्रसतिहै दलित-
तिहै नयकके ननदीक करननय तौकी रेखासो रेखहै उरहो
है रददोन सो कपोल दलित सतिहै कपि रदसो दलित जो
मयतमसं ललित ललित है रसना जोम सो रसको आरवदन

करिहै तेहि तेहि यहसतिहरे नयकी कें अंगगीइतदोषन
सौतिनकी पीडादोष जानिये २ ॥

(पद्या) कविन ॥ राजभारसजभारखानभारभूमिभा
रभवभारजयभारनकिहैअटगुहैप्रमभारपनभारकदोष
संपत्तिभारपतिभारयुनअतिवृद्धिनजटगुहै ॥ राजभार
मानभारसकलसदानभार भानभारभानभारवदनापट
गुहै । एतेभारकलनभारजौराजराभाधिरतिहैरुभयव
नकरीरषफटगुहै १० ॥

भार आदिनयार आ आका सान सजानस पन प्रानेडा
पतिभार सवस पतिहै किवा प्रविष्टा या यानवो यक दोषन
युद्धनिषा जटवहै । आयकें भारकी जो घटवा किवा नोट
करहै भार राजारामिहवाधकें प्रियहै नके दूखवो भोज-
नके शोषमाया सो फाटवहै इहा । रामिहरेक गुणवरो भोजन
के शोष फाटियो दोष या उदाहरणस सहेर शोष फाटियो
को कारण सो राजासु है शोष फाटियो काय भोजन निम
असंगति भासहै यावेगुणत दोषकी उदाहरण साटवहै १० ॥

(पद्या) सवैया ॥ पनभयानदोषरयकके दोषनकेंभार
वाजविवाह । फौलकैलनकैवपनरुफनकैलनभार
खटवहै ॥ शीरवहैसतिनसजभलभारभारभारभार
इसवसुखीकलदवतदखिकद । इहैदोषमाया ॥ पद्य १ ॥
सतिना धीरवहै भल नरहटोको नाम है अतिनर
नटस भी वही गुणत दोषकी इह फाटियो दोष १ ॥

(विशेषाधिक) दो० ॥ विद्यमानकामसकल नरनर
इनसिद्ध ॥ मोहउक्तिविशेषमयकदोषपरमप्रतिब १ २ ॥
कारण हेवसो नरनर १ २ ॥

(सिद्धिप्रदा) कवि ॥ सिद्धिदाससुखदासपदादी
कादंबरीदासनीदखदासीदादीअध्यातकी । अ
क्रिदहसिगितभारदहसअरदासीअकभरविवाधभा
तिगतकी॥दंडनिरदंडदंडाहिएमकिहमतेजसतवरेन
तिनदाहिएमगतकी।किसडनमानदोनमनपदरिक्कदावरी
सवालिरिकीकिलजिलपदरिक्कदावरी १४ ॥

मात्रं दृष्ट्वैहै एव तपकसं नष्टं वा तानिह निवर्तयामि
तपकसं मित्रं आयत्तां सां वृद्धिं आर्जुं नष्टं ॥ १२ ॥

सर्वथा ॥ कर्मिक्यादिजडाणां नष्टां निवर्तयामि
जपनटनया ॥ मोमगादां हि वरवर्ज्यं नष्टं नष्टं
यमहारा ॥ क्षयवदं मपि तमहं मोममवाचकं नष्टं
दिश्यावरा ॥ दंखतद्विनिनकदं नष्टं नष्टं नष्टं
अपसरया १५ ॥

कपाचायु कहे कत एसा पाटहे जिनका हिया मोपगि-
तामहेन मोचसुख्य आ चारिहं दिश्याका यमो हिया निन ॥ मो
दंखतक ये सव दुयावनक राकिव क कारण हे र हिया नष्ट
नष्टं मया १५ ॥

सर्वथा ॥ वृद्धेवानविधाननिधाननकमो निन
रहद्वैत ॥ वृद्धेवादि वरवर्ज्यं नष्टं नष्टं नष्टं
जो वृद्धे अर्जुनअननदी नमो वरवर्ज्यं नष्टं नष्टं
खतद्विनिनकवकाननकादिनरिजिनान्न ॥ १६ ॥
वाणको जो विधान चखद्वैतकी किया ताक विधान नष्ट
इहां जानियु चम सेना इहं माही कयावाति दिश्याका नि-
छीतरहे जिनमारे जिन पायजमं एसा अजेन यमो हिया
को कारण हे रया नष्टं मया १६ ॥

(सहीकि) द्रो० ॥ इति यजुर्वेदमन्त्रावली ॥ १७ ॥
तपकास ॥ द्रोपसद्वैतकिसंसावृद्धेवरायनकयदा १७ ॥
जहां संयोग होय तहां १७ ॥

(यथा) कविच ॥ द्रियतसद्वैतमं नष्टं नष्टं नष्टं
निगुणनिमोवनिनानिपद्वैत ॥ मोदनिह निवर्तयामि
वृद्धेवादि कटिलअतिरेयवाणामोमानी मुननमो ॥ १८ ॥

यथायथावद्वैतमदीमिवद्वैकतरे अणुअणुमंअमञ्जरी
लङ्घयिञ्छाङ्कुरे । वारयिञ्चिवालातिकेसायद्वैवर्द्धिवैवर्द्धिकेव
निकमायद्वैमकुचउरञ्छाङ्कुरे १२ ॥

गाति तं चञ्चलया सी शिथिला समत मन्दमर्दं शिथिला
की भी शानि मर्दं ताके संग गाति की चञ्चलता की भी शानि
मर्दं मर्द मर्दं वानि मं निकरयो शानि अशुभ है औ लोचन मं
गुणनिर्वा गुण ललित गाति पाई है इत है इत है इत है गुण भी
आय ललित गाति पाई है शोचदहीसा अगुह है शुभ है सुखके
होमकी होमिखे यासां बलक बुद्धिधा सी वारानि क साय
वर्द्ध १२ ॥

(अथ व्याजस्वतिनिर्वा) दो० ॥ स्वतिनिर्वाभिस
होनच है स्वतिममनिर्वाभानि ॥ व्याजस्वतिनिर्वाव है
करोवर्द्धमयलानि १६ ॥
निर्वा कं भिन्नकरि अथवा अलकरि स्वतिकरै औ स्वतिक
अलकरि निर्वाकरै १६ ॥

(स्वतिकेव्याजकरिनिर्वा रसिकाप्रिया) कविच ॥
यातल है ह्रीनलावुहरेगवसतिवहरेमननननतिलाला
करोरनागाह । आपनोच्यहैरसोपरयद्यद्यजनाय
दंकीनाअनायमयमनरेममनल है ॥ एतेपरकेयवर्द्धम
वृन्देनजवाहियेव है नकलानीमानीमवमवमवमवम
है । माञ्जुसुहृदञ्जुनिञ्जुनञ्जुनञ्जुनञ्जुनञ्जुन
निनमोवमहोनिवाहिन है २० ॥

है अवाञ्जुल एसी गवगिनिर्वा गुमहो योनिनिवाहवहो
गवोरे परमो मयकाकी निर्वाकराह है औ मयकाकीरगिनि
निकरव है औ योहोम मयकाकी स्वतिकर है मयकाकीनिर्वा

(यथा) कविः॥ जनिवृत्तजो मया माहृतो महेन्द्र
मूर्द्धिपकदो यत्पुण्यकानि वारिष्य । परं यत्पुण्यम
समाप्तमिति भागमिति यत्पुण्यमिति वदति कवि
यु ॥ आ जगत्पुण्यमिति वदति वदति मया वदति मया

ध्यातिक्रियाविरहितम् । यत्तत्क्रियाविरहितम् ।
लकृतविशेषमसकृद्विपुलपुनरावृत्त्यु २२ ॥

युधिष्ठिरक राजसूय यज्ञम् श्रुत्वा राजा ब्रह्म
र्षी निराकृतवर्त्तुनि निकरति हे राजा मया कपटवर्षा भिन्न
महीके महाविह्वलानिनादीं जानहे एकद्वय याको पुनरावृत्ति
या एकद्वय याको पापकाहे जगानिक दृष्टावृत्ति विपु यज्ञ
कर हे करि क्षीनजत हे यावतको निवारिप हे मही कविपु
होहे विचारिप यदधी पाठ हे करि परदार यज्ञवर्षा निज हे
प्रिय हे करि ममहव हे मतिगमन अमर म मतिगमन म-
लजकोहे तोक पुनको अभिगमा हे तोक संग प्रित्तत म-
सामन जानहे कथाहे स्वमक होमको पुनया तसो मगजान
प्रमदय श्रीमगजान को यजन हे निरययद्वय मतिद्वय या
श्रुतिद्वय सबको वरीवारी वृत्तवद्वय तोक मयुद्वय विरतिना
निधिपर राजसूय श्रुति यज्ञम हे करि आननो यज्ञवर्षा म-
राहुंदिन होइहोत हे अन्न यकटाश्रुति पय तको यज्ञवर्षा
यावराहे यावराति सो जोहे निवारकीडा सो तको म-
राजानि म कवचवृत्तौ पुनये याको अय पुनरा यज्ञवर्षा विपु
दोषहे करि अतिअनप हे कोहे जोगानि को तय मगजान
हे जोग मपमको मयुमक कवचवृत्तौ अयवर्षा जोग मगजान
को जोहे मया सो जानिपदो पति हे निजपयसी मतिद्वय
द्वयवर्षाको मगजानको दृष्टावृत्त होत हे तसो मतिद्वय हे म-
तनको मगजान भिजतहे तसो मया मतिद्वय म मतिद्वय
पुनयाकिय दृष्टावृत्तिय पापकिय मरकद्वय तसो मगजान म-
कियो वाइत हे तको पुनय पापको निवारिप हे म-
पापजान तव यज्ञम जोगद्वय पुनो वृत्तयन पापम मतिद्वय
वदधी तोक प्रिय हे मातंग दधी राजा विगतन सो करि म-

यां दृष्टिर्वाक्यं तं स जलं सरोवरं स विहङ्गः कविश्च गयेथा
 न्न स्याद्वैत एतयोर्वा तत्र वाक्यं अभिगम्यते सामानं गयेथ नि-
 शिङ्गः चन्द्रमा तौको सो विनको मुखं ह वैदेकारिषु योको
 अथ चन्द्रमा सरोवरा आदि क योरोको करनराज ह वै अवनर्द्ध
 सो अथ अग्राआदि स चन्द्रमा विनको रश्मिकरतहै करि चरद
 है यत्कं चन्द्रमा ह वै विनोद रसआदि क्रीडासो भावन है करि
 सरोभासो क्रीडाकरी पदहै । चोला कौन कौनकीएसो सनिदर
 दक्षिण चन्द्रमाभीगा । करि अति अनाथ ह वै विनको कोई नथ
 नदीहै सत्कं चन्द्रमा है सत्कं चन्द्रमा है किय अनाथ जो ब्रज
 जाकी मधुसूत मधुवादी तौको जो विनोद सो जाको भावन
 है अथवाया को राजा नामनिव विनकी प्रतिज्ञाया कि सार
 ब्रजहै विनको जोनाथ तौहोको यह नामनिवो कथा व्याह
 दहै श्रीकृष्णनेनाथ चन्द्रा निन्दाम सरोवरनेन स्तविकरी २॥
 (अभिमतवशु) टी० ॥ चन्द्रासिधुनमनवे सपथक
 क्रीडामिहतिह । अभिमतमनवसिधुकदेव जाकीअभिमत
 प्रसिद्धि २३ ॥

जासी काव्यकी सिद्धि कविये सो साधन २३ ॥
 (यथा) सङ्ख्या ॥ आननसिधुकरसिधुकदेविप्रतीह
 तनेअतिअनरअह । फोकासयसिधुदेसिधुगनाकया
 तैपिअनरअहविराजकहै ॥ योतमकीपदक्यापलदयाअ
 निरकलातैपिअनरकैल्यहै । कथेवनीकहैमयकसा
 रमिनायकजातनरहैवदहै २४ ॥

गयका अन्य समान दृष्टिवा तौको यवन सखीसो सो-
 कयसुव कौक्या लोकर आ यकयकी सुखदे सो मुख स
 अयको सो दहै साधन सखीसो सपथक जो मयकी तौकी
 सिद्धि समानास्य तौको भागिकी २५ ॥

सर्वथा ॥ कोमलकण्ठवामनिर्गम्यप्रमदप्रसन्न
जनदीको । जनेकोखनिकेनमननमनमनमनमन
दीयादिदीको ॥ अहंभुजानमनमनमनमनमन
मनमनमनमनमनमनमनमनमनमनमनमन
अपनेद्विभक्तितदीको २५ ॥

जाके संगमसुखनदी की फाँव तहाँ कहीं आ गगनगिरी
राजाको कोमलसुख उमराव आ सुखजन वादजाह मय
शोहसो जाको जीवकी शोका है मयुकरजाह प्रथम निमो
मिहि दूखहराम भोगी २५ ॥

(अथपद्यधिक) टी० ॥ कोनहुँपदअहंभुज
कियहुँद्वेष । मिहिअपनेद्वेषकीपद्यधिकमिमांसा २६ ॥
आपने दूषकी मिहि कोहुँ कर्म प्रथमे निमो निमो
द्वेष २६ ॥

कवि ॥ खलतहीमनरजखलनमंअपदिमन
हरेअथकिष्कीकहैकवलागो । ललितिलालनम
लिकुमनहरेहरेनलानंदनअपमनमनमन ॥ २७ ॥
ठिठिठिठिमममममममममममममममममममम
रहेअथअगो । चोकिचोकिचोकिचोकिचोकिचोकि
लोलजखेखोचनजलदंभेकचोकि २७ ॥

सखीसो सखी वचन आपने तहाँ आने निमो निमो
जयआये सवसा । मिहिके आ सव ह मनमो मिहिके
आहरेर २ गति करिवक विष प्रथम निमन ॥ २८ ॥
से जलभरि आयु आयु सारि सारि सारि सारि सारि
सखी पठाय बुलाहुँ नदी प्रहजसो इतनी महे महे महे
पहुँजे प्रननपहुँ प्रननविगमिहि दूखमिहि प्रननपहुँ २८ ॥

सखी वचन नयकासों के देखिके पावदसों लैआइये तेरी
 सुखदेखि मदन काम ताकी वदन मुख सौ लाजकी मदनपर
 ताकी बतहैं लज्जाकप जो घर ताम पूजन है आनिजाज करि
 है हमारा मुख ऐसीनाही मदन संसारकी सुंदरतासों मोहि-
 वकी जोभी समथुई कामके मुखकी उपमा लीकैमुखकी कवि
 नाही देतहैं याते ऐसी अथ लाजकी मदन तेरी मुख देखिके
 मदनसो वदन कथनसो ग्रहण करत है तेरे मुखकी तारीफ
 करत जागत है किवा वदननाम नमस्कारकी ओ स्तुति की
 आपस वदनकी वदनपद्यों वदन स्तुतिसे चलत है जगनकी
 माहित करत है सो अपमानित होतहैं है वारि है पारिदेनकी
 कोटि नन्दमानकी तेरे मुखसे वारि वारि डारी तेरेमुख देखि
 वकी जगत आजात समथुई संयमिगत लिख है वाहीकी मुखदेखे
 आरकी मुख नाही देखे करि निजास सहित जो तेरी मुख
 ताकी जो पिपास पिपासहैं ताकी आरसही सहेजहो करिअम

इति श्रीकविप्रियायादादयः प्रभावः १२ ॥

कलककहैकीनवानकीकमी २९ ॥
 सनिजेरमी । मिजदेवहिनिहैगदहदलकोषकीलवलजा
 दंससविलसतेमुखकोसुवाससखीसुनिआरसहीसर
 रिगारिउरिजाककावजनानआनलहैसयमी ॥ कयो
 जगतजोगमोहिकहैसमी । कोटिकोटिबंदमानवगिरिवा
 कविन ॥ मदनवदनलललकोमदनदेखियदपि
 दिख २२ ॥

जेसो जेसो ताकी बुद्धि ओ वल ओ रूप होय तेसो क-
 रूप । ताकाकविर्कलपुकिपदेवरणतहैतसरूप २२ ॥
 (अथार्थ) टी० ॥ जेसोताकीबुद्धिवलकहियेतेसो

(अथममहिना) कवि ॥ अथममहिना ॥

होय १ ॥

कोई कारणसे कबुकी निधि बाली होय धरि ॥

गज १ ॥

गजकवि ॥ गजकविनामकवि गजकविनामकवि

(अथममहिना) हो ॥ अथममहिना ॥

अथममहिनाकाव्यः अथममहिना ॥ १ ॥

अथममहिनाकाव्यः अथममहिनाकाव्यः अथममहिनाकाव्यः

अथममहिना ॥

अथममहिना ॥ अथममहिना ॥ अथममहिना ॥

अथममहिना ॥ अथममहिना ॥ अथममहिना ॥

अथममहिना ॥ अथममहिना ॥ अथममहिना ॥

अथममहिना ॥ अथममहिना ॥ अथममहिना ॥

अथममहिना ॥ अथममहिना ॥ अथममहिना ॥

अथममहिना ॥ अथममहिना ॥ अथममहिना ॥

अथममहिना ॥ अथममहिना ॥ अथममहिना ॥

अथममहिना ॥ अथममहिना ॥ अथममहिना ॥

अथममहिना ॥ अथममहिना ॥ अथममहिना ॥

अथममहिना ॥ अथममहिना ॥ अथममहिना ॥

अथममहिना ॥ अथममहिना ॥ अथममहिना ॥

अथममहिना ॥ अथममहिना ॥ अथममहिना ॥

अथममहिना ॥ अथममहिना ॥ अथममहिना ॥

अथममहिना ॥ अथममहिना ॥ अथममहिना ॥

अथममहिना ॥ अथममहिना ॥ अथममहिना ॥

अथममहिना ॥ अथममहिना ॥ अथममहिना ॥

अथममहिना ॥ अथममहिना ॥ अथममहिना ॥

अथममहिना ॥ अथममहिना ॥ अथममहिना ॥

፲፱፻፳፰ ዓ.ም. ሰኔ ፳፭ ቀን ፡፡ ጸሐፊ

अग्रे ही धीरे धीरे मुझ कहिये अथ लो ग पानकरत है प-
 षित कुतर्क पावन है गगवान माली मिहनात करत है सुवार
 कवि वी रसिक है रसिक है गण समूह इहंभी वेषही
 जानिये ३ ॥

(प्रतिज्ञाकार) टी० ॥ साधनसाधै एकमेव भवे
 मिहियनक ॥ दासाकहतपसिद्धमेव कथयसहितविवे

क ७ ॥

एक वही साधनकियाको करे संसार सेवाकीमिहि अनेक
 को भागकरत ७ ॥

सवेया ॥ सातकमोदितपतिपतिषनकेवलरामभरे
 रिसभारे । अगुणएकही अर्जुनकी श्रितिसदलकेसवध
 विजयभरे ॥ देवपुत्रिके जीवपुत्रजनकद्वयदासवह अक
 वारे । रूकरवानसमस्तसब हरिचन्दकेसत्यमहर्षिसि
 वारे ॥

मना रेणुकाही लिनके मोहसां पिता जमदग्निजी लिनकी
 कवल धनुष करिवकलिये राम परधुरामजी वडे रिससां भरे
 अर्जुन सहलाजुन कामधुन देरी इहो इहकथाको फल अनेक
 को भागकरत देवपुत्र देवकी अथवपुत्रिके जनलोम
 वडे रीतिवालक भूकर देवान समेत हरिचन्द राजा अथवाया-
 द्वाकिभां किंवा हरिचन्द रामचन्द ८ ॥

(विपरीतप्रलंकार) टी० ॥ करजसावककोजही
 साधनसाधकदेव ॥ दासांसावपुत्रितययकदेवसया
 नोलोय ९ ॥

कालिदास भागवत १ ॥
 कालिदास मिहियन कथय वाको वी साधन साधो सिद्ध

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ० १ १५५३

[illegible]

11 06 ድምር ስራዎች

[illegible][illegible]

11752

(कद्विचक्र) टी० ॥ सर्वभूतसमाधिप्राप्तये नमः ॥ अथ भक्तिकेयवर्णनम् ॥

॥ ३६ ॥

11 86 በዘመናዊነትና በሰነድ

ਪ੍ਰਿੰਤ ॥ ਪ੍ਰਿੰਤ ਪ੍ਰਿੰਤ ਪ੍ਰਿੰਤ ਪ੍ਰਿੰਤ ਪ੍ਰਿੰਤ ॥ ੦੧੯

11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1041 1042 1043 1044 10

पुनरपि चन्द्र उदयाचरद्वेता उदयय मयवतामि नि-
 निरु मयवकति कदय चन्द्रमि मय पुन चन्द्र कदय चन्द्र
 चन्द्रमि मयवकति कदय चन्द्रमि मय पुन चन्द्र कदय चन्द्र-
 मयवकति कदय चन्द्रमि मय पुन चन्द्र कदय चन्द्र

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

11 2 8 ከጠቅላይ ሥልጣን ጋር በተያያዘ የሚከተሉትን ስራዎች ያከናውናል፡

॥ ८६ ॥

ጊዜያዊ የጥያቄ ደብዳቤ ቁጥር ፬ (፳፻፲፱)

॥ ४४ ॥

श्रीगणेशाय नमः । श्रीगणेशाय नमः । श्रीगणेशाय नमः ।
 श्रीगणेशाय नमः । श्रीगणेशाय नमः । श्रीगणेशाय नमः ।
 श्रीगणेशाय नमः । श्रीगणेशाय नमः । श्रीगणेशाय नमः ।

11 66 ጊዜውን ለሰላም ለግብርና ለጥገና ለጥበቃ ለጥበቃ

कैटिगुल्लभरुण्डुमशालाः । इतिगुल्लभरुण्डुमशालाः

1164 h

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

संज्ञा ॥ सान्निध्यकलाविशेषावतत्त्वव्याप्तिनि
र्वाहसंज्ञे । कथं वदामि मनोहरं तद्विकल्पे कलशे

॥ २६ ॐ

नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय ।
नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २७ ॐ

[illegible]

॥ २६ ॥

[illegible]

॥ ३८ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

सुव्या ॥ कञ्जमुतासितकञ्जकुशवपाणिर्व्यापृत
मुननुचसु । कुटिकटाक्षवलेनातिभूतं च वतनावकम्

[illegible]

॥ ०८ निर्वाह

ॐ नमः ॥ वाचं धेनुमुपासीत ॥ वाचं धेनुमुपासीत ॥ वाचं धेनुमुपासीत ॥

टी० ॥ दीपकपञ्चनेकदेमरेण्डरेण ॥ मणिमा

लोनासिकदेवद्वयसकविमप २२ ॥

सं दीपनरदेक वरुण्डे तादृशो कविमपमणि औ माला
कहेतुं एकमणिदीपक ईसरो मालादीपक २२ ॥

(मणिदीपक) टी० ॥ वरुणारदवसनयोद्योग
नायोममृगव ॥ भूमपवनभूषणभवन दीपकदीपक

अथ २३ ॥

भूमता कल्याणपन औ शोभा काहेकी भूषव दीपक अ-
थकारके वरुण्डे ईसरो दीपक पुटहोतहै २३ ॥

टी० ॥ इनभएकवृषाणिकानहुईवृषास ॥ ता
सामिदिदीपकसदाकाहेवनकेयोदास २४ ॥

इनभ वरुण आदिम एकभौ वृषा वरुणव ऐसजानिये २४ ॥

(अथ) कवि ॥ प्रथमहेरिणानहेरिहेरिकासो

हेरिपुष्टिपनमरेजनिहेरुहै । कयोदासआमपमपरम

प्रकासमणिबलासिनिबलासकहेकहेनपरुहै ॥ मणि

मणिमणिमनीभवनकहुँमरे भवसुभामसुभामयोमा

कोवगुहै । मणिनिमनुमनमणिमनिनिबलासकहेमरो

ममनरेदिपदीपनिकरुहै २५ ॥

हे मणिनि मनसमेत मणिनी को वधाकारो जो है श्री
कृष्ण अन्वयदीनिय सखी नायकके पक्षकी कहेतिहै मरेमन
को दीपप्रकाशक आनन्ददायक ऐसो जो कृष्ण सो मरे मन
की दीपप्रकाश आनन्द ताको करतहोइयोगी कहेमयोगी जो
अथर कठिनी पण्डित हरिणानी जे नायका है हरिकी सो
याको अर्थ हरिके सामने हरिणके तमको जो तेज प्रबलता
ताको इतिहै दीपकको यमहै तमको नायकरमहै इहो गोहो

[illegible]

तु यद्विनीता सुन्दर ममाली की है जातिअक लाल चंचलनदी
 कजिहूँ तबगानि की कइँ दक्षिणिलतानिलसि बहभी पाठ है
 नमरि नगकसर किआ कसर ताके न कुँसम फूल ताकी जो
 काप गुन्या ताकी जो रस मकरंद ताकी जो लव लव खोटी
 कलिका नहिनी भरभार नहिनी सहिसकत है हरितीजात है
 कबहुँ कबहुँ हठसो पाहस जोरावरीसो चम्पकलताआदि न
 तापका हठकरती है जोरावरीसो पकरिलेवहूँ तब हुनक वि-
 लस यद्यहल है हुनकी वनहूँ ताहिसो जागविला आनोहो
 जायचक सुवाल सुगन्ध दलपस वख ऐसा है नन्दनन्दन की
 यययकारिकहवहूँ मानकपदस इहो पवनवयून सुगन्धवयून
 यद्विनी लरीपी न सुन्दरि योभाबदनी किवा पवनकी योभा
 वरणी पवन इत्यादि इत्यलाल करनी इत्यादि किआ योउद
 योवत सुगन्ध गुण २३ ॥

(मालादीपक) टी० ॥ सर्वमूलजहूँवरणिउदयोका
 लव्युधवत ॥ मालादीपककहवहूँतकैमदञ्जन २७ ॥
 किआ गुण दञ्ज वाची जो योउद सो जहो मालपक वरणि-
 प पदता योउद इत्यादि लोच इत्यकाल भी वरणी वृधवत २७ ॥
 सर्वथा ॥ दीपकहइदयोसामलसुदयोमालिनेन
 दिव्यानिजगव ॥ जालिकय्यानिमवसुसमभूतमयोनि
 सुदयोमलदरयो ॥ सुष्टुमलरचैकपकोकपकप
 सुकामकलउपजव ॥ कामसुकयवधमवधवतधमले
 द्यापिपद्याहिसुलव २८ ॥

इह सो दीपकहै सो दयो जो अत्रथा योवन लोसो मि-
 ली आ दयोवरीकी भी नाम है दयो अत्रथा योवनलोचन
 नाम हैसुव वल आ यमावकी भी है तेजपटला आ अतिन
 लोसो मिलिक ल्यानि प्रकाशयणी पण्डे डान मयो समीक-

दी० ॥ नृपयानसंज्ञासंग्रहः ३३ ॥ केयव

प्राचीन के १ एक उपमक १ एक सिद्ध के १ ३२ ॥
एक लक्ष्मीजी के १ एक गुरुके १ पांच महादेव के ५ एक
रूप पावन करतरे द्विजकप सहस्रवर्षे शोभा भगवान के १
१५ दीप प्राचीन के २ दीप उपम के २ दीप सिद्ध के २ विष्णु
के २ दीप लक्ष्मीजी के २ दीप गुरुके २ पंडित महादेवके
दीप महादेव के २ दीप प्राचीन के २ लोचन दीप भगवान
चारि सिद्ध के ४ चारिवाह भगवान के ४ दीप लक्ष्मीजीके २
के २ दीप महादेव के २ दीप प्राचीन के २ चारिउपमके ४
दीप चरण भगवान के २ दीप लक्ष्मीजी के २ दीपगुरु
दीप ३२ ॥

दीपनसंज्ञासंग्रहः ॥ सारविद्यासंग्रहः ॥ सारविद्यासंग्रहः
(गणकसंग्रह) दी० ॥ चरणशठवर्षादिदीप

भगवान के चारि के दीप दीप ऐसे जानिये ३१ ॥
अठार के चरण नदी अरिज के दीप दीप जानिये चारिभूज
नदी १२ सार अष्टक अष्टाद्विंश २२ चरण उपमके चारि ४
के २ रतिके २ श्याके २ संध्याके २ अरुणके २ अश्व के
नदी २ प्राचीनके २ सावित्रीके २ गुरुके २ उपमके २ देव
के नदी दीप २ द्विज के नदी १५ शोभा के नदी २ लक्ष्मी के
अठार को एक द्विज १ शोभा सारअष्ट वरके सारभूज ७ द्विज
भगवान को चारन द्विज उपमही जानिये सिद्ध नदी और
संज्ञासंग्रहः १ पुरु कर्तुं श्या नदी लोहै शोभन लोह है
के १ एक संज्ञा १ शो संज्ञा संज्ञासंग्रहः १ शो श्या भी
एक प्राचीन के १ एक गुरु के १ एक उपमके १ एक देव
चारिभूज शोभाके ४ एक लक्ष्मीजीके १ एक सावित्रीके १
संज्ञासंग्रहः १ देवै एकमस्तक द्विक द्विजके पांच ५

सातशतसु ७ एक शेष १ पञ्चदश १ दशतसु
 शत १ शिखि १ शिखि १ शिखि १ शिखि १
 सुव चक्षुः शिखि १ शिखि १ शिखि १ शिखि १
 पञ्चदश १ शिखि १ शिखि १ शिखि १ शिखि १
 १० वृत्तसु सुवचनक वृत्त नदी पञ्चदश १ शिखि १
 १० याते पञ्च नदी किय एसा सुव १ ३३ ॥

(अकर्मपठन) टी० ॥ द्रव्यमन्त्रव्यवहारप्रमाण
 वरीजानि ॥ कथयचलनद्वयमन्त्रव्यवहारप्रमाण ३२ ॥
 जगत्तुल्यं वृत्त पञ्च नदी पञ्चदश १ शिखि १ शिखि १
 कहेतुं पञ्च जगत्तुल्यं ३४ ॥

टी० ॥ कथयचलनद्वयमन्त्रव्यवहारप्रमाण ३३ ॥
 पञ्च जगत्तुल्यं वृत्त पञ्च नदी पञ्चदश १ शिखि १ शिखि १
 शिखि १ शिखि १ शिखि १ शिखि १ शिखि १ शिखि १
 पञ्च जगत्तुल्यं वृत्त पञ्च नदी पञ्चदश १ शिखि १ शिखि १

(राज) टी० ॥ जगत्तुल्यं वृत्त पञ्च नदी पञ्चदश १ शिखि १ शिखि १
 य ॥ सुवचनमन्त्रव्यवहारप्रमाण ३६ ॥
 जगत्तुल्यं वृत्त पञ्च नदी पञ्चदश १ शिखि १ शिखि १
 द्रव्यं वृत्त पञ्च नदी पञ्चदश १ शिखि १ शिखि १
 को कहेतुं वृत्त पञ्च नदी पञ्चदश १ शिखि १ शिखि १

(दाय) टी० ॥ सर्वमन्त्रव्यवहारप्रमाण ३७ ॥
 वार ॥ वृत्तमन्त्रव्यवहारप्रमाण ३८ ॥
 वीरवक्तुं द्रव्यं वृत्त पञ्च नदी पञ्चदश १ शिखि १ शिखि १
 टी० ॥ एवमन्त्रव्यवहारप्रमाण ३९ ॥

पञ्चदश १ शिखि १ शिखि १ शिखि १ शिखि १ शिखि १
 पञ्चदश १ शिखि १ शिखि १ शिखि १ शिखि १ शिखि १

समानं भूय कहे हंस या ठीसं मानवदासं वनावनवा-
 ला पदिका वनप देवदे फरि कहे हंस कय देखावा नव
 फलमही वनप देवदे पलाय देस विशेष आ जो विज्ञाना
 कर सो भी पत्रवती पूछति हे सदासो हे सखि मुरिके कि-
 रिके माहि कहे ऐसी वरु वनावा पाठिसा आवक पुत्रप-
 दे हे जो वाक रसस अंगुगसा आली शीलव होतहे पुत्र
 वाही ठीस हे ऐस जानिष ३२ ॥

(पर्याप्त) टी० ॥ नहेकरनकछुआरहेउपनिपर
 नकछुआर ॥ तासापरवतिजानपहु केदवकवाधिर
 मर ३९ ॥

आर कावकरत और काव उपव ३३ ॥

(गुणमिप्रियावा) सवैया ॥ देसिबोलतहीमुई
 संभवकयवलाजमगजलोकमयी । कछुवातचलावन
 वनचौमनआतहीमनमयवयी ॥ साखिजुकहेसुई
 नमनमहेजानिहदेनहिचाउमयी । हरियनकिहीउप
 सारतहीअमिनपसनलजलौ ४० ॥

सजा कहतिहे न नायकसो गोलिमलि तव नायकावचन
 नायकसो गोलनही सवलाग हंस हंसति हे निदत हे सुखके
 विवाचको कविप्रिया निदासई लावको छोट लोप देससो
 मानव हे हंस जालिनीसा कावतहे हरिकी कछुवात चलावन
 हे वन धर पुरवा चलनहे देसिबोलतही उपादि प्रथमवचन
 प्रिया सवलाग हंसन उपादि जरी वचन इनके मत म
 गुणमरत लोपजालि म सा कावति हे छौछौ करत हे ऐस
 गोलि मनमयवग प्रियादेव नहीउमगी लानि होत हे
 परपनिगो गोमसहउ परमिवा अंगार चलावसा अंगिसी
 परमि हेस वनावत हे पर गोमस परकविन रसिकप्रिया म

रसद्वेष मं कदाहं प्रयत्नकरसको उदाहराहं तदा विना
 रसको भिन्नपदेष सो प्रयत्नक योगरहो भवति नान्यथा
 याते उदाहरितको उदाहरणं न्या विना नान्यथा रसद्वेष
 ज्ञेयं तदा रसद्वेषात्त है तदा सो अलंकार विना न
 अलंकार दोष-मं विद्याहोत आं वाही कविन क प्रयत्न
 उदाहरणद्वेषो नो कविनो धमविकरतो ज्ञानियं नान्यथा
 मं न प्रयत्न रसकोन प्रयत्नद्वेष नान्यथा रसद्वेष
 नवीन उदाहं ज्ञानियं सो रस सो प्रयत्नयोग प्रयत्न
 सो रसद्वेष है अलंकार उपमा नो विकरत है नान्यथा
 रसद्वेष यह सब हेमाम् किं दोष क विद्यपदा कवि-न
 नान्य है ताम् स्पष्ट है ४० ॥

सूत्रम् ॥ द्वाध्याहो ज्ञानाप्रममवद्विज्ञानि-
 धीरजगद्वि । पानमपमवद्वेषविज्ञानाप्रमद्विज्ञानि-
 धीरजगद्वि ॥ द्वैपरिमममद्वेषमममद्विज्ञानाप्रमद्वि-
 जगद्वि । ज्ञानाप्रमवद्वेषमममद्वेषमद्विज्ञानि-
 धीरजगद्वि ॥

सर्वो वचन नयका सो सुन्दरमात्र ममक विनामो न
 तयोदाह्य गद्यो तव नयक क प्रयत्निय अमं यमं विनामो
 विद्या धीरधिरज वाको ममि पदविनं प्रयत्नं विद्या मया
 पान नो मुखजत है नूनन आपनो को विनामो नो नून
 अप्रममविज्ञानिक है तदाहं सो प्रयत्न है अमममि मम
 परिरमम अलिगत रसकपानमं ज्ञानन नयद्वेष नान्य
 न सदाखिमां आहं पानकरत प्रोमात्रपदा ४१ ॥

सूत्रम् ॥ जीवद्विज्ञानननमद्विज्ञानाप्रमद्विज्ञानि-
 धीरजगद्वि । तद्विज्ञानननमद्वेषमममद्विज्ञानि-
 धीरजगद्वि ॥ मयकनयप्रमद्वेषमममद्विज्ञानि-
 धीरजगद्वि ॥

नियमपमा २ गुणविकपमा २० यादृदृशं यजमानं २ ॥

टी० ॥ अतिशयउत्पन्नकहेनपवमपिपरं ॥

नियमवर्जितकोपमाअसंभावनामान २ ॥

अतिशयपमा ११ उत्पन्नपमा १२ अशयपमा १३ ५

मापमा १४ विपरीतपमा १५ नियुपमा १६ अतिविपरी

पमा १७ असंभवपमा १८ आउत्पमा या दृष्टिमादृष्टी ३ ॥

टी० ॥ वृत्तिविरोधमात्रापमाअप्यप्यप्यप्य ॥ २

पमाभेदअनेकहेमप्यप्यउत्पमा १ ॥

विरोधा गुह्यहेम विरोधपमा १२ मालापमा २० पमा २१

रोपमा २१ इमिकविरोध उत्कृष्ट भदकटं वदीयापमा २२

वाहुसमेदहेतव सकोष वाहुस पुंस याहि २ ॥

टी० ॥ जहेनहेतिनिराधारकहेमप्यहेतव ॥ ३

संशयउत्पमासंदेहप्यउत्पदेकविभेद ५ ॥

जहे निरधार निरवय नही ५ ॥

(रसिकप्रियायायया) संवया ॥ वजनहेमप्यजनं

शवरजनननकधूमनिजकी । मटिनिगालिकमंयायकी

वृत्तिवंतनकीकियादाहिमहीकी ॥ चन्दमनमंयमप्य

क्रियासखिमुरितकानकीकाहेकीनाकी । फलमप्यकमप्य

पदपकजगणपिप्यनिकीमुरितपरीकी २ ॥

सखीसो नायका नायककी सुन्दरमा दृष्टिहेतवजनमप्य

रजनकरनवालिहे कियो नून मनक रजनमप्यमप्य ३ ॥

की जो मतिहे निरवयकरी जो मतिहे सो दूरी निरमप्य

नाम इच्छाकोहे जोवकीइच्छा वजननून पदमप्यमप्य ४ ॥

नायक के नयकी याण अतिप्रिय हे कियो पियनप्य ५ ॥

मति संवेदही कियो निरवय कानही महीकरी यावो ६ ॥

कहे ताहि उपवाचोपमय भासि हे खजन आ नैन इयाहि
जागिय ३ ॥

(हे उपमावधाय) टी० ॥ दोनकोनहेहुनेअनिउत
ममहिनि ॥ ताहिमहिनेपमकदोवकहेतयवनि ७ ॥

काहे एक कारणात होत जो वस्य सो उत्तम अष्टद्वय ७ ॥

कवि ॥ अमलकमलकुलकलितललितानिवलि

सुवलिनेमधुमाधवाकोपानिय । मधामदमयदिकपुष्य

रिचरिपुमकसरिकोदोवावलिनामपडिचानिय ॥ अल

कुचकुलिकरिचपकसकुलिसइ । सुवतीसमनेहेकुवकी

सुवलिनि ॥ हिलिमिलिमालतीसोअवतीसमरिवत

सुवलिनि ॥ कव सभार पवन आवत हे तव नेरी-सुव-

वास आ उवास सो कहियहे कहे सुख सुखवास ऐसो पाठ हे

सुखदोषकजा नेरीसुख ताकी जा सुवास ताकी समान कहे-

पन हे पवन सुखवासको अर्जुनमहे इत हेवुसो उत्तमभयो तव

सुवली समता पाडे पवन कुंभ होय असलद्वय भूमिको रज

आदि लिपेव आवतद्वय जलस स्तानकरि आवतद्वय आ

कमलके कुलकी दलितकिय होय वाको मसल होय वासल-

प्राद्वय आ बलितगति मरुगतिद्वय बलि जलसो बलित

मिद्वयद्वय करि माधवी वासली जला ताकी मधु-फलकरस

ताकी पानिय पियद्वय मधुमद कमवरी आ कपूरको पावसो

गुंनिहे भूमिकिय होय कहेता तो माधुलिपुहे ताकी इतनीतर-

इतनी कसो नेपाय उपमास हे समलीको आसिके जागिके

सुवतीको सुदके ताहि सहेत केतकीसो जाति ८ ॥

(अर्धोपमा) टी० ॥ उपमावधायकहीनहीनाको

कृपनिहारे ॥ असंभयनउपमाकही कयवदंभनि

चारि ९ ॥

उपमा नही कही जाय २ ॥

(रसिकप्रिया) कवि ॥ रसिकप्रियाप्रणयमनयनि
यौवनकंदहृदिक्यातिहृदियामुमयतिह ॥ नहि
कोसिवाभललङ्कटकसोकयव सुभावहृदिकयामुमयनि
कारिवातह ॥ रसिकप्रियाप्रणयमनयनिहृदियामुमयनि
नकेटगदंखिवकोलचानह ॥ चलिहृदिक्याचंदमनयनि
चनिकेभरमयुचनकभरनलचकिकटिचानह १० ॥
सखी नायकको पुनवककटिह ॥ यण यवत जो या म
की युति कयाकि हरि ह ॥ रसिकप्रियाप्रणयमनयनि
रातिहृदिकि ह ॥ रसिकप्रियाप्रणयमनयनि
विजयतिहृदिकि जय जय चंद कचहृदिकि जय ह ॥ रसिकप्रिया
चलिहृदिकि ह ॥ रसिकप्रियाप्रणयमनयनि
स उपमा निकयतिह ॥ रसिकप्रियाप्रणयमनयनि
हृदिक्या चकी उपमा जो कही नही जातिहृदिकि चानिह ११ ॥
(अदभुतप्रिया) दो ॥ अदभुतप्रियाप्रणयमनयनि
हैनकोय ॥ कयवदंभनिहृदिक्याप्रणयमनयनि १२ ॥
आगे कोइ नही कही जाय जो अदभुत उपमा
जानिय १३ ॥
सखी ॥ यौवनकोअपमानमनयनिहृदियामुमयनि

माधुवनरेकोपाव १२ ॥

मदीं नयकाकी गडी करिवेक लिप कहेनिहे। यानरेक

प्रजापती सरीजम होई तेव ते मुखकी उपमाकी पावे

तेम कालम यानरेक जलम कमज मी नोही समजे यावे

यहूत यानमका अपमान न आदरकी करतबाला होय मी

नानिती आदरानकी करे मी वेदिसा जेवदिसा आपुनी

आर की रिनाते होय यावकारिक मी मीय सवाले लोवा

मानस्य इत्यादि मी मवादर ती कोई समजहे सुतर आगर

इतल मवाकी कोहिआ इत्यादि लोक यमाव समयुक्तिके

ह मीमि मीमि मीमि मीमि मीमि मीमि मीमि मीमि

पादरे होवहे मीय समारक मीमि मीमि मीमि मीमि

आ होय मी यम होय मी मीय सवाले सतिवक मी सम-

रक मीमि मीमि मीमि मीमि मीमि मीमि मीमि मीमि

ह मीमि मीमि मीमि मीमि मीमि मीमि मीमि मीमि

उपमापत्र १३ ॥

कहे कोई तरहे वरिय कहे कोई तरहे वरिय कोई एक

उपमापत्र १३ ॥

कवि ॥ कशीदासकदनककशितककशितककशितक

मणीआपनीमणीआपनीमणीआपनीमणीआपनीमणी

इहेकउदातउमी । इहेकउदातउमी । इहेकउदातउमी

रुमिकडिमवमरममरममरममरममरममरममरममरममर

धकममममममममममममममममममममममममममममम

मिमेउमीमि । आरुमममममममममममममममममममम

हिलकलकलकलकलकलकलकलकलकलकलकलकलकलक

इहेका वचन नयकाकी कदनमममममममममममममम

मकायममममममममममममममममममममममममममम

ममी निजिके उदाते हे वगडे हे निजामिणी हे मीमि

[illegible]

[illegible]

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840.

11 86 b12

[illegible][illegible]

निधियाकरैवसावहैमनापनैवपननिध ॥ ६६ ॥
 सयकलकलकलकलकलकलकलकलकल ॥ ६७ ॥
 गपुगपुकरैवसावहैमनापनैवपननिध ॥ ६८ ॥
 कवि ॥ वेवैवगपुकरैवसावहैमनापनैवपननिध ॥ ६९ ॥

अथ जाति २३ ॥

बैलोय २३ ॥

जहैवगपुकरैवसावहैमनापनैवपननिध ॥
 (गुणविक्रम) टी० ॥ अविनवहैमनापनैवपननिध ॥

भाव कमत बहैको योमत उपमा जात २४ ॥
 सुखम भी एक कमतबहैको समकला गुन गाने पार २५-
 यै नहै गनीयहै यह मयु सुख गाने गुन कमत २६ ॥
 न होय गाने नाम झलत काँठ खोलि गुनत सो गुनगन २७-
 छविझौ पुरिहै ब्रज झलत गुनही बल सो गुन गाने २८ ॥
 चरमको पापयह कहरहै यो हँस झौ अलखगाने २९ ॥
 गानाम निमत नहैगानिहै गानको गानाकहत ३० ॥
 है गानको गानि होत है झौगुनत निमतगान ३१ ॥
 निमतगानि निमतगानि नहैगानिहै गानको गानाकहत ३२ ॥
 अमरझनि चरमगानि होत है गुनगानि को गानाकहत ३३ ॥
 हँस गाने टकानिहै चरमगानि मतकानिहै गानाकहत ३४ ॥
 बचत है निमत गानि कतिहै हँस गान गाने गाना ३५ ॥
 यत्न टकानिहै जो सदा अगाम गाने गाने गानाकहत ३६ ॥
 अगाम है कानको उहैपक है यो गानाकहत है गानाकहत ३७ ॥
 टी० ॥ अविनवहैमनापनैवपननिध ॥ ३८ ॥
 यहअथ कवि गानको अगाम है अविनवहैमनापनैवपननिध ३९ ॥
 कवि हँसको गानि चरमगानि कवि मतकानिहै गानाकहत ४० ॥
 कविहै गहल कवि है कलकल कवि गानाकहत गाने गाने ४१ ॥

उद्देकमलखजोहृमपद्व २८ ॥

गनविगाड्य । सनिावनिनवननिाहृमपद्व २८ ॥
यादिमसविजसनिावनिाहृमपद्व २८ ॥
वापवापनिावनिाहृमपद्व २८ ॥
नियनसवहृमपद्व २८ ॥
कवि ॥ न्यादिगिमाननननिाहृमपद्व २८ ॥

हेय कविनके नह सरार २७ ॥

एक कहे की एक जो दीपनि मपद्व २७ ॥
कनमह ॥ उदेधोपम (टी० ॥ मकदीपनिपकदीपन
(उदेधोपम) टी० ॥ मकदीपनिपकदीपन

वी उरठोरम हे नरामख वीह विप २८ ॥
अमननको वीखवहृ विचानियुह गीनगप मपद्व २८ ॥
हृनको विद्येयु सधह हे अनेक मपद्व २८ ॥
निमल आ अचल कवहृ जग नदी नलकी धी सधह २८ ॥
निहारीय हे यलधलम डोर डोर आ नल जल निप नल
रजनीय चह सो डेरम मपद्व २८ ॥
आकाय सो आकाय कविनके नह सरार २८ ॥
नवेसविाहृविपद्विप २८ ॥

विप । एकमपककपवहृमपद्व २८ ॥
उरवहृगहृनअचलमपद्व २८ ॥
अचलअनिाहृमपद्व २८ ॥
रकेयिगिरनदीअवविप । यलधलमपद्व २८ ॥
कवि ॥ क्योदिमपद्व २८ ॥

नहृ गपमहृ एम मपद्व २८ ॥

एक कहे मपद्व एकहृ विप एकमप मपद्व २८ ॥

न्यायं संवत्सरां चरं प्रमाणं मूलकं मनसं मानियं है
 श्रीश्रीश्रीश्रीकं नवनकी निकडं योभा सो हैमही म और म
 बाड़ी है सवकीही कहिय मननो जानतहैं सुकोअर्थ सो बात
 कम नमही नही जगडिय कर्क दरसो जगडिय जालिहिकेवही
 मन किंज नमही सब कोइ जानत है गुन नही को कैसे कया
 नही जगडिय कामनं बाणिको पारिमाण अपरिमित और
 और नरहं गव मीनस एही मोहन किया कहा है करि श्री
 श्रीश्रीश्रीकं नवनकी निकडं सोरुं हैमही म हैमर नवन
 म है वा बातको करेग जो हरिण लकी जो अगवा श्री लोको
 अगमसं रहिवेकी ठौरसं गडियहैं न सव गावहैं कहै है यह
 अर्थ हैमरि नव कंसहैं सविजाल है जैसे कटाक्ष आदि को
 विजाल सोलकी को नवनिस है जैसा हैमर नवनिस करि
 हैमरि नव श्री गीतहैं प्रसिद्धहैं लोमान लरीफकरी है करि
 हैमरि नव श्री रंगरानिसो युक्त है सोनोसंनवा लोसो युक्त
 है मीन आदि यह सव ऊँठहैं कमलति विष श्री खजनविष
 श्री पाडिय देविदेव आहैं केवल उमही विष नही एक श्री
 श्रीश्रीश्रीकं नवनकीआभा मीनआदि अनेकसं वरणीहैं २८॥

(रत्नोपापमा) टी० ॥ जहैसवकपययोगियेयंरूप
 कहीअर्थ ॥ कयोलासोकरनहैरत्नोपापमासमर्थ २९ ॥

एक कपको अनेकरिय उपमान उपमेयसो निबद्ध क
 नही जात एहहि अर्थ करि जाय २९ ॥

कवि ॥ सर्गोपरमसवअंगारोराजितहैसुनहैम
 नानावडंमनोवगपाडिय । सुंदरसुधासनवकुसुमलअ
 मममनपाडंयोरपमयहैरपवर्तडिय ॥ बलिबलिबनका
 सवश्रीदंससविनास सुंदरयोगारल्यार्हैगहैकनल्यार्ह

कवि ॥ एककहेअमलकमलमलसतजोकोएक
 कहेचंद्रमाहेअनंदकोकंदरी । होइजोपुकमलतरौनिमा
 दिनकुचरीचंद्रजोतामरमहेमृदुतिमंदरी ॥ वासर
 कमलरजनीदिमिभुवचंद्र वासरहूरजनीधरिजगचंद्र
 गी । द्रुमिभुवमवननंदरुचोईकमलचंद्रतातेमिखिमुखे
 सविप्रमलनचंद्ररी ३६ ॥

सखीसो सखी कहति है एककवि कहत है श्रीसीताराम
 को मुख अमल कमलहै एककवि कहत है आनंद को कानंद
 जो मुख सो चंद्रमा इहैरी सखी वासरम विवम कमल की
 शोभा है श्री रजनी राति में चंद्रमाको मुख शोभत है मुख
 जोई सो जगचंद्र है जगजोकी रवितकरत है सो मुखदिन
 में श्री रात में विराजतहै शोभतहै मुख तो देखे सो भावतहै
 कमल चंद्रदेखानही भावतहै नहेभावत कमलचंद्र यहभी
 पाठहै कमलचंद्र को दोषकहो मुखको गुणकहो ३६ ॥

(लक्षणपम) टी० ॥ लक्षणलक्ष्यवरिष्यवृषि
 वलवचनजिजस ॥ हेतुक्षणउपमासुप्रदवरणनकुशव
 टीम ३७ ॥

एकचरु लक्ष्यनिशानीहैय एकलक्ष्यहैय जोसो लक्षण
 सो जानिये सो लक्ष्य ३७ ॥

कवि ॥ वासिंमगअंककहेतोसोमगनीमवैवासो
 सुवावरनहैमवापरमानिय । वहैहैजराजतेरेहैजरा
 निरात्रहैकलानावतेहैकलकलितवखानिय ॥ रत
 वाकरकुचोऊ कयवयकशोकरअवरोजसकवलयहैत
 जानिये । वाकशोतकरकरतहैसोताथीतकरचंद्रमासो
 चंद्रमावैभवगजानिये ३८ ॥

रासवन्दनी की देखितवा निरदम सो गणिवन्दनी रंगनी
होत है चन्दमाला सीताजी क मुखवा परपर निराम २२ ॥

(मालोपमा) कविच ॥ मदनमहिनाकाहेनपुनः

ककसामदनवदनपुनःजाहिअगमाहिय । मदनवदन
कैसागोमकोसदनगम समहिकमनजालिबननि
जाहिय ॥ कैसाहेकमलजसोअनदककदमकुननि
सुचदजसोउपमानटाहिय । कैसाहेसुचदवदकजगक
रकाहेसुनोपाप्यारिजिसोसुखसाहिय २३ ॥

मदन जो काम सो मोहन जो श्रीकृष्ण निमकी नम ॥
दय लोको रूपक है समता कतवजाल है मली गजरा सो
कहत है नयका पुंजनि है कैसा है मदनवदन जाहि श्रीरंग
को देखि जग महीजान अवहि करि नयकापुंजनि गोगा
को सदन जो अयाम सो मदन वदन कुसो कविच ममान २
वय मली कहति है कमलकी रवि जाके लोचननिही जाहि
है देखिय है नयका पुंजनि है कैसा अम जाहि मदन २
कन्दमूलहोय करि पुंजनि है सो कन्दकुसुम है जो लोचनमा
उपमान टोहिय है खलिवरु जोर मही मदन २ सो ॥
सरीपा मली सुनो पाप्यारिस कत है मली वरामन ॥ मम
है कैसा सोमर है यह गोचीन मनकी म लोपमा २ मम २३
नही नवीनमत की मालोपमा समकति २३ ॥

(परपरीपमा) टी० ॥ नदीअमदवपानपुउपमा

अउउपमान॥तोसापरपरीपमाकयोदसपुनः २४ ॥

परपर उपमाला ममद वहिगये २४ ॥

कविच ॥ वानिववदेनवदनाहिनयहियविउपमा

नवहिवनगरीअननरस । अनीनअननीगाननन

652

1. 止吐止瀉

टी० ॥ जगद्वर्गद्वन्द्वक्रीडाद्विद्वन्द्वखानि ॥ तद्व

द्विक्रीडाविक्रीडाद्वन्द्वखानि ३ ॥

जगदीशो देवी देवीआदि आ देवता महादेवआदि विन
क देव श्रीहरि दे देवदेवतासा है किजा देव है आ देवता को
अथ क्रीडा रासआदि ताकी करनवाजाहै ३ ॥

(मृपत) टी० ॥ तिनकैमृपतमृषणानिमृपनपति
कथग ॥ तिनकैकथवदामकविवरणतहैप्रत्यग ४ ॥

बीजाकर तब आपन मृषण श्रीकल्याणको पहिरावू विहरा
मृषणहो पाहिरा पिय आपनो पुहैपाहिरावो पुहैकहो प्रपमान
लाइंजाहो नन्दनदकहोवो । सूरदास को पद है प्रथम सब
अग ४ ॥

टी० ॥ नखनेखिखलावरापियेदेवीदांपतिदेखि ॥ यो
खननखलामाजुपिकथवदसविशोख ५ ॥

देवताको पावूकीआरत बरापिये आ मातृपूजाको शिखाकी
आर त बरापिये ५ ॥

(चरणउपमा) टी० ॥ उपमाआरिसमानसवडन
नामदंखानि ॥ जगकथनपगवरापिये महेदीसयुत
पानि ६ ॥

प्रत्येक चरणकी उपमा आ लीके चरणकोउपमा समान
है देवता मृद जगक महावस्तुक पावू बरापिये महेदी युक्त
पानि बरापिये ६ ॥

(जगकयण) टी० ॥ राजारजगिणकोपगदपानिप
धुक्पमान ॥ राजमणिजगकवरापियेपगअनुराग ७ ॥

रजगिणकराहै भग प्राप्तसमय तामें आजाहोतिहै ताकी

कवि ॥ गंगाजलमयकन्दमालायादि वि
 विस्मयजनकवद्वर्णन । कदापि नमनजनन
 हैपुकरमठैपुकरपादिकलपनयावर्ति ॥ कानकम

यह प्रमाण है ॥

कमल के पल्लव पञ्चमाल परत गमन परत गमन
 किम कमल समान कोमल या पल्लव परत गमन ॥
 पल्लव मया जो कमल विहसद्वय नमनजनन जो पल्लव
 करिककटौ चरण पल्लवमल्ल है कवि या कोमल मय कवि

जयमान १ ॥

वकमलसमान ॥ जलजकमलमयचरणकविहसद्वय
 (पाववर्णनम) टी० ॥ अतिकोमलपदवर्णन

ताको शब्द है प्रणय प्रेम अवसरमात्र ॥

कोमलता को अमलता को संयमि है ॥ कोमल
 को जो सदम पर ताको अमल है पल्लव ॥ अमलमय
 है जो केशि है जपु वरिण सय कोपिहृदि कोमल मय
 को कमलजल तासां अति लज्जित कोमल पाणि म
 राजीवकमलक गणसमूह ताको जोरवर्णन या को कोमल

हेजवककोरकर्मदेगमनिजनका ॥

कवि ॥ कोमलअमलताकोरगमनकविवद्वय
 मिथ्यानिअनकयोमकोमद्वर्णन । अमलदेवनिग
 कीहृदिकेतरणिकमय जीव्याहृदिकेवर्णनमयवर्णन
 को ॥ पल्लवप्रणयकरनकिहृदिकेवर्णनमयवर्णन
 वार्जुनगणियमनको । पुरंदरमनकर्ममयवर्णनमय

वैसा वरिणय कोपको रंग को अमलताको रंग ॥

प्रतिपक्षी शब्द है वैसा है यहअथ जो संयमि ताको कोमल

नान्यथाकननानिवासाय सुन्दरसुवासनयद्विभ्रमा
वर्द्ध । पद्मपद्मवर्द्धपद्मनिपद्मनिपद्मपद्मवर्द्ध
वर्द्धपद्मपद्मवर्द्ध १० ॥

पद्मनि कनननि वक्षसि पुन है ऐसी पद पदवी वर्द्ध
पद्म है पद्मनि नैपद्मकी वर्द्ध है ताको एकपद एकपद
भी नैपद्मपद्मकी रती मासा पत्र ये पदोद्योदवर्द्ध है कमल
नपद्मपद्मवर्द्ध स्रुकी मञ्जुवर्द्ध है काङ्गकी वृत्तवर्द्ध मनावन
है आनन्द वर्द्धवर्द्ध है काङ्गिकल्प विवावन है नपद्म सा ऐसी
मय है मन कमल को वाङ्मो फिरत है १० ॥

(पद्मनिपद्मनि) द्रो० ॥ अर्जुनिचपककीकली
वृत्तनम्विप्रमान ॥ तारावृद्धाशुसुमनगनमनगनिन
खनिप्रमान ११ ॥

नयक की वृत्तनम्वि अर्जुनी वृद्धी नख सुमन कूल है
मार्ग आ मणिगणक समान नख ११ ॥

द्रो० ॥ विद्धिपद्मकअनैटकीनाहिनउपमाआन ॥
शोभाप्रभातरगानिहंसअश्रुतनुजन १२ ॥

पद्मक अनैटकीमद है शोभायुत प्रभाजाम चमकर है ताको
आ नय सा जगती रूपवर्द्धी को तरंग अर्जु किरण ननजाण
अनवर फिरत ताहि सम १२ ॥

सवैया ॥ चपकलितलहैमलीपदअर्जुनीवलकी
रूपरुम्ह ॥ अश्रुमदशूलसेनखयुननुश्रीतमकरुनादेव
वर्द्ध ॥ पद्मकअनैटकीनाहिनविद्धिआनिविमपुनव्यानिन
सवयुम्ह ॥ कदवसेमसयेवनऊपर कापमनननुजा
पुनकम्ह १३ ॥

नय नय रतिरुद्ध है भाविरुद्ध है दृग नय नय ताके दंडव

॥ १६ ॥

1186 11111111

॥ ३ ॥ पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः

10111111

कर्मवशात्तत्र अलिकुलहं रतिमं नो योऽदहंय तत्कानाम माण
नरतिकृञ्जकं नो समुहं तत्के प्रविष्टुनिकं कर्तव्यजिह्वं ह्यटक
सामा तामो घटितं रात्रिहं १५ ॥

(उद्दिश्यमान) दो० ॥ उद्दिश्ययकंकणकलितकेय

वदंसमृजान ॥ मालाशालाशुमसमा सीमासमसा

पान १६ ॥

नै हृदिनीति को कंकण कलित अनेकायु शूद्रं ह तामो
कलित सरिणी जालिय जालासी नै हृदिशाला परसी शुभक-
न्याय तामो समशुभकी नो सीमा मुहं सोपानसिंहा १६ ॥

कविप्र ॥ कोमलकमलकूलनैर्पूरनवलअलिकूलन

कीशालाकिशोरकयसुभायकी । चरणसरोवरसमीपकि
धुविजिह्वार्कनतकलहंसनिकविठकवनायकी ॥ गजनि
कीहंसनिनीतीतिगतिनेरीगति वाधीनयकंकणकीशो
भार्यवदंयकी । अमलसुमिलसुहृंसदंनसदंनकीकि

नामगुणगुणजिह्वरयकी १७ ॥

कमल सो अमल चरण जालिय तत्के कूलनजंकीक नैपूर
साहं गवीन अलिकूल ह तामो नीकी सुभायदी की अशो
शाला पर जेहृदिहं विजिह्वा साहं कुनत वोलन कलहंस ह
निकके घटितकी स्थान किशो जेहृदिहं गजनिनी अशो हंसनि
को गतिनी वेरीगति नै नीतिके विजय को जगवै ऐसी कं-
कण योऽयहं किशो सुवदंयहं योभाहं अशो नै हृदिके वीचवीच
कोरहोत ह तामो अमलसुमिल ऊर्वा नीचहोतिहं १७ ॥

(उद्दिश्यमान) दो० ॥ उद्दिश्यकरकोलिसमकरमयो

भभुलिन ॥ चक्रवाकप्रलपुलिनसम वराणिनितम्बनि
पान १८ ॥

कवि ॥ कामलकमलमूर्धितेयवृत्तजनमयं
 धारजकमनदिरुहै । धारमधुमधुमधुमधुम
 अकरोवकरमहैकीयोमानिरुहै ॥ कविराज
 जराजशिराजकीयो दीखदेखिजाजराजनिमन
 है । मोचमोचमदंकीचमकलसुकीचयोचमोचमोच
 पवनकीकण्ठलीकरुहै १५ ॥

सखीवचन वायकसो युगल जावै दीखदेखि जा जयधर
 श्रीकण्ठ निमक मनको हूरु है कहेपाठ जवहि हूरु है जग
 वंछि मँडितहोतहै मँछी आय जवनहैरहोतहै रजमोही ॥
 जाको सोरम सुगंधहै रजमोचको सोरम सुगंध रजमोच
 जाको सदन घरहै श्री रमा केव तेसाहै रजमोच जाहिं क
 म हथको अथय पाछु कहै जाकी योमा निरुहै पाछु
 जाहिहै कविराज काम लोके जगजग सो निरुहै जग
 कलगी समान है अथ है यह अथ निमकी है साहै रजमोच
 रतिहै मरुधिउ एसा सुंदर गह्वी यात गजराज भाजनि मम
 है मरुकी कविप्रिया लोको अहै सवतहै लो रजमोच
 विचारिके वरी जयकी जय सुधिआवतहै जय रजमोच ॥ १६-
 लीकरुहै श्रुतममदि कंड सो वमावतु १८ ॥

(निजवर्णन) कवि ॥ चहैआगिनिजवर्णन
 क्यचकमलिमंदरसुंदरदानंदरुहैनिहै । निजमन
 खनिपटइवैकीमुखकख मरनिपटइवैकीमुखकख
 है ॥ सवहैकमननिरनकरहैरुहैकमनमोचुहैकमनम
 अहोअहोनिहै । कविप्रियाचमकीचमकलकलकलकल
 हैनयुचयैनिजवचकानहै २० ॥

कविराज पाछुलो भाग सो निमय चहै मोर है निरुहै निम

नरैः गौरी निजको चोरन हे मणिको जेवा चकवाक होय
 नना गमि वाकवाचय चमचमइतरे औ सुंदर सुंदर्योनचक
 बाहे कति सुंदर्योनकरिके होनहे कपरावा छपवाोरहेतरे औ
 सुंदर्योनचककी भी रंशोन सचकोऊको नहेहोतरे वा चक
 वा यर नवाचकहे गमि आविकगुणहे वरुचक जाहेसाविनि
 सुन रंग नाके मुखकी घटाइवकी प्रणीणहे औ सुत रंशोन
 निगकी चडाइवकी मुखकख मुखकी कख गो रहे जाकी औ
 प्रणीणहे वरु चक आविक हे सव ज सुखीजन निनके मनकी
 रंशोनकरिवकी वा चक सचके मनकी नही रंशोनहे काइकी मय
 उग्रजोवन भी हे शूर वा चकसां हरिकी मन नही मयाजान
 हे वासां हरिके मन मयिवकी जव नही मिले तव व्याकुल
 हरिवकी काहे चरुं जो वाकी वनवानेइतरे नाने वनयके
 मनमयके हयमं होनहे मनमयके वयमं करिदोनहे सखा
 मयकासां करुतिहे हे तकाण करि कांन श्रुति पवित्रता औ
 सकोच याकी समति काहे चरुं विधानाने वेरो जो निजव
 वा नया चक करिया हे २० ॥

(कटिउदरसोमालोचन) टी० ॥ कटिभ्रमिषम
उदरचिन्तनलदलउपमान ॥ सोमलवामममम
निवर्तितद्विषममम २१ ॥

कटिभित्तिपट्टि वल्लिभूतः उत्तरपट्टः ताकी भूति वल्लिभू
 भू वल्लिभूतः पृथग्वत्ता वल्लिभूतः ताकी उत्तरपट्टः वल्लिभू
 ताम्बुलः ताकी वल्लिभूतः वल्लिभूतः वल्लिभूतः वल्लिभूतः
 वल्लिभूतः वल्लिभूतः वल्लिभूतः वल्लिभूतः वल्लिभूतः
 वल्लिभूतः २१ ॥

कविः ॥ भवकीमठद्वैतसिद्धिकीर्तनद्वयसिद्धि
रत्नविठ्ठलपञ्चकवदे । धर्मकाशदासकृत्य

॥ ३८ ॥

(समवर्तित्वात्तदवयवम्) कथम् ॥ तदवयवम् ॥
 गगनवाहकैर्गगनवाह संचरन्तः संचरन्तः
 द्विष । द्विषन्तः संचरन्तः संचरन्तः संचरन्तः
 तामनवपक्रेषन्ति ॥ कश्चाप्यनवपक्रेषन्ति ॥
 तवरेतद्विक्रमप्रतिबलवन्ति ॥ संचरन्तः
 रश्मिभूतैर्गगनवाह द्विषन्तः संचरन्तः

॥ २६ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
 कृष्णार्जुनसंवादे अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदमुनिर्वाक्यं ब्रूयात् ॥
 त्वं कुरु धर्मं पादोक्तं वीर्यवान् ॥ यथाशक्नुस्त्वामिह पुरातनम् ॥
 सत्यं धर्मं च विप्रश्चक्षते हि साधुः ॥ त्वं हि श्रेष्ठः पुरुषो मया श्रुतः ॥
 त्वं हि महाबलः पराक्रमः प्रतापी ॥ त्वं हि धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेत् ॥
 संजय ॥

॥ १८ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

(कृष्णार्णव) (२) ॥ चक्रवर्तिकृतविरचितकृतमल
प्रमाण ॥ विराट्पिण्डमन्त्रादिकृत ॥ मन्त्रमन्त्रमन्त्र

कृपयेति वक्षिष्ये वक्ष्यामि वक्तुं को जातः आ ज्ञेय
 कीर्तिमान् आ परस्मिन् गुणो क्लृप्तो इमं वक्ष्यामि को माया
 परं कर्म समाप्त ॥

॥ २४ ॥

कविः ॥ किञ्चिन्मनोहरमपि हारयति मुखे लोचन
करमर्कमद्यो मनहरम् ॥ मोहनीकमठकिञ्चिद्दियोकम
तिरिक्तेन्दुवरद्वैतमुखिभूषणमसरम् ॥ आनन्दकन्दकि
ञ्चिद्भङ्गजनगद्गकवातनैकश्रीदामवरमदरम् ॥ ए
रीत्यमर्णकमर्कमरितरेकविक्रिया रूपञ्जनेपवतकप
कुरमसह २५ ॥

11 天竺生

[illegible]

[illegible][illegible][illegible][illegible]

वायु सकलभूतनिर्गतकविर्देव । इत्येवमस्ति ।
मणिर्मन्दरीजलिजतमणि । प्रपद्यतेनमस्तुतेभ्यो

॥ २९ ॥

रक्षित सुन्दर नख है और कवि प्रपन्न न भवि भव
पुन वीर्य वीर्य पुनव सो वीर्यवर्धन भवि न भवि
वरायक शिवकालि युक्त वरायक कालि रति रति
जीवित जिवित को जिवित कवम है भव भवि भवि
हीन है सुख यह पाठ है न भव भवि न भवि
जाको पुनव जो काम वाक वायु वाक वीर्य वीर्य
की छी है पुनव पुनकटन है न भव भवि न भवि
सपुण्य भूतको वरायक वीर्य कवम भवि न भवि
सुन्दर है सो भावो वायकको पवित्र न भवि न भवि
हितवक वाक भव वायक वीर्य वीर्य वीर्य वीर्य

की वर दे कर दे २२ ॥

(मंदरीसुवर्णवर्णन) दो० ॥ भवयो गतिभूत
ककीराचामंदरीसुवर्ण ॥ विह्वलवर्णनवर्णन
कविप्र ॥ भवयो ॥ रायक वीर्य वीर्य वीर्य
मनोहितकविप्र ॥ मंदरीसुवर्णनवर्णन
गतिभूतकविप्र ॥ मंदरीसुवर्णनवर्णन
देनकमनवर्णनवर्णन ॥ मंदरीसुवर्णनवर्णन
राकीमनवर्णनवर्णन ॥ ३० ॥

पवित्र वीर्य न भवि न भवि न भवि न भवि
योभा है सो वीर्यवर्धन है भवि न भवि न भवि
देन वीर्य वीर्य वीर्य वीर्य वीर्य वीर्य
वाकी गतिभूतकविप्र ॥ मंदरीसुवर्णनवर्णन
स गतिभूतकविप्र ॥ मंदरीसुवर्णनवर्णन

॥ ३९ ॥
 कृतज्ञपुत्रिपुत्रि ॥ ०१० ॥ कृतज्ञपुत्रिपुत्रि
 कृतज्ञपुत्रिपुत्रि ॥ ०१० ॥ कृतज्ञपुत्रिपुत्रि

कण्ड कश्च शेष तद्वि सर्वाणि वाणिज्यं अरु कपत कर्तव्यं
तानि श्रुति वाणिज्यं पुरातन कनककृत् पुरातन सर्वाणि वाणिज्यं ३१॥

कविः ॥ सर्वत्रगतेन कविः सर्वत्रगतेन कविः ॥

[illegible][illegible]

॥ ३३ ॥

(कठमपणवण) कवि ॥ विविधवर्णनं
मालविमलधूप लालननंविमलविमलननं ॥
कं । क्यामरेवतपुनलककककमलननविमल
कठमपणवणविमल ॥ कथोदात्मनयनन
वसतपकाममजकय अतननविमलविमल

[illegible]

[illegible]

॥ ३२ ॥ कर्तृव्यापानिर्दिष्टि

[illegible]

॥ ଚନ୍ଦ୍ର ଶାସନ ଶିଳା ଶାସନ ॥

॥ ७६ ॥

अथ यत्किञ्चिदपि ॥ १० ॥ (अथ यत्किञ्चिदपि ॥ १० ॥)

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अर्जुनस्य निवेदनं ॥
 अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदमुनिर्वाक्यं ब्रूयतां मे ॥
 कुरुक्षेत्रे भवत्युत्तमो युद्धमग्निमान् ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सो हीन होहि है घटि जाहि है उपमा देवकी नही चले सुख
 सो एतक सचरित कहोहि सोना मन काम गुरु है हरि जो
 गणक गठ नवकी जो गति और नयकापर जागो नकी
 गति गतिवकी आज ग नयका को देखनो ओहोयो ग
 नयका जो आसक्तयो देखयो सो आज ओहोयो गतिगति
 विद्यादेवी नकी एक लकरकरी देसीकी देसी ऐस जाति
 कहै गट है सोना मनपर हरिनाटक मयन मन गुनगनजो
 कहै विद्या गतिदेवी है देविनाटकी मनमथिकी गुणकी सुख
 नयकी विद्या चरुगई गतिके रेखाकाहि है देवी है ३२ ॥

(दंतवृत्त) कवि ॥ मधुमधुरखसुखसुखमनवती

सुखमनाखसुखवतीसुखसुखसुखसुख । सुखसुख
 नयकनयनमयकियुगलसुखसुखसुखसुखसुखसुखसुख
 वरविषय ॥ किवापिपुष्पगुनियवतकविवेकविवेकविवेक
 कवियवतकविविषय । दंतवृत्तकविविषय ३१ ॥

सुखी नयन सुख कंदक फूलसी वतीसी वतीस देव
 वतीस लखण कहै होक नकी सुख विषय रहै वदे विषय-
 गण देविनय है नकी विषयसुख है परकी मसमझाव पुनी
 यति नयनो गी अवत युक्ति नकी लखन के लिय मजुपुत्र
 क लिय कलि मयु वृत्तिनो नयनयुगल नकी खडन टक-
 नयनिकु देव नयन है नही नय नयक खडनकी देव
 नय नयक नयनयुगल नयक फूल मजुपुत्र नयनो नयनो
 कवि ॥ किवापिपुष्पगुनियवतकविवेकविवेकविवेक ३२ ॥

कवीजमुपासीवकउपायहै । कियोअवबनीकाचम
 लीकीवमकवोकाकिवाकिकमलमदहिसनयहै ॥ ६
 धूमिकताहैलमदेवरमरावरेनि कियोमालिममममय
 सुहायहै । कियोदिगसप्याकिवदंनमदंनअविमदहिक
 रणकाटिवनिसवनयहै ॥ ८० ॥

साली मरजक साली दीपका मरज मयल जो मयल मर-
 मा लक धीवम धीवरी के वीज धियासी मालिक उपाय है
 जनमयहै अलवेलीको जोक दान नाम नमनी ही कहीजम-
 कहीहै मालि मुकुर मालिको दपल मय नाम धियर मालि म-
 हायहै चंद्रमाकी सारह कला लकी किरण कालिक मनीम
 कियहै सो वनीस दीवहै ॥ ८० ॥

(अथहास) दो० ॥ अतिवृद्धहैदामनदीपनिमया
 प्रकाश॥ महिममहैमरीचकीचमहैवमहैमदंम ॥ ८१ ॥
 ऐसा हास वरलिय अर्थात दीव जोहाई चारही कोचर
 की दीव आ अथव को प्रकाश मालिकी मालिमा चंद्रमाकी
 चिक सुगन्धला मोहिलो जो मया लकी दीव ॥ ८१ ॥

कविव ॥ कियोमलकमलमकमलकीचोनिहोनिहो
 धीवाउसुखचंदचंद्रकाचयहै । कियोसुखनामन
 रोचिकामरीचकिवाकिकुकीराचरुचोचोचोचोचोचोचोचो
 सौरभकीशोभाकंदयनवनदीनवनदी कनकवनदीनवन
 दीकीचयहै । ऐसीऐसीमरीचोचोचोचोचोचोचोचोचोचो
 महेनकीमहैवोकिमरीचोचोचोचोचोचोचोचोचोचो ॥ ८२ ॥

कमला बहमी की उपाय चार जो मयल चंद्रमा मालि-
 डि का चंद्रनी चंद्रमाकी चोराहै मय लीमर मालिक मय-
 लीचोडिका चारह पलाली है सुगन्धला लकी मालिकी मयल-

आकी छिड़ छपरतन देत है ताकी छीवर जो सुतर कवि
 कति ताकी श्रुति देत की नाम है आपनी श्रुति देत ताकी
 छिगाड़ है सारम सुगुण ताकी शोभा है द्योन जो देवतवन
 भय ताकी दामनि किया किवा द्योन जो वननिवर्त किया
 चरि जो तावका तक चित की चुराड़ है इसी किया हमारे
 सादेन की मोहनी है किया निरावाणी ताकी गोराड़ है ४२ ॥

(सुखवासवार्ण) टी० ॥ मदनजीविकासुखजननि
 मनमोहिनीवलस ॥ निपटकपाणीकपटकमिदियोभा

सुखवास ४३ ॥

मदन की जीविका जियावनवाली उपजावनवाली आ
 छिड़की उपजावनवाली आ मन की मोहनवाली ऐसी जाकी
 निजाम है कपट काटिबकी अतिकपाणी तरवारि है आराम
 की प्राति ताकी परमयोभा है ४३ ॥

कवि ॥ कियाभयाउदित अनन्यकोअंगउरपर
 निनेअंगानादेहदेहकी । कियाचितचविरोचमली
 घातकिलरहैकल्योवासकयवकामकरमुखकी ॥ कि
 धापरमलधमपरावतंसनिकी कियावरवाणीवनमाली
 कवपुखकी । कियापावपाणीदेहकमलकल्योनीकी
 गववचुकुसुगवसुखमुखकी ४४ ॥

उस मरम अनन्यकाम ताकेअंग उदित प्रगटभय है काहे
 त छिभिने सुखकी जो छिभि सुवास ताते आ छिभि नाम
 धमनकाहे वसन त काम प्रगटहोत है प्रसिद्ध है याने मदन
 जीविकप्राप्तमई भगवत गवाड़हैय अवउपज है ताम भया
 है रागादीन ताकी देहकी जो दूखधा हमारे सव है पू देहनदी
 या देहकी दान है वरावन है याने छिड़की उपजावनवाली
 छिजवास देह कामकी छिज उपजाया कहे नयक की छिज

धीमाधन्यमिन्द्रो नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 कविनिर्दिष्टोऽयं मन्त्रः कविनिर्दिष्टः ॥
 धीमहि तन्नो वसुधैव कुटुम्बकम् ॥
 कविः ॥

॥ ४४ ॥
 कविनिर्दिष्टोऽयं मन्त्रः कविनिर्दिष्टः ॥
 धीमहि तन्नो वसुधैव कुटुम्बकम् ॥
 कविः ॥

॥ ४४ ॥

(मन्त्रागवतः) ॥ ४० ॥
 धीमहि तन्नो वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

॥ ४४ ॥
 कविनिर्दिष्टोऽयं मन्त्रः कविनिर्दिष्टः ॥
 धीमहि तन्नो वसुधैव कुटुम्बकम् ॥
 कविः ॥

निर्देशितचोरकी । लोभितहोअनुरागिकर्षोनाहनेन

निकलिकर्षोतिवराचनेरतकण्ठानमोरकी ४६ ॥

मज्जमं रंग रंगिनी है तके अंग के रंगहें अंगरंग दिन
शमयु अतिन भोरकीसख्या माना दिनदात सेवतहें अकण्ठ
बाल न है दंत सो बहुत रतनकी खानिहें उहकी याकी अर्थ
बहुं गोरतनकीअलकहें सो कि को अर्थ किधौ चहुँआर अल-
कतिहें वाकचर्या बहुत समकजोहें सो तेरी चितवर भाषा
सरस्वती तके भूषणकी नायक तके चितकी जो बोलगति
तकी गोरिलति है और नायकनि पास चित नहीजायसकत
है किंवा चानिहें नायकपास है तकण्ठो सखी कहति है तमार
पानकी कवि तेरे राखीहें ४६ ॥

(रसनगणन) टी० ॥ रसनकोमलवाणियेकोविद
अमलअलोल ॥ कथवदेवीरसनकी रसहैअवणमद
बोल ४७ ॥

कोविद पंडित गणणजानिय और रसमधुरआदि छः किंवा
भृंगरआदि तकी देवी देवताहें आ तकी कोमल वसन सो
रस की अर्थहें ४७ ॥

कवि ॥ देवतहीआधुपलवाणीजानिवाधासमरा
धातुंकीरसनमसिकपकीसीरनाहें । आर्द्धाआर्द्धावति
कीजननीजामाति रसनकीदेवीकथोपविपाहैबानी
है । कथोदाससकलसवासकीसोसोविकवासकलसजा
नतीकीमखोसुखदाहें ॥ कथोमखपकनमथीकिंकोतो
सुखदजनसनिवतकीउचितकीकविनामनाहें ४८ ॥

समतरह की जो याथा पीडा सो बाधीजानिहें रोकीजानि
है रसनहीरहें देवतके सुख उपगत है भाषा बाधीजानि या

समस्तक नदी भयंकर क विष भयान् जननी उपजाय
 गती रसविकीरिताहं सा पवित्र अमयी विद्याविहारी
 ना प्रणीतकी । सदाहं किये भुक्तममम भूत शक्ति देवी
 कि किं भगवत्की शक्ति श्रीगुरुजी साकी विजय भूत
 विव आशुहं साकी भवत हं शिवकर्म भविता भवति
 है कवि है साकी साहि शक्तिविकी नाम कर्म है कविता की
 विद्याहं विविधा नसे भयान् उपजाति नसे जीमयी कवि
 शक्ति उपजातिहं ४८ ॥

(वाणीवर्णन) टी० ॥ वाणीवर्णनार्थविशेषक
 विवरण ॥ शोभतशुभवह्मभय कनकदंशक
 न ४९ ॥

वाणीक गुरुजी भयंकर वाणीय कर्म वाणी अविनाश
 विवरकी गानधी सा वाणीवातम वरुणभय विवर ४८ ॥
 कवि ॥ कामकीटहं कर्महं मवर्णमपरीकृतं
 साकमदिरमभूतउपजातिहं । भूतनकर्मसाकीमादहं
 कीमतीरकवाणीकामावापुमवर्णनमममम ॥ ४९
 गानधानीभयानिनीकनहंराना साहंरंरंरंरंरंरं
 कीकलजजतिहं । परमपरीवभरानाभरंरंरंरंरंरंरं
 वानदीकीवापुमवर्णनहं ५० ॥

वाकी वात कामकी टाहं है कामगान साकी टाहं
 काहं मदिनहंमकं वा वरुणभयकर्म कविहं सा वाणीय
 किये वापुजी वा भयंकराहं साकी सखीसा सदाहं है कवि
 उपमापुणीसा है इतिता सखी निवकी मदिहं वरुण भयं
 आहं गतिवर्णन सी उपजातिहं गतिहं वरुणभय
 एति वाकी वाणी है वातकर है विषादवादि साकी भूत
 वरुण है किंवा साकी साहं है साहं वा साहं वाहं

वर्तितः चरितः की भावः ऐसीभावना की भावः सदा है
गङ्गाती शङ्करान् शङ्कराती शङ्कराणी सरस्वती की जो
बाण वही सुख सुख सुख-वाजात है ५० ॥

(कपालवर्णन) टी० ॥ मुकुटमयककपालममकेयव
रंजयमान ॥ तिलमयनैयूरसम शुकनासिकाव
खान ५१ ॥

मुकुट दण्ड मयंक मङ्गला सो पीत है किवा सम शरीर
रंज गीता गङ्गा गीतिका तिलकी प्रसन्न फूल-सम नैयूर
तरुण श्री शुक सुखासी ५१ ॥

कावच ॥ किशोरिस्मनोरथरथकीसुपथमभिधानरथ
मनईकीगतिमसकतिछेव । किशोरुपमपतिकाआसन
रतिवररतिमिमीमालावनिमरिचकामरिचकै॥ किशो
र्यतिरंजलमकरमरकटोदास चित्तयेचित्तवकवाच
कवलनय । गीरेगिरेगोलयतिअमलअमोलनरेल
तिलकपालकिशोरमनकेमकुट है ५२ ॥

हरिको जो मनोरथ इच्छा रूप रथ लकी सुपथ मभि है
समवाकटी मानरथ काम गी कामनकी जो गति है सो छेव
मनई एक मगवानकी प्रिया है याने रूप जो राजा है मग न है
लोकन नयक क लकी मरीचकी मगन्या लकी मरीचि
किशु कीयक नयकी मिला है मगमङ्ग है मरीचिका रंजि
मग चरित है नम नयकी क पीत नयक दूरेया सो आज न
मिमी है सली मिलपर नयकासी कहति है श्रुतिक कहेल सो
मकराई मकराई मकराई कहेल बरणात है लोके सरसरावर कप-
ल है प्रमनकवाचवात है मकरकेमुके दण्ड है दोऊ है ५३ ॥

(नमिस्करवर्णन) कावच ॥ केशवसिंहगङ्गापतिविश्व

सर्वे मुक्तिमेक है ताकी मुक्तिपथक पूरी बुझै है पर वैराग्य
 की पराजित है कायिको भी पर वैराग्य सेवन है विषयन की
 जो रूप ताकी नैग ऊचो वरु जो वायविय समुद्र लोकाज
 की तरंग है किया है नैरायि तैरी नासिका है ५३ ॥

(नकमोतीवर्णन) टी० ॥ केशवअनंदकंदफल सु
 धावैरंमकरंद ॥ मनमोताकोटीपगालि नकमोतीजग
 वरं ५४ ॥

सगमाय ५४ ॥

कवि ॥ केशोदाससकलसुवासकोनिवाससहिबि
 धाअरिवरंमविवावैरंमकरंदको । किधोवैरंमहलमयो
 निनअमुरगिकिवागोदवैरंमकुलसुवनवदको ॥ वावै
 रुपकमगुणिवैरंमदोतकिवावैरंमसुवनहै आनंद
 कंदको । नकमोताकोनैतीकोनकमोतीनाकमानो
 मनउरिअहोवैरंमदको ५५ ॥

सली नयका सो कहिवै है सखि सकल सुवासको नि-
 वास जो है अरिवरं कमल आ मकरं फलकोरस वरंमहल
 सुख माती अमुरगि शुक वरंमकोसित सुख सुखसो वरंमसुका
 साह फल ताकी किया सुवनहै तैसी रूपवावै है आ काम
 क गुण साहन तैसी वैरा विनविनसुवनहै नकमोती सुवर
 लोचनहै परमपु काहै नयका म लोचनहै तैसी रूपवावै
 है आ कामवावै है अगुणतैसी विन विन वैरावै है तैरी
 नक म नकमोती जो है सो नाकसुख तैसी को जो नयका
 है विनक नकमोती सो नीकी वागवै ५५ ॥

(नकमोतीवर्णन) टी० ॥ लोचनवर्णनवकीरसम वावैक

॥ = १. एतत्सर्वं ब्रह्मण्यर्पयन्ति ॥ इत्युक्तम्
इत्युक्तम् ॥ ०. ३. (एतत्सर्वं)

[illegible]

॥ ॐ ह्रीं ॥

कविः ॥ प्रथमं वक्रिवाप्रमयमनं विवाचनं
 भवत्प्रमयमनं विवाचनं ॥ विवाचनं विवाचनं
 वक्रिवाप्रमयमनं विवाचनं ॥ विवाचनं विवाचनं
 वक्रिवाप्रमयमनं विवाचनं ॥ विवाचनं विवाचनं

" 27. 1917 10:30 AM THE PUBLIC DEPT. OF STATE

11 26 11

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

॥ ४१ कुल्लुकेकुल्लुकेकुल्लुकेकुल्लुकेकुल्लुके

॥ ०६ ॥
 ॥ ०७ ॥
 ॥ ०८ ॥
 ॥ ०९ ॥
 ॥ १० ॥
 ॥ ११ ॥
 ॥ १२ ॥
 ॥ १३ ॥
 ॥ १४ ॥
 ॥ १५ ॥
 ॥ १६ ॥
 ॥ १७ ॥
 ॥ १८ ॥
 ॥ १९ ॥
 ॥ २० ॥
 ॥ २१ ॥
 ॥ २२ ॥
 ॥ २३ ॥
 ॥ २४ ॥
 ॥ २५ ॥
 ॥ २६ ॥
 ॥ २७ ॥
 ॥ २८ ॥
 ॥ २९ ॥
 ॥ ३० ॥
 ॥ ३१ ॥
 ॥ ३२ ॥
 ॥ ३३ ॥
 ॥ ३४ ॥
 ॥ ३५ ॥
 ॥ ३६ ॥
 ॥ ३७ ॥
 ॥ ३८ ॥
 ॥ ३९ ॥
 ॥ ४० ॥
 ॥ ४१ ॥
 ॥ ४२ ॥
 ॥ ४३ ॥
 ॥ ४४ ॥
 ॥ ४५ ॥
 ॥ ४६ ॥
 ॥ ४७ ॥
 ॥ ४८ ॥
 ॥ ४९ ॥
 ॥ ५० ॥
 ॥ ५१ ॥
 ॥ ५२ ॥
 ॥ ५३ ॥
 ॥ ५४ ॥
 ॥ ५५ ॥
 ॥ ५६ ॥
 ॥ ५७ ॥
 ॥ ५८ ॥
 ॥ ५९ ॥
 ॥ ६० ॥
 ॥ ६१ ॥
 ॥ ६२ ॥
 ॥ ६३ ॥
 ॥ ६४ ॥
 ॥ ६५ ॥
 ॥ ६६ ॥
 ॥ ६७ ॥
 ॥ ६८ ॥
 ॥ ६९ ॥
 ॥ ७० ॥
 ॥ ७१ ॥
 ॥ ७२ ॥
 ॥ ७३ ॥
 ॥ ७४ ॥
 ॥ ७५ ॥
 ॥ ७६ ॥
 ॥ ७७ ॥
 ॥ ७८ ॥
 ॥ ७९ ॥
 ॥ ८० ॥
 ॥ ८१ ॥
 ॥ ८२ ॥
 ॥ ८३ ॥
 ॥ ८४ ॥
 ॥ ८५ ॥
 ॥ ८६ ॥
 ॥ ८७ ॥
 ॥ ८८ ॥
 ॥ ८९ ॥
 ॥ ९० ॥
 ॥ ९१ ॥
 ॥ ९२ ॥
 ॥ ९३ ॥
 ॥ ९४ ॥
 ॥ ९५ ॥
 ॥ ९६ ॥
 ॥ ९७ ॥
 ॥ ९८ ॥
 ॥ ९९ ॥
 ॥ १०० ॥

॥ ०२ ॥

॥ ० ॥

आदि को किरा टर्का करि वणिच आनि लोभ आनि धनपस
आनि रानि आनि तरवारि आनि पाशोवनपस अथ काज बरि
करु करि गण ॥ ० ॥

1102 1102 1102

कवि ॥ किंवाणिपिकवकेयवकलिकिपुकि
रागमयकअंकअनिसुमयकी । यन्त्रहेसुदेवकाकिम
अभ्यनुरेगाको किमंत्रानेकोविजयउरयअमयकी ॥
आसनदंगारकोकिमकोयासामने आसनलिङ्गयोहे

रागिन के आग्न प्रदीप है विरग विशिष्ट राग एकराग में
 रंगों रागिनि और रंगहीन है जैसे क्षयावट और गौड़ में
 रंग डलाने आसनी रागन के विभागकरनेवाले राम देवना
 यों आररागन को है किवा विरग लोको करनेवाले है यह
 भलागम गावत है यहैरीराग गावत है जो मसल है तिकीवात
 भूत में अपन में राखे याने भगुडर है गौड़गौड़ लोको अर्थ
 कविन और कर्तव्यम फलानेनाम कौनको है लोको रजनकरन
 गान है व्याकरणीति लो जगिय निर निर छोटा छोटा
 है और निरको हरिको जो रस लोको आचमनी पवित्री है
 चरणाभुवन को जेरी छोटीकरछी होति है किवा हरिकरम
 क पानकरनवाले है लोको चरको अधीकरनही है हेमम श्रीति
 नाम गायुकीमा है और भुनिको है लोको कपलीजिय रूपम
 रथ जो कोड़े राजन है लोको घर है लोकोकनेत्र है किवा नेत्रनके
 लिये मंडी है नेत्रके कटाक्ष और के लक्ष निशाना है केको
 मधुकिवा ३३ ॥

(कण्ठिलतटकवणन) टी० ॥ भनिमनिमयतटक
 गुगलितलवयपडिभन ॥ तटवतयविलवयकसेके
 यवकर्मममभन ६४ ॥

भनोकरही यमदंड मणिमय तटक कण्ठमण्य लक्ष नि-
 शाना तटव यवा यमगड डोपट्टी को भूत लोको चलचंचल
 वातकडवम और चकमरीण और फलसा ६४ ॥

कविन ॥ पडिरेकरणकिलेवोहैकमरीएकसुनहैके
 वृकादेयोभयवतनिनय ॥ निनकनकोअनितीतिअ
 निनमवकयवअननगतिकेभुडरअनिनय ॥ मानोको
 मंडव मंडवनेकरकाम सावयसवनिनलदेयव

कदा चार्जक अनामकी संदर्भान्ति रणभूमिं कुर्यात्कतिव

की टोर काम यत्तु आर्जक मनकी पञ्जरतहै किवा सिराम-

मिहै सिरामभूमिहै चोकानभूमिहै यत्तु कुरंग जो हरिण लोके

जावननकी चाल हेटिजातहै चोकनी ठोरम चल्या नही जा-

तहै अथ यह नव या ठोरम लामरतहै है जगडिठ गूण यह

अथय अरु प्रियमन पानिवेकी अथ फासिवेकी फासि फासि

जात उपमा देवकी भव संसारम भटकहै फिरहै तराव सय

लोकी नवजा बेटा श्रियसुनजी सो रंगम है तारानाय चढ़

सा सुख जानिय किधौ चढ़मा के हथ तम अथकार लोकी

खो हथपटी हथचढ़है लाल लोचनि तें सुनि नवल नवान

जो नहै लोकी किधौ निधिहै किधौ लोकी भलक हटहै किधौ

अनक जोहै लिखत तय आलिक छोटे भौरा बटकत है अ-

लिहाअथ भौराकोअधुव्याकरण रानिषा छोटालिखिय ७२॥

(मुखमण्डनवर्णन) टी० ॥ अमलमकरसोवर्णिय

कामलकमलसमान ॥ अकलतिकतमुखवरावियचकित

दंपरिमान ७३ ॥

अमल कटिय औ मुकुट दंपणसा औ चंद समान ७३ ॥

कविन ॥ यहीनमकी-हीगहैसुनिनमहैस्वयहैद्विज

साकिधुसनेहैजायुयुगचरयहै । तपानमनेप्योनपन

लियमनेप्योनपक्योदामवपुमसमप्रतिनारयहै ॥

उरुगण्डगहैनहैयुआपवायामयो यदपिजगतहैयुम

वामामवाखहै । सुनिनदनेनदप्योनरेमुखचंदसम

चंदपनमयुकादिउरुकरिदोरयहै ७४ ॥

यहकी सपुत्रतहै निजम लो परिकय पुत्रमयो धरिनीको

उरुकरि देखा देखा अमन पान करतहै यत्तु कला शीण

होतहै चारिहै युगम-जागरणिकयो यह भी तपस्या है सय

आदि तत्त्वानि विद्यमानाणि सन्ति सर्वे तत्त्वानि ॥

पृथ ७७ ॥

ननु ॥ आदिनिमित्तवत्त्वानि सन्ति ॥
(वैयर्थ्यम्) ॥ ७८ ॥

कल पृथक् कल एव पृथक् ७८ ॥
यत् अनेक वृद्धमहि तोषा एव च तद्वत् तोषा विनाशो ॥ ७९ ॥
आकाशो यत् स्वयम्भूति तदा तत्त्वानां तदा तत्त्वानां ॥ ८० ॥
करीषिकयोः अन्तरा तदा तदा तदा तदा तदा तदा ॥ ८१ ॥
उपहृष्टं तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा ॥ ८२ ॥
यत् च यत् च यत् च यत् च यत् च यत् च यत् च यत् च ॥ ८३ ॥

वैयर्थ्यम् ७८ ॥
यत् अनेक वृद्धमहि तोषा एव च तद्वत् तोषा विनाशो ॥ ७९ ॥
आकाशो यत् स्वयम्भूति तदा तत्त्वानां तदा तत्त्वानां ॥ ८० ॥
करीषिकयोः अन्तरा तदा तदा तदा तदा तदा तदा ॥ ८१ ॥
उपहृष्टं तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा ॥ ८२ ॥
यत् च यत् च यत् च यत् च यत् च यत् च यत् च यत् च ॥ ८३ ॥

यत् अनेक वृद्धमहि तोषा एव च तद्वत् तोषा विनाशो ॥ ७९ ॥
आकाशो यत् स्वयम्भूति तदा तत्त्वानां तदा तत्त्वानां ॥ ८० ॥
करीषिकयोः अन्तरा तदा तदा तदा तदा तदा तदा ॥ ८१ ॥
उपहृष्टं तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा ॥ ८२ ॥
यत् च यत् च यत् च यत् च यत् च यत् च यत् च यत् च ॥ ८३ ॥

कविन ॥ चंदनचंद्रमयचंद्रकर्ममलगायत्रीकिंवा
निदिनाधानिदिनदेसदिरुह ॥ किंवाचंदनचंद्रक
श्रीमद्विष्णुसमर्पणमंत्रिवाशोवलनअह ॥ क
श्रीमद्विष्णुसमर्पणमंत्रिअनुरागसमर्पणसमर्पण
धरआह ॥ मिलिमलनीकामाललललललललललल
प्रापिकवणीकीविवणीसिवनह ॥ ७८ ॥

मालती चमेली की माला मलिके राखिके कथनिमं लाल
होतीसी गरी सखी गंधुह वणीचोटी पिकवनी कोकिलकंठी
गायका की सी जिवणीसी शोभुह चंदन श्वेत कर्ममलाल
निशोगाय चंदमा मुख तामं निशोचोटी श्याम नहेधीनिमं
अपह ॥ किंवा कहेन चंदीपुत्रीह चंदनरोसीसी आ श्रीरुप
सी हिरकह ऐसी सापिनह चोटीगुह सुधा चूबलीको फूल
की समता शसस सी मिलिके अनुराग रूप जो रसजल है
नासी मिलिके सरसआखी जो श्रोगारसकी धारा सी धारा
प्रवा की ओर होरी है ७८ ॥

(चंदीवणन) टी० ॥ चंदीवरणतसकलकविकेशव
ललितलललर ॥ भागसुहेमानरेशसम रविशोशिवदि
तउतर ७९ ॥

नरेश रात्र उतर चंड ७९ ॥

(द्विरभपणवणन) टी० ॥ मूगफूलश्रीरफूलसव
णफूलवनाव ॥ रूपभपणवणनितिन सरजयगटय
भाव ८० ॥

मूगफूलइत्यादि दीनिभपणह रूप सोह ॥ अपराजा लकी
अपानि बागह ॥ टी० ॥ किंवा चंडीको अथ मानी जगतमं सु
को प्रभाव प्रगटह ८० ॥

10月15日

मन्त्रोक्तिमन्त्रिणी देवदेवमन्त्रमन्त्रोदीपमानि

श्री २२ ॥

अनन्तर अंगदको भूषण धूर्तरी शूद्रवर्तिका कांची श्री
कश्यप देवोक्ति मन्त्र उद्गार सुन्दर श्री पद्मवी श्री नवैश्वर्य
काङ्क्ष करुण भूषण देवोक्ति कर्णभूषण वालिका वाला नील
वस्त्र धरति अंगकी जगमगायद्वाही है श्री दीपमाला अमा-
वसकी राति ताम्र जगमगाति है २२ ॥

(अंगदीपवर्णन) टी० ॥ कंचनकसरिकेतकीचप
लाचपकचर ॥ कमलकोशगोरोचना विषतनद्यति

अवतरति २१ ॥

कंचन आदि त्रिपक तनकीद्यति अवतार सो वारिषे तन
की द्युति सो वारिषे उपज है ८६ ॥

सर्वथा ॥ राधाकेअंगगोराईसोअंगोराईविंविं
जनवनिनी ॥ कमलवाहिविवेकसोएकअनेकविचार
निभंदादीनी ॥ वानिकतेसुवनीनवनवनकेशवप्रत्युत
होईहोनी । लोतकसहिकेतकीकंचनचपककेतलदीप
निकीनी १० ॥

श्रीगोविन्दके अंगकीगोराई समान विंविं प्रशाने और
गोराई वनदाईवकी कियालीनी प्रहलकरी वृद्धि श्री विवेकदा-
नसो एकमवकाकरिके उपजायके दगकी गतिदीनी ऐसे न
सगाइये नो दगदीनादेखाने दृषण ल्या दगदीनोसिक प्रिया
है तैली गोराई वनिवाय ऐसी वानिक वनव वन्या प्रत्युत
अथ वनव उद्गै नो कालस गोराई नदी मई वृषो नदी वनी
तत्र वाहीसो इतने वनव है ८० ॥

(गतिवर्णन) टी० ॥ राजदेसकलदेससमअतिगति

(संस्कृतमित्रवर्णन) टी० ॥ चंद्रकलाउदयमानकन
कलाजकारिण ॥ टीपादिवाञ्छाप्रियलता मालावाला
श्लो १३ ॥

उत्तं तारागण शोभाकाङ्क्षी शोषधोषी औ लताषी ३३ ॥
सुव्या ॥ तारासिंहादेतत्तारागणसंगश्चन्द्रकलानि
विचन्द्रकलापी । दामिनिसेविचन्द्रयामसमीपलानेन
द्वयमनमाललताषी । आधिक्योपधुसिकटिकेयव
कामकेशाममदीपादिवासी । सोनेकीसीकसीदूरमयने
लसुत्तरमउदरप्रभाषी १४ ॥

ज्यानि तारा नक्षत्र चंद्रमा के मंडल के नवदीक रहनेहै
तारी नक्षत्रको चंद्रमा कहैवत है सवादीप नक्षत्रको जब
संग रहै नव एकराधिकी संगहैवत है तारायन नाम चंद्रमा
की ताराहै अथनम परम किवा ताराहै अथनम पथम जाकी
काहें तो तारायन नाम चंद्रमा निके संगम ताराषी शोभ-
तिहै अचंद्रकलानिवासी चंद्रकलाषी तारीहै चंद्रमाकी कला
जाम ए गी निशु तो अमरावसकीनाम चंद्रकलाषी शोभतिहै
किशु पत्रयामकें समीप दामिनिहै पत्रयम म येव भी तमा-
पत्रय मदीपा जोहै पत्रयम शीकण्य निके तनयों लताषी
लताषीहै आदि मन्तकी दूख कामयों भयो तो मन्तकी दूख
तानी अपयहै किशु कामकें परम दीपकी शिखाहै दूरनेषी-
तानी सीकसी लताषीहै जब तायक के कौंखें दूख राखिउत्तरम
समूहैतहै नव उत्तरमदीम दूरसी शोभाषी संगहैवत है ३४ ॥

अथ ॥ महिमाहैतमाहैनीकेपमाहैमानीचरुपी । म
रतमरकीसिद्धिप्रमकीपदतिपरी ॥ जीवतमरिदिविचय
किशुनातीवामनकी । किशुनिचरकीद्विचरुमनिअम

(आदिउभक्त) टी० ॥ भवतीनवतीरतिरतिरति

वर्त भवति नदी पृथगे वा भवति ॥

अथरसोपपन्न ॥

अथरसोपपन्न ॥ अथरसोपपन्न ॥

(अथरसोपपन्न) टी० ॥ अथरसोपपन्न

इतिश्रीकविप्रयागविश्वनाथविश्वनाथविश्वनाथ

अथरस विरत ॥

वर्तद्वयमयः ॥

इतिश्रीकविप्रयागविश्वनाथविश्वनाथविश्वनाथ

अथरसोपपन्न ॥ अथरसोपपन्न ॥

टी० ॥ इतिश्रीकविप्रयागविश्वनाथविश्वनाथविश्वनाथ

किं कामसो वाकी इतिवाचि ॥

इतिश्रीकविप्रयागविश्वनाथविश्वनाथविश्वनाथ

अथरसोपपन्न ॥ अथरसोपपन्न ॥

अथरसोपपन्न ॥ अथरसोपपन्न ॥

अथरसोपपन्न ॥ अथरसोपपन्न ॥

अथरसोपपन्न ॥ अथरसोपपन्न ॥

अथरसोपपन्न ॥ अथरसोपपन्न ॥

अथरसोपपन्न ॥ अथरसोपपन्न ॥

अथरसोपपन्न ॥ अथरसोपपन्न ॥

अथरसोपपन्न ॥ अथरसोपपन्न ॥

अथरसोपपन्न ॥ अथरसोपपन्न ॥

अथरसोपपन्न ॥ अथरसोपपन्न ॥

अथरसोपपन्न ॥ अथरसोपपन्न ॥

अथरसोपपन्न ॥ अथरसोपपन्न ॥

उत्पन्नमस्तु ॥ अथ विष्णुसंहिता ।

॥ १ ॥

उत्पन्नमस्तु ॥ अथ विष्णुसंहिता ।

(अथ विष्णुसंहिता) ॥ १ ॥

उत्पन्नमस्तु ॥ अथ विष्णुसंहिता ।

(अथ विष्णुसंहिता) ॥ १ ॥

उत्पन्नमस्तु ॥ अथ विष्णुसंहिता ।

(अथ विष्णुसंहिता) ॥ १ ॥

उत्पन्नमस्तु ॥ अथ विष्णुसंहिता ।

॥ ३ ॥

विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ ३ ॥

॥ ४ ॥

विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ ४ ॥

॥ ५ ॥

विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ ५ ॥

॥ ६ ॥

विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ ६ ॥

॥ ७ ॥

विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ ७ ॥

॥ ८ ॥

विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ ८ ॥

॥ ९ ॥

विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ ९ ॥

॥ १० ॥

विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ १० ॥

(विप्रादंजमक) टी० ॥ निनदरिजकोमनदरयो

यामयामदंजवादि ॥ मनसवावाकरमया दुरिवानताव

निगदि १० ॥

हे यामन यामजोहे पुनरदम तासां वाहि दंखि हेरि सो
 यानता सां यानिक धौकरपययक ययकरिहे किंवा ताहि
 दुरिही न यानता सां यानिक अथ यनोहेरि १० ॥

(उत्तरदंजमक) टी० ॥ अर्जुनयोलिखिवनीजो

दिखलिकसंग ॥ ततोपितकालिकतरमिलिकयवकसव

अग ११ ॥

सर्वविषय अर्जुनसखा ताके संगकाजोहिहे हेतकानतक
 ययक तस्मिन्ने कययक अकल्पाके सवअंगसां छत्रोली छत्रि
 तायका की किंवा ययककी ११ ॥

(विप्रादंजमक) टी० ॥ दंखिप्रवालप्रवालहेरिमन

मनमयसभादि ॥ खलनिवदस्यदंरिगई निरिसुंदरी

दंरिनि १२ ॥

हेरिप्रवरण स नही और सवम जमक प्रवाल नवपरजव
 नाकोदंखि उदंरपनहे याते प्रवाल उत्तम जो ययका सो हेरि
 निव मनकरि मनमयकाससा रसअवयगसां लीनमई पहेरि
 की सुन्दरी जो दंरि कन्दरा ताम दंरिदंरि जमक १२ ॥

टी० ॥ परमानंदपरमानंददिविनिवउयकठ ॥ य

हेअवलप्रवालनिहेमनदरिदुरिककठ १३ ॥

सखीसां सखीवचन परमउल्लस आनन्दसां परकी मान
 सादरकी दंनवाल न कल्पा निहे दंखि न वनकी उपकण्ड
 ननदंरि कदंरि अजाली साअवयगसां विजलीनिहे तंगी
 नयक के मनकादुरिक दुरि अकल्पा निनक कण्डसां दंखि

॥ ०२ ॥

॥ ०१ ॥

॥ ०२ ॥

॥ ०३ ॥

॥ ०४ ॥

॥ ०५ ॥

॥ ०६ ॥

॥ ०७ ॥

॥ ०८ ॥

॥ ०९ ॥

॥ १० ॥

॥ ११ ॥

॥ १२ ॥

॥ ७८ ॥
॥ ७९ ॥

॥ ८० ॥
॥ ८१ ॥

॥ ८२ ॥
॥ ८३ ॥

॥ ८४ ॥
॥ ८५ ॥

॥ ८६ ॥
॥ ८७ ॥

॥ ८८ ॥
॥ ८९ ॥

॥ ९० ॥
॥ ९१ ॥

॥ ९२ ॥
॥ ९३ ॥

॥ ९४ ॥

[illegible]

॥ ३५ ॥

[illegible]

॥ ७६ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ =८ ११७३ पु।ह. ह.क। डे पु।पु.म.र.क।ह.

[illegible]

रावर्द्धी ॥ समाप्तमार्गवर्द्धी । विष्णुसामवर्द्धी २ = ॥

ደብዳቤዬ ፡ ያገኘዋልበደብዳቤዬ ፡፡ ይገባሉ፡፡

॥ ଗ୧ ଶତକେ ପାଞ୍ଚ ପଞ୍ଚାଶ

[illegible]

श्री० ॥ श्रीकठस्वामिकृतसप्तवृंशत्तमः ॥
श्रीकठस्वामिकृतसप्तवृंशत्तमः ३१ ॥

३३ ॥

मन्त्राः ॥ इत्युक्तं यत्प्रमाणम् अथानेकै
यस्यैव। त्रिभिर्भूतैश्चैव प्रमाणैश्चैव
अथानेकैश्चैव प्रमाणैश्चैव अस्यैव।
अथानेकैश्चैव प्रमाणैश्चैव अस्यैव।
अथानेकैश्चैव प्रमाणैश्चैव अस्यैव।

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

11 11 11 11 11

[illegible]

(अन्यथाप्यथा) चापि ॥ तत्रैवमिति तदर्थः ॥
 तदिह । तद्वैकर्मिककथायामिति ॥ तद्वैकर्मिककथायामिति ॥
 मालाति । मालाति । मालाति । मालाति ॥ ३३ ॥

[illegible]

221

[illegible]

॥ १ ॥

(मार्गान्तर) टी० ॥ पूर्ववत्प्रमाणानुसारं ॥
उपश्रव्य ॥ कतिपयकालिनस्त्विति वाच्यं ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

(३२५१-६) टी० ॥ समाप्तमार्गसिद्धिरिति

विष्णुनाम ॥ अमादयस्तुतस्तु वाक्यमासाम ११ ॥

॥ १० ॥

[illegible]

॥ ८६ ॥

[illegible]

(१) (२) (३) (४) (५) (६) (७) (८) (९) (१०)

॥ १ ॥
 ॥ २ ॥
 ॥ ३ ॥
 ॥ ४ ॥
 ॥ ५ ॥
 ॥ ६ ॥
 ॥ ७ ॥
 ॥ ८ ॥
 ॥ ९ ॥
 ॥ १० ॥
 ॥ ११ ॥
 ॥ १२ ॥
 ॥ १३ ॥
 ॥ १४ ॥
 ॥ १५ ॥
 ॥ १६ ॥
 ॥ १७ ॥
 ॥ १८ ॥
 ॥ १९ ॥
 ॥ २० ॥
 ॥ २१ ॥
 ॥ २२ ॥
 ॥ २३ ॥
 ॥ २४ ॥
 ॥ २५ ॥
 ॥ २६ ॥
 ॥ २७ ॥
 ॥ २८ ॥
 ॥ २९ ॥
 ॥ ३० ॥
 ॥ ३१ ॥
 ॥ ३२ ॥
 ॥ ३३ ॥
 ॥ ३४ ॥
 ॥ ३५ ॥
 ॥ ३६ ॥
 ॥ ३७ ॥
 ॥ ३८ ॥
 ॥ ३९ ॥
 ॥ ४० ॥
 ॥ ४१ ॥
 ॥ ४२ ॥
 ॥ ४३ ॥
 ॥ ४४ ॥
 ॥ ४५ ॥
 ॥ ४६ ॥
 ॥ ४७ ॥
 ॥ ४८ ॥
 ॥ ४९ ॥
 ॥ ५० ॥
 ॥ ५१ ॥
 ॥ ५२ ॥
 ॥ ५३ ॥
 ॥ ५४ ॥
 ॥ ५५ ॥
 ॥ ५६ ॥
 ॥ ५७ ॥
 ॥ ५८ ॥
 ॥ ५९ ॥
 ॥ ६० ॥
 ॥ ६१ ॥
 ॥ ६२ ॥
 ॥ ६३ ॥
 ॥ ६४ ॥
 ॥ ६५ ॥
 ॥ ६६ ॥
 ॥ ६७ ॥
 ॥ ६८ ॥
 ॥ ६९ ॥
 ॥ ७० ॥
 ॥ ७१ ॥
 ॥ ७२ ॥
 ॥ ७३ ॥
 ॥ ७४ ॥
 ॥ ७५ ॥
 ॥ ७६ ॥
 ॥ ७७ ॥
 ॥ ७८ ॥
 ॥ ७९ ॥
 ॥ ८० ॥
 ॥ ८१ ॥
 ॥ ८२ ॥
 ॥ ८३ ॥
 ॥ ८४ ॥
 ॥ ८५ ॥
 ॥ ८६ ॥
 ॥ ८७ ॥
 ॥ ८८ ॥
 ॥ ८९ ॥
 ॥ ९० ॥
 ॥ ९१ ॥
 ॥ ९२ ॥
 ॥ ९३ ॥
 ॥ ९४ ॥
 ॥ ९५ ॥
 ॥ ९६ ॥
 ॥ ९७ ॥
 ॥ ९८ ॥
 ॥ ९९ ॥
 ॥ १०० ॥

(अथवाङ्मयश्चर) टी० ॥ अथवाङ्मयश्चरश्चेति

मार्गिक शब्द सधुसं माया इति विद्वत् श्री राम भगवान्
टी० इति काङ्क्षे इत्येव विद्वत् उक्तं गुरु इति वाको भगवान् कति
कदा एवम् अथ श्री गान्धर्व १६ ॥

एवमथ १९ ॥

(अथवाङ्मयश्चर) टी० ॥ इति इत्येवमथि-द्वि
ममथकमथिनाथ ॥ लोकपवित्रलयाख्यपरमरुद्रव्य

नद्विती श्री भरे कवर्गिक ककार गकार २ चवर्गिक चकार
ककार २ टवर्गिक टकार डकार २ तवर्ग पञ्च पवर्गिक चारि पुनि
की टार फीन है यजुमति इहां यकार है श्री शोकार लालय
गानिथ एक लकार वकार सकार पकार इकार गानिथ १८ ॥

मथ १८

(अथवाङ्मयश्चर) टी० ॥ मथवाङ्मयमथिनाथ
मथवाङ्मयमथिनाथ ॥ मथवाङ्मयमथिनाथ पठेकवनके
मथवाङ्मयमथिनाथ १७ ॥

मथवाङ्मयमथिनाथ १७ ॥ मथवाङ्मयमथिनाथ १७ ॥
मथवाङ्मयमथिनाथ १७ ॥ मथवाङ्मयमथिनाथ १७ ॥
मथवाङ्मयमथिनाथ १७ ॥ मथवाङ्मयमथिनाथ १७ ॥

मथवाङ्मयमथिनाथ १७ ॥

(अथवाङ्मयश्चर) टी० ॥ अथवाङ्मयश्चरश्चेति

मथवाङ्मयमथिनाथ १७ ॥ मथवाङ्मयमथिनाथ १७ ॥
मथवाङ्मयमथिनाथ १७ ॥ मथवाङ्मयमथिनाथ १७ ॥
मथवाङ्मयमथिनाथ १७ ॥ मथवाङ्मयमथिनाथ १७ ॥
मथवाङ्मयमथिनाथ १७ ॥ मथवाङ्मयमथिनाथ १७ ॥

युकोलकेद्वय ॥ तैसेअवडिखकटिवालि करमफन्ददंड
नाथ २० ॥

हे नाथ जैसे वृम सब जगत को राखै काल यम लोक
द्वयः दिव तेसे वृम सब दुखको काटी हे बलि कर्म के फल
वधनको काटी २० ॥

(अथवीसअक्षर) टी० ॥ धकेनगतसमभयस
बनिपटपुण्यपुकारि ॥ मेरेमनवेचुभिरहे मजुमदुनमुर
होति २१ ॥

कोई बजदेवीको वचन पुण्यको पुकारि कहिकरि परप-
तिमो प्रीतिकरनी पुण्य विरज है मुर दुखके हरनवाले मा-
रनवाले बुभिरहे गहिरहे २१ ॥

(अथउत्तमिअक्षर) टी० ॥ कोजानैकोकहिगयो
धासिपहवात ॥ करीजिमाखनचोरिवालि उठनवडेपर
भात २२ ॥

हे बलि वडे परमात उठतकै विन्दारे घर श्रीकण्ठ माख-
नचोरि करी २२ ॥

(अथअठारहअक्षर) टी० ॥ यतनजमायोनेहेतके
फूलतनन्दकमर ॥ खण्डतकमकतजानअव कपटकटी
रकठार २३ ॥

कोई बजदेवीकोवचन नायकसोहेनदकमर वृमयतनसो
हमारे देवयस नेहको दुख उपजायो सो फूलत है ताहि समय
कपट सडै कठारे कठार कुलहाडा तासो अव खंडतही काट-
तही सो जान जाहे जाँच ताको अव कसकत है २३ ॥

(अथसत्रहअक्षर) टी० ॥ बालापनगोरसहेवडे

नयानिमित्तम् ॥ निमित्तकथनद्विरुद्धं जनानिमतम्
निम्न २३ ॥

नानकानां नयान् कथयन् वालपयन् गौरवचरे वरं
यत् निवर्तते निमित्तं लोकोत्तरं वरको ह्येतां वो गुप्तं निवर्तते
नदी निम्न २४ ॥

(अथमन्त्रद्वयम्) टी० ॥ त्रिमन्त्रधरमन्त्रतन्त्र
त्रिमन्त्रधरमन्त्रतन्त्र ॥ त्रिमन्त्रधरमन्त्रतन्त्र
द्वैतद्वैत २५ ॥

हे वाल गुप्तं गुप्तं नाम भोक्ता सो पराधिका वरं परं गुप्तं
यत् भोक्तासु मन्त्रावर्तते त्रिमन्त्रधरमन्त्रतन्त्रं वरं को
द्वैतं नदीं सक्तं वालमन्त्रं काकको अधुक्ते द्वैतानामन्त्रादोपदेश
कथय की मन्त्रावर्तते २५ ॥

(अथपञ्चद्वयम्) टी० ॥ त्रिमन्त्रधरमन्त्रतन्त्र
लवमन्त्र ॥ त्रिमन्त्रधरमन्त्रतन्त्रं द्वैतकथनमन्त्र २६ ॥
सर्वं वचनं सर्वान् सान् सान् सान् सान् सान् सान् सान् सान्
लोचनं वं निम्न २६ ॥

(अथचौद्वयम्) टी० ॥ त्रिमन्त्रधरमन्त्रतन्त्र
द्वैतकथनम् ॥ त्रिमन्त्रधरमन्त्रतन्त्रं द्वैतकथनम् २७ ॥
नानकानां वचनं त्रिमन्त्रधरमन्त्रतन्त्रं नानकानां त्रिमन्त्रधरमन्त्रतन्त्रं
द्वैतकथनं द्वैतकथनं त्रिमन्त्रधरमन्त्रतन्त्रं त्रिमन्त्रधरमन्त्रतन्त्रं त्रिमन्त्रधरमन्त्रतन्त्रं
नदी नानकानां वचनं वरं वरं २७ ॥

(अथत्रैद्वयम्) टी० ॥ त्रिमन्त्रधरमन्त्रतन्त्र
नदी नानकानां वरं वरं २८ ॥

पर्युक्तो कदा मने मृगो अने निराकरो मं सहेवा-
 विने वनिके वनव करिके वने वनिके मं फिरे किवा वन
 मं फिरे २८ ॥

(अथवतरद्वैत) टी० ॥ काहुँवरिनिकहेनीति
 गयोसनेह ॥ तारेतेनदीकहेकहेअवनेह २९ ॥

सखीसां वायुका को वचन सखीन पाहेन मनवन किया
 हे न प्रीति मनकर जीव मं नेह वीरियाया जागियाया सदीप-
 वन अब लेह विरहेको हल भोगकरो २९ ॥

(अथपारद्वैत) टी० ॥ कयोवसहेकाविरो
 विसरीगालकरान ॥ मुखदेखीलेमुकरकर करीकलेया

लान ३० ॥

हे गोकुलराज गोकुल मं योगसरतही काहिदेकी व मो हे
 श्रुपथ सब गुप्तहे विसरी होथमं मुकुट दंपुल्लोक आपना मय
 देखी रातिके चिहलजाहे राजको विस कलेवाकरी विहानहीक
 पहर खायगये ३० ॥

(अथदशैत) टी० ॥ जेवाकोमनमानिकहे
 कतकाहुँपूजात ॥ जवकोउजियजानिहे तवकहेकाउ

वात ३१ ॥

वा वायुकाको मन सोहे हे मानिक वाको लोके कन यथा
 तवकै ताससुकी कौन वात काहेवकोहे क्या कहै गुहरीदांप
 छुवै सो कहौ सखी कहतिहे इहां मणिको एकार दयार् को हे
 वाको लोके दय वलुभय ३१ ॥

(अथनवअक्षर) टी० ॥ चंचुनिचुआआनाना
 कोकरिजियजोर ॥ सोऊजोवरिजयकसुनिचयकर ३२ ॥
 आगरको गण समूह वाको चंचुलो चुगहे विन चंदमाको

(अथ अतिशयः) सं० ॥ नानानवहिनकृत्कमल
नानानवहिनकृत्कमल ॥ ३॥

(अथसामञ्जस) टी० ॥ रामकामवशविकल्पे
वृत्तकामवशविवि ॥ रामकामवशविकल्पे

1183 E. 1112

श्रीराजजीने कामकी श्री महादेवकी वयाकिये विजयदेवता
 वाकें कायें सिद्धकारिक देवताकें कायें साधें शिव राजा मयें
 यहु अर्थ कामसां घुंहर जा श्रीराजजी निजकी वज्रसां वया
 करे श्रीराजजीने आराधनकारिकें सेवाकारिकें करुं पाउहैं ।
 राजा कामसगुणिकरे । श्रीराजजीने शिव कारिये कलयाण
 सां कलयाण गुण सब काम किये ३८ ॥

॥ १६ ॥ अथ श्रीगणेशस्तोत्रम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible][illegible]

सर्वी करि मित्राणि चारुनिरे राशि न. यकावचन कमल
नेम ती वाचक निनके नेमती निनकी सुख. रेनिवकी पद
भावाय रेमारे नेमनिकीकीनोकासह कर्हि काम नदी. यरेमय

सकामजोहै रयामसो कौन कौनसो नियमकरि प्रतिज्ञाकरिके
वा नायकासों स भवय मित्रों जो ऐसी प्रतिज्ञा नासों नही
मिले यह अर्थ किवा नियमकरिके हेमारे आगे प्रतिज्ञाकरिके
हेम तुमहीसों मिलेगे औरसों नही ऐसी प्रतिज्ञाकरिके कौन
कौन नायकासों न मिले अनेक नायकनसों मिले याते उनके
वचनको विवश नही ३६ ॥

(अथवारिअधर) टी० ॥ वनमालिवनमालिव
नीनलिनवनमाल ॥ नीनमालिमनमनमाली वनमालि
लीनवाल ३७ ॥

सखीसों सखीको वचन वनमाली श्रीकृष्ण जोहैं सो या
नायकाको वनमें मिले भेटभया आका नलिन कमल नाकी
माला औ वनके फूलकीमाला वनीहैं फरीहैं आपने मनकरि
नायकके मनसों मिली दोऊ राजी भये ऐसी देखिवेस अथ
वैनिकरि वचन करिके वाला नही मिली ३७ ॥

(अथनीनिअधर) टी० ॥ लालालालालालालाल
लालालालालाल ॥ लालालालालाल लालालालालाल
पाल ३८ ॥

सखीको वचन सखीसों नायकने जान्यो हेमनों हेमनों
लालालालालाल हेमारी इनकी लालालालाल हे लकार रूप एक है
लाली याकी अर्थ राजी याकी गलीमें लिलवाय राजी
ऐसी लाग मनमें लूके लाल कहिये लार लार नाम संगको है
वाललूके संगलगे देवयुगले गाए गापी गोललगे और भई
नव नायकाने कहा है गापाल हेमारी प्रणामहै नव मिलवा
नही वनै किंवा कोई बहिरंग सखी संगमें है लाली नायका
कहेतिहैं सो या वान और सखीसों और सखी कहेतिहैं जो
संभाजी ली नायक एकदिवेही याते लालालालाल कलिके ३८

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

॥ ४६ शुभशुभशुभशुभ । शुभशुभशुभशुभ ॥ शुभशुभ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

एवञ्चान्नं त्रैलोक्ये तान् शैलान् कश्चिद्विषया दृश्यमानो वाक्

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

በግልጽ ሲታዩት በሀገር ውስጥ የሚኖሩትን ህዝቦች እና የሚከተሉትን አካላት ተመለከቱ፡

11 35 1212 EH 1112 EH 1222
H 1222 EH 1112 EH 222 1 1222 1412 1112 1112

|| 〇 (五五五五五五)

॥ १० ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

11.68.1515

॥ ०२ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

1951年12月

विकल्प को अधर वा पद है यवनी कौन अंगमें रहति है
वा सहति मकारलिपु वामभागमें बाको छुई छुडिजे तमन
मवसति है वलिको कौन नखयो उत्तरवाहरसो दियो वामन ४४ ॥

(अन्तर्लिपिका) टी० ॥ कौन जाति सति सति
इकौन कहति ॥ कौन यन् यवरोप्योदरी रामायण अथ
टीत ४५ ॥

रामायण उत्तर सीतासती कौन जाति है रामा खोहे तात
जनकजीने कौनको दीनी रामाय रामको कौन यथस सीता-
हरण वरयो है रामायण में अवदात गुह उज्ज्वल ४५ ॥

(अथ गौतम) टी० ॥ उत्तरजाको अति उत्तरयो
टीजके यो दास ॥ गौतमरतासा कहत वरणतवुद्धि
लास ४६ ॥

गौं गुप्त है उत्तर जाको ४६ ॥

सवैया ॥ नखतो शिखलसिखदं कस्य गारस्य गारनकेयो
वपकवच्यो । पहरायमनोहरहरिहोपपमानसमहंस
गन्धसच्यो ॥ दरशायसिरीकरदं पुणलैकपिकुनरच्यो
हुनिचनच्यो । सखिपानखवावतहुँ कहिकारणकोपाप
यापनिनारिच्यो ४७ ॥

सुख है राजी करिके शृंगारि पिय जो बाको नायक माने
सुगंध सच्यो अंगनिमें राख्यो लगायो यह अर्थ कोप पियापर
नायकपर कयो नारिने रच्यो इह उत्तर पर नारिसो रच्यो है
अवृत्तकत है पानखवावत में इत्यादि आयो नादिन नायकके
पलकपर पानकी पुकलगी मुखदिगुसो पहिले नही नजरिमें
आयो किंवा मुखिगई कुंजर हथीको लखो आगे रच्यो पाते
किंवा पानको नागर खल है वह खली जतासो कामल जो ना-

कीं प्रवृत्तये न कतिमान् ॥ अत्रिंशत्तरेषु संप्रदिष्टे
वृत्तवर्णानि ५१ ॥

आठ गुण ५० समस्त मित्याह द्यस्त अंश ५१ ॥

षट्पद ॥ कदापि सज्जनकवतकदापि नापि संहित ।
कदापि सकोनामकवितमदिकद्विपतकाहित ॥ कोट्या
जगत्सिद्धिकदाशतलगावत । काव्यसफाकदतकदा
संपादितवान् ॥ कदिकद्विद्विजकपरकपन्यादि
तकद्विपत । इदं उत्तरकथावर्तमानं सवेजानयोगा
धरन् ५२ ॥

उत्तर सवे जगत योगाधरन अतको अक्षर नकारहं तां
आदि के अक्षर एक मित्रादय फेरि छविषं कृतं ब्रिजेश सो
जानिये सनवैत वांछुं जग धन गन मगन आदि नन शरीर
क्षेत्र वाचवाग सोन कपूर आदि भान सूर्य धन शूर न आ-
दि म अतकालम कौन शूरन है सब जगत में वीनिहं लोकम
दिवा वीनिहं लोककी योगाको जो धारण करतवाले श्रीकृष्ण
सो शूरण रक्षक है समस्तका अक्षर कविके उत्तरविष ५३ ॥

दी० ॥ निम्न आदिके वरुण साकेय वकवि उवाच ॥ ३
सरं प्रवृत्त सप्तमसो साकारक अर्जुनार ५३ ॥

आदि के वृत्तों उवाच कवि सो व्यस्त समस्त साकार
की भरह ५३ ॥

षट्पद ॥ कौश्या अक्षरकौन पवति योगनवयोगीनि ।
विजयासिद्धिं योगमया सकदकौनोर्वा ॥ कंभरा नयन
योगसज्जनकथावर् ॥ इदं साकेद्विपकदा नाम जगद्वि
पनेउर ॥ कदिकान जगन जगनातकोकमलनयनमं

भवति । भूतिवद्वर्णनमेकदो मनकादिकोकरत
रति ५४ ॥

शोक तलति यह उत्तर है अम आलस कोन है संमुखवाच
हरे कोन पुत्रो को तको बाधा नहै शूर ताने अशोक है
शोक शोक को निमग है याने पुत्रो कहो राम परशुराम शोक
मोक्ष कश्यप पर मयुर ताम्र कंसक राजस यहवयो कंस ध
शोकत राम युक्त वट वेशको नाम शोक तत संशम धारा
कारके हमसो वरणी जगत की जननी कोन है कमल से जाके
नवहै ऐसी कं शोकको तकली पावो मनकादिकनन वेदपु-
राणिनि कहै है ५४ ॥

कवि ॥ कोलकोहै यो धीर धीर धाम हिन मरि के
हिमनवद्वर्णनवसो । याचै कहै जगजगदीशपुके
शोभाभावाकनिसमपदगीतश्रुमरसो ॥ जवअंगअ
वदंतजगजगतीसकदो कोनकुंठामानवानेनहै नव
सो । वामग्रामनैरि कहै देवकामपरिकरि मोहै रामकोनसो
संयामक्यलवसो ५५ ॥

क्य लववा यह उत्तर है धाम हिन धम के लिये धीरजय
रि कोल शोकतम मगवानकी कहै कष्टयो वलदेवजी जोरके
यव भूषा भूतपुत्राधिक कोन अखसो नैमिषारणस मारयो
क्ये यवापक संसार जो सो जगदीश मगवान सो कहो म-
गत है क्यत कलवाण अम वर वर अमसो रामायणके पद
क गीत कोनन गयो रामायण गीत यह सो पद है यवस
अप क्ये लवन गयो यय करिके जाके अवनन अह अग
ह वनको पंडितनको जगतके कुंठान कोन वान कहो क्ये लव
सो यवपरी रामायण मगवान सो कहो यो

वनवास कराया संश्राम में और मज्जा कीनसां माँहें आश्रय
मान्या कुशलवर्सा ५५ ॥

दो० ॥ एक एक तब निवराण की गृह गवराण चारि ॥
उत्तर उपर तग तग निनि एक समस्त निहारि ५६ ॥

एक एक आखरा की ओड़त जाय दू सरसां भिजवती जाय
जुड़ा जुड़ा उत्तर निकरूँ सां उपर तग आगत गाहीत रह पीछे
को हिरूँ संपूर्ण सो उत्तर सां समस्त ५६ ॥

कवि स ॥ कहे रस कुसुम डूल क कहि पात पट डोल के गो
दास को नयो मयुस मयोजन । भोगि को भोग वन को न
गन भोग वन जीत को पती नि को न है प्रणाम के वरन ॥ कवि
कहे स म को न युवती भोजन जग गाव कहे गायिका कहि मरे
है मुजंगन । कोहे माँहै पय कहे करै न पात पट डोल जी
वसत कहि न वरग रय मन ५७ ॥

उत्तर न वरग रय मन के केत न रस है नवल का और वन धर
न कुसुम जीनी न कर को छड़यो वकार को आगिल रेक सां नि-
लाया वर वन सां लीनी यह वस्तु जुड़ा जुड़ा है आ गत गत एक
पूछि ला अक्षर गया आगिल अक्षर आया काहे सां कपड़ा पी-
त होत है रंग सां मसा में को न सो से है गत गत वी प्रकृ
नहीं सो मसा को सुख नि को को न सो से है रय सरदार
भोग वन और भोग वन के भक्त को न को गत है यम यम भक्त है
यति यो गति न को न को जति यो मन को प्रणाम करव क वराण
अक्षर को न है नम नमस्कार युधिष्ठिर को मसा को न न वन है
उपर आगत पूछि को कियो यात मय विवक मसा को पय अक्षर
है जरा वृद्धाई रंग गावत है भुजग सपुके मन कहि मरे गत
विषम है वह को न है जो पशु है रन आ सपु लोको सो है न
करत है रथोद न पय वी न पय वी कहा करत है वन न डर

नीत कही गहत है समस्तही उत्तर गवताराय मन नयरा
राय के मनमें ५७ ॥

श्री० ॥ कयवदसिचरकी भवपदरयआन ॥
उत्तरअनसमतकी गुणतानान ५८ ॥

पदकी अर्थ भिन्नहैय दंगवार व्यक्त उत्तरलंगी दोषवार
समत उत्तरलंगी लोको उदाहरण पहिले ५८ ॥

सङ्ग ॥ दंगानिसीपरसीपरमानकी वातसंगानक
दोकाहियेनय । मपानिसीउपदेशकहिकपमलेकहि
नीतिनय ॥ आपुविषुनिसीक्याकाहियेनकाहिये
श्रितिपलनिकेशय । न्यायकबोल्याकहियमकयवकेश
दिसयकरानमय ५९ ॥

उत्तर गवतअय दही यकार जकार एकहै यासी विजयंग
नही दंगानो कही कहिये जनपर श्रुतिही कहीकाहिये नम तुम
नयमय अवतरी परवरी नही करीग परमानकी वातसो मय
गनीगानई वात मपानिसी उपदेश जयकरी नीतिकरी यह
सुधा व्यक्तलंगी अब उलटी व्यक्तकहि कही काहिसो कय
मला लागनहै यन कहिये दान नासा । भवदरितनिमयाश्रीम
नगानिगविसयउपदेशाधिकृतनाअर्थ याचककी दानदेन सपान
गदहै लोकी ऐस न परस शोभत है जो नीतिकी नजोती क-
हिकी अयकही कीनसा मय उपजे यम यमसा आपन विषय
के लंग है ली पूज भाई वध नासा क्यकारि कहिये यासिय
मन मोनसा दोषके परमहैयक कहियेवाति है फलानकी सोम
दितहै कीन यनमय जिग श्रितिपलनकी नयोहीत है नय
नीति जिग जनक जकारनकी मकरपदयो ऐस जयक जकार
की पापीकी न्यायकारिक जमकही बोल्या न जनमजयहै जन
नोम नासा न कपान है उत्तरजन है दूखदेन है किवा दूख

द्विष्ये यद्विष्ये एकवारं समस्तलया इत्येति कति समस्तलया
कूकी अधु कोनने अधिमध्यक्ष किंवा सपुनिको होम्या उत्तर
जनमेजय राजपुत्रिण के पुत्र ५९ ॥

वर्तुः पदं ॥ कथं यद्विष्ये मयुहं यो यमकद्विपलद्वेन यम
न । कद्विपलकोनोद्वेन नोद्वेन कद्विपलान्न ॥ कद्वि
वसतसुखसिद्धकविनकौतिकद्विपलान्न । किद्विपलान्न
पुमानकद्विपलान्न कथं यद्विपलान्न ५० ॥

इहां अंतकी आरंभ उत्तर एतना बोध पाहेला कविप्रिया
उत्तर नव ययुकिरु मयुहं यको भगवानने मारयो यरकद्विष्य
वसतसु मयुके मयुके यम किद्विपलान्न पण्डित है पण्डित
होय उपज रस अर्जुनगर्भ अथ संधा कमलको घर फल है
सर सरोवर सुग हरिणके गण समूह कदा भुवनके मोहित
होत है रज्योदय गायक वयुकरत है सुखसा सिद्धकदा कोन
कोनठोरसु वसत है वनवन म कविनकौतिक है कोनको यर-
पत है समस्त नवरस नवरस कोनने पिता माताको सेवन
किंवा कोरि समस्तनवरस आका द्यौरध्वजानमरयो ताने ५०
मोरठा ॥ कठवसतकोसातकोककद्विपलान्न ॥
कोकद्विपलान्न कोकामाहितमरतसु ५१ ॥

उत्तर पुरतक सुकठम कोनवसत है उत्तर पुर निगद्विपलान्न
आदिमो बाधे तो पुर निकर अंतसा बाधे तो पुरनिकर एष
जानिय कोकामाहितमरतसु कदा कद्वेन पुरत आ पुर
जानिय पुरद्वेनान के तान दयापान जगद्विपल वद्वेनदया की-
जिय हैमम कदा है जगद्विपल वद्वेनदया कोनिय सो जानक-
होय पुरतकद्विष्य कद्विपलान्न वद्वेनदया पुरत
है किंवा पुरतान पुरद्वेनान के तान पिता कद्विपलान्न कद्वि
कद्विष्य पुरतक यको अधु पुर अधु कोनको हित कोन है पुर
नरस ५१ ॥

उत्तर वर्ग न पान्या जान कनि चारु भिंदर विवाहादि क
 लिय चोक्त कर्वा नही प्रयो उत्तर वर्गनि अवर्द्धाभ्यवर्ति नही
 है कर्पना पानी ठाही रूई चलावतही ताम्र माटीकी धरीला-
 गा रूतिवही सो नही है औ घरम धरियार वांयो राली वर्ग
 कटाही जो पानी में डूँडें सो नही यह तैनि शोसनको ज-
 वाय एतही य वर्ग नही करि मोतीको मोलकरो उत्तर पान्या
 नही मोतीमें पानी समक नही है खड तारवारको खाली म्या-
 नन निकालि पान्या पानिप नही है कवाखालि किवा पाननाम
 मोरको भी है न योज्य खडम काटी सोम पानिप जोर नही
 है करि चर भूष भवान किवा चर भूष जोई निचोखिच शय

जानकवि ६४ ॥
 कलद्विजानद्वि । तवउत्तरकथवदासदिषधरीनपान्या
 वचनलयावलेकका ॥ इककहेतमधैकरयादिकहेरदोस
 दानदभैरकंदगानावरकको । जानमवाधिवधामधा
 मिकमालकरिखई गवालिमिचिहिनचोखवर ॥ इयक
 पटपट ॥ चौकचोकरिकपटाकेविरियराविधर ।
 चर ६३ ॥

तैनि तैनि आडा को एक एक उत्तर होव सो शोसनो
 जानि ६३ ॥
 हिउत्तरजानि ॥ शोसनउत्तरकहेतही वृधजनताहिब
 (शोसनोत्तर) टी० ॥ तैनितीनिशोसननिकोएक
 सो गालिये तो वहीअर्थ निकरे ६२ ॥

टी० उत्तरव्यस्त समस्तसो समस्तसो ईश्वरे गवागव
 मया उजटा आदिं सो तो गालिये तो वही अर्थ निकरे अन्त
 एकादिअर्थमधूमनिकथवदसवखानि ६२ ॥
 टी० ॥ उत्तरव्यस्तसमस्तकोवो गवागतजानि ॥

न ॥ इति विविधप्रश्नोत्तरसमाप्तकहेसुविदितवान् ३५ ॥
(प्रश्नोत्तर) टी० ॥ जोई आखरप्रश्नकहेउत्तरजो

समा सो दीवरेतो किंवा सकल संपूर्ण समा जानिये ३६ ॥
एक कहने मयकरयोइसो प्रश्नकिंवा तब सकल जो दीवान
शुक्कको नाम है सो अष्टि के गुण है उ-हे अष्टि यमदेन है
नही विवक्ष्य नही ते लोकाको धन लयाव कवि नही कवि
वातस प्रवाण सो विवक्ष्य स मंदिरके संस्कारकरिसं कवि
मायापूहे कवि नही हेमस कवि नाम विवक्ष्यकोहे जो सब
सुधिकारी मंदिर वनावहे तब मंदिरको संस्कारकरहे तब प्रा-
व जानिवेको कवीवरको काम है शिवके धाम परको धाम
संवासी आठ सारिवक ताको ते जान उत्तर स कवि नही मा-
है जान नही जोर नही यह अधूरीनि भये करि भववर्तिस
जोर नाम जीवको भी है हमारे बोझ उठइवेको जीव नही
रिहारी ऐसे गुणको गावो कहो जान नही जाननाम जोरको
बवान ताको जो गुण कियासोसो कोइ कुरवोले ताको पश-
मलया । एक नाम कण्ठको श्री मलको एक जो मल पद-
प्रकीर्णता नही गुणगव एकको याको अधू हैम । एक कण्ठ
तरहे वोलयो उत्तर जाननही स प्रवाण नही सोम देवनी
मारिचने श्रीलक्ष्मणजीसो स्वरको दंगाकिंवा श्रीरामजी की
दंगाकी दंड दंगाको भी नाम है फलाना दंड करिगयो जेस
तकी तरहे गानिस वोल गये अब नवदंड आने तब दंड
को स्वरकी को अधूको स्वरको दंड दंगादेइ गयेको वाकहे-
सुरदेइ तैसो वोलो यह अधू किंवा सुर कियेको अधू सुर कट
को पांव लगारहे करि ऊकहेभामिस आपनो दंड दंडो तैसो
वोलो ताको कुरवो जान जाव नहीहे मरे नही किंवा जोरा
ताको सीयो पानीयो पानी नही है नीनिभये करि यह जोर

श्लो० ॥ कोटं ड्याहं मुमदको कुमारेतिवत् ॥ को

कटिमुद्राद्योतरेलीकामलमनकोसत् ६६ ॥

को कोन मुमद ड्याहं है जा बेगानिषां डंडवत है जो
मुमदको डंड धरुको राखत है को कुमार राखत कोन को-
मार मुमद पर पुरुष रतिवत् है जो विषयक प्रीतिपुत्र है कोक
शोख और विक्राम डंडविषयक जाको रति है प्रीति है को कोन
को शोखत है को कहेय है है मित्र कोकहि चकवाको शोखत
है को कहेय है है सन्त कोमल मनको कोन है उत्तर कोमल
मनको ड्यालुमनको सन्त साधुजन है ६६ ॥

श्लो० ॥ कालिकाहिपुत्रे श्रीकोकिलकंठहरीको ॥ को

कटिमुद्राकामसदकालिकहैलीक ६७ ॥

है श्री कालि त्रै कालि कोनकोपुत्र कालिका जो भवानी
है लालिको कोन किल निवचय केनही करिके नीक अच्छा है
उत्तर कंठकरिके कोकिल नीक अच्छा है रूपकरिके नीकनही
है सदाकामको कोनको कहेय है मित्र कोक चकवाको कामी
कहेय सदा जोरां रहत है काली ड्यामलीक निशानी की
है कालीलीक कलकहै ६७ ॥

(गतागतपद्या) श्लो० ॥ सुधाउलटेवाचिष्येअरिहि

अरिहिअधु॥ एकसुधाधुमसुकविप्रगटतहोयसमर्थ६८ ॥

एकही अधु निकरे ६८ ॥

श्लो० ॥ सुधाउलटेवाचिष्येअरिहिअधुप्रमान ॥ कहे

तगतगतत॥ हिकविकथवदसमुमान ६९ ॥

सुधावाचि और अधु उलटे वाचि और अधु ६९ ॥

(पद्या) सुधा ॥ मासमसुहसनेवनवीनवनजे

सहसोमसमा । मारलनानिवनवविमरिसाविमना

वर्तितलरमा ॥ मानवहिरहिरमरुतमोदमोदमोदमोदिर
होवनमा । मालवनवलिकयवदामसदवयकितवन

बलमा ७० ॥

नायकके पक्षकी सखीको वचन नायकासँ नै मा लक्ष्मी
सम शोभातिहँ करि नैसज्जहँ सौतिनसँ जाति उत्कण्ठ पाया
हँ नाहिँ सहित हँ वनसँ धीना नवीनरीतिषाँ वज्र वजायक
पुसितरहँ तेरीसाँति काडँ नहीँ वजायसकँ जूषाँ तेरे हाथसँ
वज्र हँ यह उत्कण्ठ किंवा हँ वनवनी दुलही नवीनरीति की
धीना वजायकँ नै आपनै प्रियकी सज्जकार हँ उत्कण्ठ सहित
करत हँ नायका कहतहँ हँमारीसँ नायका आरु नहीँ यह
उत्कण्ठ सहसोसमा याकी अथ सहसा जो रीतरीति जाग
गोहिँ उमा पावनीकी समा परावरिकी कहत हँ नै अधिक हँ
यहअथ पावनीकी बीना वजाइयो प्रसिद्ध नहीँ तेरीना वजा-
वै यात किंवा उमाको उमछन्दकँ लिपु जेसँ वालाकी गाल
सहको अथ त्रियमानभी हँ सहकहिँय त्रियमान सोम चंद्रमा
हँ अर्धनहीँ मया नैसमा हँ एकाक्षरकोशोममानम बुद्धिकी
भीहँ । मतिरामद्युसैनवलयोरपिउचयते । माद्योदकँ मतिर
त्रिषु बुद्धि त्रिषु जानियु चंद्रनी की समया हँ नै बुद्धिमान हँ
समझति हँ नोहिँषिना तेरीनयक च्याकुल हँ नै चलिमलि
जायकँ यहैचान मार बतानि वजावत याकी अथ फारसी म
मारनाम सांपकाहँ नाकी जल पान नगवल्की कहतहँ नाकी
नै वनावतिहँ वूठी वारी जगतिहँ किंवा पानको नै वनावति
हँ शोभादेति हँ जवत पानछातिहँ तवतेरी सुन्दरतासँ पान
शोभापावत हँ विहारी मनगलवन्द बालका बालबाल छाति
कालीक किंवा मारलयाकी अथ ऐसीतै राजकी वनावति हँ
तेरीनाम जोहँ सो मार जो काम नाकोलकी अथ यहैलकरति
हँ एकरिलति हँ छिनिकै वामभा चलिनहीँ सकतिहँ पयोहँम

ताकी मा लक्ष्मी सी है किंवा लज्ज की मा लक्ष्मी योभा सी है
केशवदास कहि है बलि तरे माल वनी है योभ है तरे वल साभा
एक तरे बरा है तासी तरे कलि कीड़ा सदा वनी है अछी जा
गति है किंवा है बलि केशव की वनाई जो साभा है सो तेरे गर
में अबही वनी है कलि लानी नही है औ बल सा तरे दोस ससी
सो बरा है तासी तरे कलि सदा वनी है ॥

सैन नि माधव जो सार के सब रस सुंदरा
सुखे सो सब । नैनव की तवि जीव को गीति विर सवै नि नि
काल काले ॥ तन सुनी न स भीर भीर धरि दीर वरी न सु को न
वहै । मन मनीरु काल बलेशु म सो वन में सर सी वल से ०६

नायक । कहि आई है ताको नायक के पस की सर सी नायक
सो मिलायो चाहत है हे सवे है सखि सखि वन में सर सी को है
तोहिं विना माधव जो है सो और नायक न के सो न रंगान को
सर सी जानत है और नायक उनको रंगायो करति है सो
रंगान माधव को जो नौ से शर वारा लो नौ से लो गत है अछी
नही लो गत है यह अर्थ है म म रेखा नाम पारे को भी है और
कपट को भी है रेखा कहिये पारी सुंदरी सुंदरी है ल वडन सु-
ंदरी है जो भी सुंदरी है अछा वेष बनाये है अछे ० अथ रंगान व-
र पारि आई है यह नायक तो ही सो आसक्त है किंवा
है सवे है सर सी और नायक माधव को सैन कहि रंगायो करि
सैन नि नि वचन है तासी कदास आदि जानिये जो जानत है स
र होय जी लो नाय आपनी बरा होय से सो कियो चाहति है
यदि अर्थ सो आक्षेप कीजिये के सो है आगे वही अर्थ आन-
गो नै विरह सो कास सो किंवा जीव में नहि के तब होय के सो
बख सख माधव की कवि कांति नैन नि को को अर्थ को
है वकर बरा रंगाय अर्थ की शेर है नै से वख आ सांता

रुत है जैसे अथर्व की कवि कैनाम सो लागी रूति है अरु ना-
यका सखकाल कविसे दयाल ही दयाग निनकी नामकी पण
है नीम की फल जैसे अछी नही लागत है जैसे अरु अछी नही
लागति है दयाल कवि काल कविसे सखक कविसे दयाल
कविसे दयाल कविसे अछी नयन सो कवि है जैसे नही नही
है नायक की देखने की नय की अछी नही और भी की नाय-
की की और न की फिर के गीति गो है कल अथ कल की गीति
कवि देखि है सो सो मनोहर है व अथ पाद पदोपाद्य कवि सो सो
है मन काम नाकी मीमा है अकाश कहे अकाश करनी मीमा
की परी निव धादि देख काम की अकाश होत है कवि के सो
है अरु अछी लोभा नाकी गो सुअ अछी चाल गीति नाय चले
है सो नायक अथ न सो सर कविसे सोवर नाकी मीमा सोव मीमा
रुत लोचन है सो भी है अछी चाल सकान है विविजाय की ५
अरु निर्जन देखा की अति ॥१२॥

अथ ॥ गीतवसीरस संपवगी अखिल चल वाक गुणी
मन है हेवन को सु, नि, पी, वर, धीर, धी, भ्र, भी स मनो गुन
न ॥ ल, फल, कविभान, वसर, वी, विर, मीक न मी विन की
वनी है। विसुवरी सद सुवरी वसनी स मी वद मान न सो ३
नायकी सो वरी को अउ देखा वचन पीन पद मनो व है नही
नयकी है गीति मीमा है वर वर म वमकासी गो सुव सो रसक
सोवन है नय सोम सुवरी को अछी नयनी गो है नायक नर नय
गीतकी अरु है सोम गो की नाकी अछी नर सो से कवि को ५
अरु दे पर की अलि चली कवि नर सो कवि है नायक कोय
अथ न मन सो वाक अछी गुणी है विवरी है सो अछी मीमा है
व परकी ला है सो विवरी सोन कविसे गीत गो नय नयनी गीति
है गीत वरी अछी कवि विवरी को अछी गो है सोव सो ५

शीत है शी है नाथ का रङ्ग सो बन जो पर सो कोया है देस में व
 ननाम पर को भी है है सजनी नना नाम को वें खन मुनी भी क
 हिये भय नाको जो भर कहिये भार सो तो पें पर्यो है बहन डर
 पर्यो है याते पर अन्धो अचल जो धीर धैर्यता को द परे भा
 रण को डरी सति किंया है सजनी वें सेरी यात सुन मुनी रङ्ग
 सोवन डर कोया भर कहिये है असलवानी गति न परार में
 बानिही यह नही जान्यो में परकीया हौ अभिसर करि आई
 हौ साहि पर जानो है परकीया अभिसर का को लक्षणा है
 कंप बुद्धि बलानिबुनता असलवानी सो जो उपनी है भी क
 हिये भय पर बड़ी जो धीर धैर्यता नाको धरि के निरपराज
 भय को लावी भय को कोड़ी यह अर्थ जैसे कहत है विपत्ति
 को नियो तो ससु उक है का सिनि न वेंस कहिये ययस युवा
 तासों तरवी है अवरक भई है विर बहन काल सो नाका क
 ल जो है सभोग सुख ताको नही सेसी दौर में फल नें नही कन
 नी याको अर्थ नही को है नीव को कत दाल नीको अर्थ नही भय
 सकान दौर में विहार करी न परकीया है जो नीव की होय जो
 व की यासी मन की होय मन में न होय सेसी सारी को न वन
 मी की अर्थ पहुँचाव संग में ले जाइ नीव की सेसी यासी को
 कहिये है नी सेरी नीव की नागा कदे नी बोली तुक न वेंस न
 आनि है पूरव में गुआनि को वेंस कहति है करि न सुबोया है
 येव भूषणा जो सुन्दर बख गाहि सदन है करि सुदेया नो जो
 नाथक को समान देया है एक देया है एक गाव में रहति है कम
 ही विद्याग नही होय करि सय कहिये सय करी मान न अर
 सो भव जो तेरी पति सो खरे अति रस के बया में आं मा करे होय
 सो करो याह अर्थ ३२ ॥

अथ कपट बह दोष ॥ इन्द्र नील संगीत जै किये राम रस

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 天 | 地 | 人 | 物 | 事 | 理 | 道 | 法 | 術 | 學 |
| 天 | 地 | 人 | 物 | 事 | 理 | 道 | 法 | 術 | 學 |
| 天 | 地 | 人 | 物 | 事 | 理 | 道 | 法 | 術 | 學 |

BRUNNEN

| | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
| १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ |

5th June

[illegible]

Учредительное собрание

| | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|
| 五 | 五 | 五 | 五 | 五 | 五 |
| 六 | 六 | 六 | 六 | 六 | 六 |
| 七 | 七 | 七 | 七 | 七 | 七 |
| 八 | 八 | 八 | 八 | 八 | 八 |
| 九 | 九 | 九 | 九 | 九 | 九 |
| 十 | 十 | 十 | 十 | 十 | 十 |
| 十一 | 十一 | 十一 | 十一 | 十一 | 十一 |
| 十二 | 十二 | 十二 | 十二 | 十二 | 十二 |
| 十三 | 十三 | 十三 | 十三 | 十三 | 十三 |
| 十四 | 十四 | 十四 | 十四 | 十四 | 十四 |
| 十五 | 十五 | 十五 | 十五 | 十五 | 十五 |
| 十六 | 十六 | 十六 | 十六 | 十六 | 十六 |
| 十七 | 十七 | 十七 | 十七 | 十七 | 十七 |
| 十八 | 十八 | 十八 | 十八 | 十八 | 十八 |
| 十九 | 十九 | 十九 | 十九 | 十九 | 十九 |
| 二十 | 二十 | 二十 | 二十 | 二十 | 二十 |

16215

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

History

[illegible]

臨臨臨臨

॥ ०० ॥

[illegible]

11 collect

[illegible]

सही वचन पायकी सी - ते सुख के सुख भाने ठाढ़े भैं
 सुखी घर निन के सुख की वदोती देखो दर्शन करो कैसी है सु-
 ख सी योगी वाकी सुख कहियो सुख भान पर है है सोरसनेनी
 कसानीनी व भेरी सिय शोखा नीके सुने तेरी नीव में जो काम
 इच्छा है सी पूजो किंवा नीव में सुख होय कामना पूजे देस में
 नाम सुख की उपाय की प्रारम्भ की कहत है सुख की कहत है ॥ ७८ ॥

कामदेव कर्मके व विख्यात
 योग योगि वरुन कामी कहत
 नरुन सो व आदि गो गो रसो कि
 वा आदि कामदेव जो गो गो भव
 समयि है तो को वरुन काम है तो

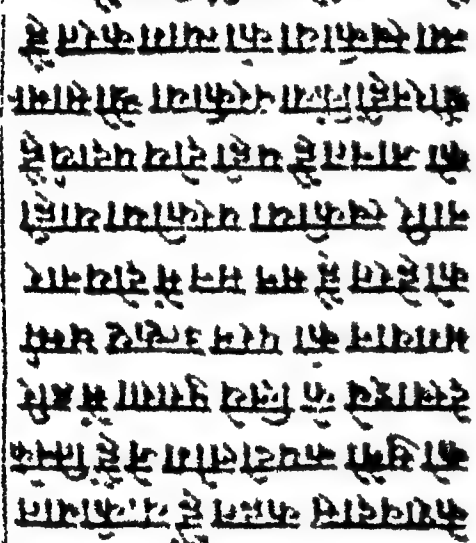
माको कामधेनु भी कलने में-



249

॥ ३० ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

५०॥ मन्मथगोविन्दविद्याध्यायनयोग २०



11 22 11 11 11

[illegible]

प्रहरे दाम जीये सा विनकी

जी काम कामना ताकी ओ

कम सो भयो तो कामना -

यय हमार हो तो भयो

हमार होय तो नाय होय

यह जो काम है ताहि विधे

जो प्रेम ताकी वज्र सी -

निदे मन में मति राखे नम

नम कहिये सदा एसा ही

विधे सुख मानत है भक्ति के ताहि

धम को बदर हमन कोरी उपदान कोरी इति कोरी यह अर्थ किंवा

यम नाम संयम को भी है संयम कर विधे को मति भोग यमक-

दिये सुन्दर जो अर्थी तरह भव सोई हम आगो रहे नव नरि नयन

कर फिर तो फिर तीर्थनि में यह पाहिनाथ यह भववन्ध भन-

गता है श्री बीच में एक भकर नही निखे कमलवन्ध में ही भी

पड़्यो नाथ ॥ ८१ ॥

अथ अवतार भट्टल ॥ लोक ॥ सीता सीतन सीता सीताराम

१ मारता ॥ सीता कलीली कथा सीतरीन नलीन ८२

मदनाथ ॥

| | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|----|---|---|----|---|---|----|---|---|----|---|---|----|---|---|
| सी | म | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न |
| न | म | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न |
| न | म | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न |
| न | म | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न |
| न | म | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न |
| न | म | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न |
| न | म | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न |
| न | म | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न |
| न | म | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न |
| न | म | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न | सी | म | न |

वकी कामदुष्टी ५ १ १ १

[illegible]

॥ ६२ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

I. H. Langley

11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1041 1042 1043 1044 10

कोई बातें सो उपदेश करने हैं गुण मानि पायका मय होय
 पाय पायका मय कहें किंवा मानि पायका सो गुण मय कहें
 ये मानि पायका मय होय के गुण उपदेश मय सो पायका सो
 नरे हिन की चारदी है नरे किंवा जो मय पायको मानि पाय
 करी है उन सो का पाय किंवा सो से कहत हैं गुण सो उपदेश
 रहति हैं पाय पायका सो पायका मय नही जो काय न सो
 मानि है मन को नरे कहें सो नरे नही जो कोइ कहें जो न
 सो नरे सो पाय कहत हैं यह नरे अमय कहें काय कहें
 मय जो काय मय काय सो से है मय न सो पाय पायको न
 यदेत है काय को बिचहें मय सो देत है काय को मय सो न
 पाय पाय पाय कहत हैं सो देत कहें नही किंवा
 मय पाय कहत हैं ताको सो देत है सो देत कहें किंवा
 मय पाय सो अंत पदार्थ सो ताको काय सो अमय सो काय
 नही वेई भावान को देत किंवा न काय सो नरे नही वेई
 यनई है सो न मानि पायका के सो मय उपदेश की सो उपदेश
 है विन उपदेश मय पाय पदर म गुण मानि सो मय पायका
 न सो सो मय मय सो मानि पायका है सो न सो मानि म मानि किं
 का गुण नही काय न होइ रहति न सो नही मय म सो मानि मय
 भावान की मय कहिये मय सो मानि पायका सो मानि पायका है न
 एक करिये को पाय है मय न सो मानि पायका सो सो है नरे
 सो है सो मानि पाय है पद मय कहें पायका मय न सो मानि

अक्षर चक्षुः कहेन है ॥ ८३ ॥

गुरुप्रिया ॥ काम. भूरे. तन. लान. भूरे. कव. मतिन.

दिये. मति. गान. गह. जेव. वास. वरे. गम. दोन. करे.

भव. कतिन. किये. पति. गान. दरे. इरेव ॥ धाम. भूरे. भन.

गन. भूरे. तव. गतिन. दिये. मति. दोन. लहे. सुख. गम.

रे. भन. काज. भूरे. भव. हतिन. दिये. मति. आन. कहे.

भूरे ॥ ८४ ॥

कोक काहे को उपदेश कहे है तो भू. आपने मन सो रामको

गान रे रे गीतों सब कामसे सिद्ध होय आनको नाम सुखसो

कहे तो इरेव भू भतिदान बुकसान जानो काम जो है सो तनको

भूरे रे लोका कचहे को रति मानि दिये काहे सो रति दिये तव

गान भूरे भू गानको प्रसिद्ध कायन को वरे आनिकार करे करि

प्राको साज भयण वख गानको करि लोका मानि जाय अब

तव गीत कहे कानि के किये मो आपनी रीति कुलकानि को कोरे

भू कलकहे भूरे को पास को करि जोउ तव वाको पति गान

नो गोपन गाना को रे. ख सो दरे गोपन करि धाम भू परे भू जो

अनयो भूरे लख तव मन को रोगा दरे है मतिदान बुद्धि के दाता.

तुम आन को बुव के पछा होयानि विधायको अर्थ दिये कहिये.

इरेव गान जो इरेव तरे सो राम भजन विना कोऊ ख सो गो.

दिये न भूख को लहे पावे न हो पावे यह अर्थ सो दरे सो भावतम

अन विन सुख तन लोक न हो काम सो अरे सो आनन सो आनन

तो आनन बुक भू तहो सो पदं तहोइ बुकानि भूलेव को कर भी

निगमन भू भू भू है ॥ ८५ ॥

कविप्रियासः ॥ ८५ ॥

कविप्रियासः ॥ ८५ ॥

कविप्रियासः ॥ ८५ ॥

हरे अति तरि तरि ॥ ८५ ॥

कोऊ काहे सो उपदेश कल है हरि कहिये चाह हरि जो है वि-
 धय की चाह ताकी त तह ताकी त हरि करि सो पोरि जो भग-
 वान ताकी त सो रीति करि करि आरहव करि करि दूर त भग-
 वान के दूरि जे दीख है तह को घर के लोग नही जान दहि तों भो-
 रहि करि जाह भयो मरि बहत अस करि करि किंवा जगान्तर
 ले करि एक जग में सिद्ध नही होति है मरि जात पस्या में मरि
 मरि कै किंवा मरी जो मरु ताकी त मरि को अद्य भाग्य। मुकलप
 लखु कहै न है निज इच्छा अमुखा। और मरु की जो मरि है वि-
 कस ताकी त मरि करि हरि में पयो दीख कसल था कि भइ
 सो अति जे तेरे है काम कोय लोग मोह वाको त पारि हरि सोई
 दे सो लतरि और को भी उपदेश करि त सो राम राम राम यदु द्रोष्ट
 एक है और दीखे काहे नै वनाय के लिखे है केतन सोक भी
 लोगनि ने सोखे है ॥ ८५ ॥

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|---|---|----|---|---|---|---|----|----|---|---|---|---|---|----|---|----|----|---|----|---|---|
| प | म | क | हो | न | र | आ | न | हि | ये | म | न | ल | ज | स | दे | म | रि | भो | न | जो | म | न |
| ग | म | ग | हो | उ | र | आ | न | हि | ये | म | न | ल | ज | स | दे | म | रि | भो | न | जो | म | न |
| को | म | र | हो | ब | र | आ | न | हि | ये | म | न | ल | ज | स | दे | म | रि | भो | न | जो | म | न |
| ग | म | र | हो | ब | र | आ | न | हि | ये | म | न | ल | ज | स | दे | म | रि | भो | न | जो | म | न |

अथ संकीर्तन विव-भूषण-राम कह्यो नर नान दिव्य सुत
 राज सब धरि भोन जनावत। नाम गहो उर मान किं
 कत काज तवै करि दीन बनवत ॥ काम दहो हरि अन
 दिव्य दन राज जवै भरि भोन अनावत। नाम चहो बरया-
 न पिपे धन आज अवे हरि की न मनवत ॥ ८६ ॥
 कोई काहे को उपदेश कल है हे नर राम कह्यो आपना दीख
 मरु कहिये मरु भानिके एक दिन भयो तब कोन के लोका म-
 र्यो पाते किंवा अकार को लोग विव के लिखे सुत की ओर सुत

खरसो जाको वधो करनवायो है भावान बिना कोइ कहे न
आदि सुख है ताको जनक को सिखि डेर भायो सुख है
को वस है सुख में भायो औ नरक सो मिल्यो सुख भोगिक
दुःख करिके दिन भासत है ये दीवनि को मनवाये जायग
ख के लोभ में भाखी जात है औ भागो यमराज देत है हे नर-
निदय मन है जीव नही जीवती सुद परमानन्द है बहकित मकर पर
धुराणी मन के सो है मति औ बुद्धि ताको जो मत डख ताको हो
नवालो है बुद्धि तो भावान में लगी मन बदेकाम के निवय
में डहि देत है मन को वधो को यह अर्थ है नरनाल संसार देत
मति अर्थ है पाप की मारी बुद्धि मय है कोशवदोस कहत है
भावान को यागो को २९ ॥ इसक वर विजय.

| व | ग | घ | ङ | च | छ | ज | झ | ञ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ए | ऐ | औ |
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ए | ऐ | औ |
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ए | ऐ | औ |
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ए | ऐ | औ |
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ए | ऐ | औ |
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ए | ऐ | औ |
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ए | ऐ | औ |
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ए | ऐ | औ |

मति विजय काव्य अथ कवि की स्थिति ॥ दोहा ॥ यमराज
विद्वान्मैं है सारन सिरकार। सारन्यामी सुरसरित सरयु जा
भञ्जपार २ सारन्यामी सरयु जहै भली गारा सो जाय। ३०
शुन में देखा सो हरिकवि को सरसाय २ यमराज गोपा कहे विजय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रीकृष्ण उवाच ॥
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥
 मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सज्जनाः ॥
 १ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ दृष्ट्वैतांशुपुत्रं पाण्डुपुत्रं ॥
 कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥
 २ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ अहो भवतु पाण्डव ॥
 त्वं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥
 ३ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ अहो भवतु पाण्डव ॥
 त्वं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥
 ४ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ अहो भवतु पाण्डव ॥
 त्वं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥
 ५ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ अहो भवतु पाण्डव ॥
 त्वं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥
 ६ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ अहो भवतु पाण्डव ॥
 त्वं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥
 ७ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ अहो भवतु पाण्डव ॥
 त्वं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥
 ८ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ अहो भवतु पाण्डव ॥
 त्वं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥
 ९ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ अहो भवतु पाण्डव ॥
 त्वं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥
 १० ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ अहो भवतु पाण्डव ॥
 त्वं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥

पहेलियों की चूँचसुवाते रागों के स्वरूप बलुनिके गये
हैं यतक असंख्य ही छपा हैं और पाठशालाओं के प्रचार
के युद्ध हैं ॥

तुलसीदास प्रकाश ॥

जिसमें सब गुणों और परमेश्वरों
के सब प्रकार के गुणों का कथन और ज्ञात करने
जगदिक की मुख्य बातें गाएँ, योग, योग, और विचार
आदि के मूल और इस प्रकार के असंख्य विषय हैं
जाते कर्ण से जानते हैं ॥

प्रारम्भ ॥

जा विवशतः सितादिन्द की दादीरनकुँवरिचिन
केव श्रीगु और श्रीरामचन्द्रजी की भक्तिपथका विषय
दो चोड़ें में हैं ॥

विश्वविद्या ॥

काराजकवि रचित जिसमें पहिले अनेक अद्भुत
कामचर्यनकरके फिर उनको विवश करके कपटिषयाहें ॥

प्रीतिपथ ॥

गिरत जगदाधीश्वरिचिन अति मनोहर और पुर
प्रकाश में श्री गंगाजी की स्तुति है ॥

गंगालहरी ॥

परमाकर कविकन जिसमें संस्कृत गंगालहरी से गंगान
वैकोविषय जिनसे मनुष्य भवसागर पार करने अर्पक विनाहें ॥

यमुनालहरी ॥

गंगालहरी जिनमें कल्याणकरायक यमुनालहरी
वृत्ति है ॥

रसचन्द्रिका ॥

उदयनाथ जी व शिवनाथ रचित इसमें सब प्रकार की
काश्या की भद्र और उनके सब प्रकार के अलंकार रचित हैं ॥

